
अनिल मोहन
आतंक के साये
नया उपन्यास
क्राइम थ्रिलर

'आतंक के साये'

धर्मपुरे जैसे बदनाम इलाके का यह निहायत ही घटिया बार था, यह दूसरी बात थी कि इस इलाके में, यही बार किसी फाईव स्टार होटल से कम नहीं था। भीतर प्रवेश करते ही बहुत बड़ा हाल था। वहां कुर्सियां और टेबल लगा रखी थीं। पीने वाले बोतलों और शीशे के गिलास सहित जमे बैठे थे! किसी शरीफ व्यक्ति का तो वहां मतलब ही नहीं था। वह सब शहर के छटे हुए बदमाश थे। शहर में होने वाले सत्तर प्रतिशत जुर्मों की जड़ इसी धर्मपुरे में थी। हर मुजरिम इस इलाके में आकर खुद को सुरक्षित समझता था।

बार में एक तरफ केबिन बने हुए थे जहां दरवाजों के स्थान पर, गाढ़े रंग का, हरा मैला, मोटा सा पर्दा लटक रहा था। बार के केबिन बड़े-बड़े दादाओं के लिये ही आरक्षित रहते थे।

पिछले कुछ दिनों से इस बार में बिलकुल नया चेहरा नजर आ रहा था। उम्र कोई चालीस के आस पास होगी। सूखा, पतला और लम्बा। गालों में गड्ढे पड़े हुए थे। तीखी नाक और चालाकी से भरी चमकती आंखें। सिर के बाल आधे सफेद और आधे काले थे। चूंकि वह सब आधा इंच लम्बे थे इसलिए बेतरतीबी से फैले हुए थे। बदन पर अक्सर काली पैंट और चारखानों वाली कमीज ही दिखाई देती थी! सस्ती सी सिगरेट का पैकिट और माचिस हमेशा उसके बांये हाथ में दबा रहता। वह

जुदा बात थी कि उसे कभी-कभार ही सिगरेट पीते हुए देखा जाता।

पहले दिन तो वह हाल के एक कोने में टेबल पर बैठा हाल में निगाहें दौड़ाता रहा। करीबन वह चार घण्टे वहां बैठा होगा और इन चार घंटों में उसने सिर्फ एक पैग शराब का ही पिया। इस बीच न तो वह किसी से बोला और न ही किसी ने आकर उससे बात करने की चेष्टा की, सिवाय वेटर के। फिर रात के साढ़े बारह बजे वह उठा और बाहर निकल गया।

अगली रात नौ बजे वह फिर आया और कल वाली जगह बैठ कर हाल में निगाहें दौड़ाने लगा। आधे से ज्यादा टेबलें भरी हुई थीं और वह जानता था कि घंटे भर में यह सारी जगह नामी गिरामी बदमाशों से भर जायेगी। लगभग डेढ़ घंटे के पश्चात उसने वेटर को शराब का पैग लाने को कहा! पैग आने पर वह धीरे-धीरे चुस्कियां लेने लगा।

आधे घण्टे में कहीं जाकर पैग समाप्त हुआ तो उसने सिगरेट सुलगा कर कश लिया। फिर इस तरह कश लेने लगा कि सिगरेट ज्यादा देर तक चले।

एकाएक वह संभलकर बैठ गया। कुछ दूर टेबल के गिर्द पड़ी कुर्सियों पर पांच व्यक्ति बैठे शराब पी रहे थे कि सहसा एक उठकर उसकी तरफ बढ़ने लगा। आने वाला पैनी निगाहों से उसे देख रहा था। वैसी ही निगाहों से वह भी उसे देखने लगा। वह आकर उसकी टेबल के पास रुक गया, हाथ में शराब का गिलास मौजूद था जिसे वह आते समय अपने टेबल से उठावा लाया था!

'कल तुझे पहली बार देखा था और आज दूसरी बार—। आने वाला होंठ सिकोड़कर बोला—'कौन है तू—?'

'तुम्हारी ही तरह शरीफ इन्सान हूं।' वह शांत भाव से कह उठा!

'मैंने तुझसे पूछा है कौन है तू—?' इस बार उसका स्वर उड़ गया—'ज्यादा हीरो बनने की कोशिश न कर, वरना—।'

'वरना तू मुझे उठाकर बाहर फेंक देगा—।'

'नहीं, ऐसा घटिया काम मैं नहीं करता।' कहने के पश्चात उसने एक ही सांस में गिलास खाली करके टेबल पर रखा और

जेब से गरारी वाला चाकू निकाल कर, उसका फल खोला और उसके चेहरे के सामने लहराकर बोला—'अब समझा।'

चाकू देखकर उसके चेहरे पर क्षण भर के लिये घबराहट के भाव आये फिर तुरन्त ही सभल गया। उसकी आंखों की पुतलियां बता रही थीं कि उसका जेहन बहुत तेजी से काम कर रहा है।

तभी चाकू वाले के अन्य चार साथी भी वहां पहुंचे। वह सब इस अन्दाज से खड़े हो गये कि उनके बीच वह घिरकर रह गया। परन्तु अपनी भरपूर कोशिशों के कारण, वह लापरवाही से कुर्सी पर ही जमा रहा, उसने आने वाले अन्य चारों पर निगाह डाली फिर उंगलियों में फसी सिगरेट को शराब के खाली गिलास में डाल दिया जो कि क्षण भर तड़पकर बुझ गई।

'चाकू जेब में रख ले बेटे।' उसने अपने स्वर में आत्म-विश्वास भरकर कहा—।

'मेरे पास भरा हुआ रिवालवर है।'

'साला धमकी देता है।' एक ने क्रोध भरे स्वर में कहा।

'जब तक तेरा रिवाल्वर बाहर आयेगा, तब तक चाकू पेठ में घुसकर पीठ के रास्ते से बाहर निकल आयेगा।'

'अगर इतना ही भरोसा है तो तू चाकू चला सकता है।' कहते हुए क्षण भर के लिए उसकी आंखों में भय आया—'लेकिन उससे पहले ही गोली तेरी खोपड़ी को फाड़कर रख देगी! शायद तुझे नजर नहीं आ रहा कि मेरी उंगली रिवाल्वर के ट्रेगर पर है और उसमें छः गोलियां भरी हुई हैं।'

सबने हैरानी से उसके हाथों को देखा जो कि खाली टेबल पर पड़े थे।

'तुम्हारे हाथ तो खाली हैं।' तीसरे ने आश्चर्य से कहा।

'अपनी-अपनी समझ का फेर है।' वह अजीब से स्वर में बोला—'तुम जैसे बहुत से मेरे हाथों मर चुके हैं जिन्होंने मेरे हाथों को खाली समझा—।'

वह पांचों एक दूसरे का चेहरा देखने लगे।

'इधर-उधर से कुर्सियां खींच लो और यहीं बैठ जाओ।' वह फौरन बोला।

'शराफत से पूछोगे तो हर बात का जवाब मिलेगा नहीं

तो…।'

पांचों ने फौरन निर्णय किया। चाकू वाले ने चाकू बन्द करके जेब में डाला। फिर उन्होंने अन्य टेबलों से कुर्सियां उठाकर वहां लगाई और वहीं जम गये। एक पहले वाली टेबल से शराब की बोतल और गिलास उठा लाया। शराब गिलासों में पड़ी और महफिल गर्म हो उठी!

उसके गिलास में भी शराब डाल दी गई। यह सब देखकर उसके चेहरे पर राहत के भाव आ गये। आंख विजयी पूर्ण मुस्कान से चमक उठी।

'अब कहो गुरू! तुम चीज क्या हो?' एक ने उत्सुकता से पूछा, 'कहां से आये हो? अब तक कौन-कौन से गुल खिलाए हैं?'

उसकी थोड़ी सी गर्दन अकड़ गई। थोड़ी सी छाती फूल गई। उसने ऐसी निगाहों से सबको देखा जैसे सब बिना उसकी इजाजत के यहां आ बैठे हों।

'मेरा नाम ही मेरा परिचय है।'

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'सोहन लाल।'

'दो पल वहां पर चुप्पी छाई रही।'

'हम समझे नहीं तुम किस सोहन लाल की बात कर रहे हो?'

कहने वाले के चेहरे पर उसकी कठोर निगाहें जम गई, फिर अगले ही पल उसका हाथ चला, और कहने वाले के गाल पर जा पड़ा।'

'हरामजादे।' एकाएक सोहन लाल गुर्राया। 'अण्डरवर्ल्ड में कितने सोहन लाल भरे पड़े हैं जो मुझे अपना परिचय देना पड़ेगा। आंखें फाड़कर देख, बम्बई का मशहूर गैंगस्टर सोहन लाल तेरे सामने बैठा है।'

उसके इन शब्दों के साथ ही वहां सबको सांप सूंघ गया। हर किसी की हालत ऐसी हो रही थी जैसे उन्हें शेर के पिंजरे के भीतर फेंक दिया हो। हाथों में पकड़े शराब के गिलासों से घूंट भरना भूलकर, सूख रहे होंठों को जीभ से गीला करने लगे। गलों में खुश्की पूर्ण कांटे चुभ रहे थे।

तभी जैसे उन्हें होश आया। सबने हाथों में पकड़े शराब के गिलास खाली किये और गहरी गहरी सांसें लेने लगे।

'ए—ए— क बात कहूं उस्ताद, बुरा तो नहीं मानोगे?'

'कहो।' सोहन लाल कहने वाले को उखड़ी निगाहों से देखने लगा।

कहने के पूर्व उसके चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे।

'उस्ताद।' वह सूखे होंठों पर जीभ फेरकर, बोला।' आज से करीब दो महीने पहले तुम्हारे गैंग की टक्कर बम्बई पुलिस से हो गई थी और पुलिस ने तुम्हारे सारे गैंग को मारकर, तुम्हें भी मार दिया था, तुम्हारे मरे की तस्वीर देश भर के सारे अखबारों में छपी थी।'

'मैं तुम्हारे सामने बैठा हूं न?' सोहन लाल होंठ भींचकर बोला।

'ह—हां।'

'तो फिर वह सब बातें भूल जाओ, जो अखबार में छपी थीं। सोहन लाल को मारना पुलिस वालों के बस का नहीं है। वह सब मेरी ही चाल थी जो कामयाब रही, अब कानून की निगाहों में मैं मरा हुआ हूं, और हकीकतन जिन्दा हूं।'

एक बार फिर तीखा सन्नाटा वहां छा गया।

'उस्ताद, गिलास को खाली करो।'

सोहन लाल ने भौंहें सिकोड़कर, कहने वाले को देखा जो खीसें निपोर रहा था। फिर उसने ऐसे गिलास उठाया जैसे बहुत बड़ा अहसान कर रहा हो। तत्पश्चात एक घूंट भरने के पश्चात बुरा-सा मुंह बनाते हुए गिलास नीचे रख दिया।

'क्या हुआ उस्ताद?'

'बहुत घटिया शराब है, बिलकुल स्प्रिट की तरह।'

'माफ करना उस्ताद, हमें ध्यान नहीं रहा, अभी बढ़िया माल लेकर आता हूं।' कहने के पश्चात वह उठा और तेज कदमों से बार काउण्टर की तरफ बढ़ गया।

'मेरी गलती माफ कर देना उस्ताद, मैंने तुम पर चाकू खोल दिया था।' चाकू वाला सिर झुकाकर पश्चात्ताप भरे स्वर में बोला।'

'गलती तब होती जब तुम चाकू चला देते, इस समय माफी मांगने के लिये भी जिन्दा न होते।' सोहन लाल ने अपना स्वर खतरनाक बना कर कहा।

'लेकिन उस्ताद, तुम दो महीने कहां रहे?' दूसरे ने पूछा।

'पुलिस की निगाहों से बचने के लिये अण्डरग्राउंड हो गया था, उसके बाद बम्बई से सैकड़ों मील दूर यहां प्रकट हो गया।'

'यह तो बहुत अच्छा किया उस्ताद, नहीं तो हमारी किस्मत में कहां था कि आप जैसे नामी और खतरनाक गैंगस्टर के साथ बैठकर शराब पीते।'

सोहन लाल की छाती फूल गई।

'वक्त-वक्त की बात है। अगर कभी बम्बई में मिले होते तो अंग्रेजी शराब में तुम्हें नहला देता, जेबों में नोट भर देता — लेकिन अब।' सोहन लाल ने गहरी सांस ली, 'अब तो यह हालत है कि सिगरेट पीने तक को पैसे नहीं हैं।'

'फिक्र मत करो उस्ताद, हमारे होते हुए चिन्ता करने की जरूरत नहीं।' कहते हुए उसने जेब से सौ-सौ के कुछ नोट निकालकर टेबल पर रख दिये, 'यह थोड़ा सा नजराना है। कल किसी मोटी मुर्गी का गला काट कर मोटा माल दूंगा।'

सोहन लाल ने विचार भरी निगाहों से नोटों को देखा फिर टेबल पर पड़े अपने पैकिट में से सिगरेट निकालकर सुलगाई।

'क्या नाम है तेरा?'

'जग्गा।'

'जग्गा?' सोहन लाल ने लम्बा कश खींचकर उसे देखा, 'बहुत जल्द मैं यहां पर अपना गैंग स्थापित करने जा रहा हूं। बम्बई से भी खतरनाक गैंग; तब मैं तुझे याद रखूंगा।'

'शु—शुक्रिया—उस्ताद।'

'उस्ताद थोड़ा सा माल मेरे पास भी है।' दूसरा बोला।

'थोड़ा सा मेरे पास भी।'

फिर सबने नोट निकालकर टेबल पर रख दिये।

'मैं तुम सबका ध्यान रखूंगा।' कहते हुए सोहन लाल ने नोट उठाये और जेब में डाल लिये फिर उठते हुए बोला, 'मुझे एक जरूरी काम याद आ गया है, अब कल मुलाकात होगी।'

'ऐसी भी जल्दी क्या है उस्ताद, यह अंग्रेजी आपके लिए

है और देसी हम सब के लिए।' एक बोतल लेकर वहां आ पहुंचा।

सोहन लाल ने विचार भरी निगाहों से बोतलों को देखा।

'मुझे अफसोस है कि मैं रुक नहीं सकता। आज रात मुझे पचास लाख के सोने की खेप मिलने वाली है। जिसे लेने जाना मेरे लिये निहायत जरूरी है।' कहने के पश्चात उसने हाथ बढ़ा कर अंग्रेजी शराब की बोतल ले ली।

'मैं तुम्हारा दिल नहीं तोड़ना चाहता, बोतल ले जा रहा हूं, फुर्सत में पी लूंगा।' बोतल लिये सोहन लाल आगे बढ़ा ही था कि सामने से आते वेटर ने टोका।

'पैग के पैसे ?'

सोहन लाल ने हाथ के अंगूठे से टेबल की ओर इशारा किया और आगे बढ़ गया। आंखों में विजयपूर्ण चमक लहरा रही थी।

□ □

□ □

कमरे में प्रवेश करके सोहन लाल ने लाईट आन की और घड़ी में वक्त देखा। रात के बारह बज रहे थे। चेहरे पर धूर्तता-पूर्ण मुस्कान थिरक रही थी। हाथ में थमी शराब की बोतल मेज पर रखी और सिगरेट सुलगा कर कश लिया।

कमरे में टूटी फूटी चारपाई और एक तिपाई के अलावा कुछ नहीं था। पीछे खुलने वाली खिड़की, गन्दे नाले के साथ सटी हुई थी, इसी कारण हर समय, कमरे की हवा में दुर्गन्ध व्याप्त रहती।

सोहन लाल ने जेब से नोट निकाल कर चारपाई पर रखे और उन्हें गिनने लगा। सौ-सौ के इक्कीस नोट थे। सोहन लाल के होंठों से हसी उबल पड़ी। उसने नोट वापस जेब में रखे और तिपाई पर शराब की बोतल की सील खोल कर, उसे होंठों से लगा लिया।

□ □

□

अगले दिन सोहन लाल नहा धोकर जब बदबूदार कमरे से

बाहर निकला तो दिन के ग्यारह बज रहे थे। उसने एक बढ़िया से रेस्टोरेण्ट में नाश्ता किया और बाजार की तरफ बढ़ गया।

उसका इरादा दो जोड़ी कपड़े खरीदने का था। पिछले कई दिनों से इन्हीं कपड़ों को धो-धोकर पहन रहा था, अब तो यह घिसने के पश्चात फटने को तैयार थे। बाजार तक पहुंचने में उसे आधा घण्टा लग गया। वहां काफी भीड़ थी, वह भीड़ में जगह बनाकर, आगे बढ़ता हुआ अपनी मनपसन्द की दुकान ढूंढने लगा।

तभी पीछे से उसे धक्का लगा। वह बिजली की सी फुर्ती से घूमा और उसका हाथ एक कलाई पर जम गया।

जिसकी कलाई उसके हाथ में थी, वह बीस-बाईस बरस का हीरो टाईप युवक था। दोनों की आंखें मिलीं।

किसी का ध्यान भी उन पर न था।

'क्यों खलीफा!' सोहन लाल गुर्राया—'जेब काटता है।'

नोटों का पुलन्दा युवक की मुट्ठी में बन्द हो चुका था। अगर सोहन लाल फुर्ती से उठकर उसकी कलाई न पकड़ता तो अब तक वह इस भीड़ में जाने कहां गुम हो चुका होता।

'छोड़ दे मेरा हाथ—' युवक दांत भींचकर बोला।

'मेरे नोट मुझे वापस दे—?' सोहन लाल ने अपना स्वर खतरनाक बनाकर कहा।

तभी युवक का दूसरा हाथ जेब में गया और उसने चाकू बाहर निकालकर सोहन लाल की कमर से लगा दिया। सोहन लाल का शरीर जोर से कांपा। चेहरे पर हल्की-सी सफेदी उभर आई।

अगर किसी की निगाह उन पर पड़ी तो आंखें दूसरी तरफ फेर लीं।

'चाकू हटा ले, मेरी जेब में भरा हुआ रिवाल्वर है—।'' सोहन लाल गुर्राया।

'जेब में है न—?' युवक दांत किटकिटाकर बोला।

'हां—?'

'चिंता मत कर, वह जेब में ही रहेगा और यह चाकू पूरा का पूरा तेरे अन्दर घुस जायेगा, मेरी कलाई छोड़ दे—।' युवक का स्वर खतरनाक हो गया।

'शायद तुझे नजर नहीं आ रहा, मेरी उंगली रिवाल्वर के ट्रेगर पर है।'

तभी चाकू की नोंक सोहन लाल की कमर में चुभी। सोहन लाल ने घबराकर उसकी कलाई छोड़ दी।

युवक नोटों सहित भीड़ में गुम हो गया।

□ □

□ □

आज सोहनलाल ने बार में प्रवेश किया तो दस बज रहे थे। चारों तरफ अंधेरा छा चुका था। भीतर लाइट जगमगा रही थी। सोहन लाल दो कदम ही आगे बढ़ा होगा कि कल वाले पांचों युवकों में से दो फौरन उसके पास पहुंच गये।

'आओ उस्ताद; आज तो देर कर दी।' एक ने खुशामदी भरे स्वर में कहा।

सोहन लाल बिना उनकी ओर देखे, हाल में निगाहें दौड़ाता हुआ बोला—'आज दोपहर में, शहर से बाहर चला गया था। चूंकि यहां अपना गैंग तैयार करना है इसलिए भाग दौड़ करनी पड़ रही है। बहुत प्यास लग रही है, यहां कहीं ठन्डा पानी नहीं है?' सोहन लाल अपने गले पर हाथ फेरकर बोला।

'तुम चलो उस्ताद, मैं बहुत बढ़िया पैग बनाकर लाता हूं। सारी प्यास रफूचक्कर हो जायेगी।' कहने के साथ ही वह बार काऊंटर की तरफ बढ़ गया।

'आओ उस्ताद, मेरे साथ आओ।'

कहां—?'

'वहां सामने टेबल पर।' उसने खीसें निपोरकर कहा—'मेरे कुछ और दोस्त भी वहां पर बैठे हैं। सोचा, आपसे मिला-कर, उनके भाग्य भी जगा दूं।'

सोहन लाल ने निगाहें घुमाकर देखा तो एकबारगी सकपका उठा। बहुत सारी टेबलों को आपस में मिलाकर तीस फुट लम्बी टेबल बना रखी थी। उसके आस पास कुर्सियों की लाइनें लगी हुई थी। जिन पर करीब पच्चीस व्यक्ति मौजूद थे और अधिकांश उसकी तरफ ही देख रहे थे। जाहिर है, वह सब यहां के छंटे हुए बदमाश होंगे।

सोहन लाल ने अपने सामने खड़े व्यक्ति को देखा।

'तुमने मुझसे पूछे बिना, मेरा परिचय सबको क्यों दिया—?' सोहन लाल गुर्राया।

सोहन लाल के चेहरे के भाव देखते ही उसका गुलाबी चेहरा सफेद पड़ गया। मुस्कराती आंखों में भय सिमट आया। होंठ भद्दे अन्दाज में मुड़ गये।

लोहा गर्म देखकर सोहन लाल ने चोट की और दांया हाथ घूंसे की शक्ल में घुमा दिया। जो कि उसके चेहरे से जा टकराया। वह चीख होंठों में दबाकर दो कदम लड़खड़ाकर पीछे हो गया।

सोहन लाल ने पुनः हाथ उठाया।

'मु...म् मु...झे माफ कर दो उस्ताद—।' वह फौरन दोनों हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा उठा।

सोहन लाल का आधा उठा हाथ रुका फिर नीचे आ गया। थोड़ी छाती फूलकर कुप्पा हो गई। कुछ गर्दन अकड़ गई।

'आइन्दा मेरे से सम्बन्धित जो भी काम हों, सोचकर करना—।' सोहन लाल ने खतरनाक स्वर में कहा। फिर उनकी पीठ थपथपा कर बोला—'चलो, टेबल पर चलते हैं। मैं कम से कम पब्लिसिटी चाहता हूं। अगर पुलिस को मालूम हो गया कि मैं सोहन लाल हूं तो मुझे यहां से भागना पड़ेगा।'

'गलती हो गई उस्ताद, फिर कभी ऐसी गलती नहीं होगी।'

इस दो मिनट के वक्त के बीच ही सबकी निगाहें सोहन-लाल पर टिक चुकी थीं। शायद सोहन लाल के पास खड़ा व्यक्ति कोई ना मालूम हस्ती नहीं थी और उसका इस तरह घूंसा खाकर सोहन लाल के सामने हाथ जोड़ना जाहिर करता था कि सोहन लाल कोई बड़ा मगरमच्छ है।

वहां मौजूद सब सोहन लाल को पैनी निगाहों से देख रहे थे।

सोहन लाल शाही चाल से, उस व्यक्ति के साथ चलता हुआ, टेबल की तरफ बढ़ा। उसके दोनों हाथ कुछ इस तरह से आगे पीछे हो रहे थे जैसे हैंगर पर लटकी कमीज की बांहे तेज हवा में झूल रही हो।

तभी पैग लाने वाला सामने आ खड़ा हुआ। उसने एक हाथ से पैग पकड़ा था और दूसरे हाथ की हथेली को ट्रे का रूप दिया हुआ था।

'उस्ताद, प्यास को फौरन भगा देने वाला स्पेशल पैग।'

सोहन लाल ने पैग को देखा, विचार पूर्ण मुद्रा में क्षण भर सोचा फिर हाथ बढ़ाकर पैग उठाया और एक ही सांस में समाप्त करके, खाली पैग उसे वापस थमाया फिर हथेली से होंठों को साफ किया।

'मजा आया उस्ताद ?'

'हां—बहुत ज्यादा आया।' सोहन लाल लापरवाही से कह उठा—'एक और लेकर आओ, एक पैग पीकर प्यास और बढ़ गई है।'

'अभी लाया उस्ताद।' वह तेजी से पुनः बार की तरफ बढ़ गया।

सोहन लाल उसके साथ पुनः टेबल की तरफ बढ़ने लगा।

'उस्ताद, आज तो लोग आपसे मिलने वाले हैं, उनमें से हर कोई अपने इलाके का खतरनाक दादा है। लोग तो उनका नाम सुनकर कांपते हैं। पुलिस वाले इनसे दूर रहने में ही अपना भला समझते हैं। और।'

'चाहे जो भी हो।' सोहन लाल उसकी बात काटकर बोला—'इनमें से कोई भी मुझसे ज्यादा खतरनाक नहीं हो सकता।'

'हां उस्ताद, आपके सामने तो सब बच्चे हैं। आप अकेले हों तब भी यह लोग आपका मुकाबला नहीं कर सकते।' उसने फौरन सहमति से सिर हिलाया।

सोहन लाल की छाती पुनः चौड़ी हो गई।

सोहन लाल के टेबल के पास पहुंचते ही एक ने सामने वाली कुर्सी को खींचा और आदर भरे स्वर में बोला—

'आओ उस्ताद, हम कबसे आपका इन्तजार कर रहे हैं।'

सोहन लाल ने देखा; उसके लिए बिल्कुल सामने वाली कुर्सी रखी गई थी, जहां से वह; टेबल के गिर्द कुर्सियों पर बैठा, हर एक का चेहरा आसानी से देख सकता था। उसने भी कुर्सी की पीठ पर हथेली थपथपाई फिर जेब से सिगरेट निकालकर

सुलगाने के पश्चात् वह हिला और कुर्सियों पर बैठे व्यक्तियों के पास जाकर, उनके चेहरों पर भरपूर निगाह डालने लगा।

जिसको भी सोहन लाल देखता वह आदर भाव से खड़ा हो जाता, जबकि हर कोई एक से एक बढ़कर खतरनाक 'दादा' था।

सबको देखने के बाद सोहन लाल वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठा।

अब सोहन लाल हाल में बैठे अन्य बदमाशों की उत्सुकता का केन्द्र बन गया था। सबकी आश्चर्यपूर्ण दृष्टि उस पर ही थी।

इसी बीच सोहन लाल दूसरा स्पैशल पैग भी पी चुका था और उसे तीसरा पैग लाने को भेज दिया था। सिगरेट का सुलगया 'टोटा' उसके पास खड़े बदमाश को थमा दिया, जिसने फौरन आगे बढ़कर, उसे ऐश ट्रे में मसल दिया।

'इन लोगों को यहां क्यों इकट्ठा किया गया है?' सोहन-लाल ने बेहद शांत स्वर में, अपने पास खड़े व्यक्ति से पूछा।

'उस्ताद—जब इन्होंने आपके बारे में सुना तो हर कोई आपसे मिलने को बेचैन हो उठा। सो यह आपके दर्शन करने आ गये।

सोहन लाल ने गंभीरता से सिर हिलाया।

'एक जेबकतरे का हुलिया सुनो—।' सोहन लाल बोला।

'कहो उस्ताद।'

'बाईस, चौबीस साल की उम्र होगी। पतला, लम्बा, घुंघ-राले बाल। जब बोलता है तो नीचे के दांत नजर आते हैं। आज उसने सफेद रंग के कपड़े पहन रखे थे। उसने मेरी जेब काटी है। जब मैंने रिवाल्वर निकालकर उसे शूट करना चाहा तो उसने चाकू को इस्तेमाल किया। भीड़ बहुत थी, इसलिए मैंने रिवाल्वर का इस्तेमाल नहीं किया।'

'यह घटना कहां हुई?'

'ग्रांड रोड पर, ग्यारह के आस पास का वक्त होगा।'

इतना सुनते ही वहां बैठे दादाओं में से एक 'दादा' उठ खड़ा हुआ।

'उस्ताद, ग्रांड रोड मेरा इलाका है, अगर आप मुझे आधे

घंटे का वक्त दें तो मैं आपकी जेब काटने वाले को यहां हाजिर कर दूं।

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'सोमनाथ!'

'हूं। ठीक है। मैं तुम लोगों की काबलियत देखना चाहता हूं।' सोहन लाल ने उसे देखकर अहसान भरे स्वर में कहा।

थैंक्स उस्ताद। कहने के पश्चात् वह तेजी से एक तरफ बढ़ गया।

उसके जाने के बाद सोहन लाल ने सब पर सरसरी निगाह डाल कर कहा।

'आप सब लोगों से मिलकर, मुझे वास्तव में खुशी हुई। चूंकि यह हमारी पहली मुलाकात है, इसलिए आज छोटा सा जश्न होगा।' कहने के पश्चात् उसने पास खड़े बदमाश को देखा 'जश्न का प्रबन्ध करो।

'अभी लो उस्ताद।' वह तेजी से बार काऊंटर की तरफ बढ़ गया।

इतने में सोहन लाल का तीसरा स्पेशल पैग आ गया।

कुछ ही देर में टेबल पर शराब की बारह अंग्रेजी बोतलें सज गई फिर महफिल गर्म हुई, शराब पेट में जाने लगी और मुंह से शब्दों की बौछार। अब तक जो सोहन लाल के व्यक्तित्व के कारण दबे से थे, वह खुलकर बातें करने लगे। सोहन लाल उन्हें अपने खास किस्से बताने लगा, जिससे सुनने वाले दांतों तले उंगलियां दबा रहे थे। बोतलें खाली होती जा रहीं थीं। महफिल का रंग अब सिर पर चढ़कर, बोलने की कोशिश कर रहा था।

तभी सोमनाथ वहां आ पहुंचा। उसके साथ चार दादा थे। जिनके बीच वह जेबकतरा युवक घिरा हुआ था। जिसने सुबह सोहन लाल की जेब काटी थी।

'उस्ताद—!' सोमनाथ, सोहन लाल के पास पहुंचकर बोला—'यही था वह लड़का' जिसने आपकी जेब काटी और आपको चाकू दिखाया था।'

जेब काटने वाला युवक थर-थर कांपने लगा। उसने एक ही निगाह में पहचान लिया कि शहर के बड़े-बड़े दादे वहीं

मौजूद थे और वह सोहन लाल की ही ताजपोशी में लगे हुए थे। आंखों के सामने उसे अपनी मौत दिखाई देने लगी।

सोहन लाल ने शराब का गिलास टेबल पर रखा और आंखें मिचमिचाकर सोमनाथ को देखने के पश्चात युवक को देखा।

'हां—! साला यही था जिसने मुझे चूहा समझकर, चाकू मेरी कमर से लगाया था। क्यों बेटे, अब क्या हाल है? उन नोटों से कितनी ऐश की?' सोहन लाल शराब के नशे में, आंखें नचाकर कह उठा।

'नौसिखिये की औलाद।' सोमनाथ ने एक हाथ से उसके सिर के बाल पकड़े और दूसरा हाथ झापड़ के तौर पर, उसके चेहरे पर जमा दिया—'उस्ताद की जेब काटता है। तेरी यह हिम्मत।'

बालों का खिचाव—। पूरे वेग से पड़ा चेहरे पर थप्पड़ और मन में मौत का खौफ, इन सब बातों ने उसे पहले ही अधमरा कर दिया था। शरीर का दर्द लिए वह गिरा और तड़पकर उठते हुए उसने सोहन लाल के पांवों को पकड़ लिया। चेहरे पर करुणा टपक रही थी।

'मुझे माफ कर दो, यह सब अनजाने में हुआ, मुझे मालूम नहीं था। आप हम सब के खुदा हैं। एक बार मुझे माफ कर दीजिये, जिन्दगी भर आपके पांव धोकर पीता रहूंगा।' कहने के साथ ही उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

इससे पहले सोहन लाल कुछ कहता, सोमनाथ ने पुनः उसके बाल पकड़े और उसे खड़ा करके दरिन्दगी भरे स्वर में बोला।

'उस्ताद का माल निकाल हरामजादे।'

युवक ने कांपते हाथों से, पैंट की जेब से नोट निकाले और उसकी तरफ बढ़ाये।

'मुझे नहीं, उस्ताद के चरणों में डाल इन्हें।'

युवक ने फौरन हारकर सारे नोट सोहन लाल के पैरों के पास रख दिये। उसका पूरा जिस्म थर-थर कांप रहा था।

अन्य बदमाशों ने फौरन नोट उठाकर, सोहन लाल के सामने टेबल पर रख दिये। सोहन लाल का सीना क्षण-प्रतिक्षण चौड़ा होता जा रहा था। गर्दन ऊंची उठती जा रही थी। उसने नोट उठाकर अपनी जेब में डाल लिये।

'मैं तुमसे बहुत खुश हूं सोमनाथ।'

'थैंक्यू उस्ताद।' सोहन लाल के सामने झुकता हुआ बोला, 'आप कभी मुझो सेवा का मौका दें तो, मैं खुद को भाग्यशाली समझूंगा।'

सोहन लाल ने अपने हाथों से शराब गिलास में डाली और गिलास सोमनाथ की तरफ बढ़ाते हुए मुस्कराया।

'जिससे मैं बहुत खुश होता हूं उसे अपने हाथों से जाम बना कर पिलाता हूं।'

'शु क्रि···या उस्ताद।' सोमनाथ ने झुककर दोनों हाथों से गिलास इस तरह थामा जैसे भगवान उसे अमृत दे रहे हों।

फिर सोहन लाल ने अपना गिलास खाली किया और युवक से बोला।

'क्यों बे, क्या नाम है तेरा?'

'सुन्दर—सुन्दर लाल।' वह सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कह उठा।

'सुन्दर।' सोहन लाल ने बड़बड़ाकर कहा, 'कब से कर रहा है जेब काटने का धन्धा?'

'ब·· बचपन ·· से।'

'चाकू कब से जेब में रखना शुरू किया?'

'चा··चा र साल हो गये?'

'कभी किसी को मारा भी है?'

'न·· नहीं सिर्फ डराता हूं।'

क्षण भर के लिये सोहन लाल को, दिन में हुई चाकू की चुभन याद आ गई जो सुन्दर के दबाने से कमर में हुई थी।'

'बोल अब, तेरा क्या किया जाये?'

'मुझे म···मा···फ कर···।'

'तूने उस्ताद पर चाकू उठाया है।' सोमनाथ गर्ज उठा, 'तुझे माफ नहीं किया जा सकता।' फिर वह पलटकर साथ आये चार दादों से बोला, 'इस हरामजादे को यहां से ले जाओ और टुकड़े करके इसकी लाश किसी नाले में फेंक दो।'

'न···हीं—S-S-S।' सुन्दर के होंठों से चीख निकली जैसे अभी से ही उसे जिव्हा किया जा रहा हो और सोमनाथ के पांवों से लिपट गया।

सोमनाथ ने जोर से टांग को झटका दिया तो सुन्दर छिटक कर दूर जा गिरा। उसकी सिसकियां बराबर गूंज रही थीं।

सोमनाथ के आदेश पर चारों दादों ने सुन्दर को जकड़ लिया।

'अरे भाई, क्यों गुस्सा कर रहे हो।' सोहन लाल मुंह बना कर सोमनाथ से कहने लगा, 'छोड़ दो बेचारे को, उसका तो धन्धा ही जेब काटने का है और फिर मेरे मुंह पर तो नहीं लिखा कि मैं वह सोहन लाल हूं।' सोहन के इशारे पर चारों दादों ने उसे छोड़ दिया।

सुन्दर सिसकता फफकता सोहन लाल के पांवों में आ गिरा।

सोहन लाल ने उसके सिर पर हाथ फेरा और प्यार से बोला। 'चल उठ। बच्चों की तरह रोया नहीं करते, अबे कुर्सी ला मेरे शार्गिद के लिए। 'सोहन लाल ने पास खड़े बदमाश को देखा।'

अगले ही पल वहां कुर्सी हाजिर हो गई। सोहन लाल ने उसे कुर्सी पर बिठाया और टेबल पर पड़ा शराब का गिलास सुन्दर के हाथ में थमा दिया।

सुन्दर के चेहरे का रंग वापस लौटने लगा।

बात आई। गई हो गई। महफिल वापस अपने रंग पर लौटने लगी। खाली होने के साथ-साथ नई बोतलें टेबल पर आ गई और फिर सोहन लाल अपनी बीती गैंगस्टर जिन्दगी के कारनामे शान से बताने लगा। सुनने वालों के सिर रबड़ की गुड़ियों की भांति नीचे ऊपर हो रहे थे।

सोहन लाल की हैसियत शाही मेहमान जैसी हो चुकी थी।

□ □

□ □

रात के एक बजे सोहन लाल बार से बाहर निकला तो उसकी जेब में नोटों का काफी मोटा पुलन्दा था। कल वाले पांचों बदमाशों ने नोटों का बण्डल उसे भेंट किया था महज इसलिये कि जब वह अपना गैंग स्थापित करे तो उन्हें भी शामिल कर ले।

बाहर निकलते समय साथ में सुन्दर भी था। ठण्डी हवा के झोंको के कारण शराब का नशा छटने लगा।

'उस्ताद।' सुन्दर दबे स्वर में बोला, 'आज आपने रहम न किया होता तो मैं अब तक मर चुका होता।'

'अबे छोड़, मुर्दों की तरह बातें न कर।' सोहन लाल ने उसके कन्धे पर हाथ मारा। 'यह बता जेब में कितना माल है?'

'म... माल—! तीन-चार सौ रुपया होगा उस्ताद।'

'निकाल!'

सुन्दर ने जेब से नोट निकालकर सोहन लाल की हथेली पर रखें, सोहन लाल ने नोटों को जेब में डाल कर कहा।

'रात बहुत हो गई है! जा अब घर जाकर सो, मुझे भी नींद आ रही है।' सोहन लाल ने उसकी पीठ थपथपाई और अपने रास्ते पर बढ़ गया।

□ □

□ □

अगले दिन सुबह सोहन लाल नहा धोकर तैयार हुआ और बाहर आकर कल वाले बढ़िया रेस्टोरेण्ट में नाश्ता करने के पश्चात वह, मार्किट की ओर बढ़ गया। ताकि कुछ जोड़ी कपड़े खरीद सके। कल तो जेबकतरें सुन्दर के कारण कपड़े खरीदने का काम अधूरा रह गया था, आज कल की अपेक्षा कहीं ज्यादा उसकी जेब में नोट मौजूद थे। इसलिये दिल को आखिर तक तसल्ली थी।

कपड़े खरीदने के पश्चात वह यूं ही मार्किट में घूमता रहा। नाई की दुकान से शेव बनवाई और दोपहर को थ्री स्टार होटल में लंच करने के पश्चात वापस अपने बदबूदार कमरे में आ गया।

बदन पर पड़े घिसे, मैले, कुचैले कपड़े उतारकर उसने पिछली तरफ की खिड़की खोल कर गन्दे नाले में फेंके और नहा कर नये कपड़े पहन लिये। अब उसके चेहरे पर राहत के भाव दिखाई देने लगे।

उसने सिगरेट सुलगाई और चारपाई पर अधलेटा-सा होकर कश लेने लगा। तभी उसकी निगाह जूतों पर पड़ी जो कि घिसकर बदसूरत हो रहे थे। मन ही मन उसने फैसला किया कि

बाहर निकलते ही, जूतें भी नये खरीदेगा।

अभी इन विचारों में खोया हुआ था कि उसके कानों में जूतों की आहट पड़ने लगी। उसने सिर घुमाया और खुले दरवाजे की तरफ देखने लगा।'

अगले मिनट ही दरवाजे पर पैंतीस बरस के आकर्षक व्यक्ति का चेहरा दिखाई दिया। सोहन लाल फौरन उछलकर खड़ा हो गया। एक ही निगाह में उसने पहचान लिया कि आने वाले की जेब में रिवाल्वर मौजूद है। हर ओर से वह सेहतमंद लग रहा था। बदन पर कमीज और पैन्ट थी।

शारीरिक तौर पर सोहन लाल उससे आधा था।

'किसके दरवाजे पर खड़े हो प्यारे भाई।' सोहन लाल स्थिर स्वर में बोला।

'आपके।' उसने शांत स्वर में जवाब दिया।

'हूं।' सोहन लाल ने उसे देखते हुए सिर हिलाया। 'जानते हो मैं कौन हूं।'

'जी हां। बिना जाने मैं भला यहां आने की गुस्ताखी कैसे कर सकता हूं। आप बम्बई के मशहूर गैंगस्टर साहब सोहन लाल हैं।'

सोहन लाल की आंखें सिकुड़ गईं। फिर उसकी निगाह आगुन्तक की जेब पर जा टिकी, जहां रिवाल्वर होने का स्पष्टतया आभास हो रहा था।

'तुम्हारा नाम ?' सोहन लाल ने सिगरेट का गहरा कश लिया।

'महेश चन्द्र।'

'अब तुम्हें क्या चाहिये।'

'मैं आपको लेने आया हूं।' महेश चन्द्र ने शालीन स्वर में कहा।

'साला, कह तो ऐसा रहा है कि लेने आया हूं जैसे यमराज ने भेजा हो।' सोहन लाल ने उसे देखकर बुरा सा मुंह बनाया। 'अगर तू मेरे नाम के साथ-साथ मेरा काम जानता है तो यह भी जानता होगा, सोहन लाल को बिना उसकी मर्जी के कहीं ले जाना, कोई मामूली बात नहीं है।'

महेश चन्द्र ने संजीदगी से सिर हिलाया।

'मुझे मालूम है सोहन लाल जी, मैं आपसे कोई जोर जबरदस्ती नहीं कर रहा और न ही ऐसा कुछ करने का इरादा है, दरअसल।'

'एक मिनट।' सोहन लाल ने उसे टोका, 'पहले अपनी जेब में पड़ा रिवाल्वर जरा इधर सरका दें।'

महेश चन्द्र ने फौरन जेब से रिवाल्वर निकाला और सोहन लाल की तरफ उछाल दिया। सोहन लाल ने रिवाल्वर लपका, उसे उलट-पुलटकर देखा फिर खिड़की के पास पहुंचकर, चैम्बर खोलते हुए उसकी सारी गोलियां नाले में फैंक दीं। तत्पश्चात रिवाल्वर बन्द करके, उसे महेश चन्द्र की तरफ उछाल दिया।

'आइन्दा किसी से पहली बार मिलने जाओ तो खाली रिवाल्वर साथ ले जाया करो, अगर मेरी बात नहीं समझें तो फिर किसी दिन समझा दूंगा।'

'जी मैं समझ गया।' महेश चन्द्र शांत स्वर में बोला, 'अब से मैं ऐसा ही करूंगा।'

'बात क्या है बच्चे, बहुत शराफत से मेरी बातें समझें जा रहे हो?' सोहन लाल के होंठ सिकुड़े और माथे पर बल पड़ गये।

महेश चन्द्र मुस्कराया।

'दरअसल आप बहुत पहुंचे हुए इन्सान हैं। बम्बई के अण्डरवर्ल्ड में आपका नाम हर समय गूंजता रहता है। इसलिये आपकी किसी बात का इन्कार करके मैं आपके क्रोध का शिकार नहीं होना चाहता।' उसने शांत और स्थिर लहजे में कहा।

सोहन लाल की छाती थोड़ी चौड़ी हुई और गर्दन चंद सेंटीमीटर ऊंची हो गई। समाप्त हो रही सिगरेट फेंककर नई सुलगा ली।

'हां, अब बोलो, तुम कुछ कहने जा रहे थे?'

'जी, मैं श्रीमान तीरथराम पहवा का कमाण्डो हूं।'

'तीरथराम पाहवा। यह क्या बला है?'

'जैसी आपकी बम्बई के अण्डरवर्ल्ड में पोजीशन है, कुछ वैसी ही पोजीशन श्रीमान तीरथराम पाहवा की इस शहर में है।'

सोहन लाल ने थूक गले में निगली, बदन थोड़ा-सा सिकुड़

गया।

'तो ?'

'पाहवा साहब ने आपको लाने के लिये मुझे भेजा है।'

सोहन लाल ने फौरन दो-तीन कश लिये। चेहरे पर से कई भाव आकर गुजर गये। चेहरा पत्थर की तरह भावहीन था।

'अगर मैं ना चलना चाहूं तो ?'

'आपकी मर्जी, मुझे जोर जबरदस्ती करने का हुक्म नहीं है। फिर आपके साथ कौन बेवकूफ जोर जबरदस्ती करना चाहेगा, आप तो अकेले में ही एक गैंग के बराबर हैं।'

सोहन लाल की छाती पुनः फूलने को हुई कि पिचक गई। आंखों के सामने तीरथराम पाहवा का काल्पनिक, खौफनाक चेहरा उभर आया।

'काम क्या है ?' सोहन लाल लापरवाही दर्शाते हुए बोला।

'इस बारे में मुझे कोई खबर नहीं।'

'हूं।' सोहन लाल गहरी सोच में डूब गया।

महेश चन्द्र खामोशी से दरवाजे की चौखट के पास खड़ा रहा। वहां कई पल तक गहरी शान्ति व्याप्त रही।

'आपके सामने कोई कठिनाई है तो मुझसे कहिये, शायद मैं आपके काम आ सकूं।' सोहन लाल को गहरी सोच में डूबे देखकर, महेश चन्द्र ने कहा।

सोहन लाल ने गर्दन टेढ़ी की फिर नकारात्मक ढंग से सिर हिलाते हुए कहा। 'नहीं कोई कठिनाई नहीं, वैसे भी मैं अपनी कठिनाइयां खुद ही हल करता हूं। चलो, मैं तीरथराम पाहवा से मिलने के लिए तैयार हूं। जाना कैसे होगा ?'

'बाहर आपकी सेवा के लिये कार और पाहवा साहब के तीन कमाण्डो खड़े हैं आइये।' महेश चन्द्र ने आदर भरे स्वर में कहा।

सोहन लाल के होंठों से गहरी सांस निकली और महेश चन्द्र के साथ हो गया। ना जाना या इन्कार करना भी उसके हक में ठीक नहीं था। इस बात का अहसास सोहन लाल को था ही।

□ □

□ □

रास्ते में कार रुकवा कर सोहन लाल ने बढ़िया से जूते

खरीदे और शान से चलता हुआ वापस कार में आ बैठा। कार पुनः आगे बढ़ गई।

आधे घण्टे के पश्चात् कार शहर के खूबसूरत फाईव स्टार होटल जय गणेश के आहते में जा रुकी। कार रुकते ही बिजली की सी तेजी से चारों कमाण्डो बाहर निकले और अदब से खड़े हो गये। सोहन लाल ने बिना किसी उतावलेपन से बाहर निकलकर सिगरेट सुलगाने के पश्चात् सिर उठाकर होटल की ऊंचाई को देखा।

नियोन लाईन 'पजय गणेश' होटल लिखा दिखाई दे रहा था।

'कहां चलना है?' सोहन लाल ने महेश चन्द को देखा।

'मीनार पर, पाहवा साहब आपका इन्तजार कर रहे हैं।'

सोहन लाल ने सिर हिलाया और खुद ही आगे की तरफ बढ़ने लगा। चारों कमाण्डो बराबर उसके साथ, साये के समान थे।

होटल के प्रवेश द्वार से भीतर प्रवेश करते ही सामने बहुत बड़ा हाल रिसैप्शन के रूप में सजा हुआ था। कीमती सोफे, नर्म गद्देदार कालीन, छत और दीवारों की सजावट तो देखते ही बनती थी। तीन रिसैप्शन काउंटर दिखाई दे रहे थे जहां बेहद खूबसूरत युवतियां सेवा के लिये तत्पर थीं।

सोहन लाल को चारों कमाण्डो कोने में बनी लिफ्ट के पास ले गये, जिस पर लिखा 'प्राईवेट' शब्द दूर से ही चमक रहा था। वह सब लिफ्ट में प्रवेश हुए और लिफ्ट ऊपर की तरफ बढ़ने लगी। एक मिनट के पश्चात् लिफ्ट रुकी और सब बाहर आ गये।

यह लम्बी और खूबसूरत चमचमाती गैलरी थी।

तभी एक गनमैन वहां पहुंचा। उसे देखकर महेश चन्द्र, सोहन लाल से बोला।

'सर, आपको तलाशी देनी होगी।'

'क्यों?' सोहन लाल के माथे पर बल पड़ गये।

'पाहवा साहब के पास हर किसी को तलाशी के पश्चात् ही पहुंचाया जाता है। यह यहां का बहुत पुराना नियम है।'

'अगर मैं तलाशी न दूं तो?'

'तो आपका पाहवा साहब से मिलना सम्भव नहीं।'

'तुम शायद भूल रहे हो कि मैं पाहवा साहब से मिलने का ख्वाहिशमन्द नहीं था बल्कि तुम्हारे पाहवा साहब मुझसे मिलना चाहते हैं। जिस दिन मैं अपनी मर्जी से मिलने आऊंगा, तब अवश्य मैं अपनी तलाशी देना पसन्द करूंगा। कम से कम अब यानि इस समय मैं तलाशी देना जरूरी नहीं समझता।' सोहन-लाल दृढ़ स्वर में बोला।

महेश चन्द्र के चेहरे पर विवशता और कशमकश के भाव व्यक्त हो गये।

'सर, यह बेहद मामूली-सी बात है, अगर आप···।'

'तुम्हारे लिये मामूली बात हो सकती है लेकिन सोहन लाल के लिए नहीं।' सोहन लाल उखड़कर बोला—'मेरा वक्त बरबाद न करो और मुझे बाहर छोड़ आओ—

महेश चन्द्र होंठ काटता हुआ विचारपूर्ण मुद्रा में खड़ा रहा।

'तुम चाहो तो पाहवा साहब से बात कर सकते हो।' सोहन लाल ने कहा।

'शायद, अब करनी ही पड़ेगी, जबकि मैं ऐसा नहीं चाहता था।'

'इन्हें ले आओ महेश।' तभी गैलरी में न दिखाई देने वाले स्पीकरों में से भारी आवाज निकलकर उनके कानों में पड़ी।

सारे कमाण्डो एकाएक अटेंशन हो गये।

'यस सर—।' महेश चन्द्र ने अलर्ट स्वर में कहा।

□ □

□ □

स्क्रीन पर चारों कमाण्डो और सोहन लाल दिखाई दे रहे थे। फिर तीन कमाण्डो गनमैन के साथ वापस चले गये और महेश, सोहन लाल को साथ लिये गैलरी में सीधा आगे बढ़ने लगा।

यह देखकर तीरथराम पाहवा ने हाथ बढ़ा कर टेबल पर लगा स्विच आन किया और कुर्सी से टेक लगाकर झूलने लगा।

सामने तीस फुट लम्बी और इतनी ही चौड़ी टेबल पर काफी सारा साजो सामान रखा हुआ था, जिनमें एक रंग बिरंगा बटनों का स्विच बोर्ड था। जिनमें एक स्विच दबाते ही रोशन स्क्रीन बुझ चुकी थी। टेलीफोन टेबल पर मौजूद थे। कुछ फाईलें करीने से लगा रखी थीं। तथा कुछ जरूरत का सामान यहां मौजूद था।

तीरथराम पाहवा साठ वर्षीय आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक था। सिर पर बहुत कम बाल थे और सारे सफेद हो चुके थे। उसके हाव-भाव से ही चुस्ती फुर्ती झलकती थी। पिछले बीस सालों से वह अण्डरवर्ल्ड का बादशाह बना बैठा था।

पाहवा ने टेबल पर मौजूद स्विच बोर्ड का एक बटन दबाया तो पचास फुट दूर ठीक सामने दिखाई दे रहा मजबूत दरवाजा खामोशी से खुल गया।

अगले पल वहां पर महेश, सोहन लाल के साथ नजर आया। फिर सोहन लाल भीतर प्रवेश कर गया और दरवाजा बन्द हो गया। महेश ने भीतर आने की चेष्टा न की। सोहन लाल हैरानी से सजे हुए खूबसूरत हाल कमरे को देखने लगा।

तीरथराम पाहवा शान्ति से उसे देख रहा था। फिर वह अपनी जगह से उठा और आगे बढ़कर दीवार पर लगा बटन दबाया। शीशे के बड़े-बड़े दरवाजों पर पड़े पर्दे, खामोशी से एक तरफ सरक गये। फिर दो क्षण को ऐसा लगा जैसे जादू के जोर पर, सारा शहर सामने आ गया हो। नीचे आदमी और वाहन किन्हीं कीड़े-मकोड़ों की तरह लग रहे थे। सामने गगन-चुंबी इमारतें सिर उठाये खड़ी थीं। इतने ऊंचे से शहर को देखना वास्तव में अच्छा लगता था।

सोहन लाल अभी तक पाहवा का चेहरा न देख पाया था। उसके चेहरे पर कई तरह के भाव आ जा रहे थे। जिसमें भय, घबराहट और कम्पन मौजूद था। वह काफी देर तक पाहवा को देखता रहा। जब पाहवा न पलटा तो सोहन लाल उसके करीब जा पहुंचा। फर्श पर गद्देदार कालीन होने की वजह के कारण, सुई के बराबर भी कदमों की आवाज न हुई, परन्तु सोहन लाल को हैरान रह जाना पड़ा। जब उसके पास पहुंचते ही तीरथराम

पाहवा ने भारी स्वर में पूछा।

'कौन हो तुम ?'

सोहन लाल को अपना गला खुश्क होता हुआ महसूस हुआ। वह इस बात को हर क्षण याद रख रहा था कि सामने खड़ा शख्स अण्डरवर्ल्ड का सबसे बड़ा दादा है। इस शहर में इसकी बात टालना किसी के बस का नहीं था और वह उसी के सामने खड़ा है। बेहद कठिनाईयों के पश्चात सोहन लाल अपना चेहरा सामान्य बना पाया। परन्तु भीतरी हालत से सिर्फ वही वाकिफ था।

'कौन हो तुम ?'

तीरथराम पाहवा का स्वर पुनः गूंजा परन्तु सोहन लाल उसी प्रकार स्थिर खड़ा, उसकी पीठ पर निगाहें जमाये रहा।

तीरथराम पाहवा ने दोनों हाथ अपनी पीठ पर बांधे और पलटकर सोहन लाल को घूरने लगा। सोहन लाल यथासम्भव चेष्टा के पश्चात, उससे निगाहें मिलाने में कामयाब रहा। पाहवा का चेहरा पत्थर की मानिन्द सख्त हो चुका था।

'तुम जानते हो किसके सामने खड़े हो ?' तीरथराम पाहवा बर्फ के समान स्वर में बोला।

'तीरथराम पाहवा के।' सोहन लाल ने शान्त स्वर में कहा।

'तुम इस समय एक ऐसे इन्सान के सामने खड़े हो जो इस शहर पर हकूमत करता है और इस समय तुम भी शहर में रहने वाले एक मामूली इंसान हो।'

सोहन लाल कुछ क्षण तो अपलक पाहवा का सुर्ख चेहरा देखता रह गया। 'हैरानी है।' सोहन लाल एकाएक व्यंग से हंसा, 'इस शहर पर हकूमत करने वाले इन्सान का मुझसे क्या काम पड़ गया जो अपने कमाण्डो भेज कर...।'

'तुम्हें तुम्हारी हर बात का जवाब मिलेगा।' पाहवा पूर्ववत स्वर में बोला, 'पहले मेरी बात का उत्तर दो, कौन हो तुम ?'

'बात तो तुम ऐसे कर रहे हो जैसे तुम्हें मालूम न हो।' सोहन लाल के चेहरे पर क्रोध उमड़ आया। 'बच्चों की तरह सवाल मत पूछो पाहवा।'

तीरथराम पाहवा के चेहरे पर कई तरह के भाव आकर

गुजर गये। वह टटोलने वाली निगाहों से सोहन लाल को देखने लगा।

'यह आंखें फाड़-फाड़कर क्या देख रहे हो?' सोहन लाल उखड़े अन्दाज में बोला।

'तुम सोहन लाल हो?'

'सरा सर हूं।' सोहन लाल एक-एक शब्द चबाकर बोला।

'कौन से सोहन लाल?'

'जो हैसियत तुम्हारी इस शहर में है। इससे कई गुना ज्यादा हैसियत सिर्फ दो महीने पहले, बम्बई में मेरी थी। शायद उड़ते-उड़ते तुमने बम्बई के अण्डरवर्ल्ड से सोहन लाल की हस्ती के बारे में सुना हो। मेरा अपना गैंग था, पूरे हिन्दुस्तान में मुझसे खतरनाक गैंगस्टर आज तक पैदा नहीं हुआ।' सोहन लाल सख्त स्वर में बोला।

'यह तुम्हारा ख्याल है। लेकिन मेरा नहीं। हो सकता है मैं तुमसे भी ज्यादा खतरनाक इन्सान···।'

'होने को छोड़ो, मतलब की बात करो। मुझे यहां क्यों बुलाया गया है?'

तीरथराम पाहवा अपनी जगह से हिला और वापस कुर्सी पर आ बैठा। निगाहें बराबर सोहन लाल पर टिकी हुई थीं।

'तुम साबित कर सकते हो कि, तुम ही बम्बई के अण्डर-वर्ल्ड के बादशाह सोहन लाल हो।' पाहवा ने शांत स्वर में कहा।

'मुझे क्या जरूरत पड़ी है जो साबित करता फिरूं।'

'जरूरत है। क्योंकि तुम बम्बई के अण्डरवर्ल्ड के बादशाह थे। पुलिस से मुठभेड़ में तुम्हारा गैंग समाप्त हो गया। यहां तक कि पुलिस ने तुम्हारे मरे की तस्वीरें, देश के सारे अखबारों में छापीं, लेकिन तुम पुनः जिन्दा होकर सामने आ गये। कोई बात नहीं, हो सकता है पुलिस ने किसी और की लाश को, तुम्हारी लाश समझ लिया और तुम बच निकले। अब सबसे बड़ा सवाल तो यह उठता है कि तुम बम्बई से सैकड़ों मील दूर यहां क्या कर रहे हो। वहां तुम्हारे इशारे पर पत्ता नहीं हिलता था। गैंग समाप्त हो जाने के पश्चात भी तुम किसी से भी सहायता लेकर

पुनः पहले वाली स्थिती में सामने आ सकते थे, फिर बादशाह बन सकते थे। लेकिन तुम बम्बई से भाग निकले, यही सबसे कमजोर कड़ी है तुम्हारी कहानी में।'

सोहन लाल ने शांति से सिगरेट सुलगाई। परन्तु उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी उंगलियां जोरों से कांप रही हों। वह आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठकर एक साथ कुछ कश खींचे। उसकी आंखें बता रही थीं कि वह तेजी से सोच रहा है।

तीरथराम पाहवा ध्यानपूर्वक उसके चेहरे पर आने वाले भावों को देख रहा था। 'जिस कड़ी को तुम कमजोर कह रहे हो, वही सबसे मजबूत है।'

पाहवा प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखने लगा।

'तुमने अवतार सिंह का नाम सुना है मि0 तीरथराम पाहवा ?'

'हां, सुना है।'

'तो फिर यह भी जानते होंगे कि वह भी बम्बई का बहुत बड़ा दादा है और उसकी जिन्दगी की सबसे बड़ी ख्वाहिश रही कि वह बम्बई अण्डरवर्ल्ड का सबसे बड़ा दादा बने। हर सुबह-शाम वह मेरे मरने की मिन्नतें मांगता था। यानि मेरे मरने के बाद ही वह दादा, अण्डरवर्ल्ड का बादशाह बन सकता था, उससे पहले नहीं। और मुझे मारना उसके बस का नहीं था। इस बात से हम दोनों भली भांति वाकिफ थे।' सोहन लाल ने सर्द स्वर में कहा।

'तुम कहना क्या चाहते हो ?'

'सुनते जाओ। जब पुलिस से मेरी निर्णायक मुठभेड़ हुई तो उसे सुनहरा अवसर मिल गया। जाने कौन सी बुरी घड़ी थी, मुठभेड़ में मेरा गैंग समाप्त हो गया और मैं किसी तरह अपनी जान बचा गया। पुलिस ने जाने किसकी लाश को मेरी समझा-कर मशहूर कर दिया कि मैं मारा गया हूं। तब मैं अजीब सी मुसीबत में फंस गया। मेरा गैंग समाप्त हो चुका था, मैं अकेला था। तभी मुझे खबर मिली कि अण्डरवर्ल्ड में, मेरी जगह अवतार सिंह ने ले ली है। यह सब बारह घण्टों में हो गया। अब अगर मैं अवतार सिंह से टक्कर लेने के लिये पुनः अपना गैंग स्थापित करने की चेष्टा करता तो तब तक मेरे जिन्दा होने की

खबर चारों तरफ फैल जाती। अवतार मेरी हत्या के लिये पूरी बम्बई में पहरा बिठा देता और पुलिस भी मेरी घात में बैठ जाती। यानि कि कुछ कर गुजरने से पहले ही मैं पुलिस की या अवतार सिंह के किसी हरामजादे की गोली का शिकार हो जाता। क्योंकि उससे टक्कर लेने के लिये मेरे पास पर्याप्त साधन नहीं थे। इसलिये खामखाह मैंने मौत के मुंह में कूदना मुनासिब नहीं समझा और चुपचाप बम्बई से निकलकर, इस शहर में आ गया। अगर तुम्हें मेरी यह कहानी भी कमजोर लगी हो तो नई कहानी सुना देता हूं, शायद वह कमजोर न लगे और तुम्हें विश्वास आ जाये कि बम्बई के अण्डरवर्ल्ड का बादशाह दो बर्ष पहले तक, मैं ही था।' आखिरी शब्द सोहन लाल ने व्यंग से कहे।

उसके व्यंग पर पाहवा को कोई तकलीफ न हुई। उसने टेबल की दराज में से सिगार निकाला और उसे सुलगा कर गहरा कश लिया।

'मेरा यह मतलब नहीं था कि तुम 'वह' सोहन लाल हो ही नहीं।' तीरथराम पाहवा के होंठों पर अजीब सी मुस्कान आ ग । 'दरअसल मैं खुद को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मैं तुम्हारे मामले में, कोई धोखा तो नहीं खा रहा।'

'तो अब विश्वास आ गया?'

'नहीं?'

'अभी भी नहीं?'

'बिलकुल नहीं।' पाहवा हंस पड़ा, 'तुमने अपने सोहन लाल होने के तक जुबानी पेश किये हैं! कोई सबूत पेश नहीं किया।'

सोहन लाल उसे घूरने लगा।

इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं मि० पाहवा, अगर बम्बई में तुम इसी तरह मेरे सामने आते तो यकीनन मैं भी ऐसा ही करता। हर तरह से अपना पूरा इत्मिनान करता। वैसे जब तुम्हें विश्वास आ जायेगा कि मैं ही वह सोहन लाल हूं, तो तब तुम मेरा क्या करोगे। मुझे यहां क्यों बुलाया गया है?'

तीरथराम पाहवा ने सिगार का कश लेने के पश्चात बेहद शान्ति से कहा।

'हां! जब मुझे विश्वास आ जायेगा कि तुम वही सोहन

लाल हो तो मैं तुम्हारे सामने बहुत बढ़िया आफ़र रखूंगा।'

'मैं समझा नहीं?' सोहन लाल के माथे पर बल पड़ गये।

'दरअसल इस शहर में दो गैंग जबरदस्त शक्ति के साथ उभरे हैं। उनकी हरकतें बता रही हैं कि वह कभी भी मेरे खिलाफ खड़े हो सकते हैं। मेरे पास जबरदस्त लड़ाके है जो शहर में खून का दरिया बहा सकते हैं। अभी मैं इन बातों पर विचार कर ही रहा था कि तुम्हारे बारे में खबर सुनी। फिर सोचा कि तुम भी मेरे साथ काम करो तो मेरी शक्ति बहुत बढ़ जायेगी। तुम चुटकियों में उन दोनों गैंग्स को मसल सकते हो। यानि कि सारा काम तुम बखूबी संभाल सकते हो। मुझे परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। वैसे भी मैं दो-एक दिन में विलायत जा रहा हूं। वहां मेरा लड़का पढ़ता है। वह किसी कानूनी पचड़े में फंस गया है।'

सोहन लाल का दिल जोर-जोर से उछलने लगा। चेहरा भावहीन रहा। फौरन सिगरेट होंठों में फंसाकर तीन-चार कश खींचे।

'अब तुम क्या करना चाहते हो?'

'मैं अपनी तसल्ली करना चाहूंगा कि तुम वही सोहन लाल हो?'

'कैसे करोगे?'

'आज शाम की फ्लाईट से मैं अपना आदमी बम्बई भेजूंगा, जो किसी प्रकार तुम्हारी तस्वीर हासिल करेगा। उस तस्वीर को देखकर मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास हो जायेगा।'

सोहन लाल के गले में बहुत बड़ा कांटा चुभने लगा।

'अगर मैं कहूं कि मैं तुम्हारे साथ मिलकर काम नहीं करना चाहता तो?'

'गलत बात।' तीरथराम पाहवा स्थिर स्वर में बोला। 'मुझे इन्कार सुनने की आदत नहीं है। इस दुनिया में ऐसा कोई इन्सान नहीं जो मुझे इन्कार करने के पश्चात जिन्दा रहा हो। आगे तुम्हारी मर्जी।'

सोहन लाल के जिस्म में ठण्डी सिहरन दौड़ती चली गई।

'यह तुम बहुत गलत कर रहे हो, मत भूलो कि तुम्हारे सामने कोई ऐरा-गैरा नहीं, बम्बई में आंतक फैला देने वाला

सोहन लाल खड़ा है। मैं चाहूं तो इस शहर में भी आंतक फैला सकता हूं। तुम्हारे सिंहासन की टांगें तोड़ सकता हूं। तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं क्या क्या कर सकता हूं ?'

'तुम सोहन लाल हो, तभी तो मैं तुम्हारे शब्दों को सह रहा हूं।' तीरथराम पाहवा की आवाज सख्त हो गई, कोई और यहां पर आकर बदतमीजी से बोलता तो अब तक मर चुका होता।'

सोहन लाल का जोश ठण्डा पड़ गया। सकपकाया सा वह पाहवा को देखने लगा। पाहवा कठोर निगाहों से उसे देखे जा रहा था।

तभी कमरे में अजीब-सी ध्वनि गूंजने लगी। सोहन लाल चौंका।' तुरन्त तीरथराम पाहवा पर खास असर न हुआ। उसने टेबल पर लगे बटनों में से एक बटन दबाया तो दरवाजा खुलता चला गया।

महेश चन्द्र भीतर आया और सामने आ खड़ा हुआ।

'सर···ई0 पाल देशमुख आपके आदेश का पालन करने से इन्कार कर रहा है।'

'हूं।' तीरथराम पाहवा का स्वर एकाएक बेहद ठण्डा हो गया, 'यानि वह हमारे आदमियों को छोड़ने के लिये रजामन्द नहीं ?'

'नो सर।' महेश चन्द्र ने कहा, 'उसने पहली गलती हमारे आदमियों को गिरफ्तार करके की। दूसरी गलती आपकी आज्ञा ना मानकर की है। बेहतर होगा आप उस पर ऊपर से दबाव डलवाये ताकि···?'

'नहीं महेश नहीं।' पाहवा ने हाथ उठाकर हिलाया। 'ऐसे छोटे छोटे कामों के लिये हम किसी को तकलीफ नहीं देते। सुना है यह ई0—क्या नाम है ?'

'पाल देशमुख।'

'हां, देशमुख, बहुत ही शरीफ और फर्ज की राह पर जान देने वाला है।'

'यस सर।'

'कोई बात नहीं इसे अपना फर्ज पूरा करने दो, हम अपना फर्ज पूरा करेंगे। वैसे इसका कोई सगा-वगा है या नहीं ?'

'है सर। बूढ़ी मां। बीबी और एक बच्चा है।'

'बस इतना ही बहुत है। इन तीनों को गोलियों से उड़ा दो। ताकि अन्य कोई पुलिस वाला तीरथराम पाहवा की ओर हमेशा पीठ करके खड़ा हो।'

'राईट सर।'

'जाओ।'

महेश चन्द्र पलटा और तेज-तेज कदमों से बाहर निकल गया।

सोहन लाल का गला खुश्क होने लगा। उसके सामने पाहवा ने बेहद शान्त भाव से तीन को कत्ल करने का हुक्मनामा जाहिर कर दिया था और आज शाम को उसकी तस्वीर प्राप्त करने के लिये पाहवा, अपने आदमी को बम्बई भेज रहा था। सोहन लाल ने नई सिगरेट सुलगाकर गहरा कश लिया।

'मि0 तीरथराम पाहवा।' सोहन लाल उठने के पश्चात स्थिर स्वर में बोला, 'मेरे ख्याल से हममें जो बात होनी थी, हो चुकी। मैं अब यहां अपनी जरूरत नहीं समझता। तुम अपना आदमी बम्बई भेज सकते हो, ताकि वह मेरी तस्वीर लाये और तुम उस तस्वीर को देखकर मेरी बात की सच्चाई जान सको। मेरा ठिकाना तुम्हारे आदमी जानते हैं, जब जरूरत पड़े मुझे बुला लेना। अब मैं चलता हूं।' कहने के पश्चात सोहन लाल पाहवा को प्रश्न भरी निगाहों से देखने लगा।

पाहवा के होंठों पर एकाएक मुस्कान आ गई।

'हां-हां क्यों नहीं? तुम बेशक जा सकते हो। लेकिन किसी प्रकार की गड़बड़ करने की चेष्टा न करना। हमेशा इस बात का ध्यान रखना कि तुम मेरी निगाहों में हो।'

सोहन लाल ने सिर हिलाया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

सोहन लाल के जाने के पश्चात पाहवा ने रिसीवर उठाकर एक्सटेंशन दबाया, दूसरी तरफ से फौरन रिसीवर उठाया गया।

'जो आदमी अभी-अभी मेरे आफिस से निकला है, उस पर नजर रखो। उसका नाम सोहन लाल है।' कहने के पश्चात तीरथराम पाहवा ने रिसीवर रख दिया।

□ ■

ई0 पाल देशमुख का दो कमरों का छोटा-सा मकान था। पुलिस की नौकरी करके वह अपनी बूढ़ी मां और बीबी बच्चे का पेट पाल रहा था। वह अपनी छोटी-सी दुनिया में खुश था। पत्नी कंचन साविश्री का अवतार थी जैसे। सासू मां को तो वह हमेशा सिर आंखों पर बिठाये रखती। जैसे वह उसकी ही मां हो। ऐसी बहू पाकर ई0 पाल की मां भी धन्य हो गई थी।

ई0 पाल देशमुख इस समय ड्यूटी पर था। उसकी मां नन्हें से बच्चे को उठाये, उसे हंसाने की चेष्टा कर रही थी। कंचन किचन में अपनी सास के लिये चाय बना रही थी।

बीता हुआ वक्त तो ठीक था परन्तु आने वाला वक्त उनके जेहन से कोसों दूर था। सब कुछ खत्म होने जा रहा है इसका तो उन्हें गुमान भी नहीं था।

तभी घर के ठीक सामने सफेद रंग की कार रुकी। ड्राइवर इत्मिनान से बीच में बैठा रहा। पिछली सीट पर बैठे दोनों व्यक्ति नीचे उतरे और शान्त भाव से आगे बढ़ते हुए, खुले दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गये।

सामने ही ई0 पाल की मां फर्श पर बैठी बच्चे से खेल रही थीं। वह दोनों को प्रश्न भरी निगाहों से देखने लगीं।

'ई0 साहब हैं।'

'नहीं बेटे, वह तो पुलिस स्टेशन में होगा, उससे मिलना है तो...।' अभागिन बूढ़ी अपने शब्द भी पूरे न कर सकी।

दोनों ने रिवाल्वरें निकालीं और गोलियां चलानी शुरू कर दीं। गोलियों की आवाज सुनकर, कंचन चीखती हुई किचन से भागती हुई वहां पहुंची ही थी कि कई गोलियां उसके शरीर में में धंस गईं।

बारूद की गंध वहां फैल चुकी थी। गोलियों के धमाके अभी तक गूंजते महसूस हो रहे थे।

ई0 पाल देशमुख की बूढ़ी मां, जवान बीबी और नन्हा सा बच्चा मर चुके थे। खून से उनके शरीर और फर्श लथपथ हो चुका था। दोनों ने बेहद शान्ति से रिवाल्वर जेब में डालीं और

बाहर निकल आये। गली, मोहल्ले के लोगों ने, सबने, उन्हें देखा परन्तु किसी ने उनकी तरफ बढ़ने की कोशिश न की। आगे बढ़ कर, वह कार में बैठे और कार तेजी से आगे बढ़ गई।

उसके बाद सारा इलाका ई0 देशमुख के मकान पर उमड़ने लगा। सबके चेहरों पर दहशत स्पष्ट देखी जा सकती थी। मकान को घेरकर तो सब खड़े थे, परन्तु किसी ने भी भीतर जाने की चेष्टा न की।

▭ ▭

▭ ▭

'हैलो लाल चौंक पुलिस स्टेशन।'

'यस।'

'मुझे ई0 पाल दुशमुख से बात करनी है।

'जस्ट होल्ड आन प्लीज।'

दो पल तक लाईन में खामोशी छाई रही। सोहन लाल रिसीवर पकड़ होंठ काटता हुआ पब्लिक टलीफोन बूथ के फर्श पर जोर-जोर से जूता मारने लगा। कदचित बीतता हुआ एक-एक पल उसे दिन के बराबर लग रहा था।

'हैलो।'

'कौन।' सोहन लाल का दिल धड़कने लगा।

'ई0 पाल देशमुख, आप कौन हैं?'

'सब कुछ भूल कर पहले, मेरी बात का उत्तर दो। तुमने तीरथराम पाहवा के कुछ चमचों को गिरफ्तार कर रखा है?'

'हां? लेकिन।'

'उसने तुम्हें, अपने आदमियों को छोड़ने को कहा और तुम नहीं माने।'

'ठीक कहा आपने, लेकिन।'

'अब मेरी बात ध्यान से सुनो। तीरथराम पाहवा ने मेरे सामने, तुम्हारे परिवार को समाप्त करने का फरमान जारी किया है?'

'क्या?'

'तुम्हारे परिवार में बूढ़ी मां, बीवी और बच्चा है ना?'

'ह···हां।' ई0 पाल देशमुख का स्वर एकाएक कांपने लगा; 'तुम···क·· कौन हो।'

'मैं निहायत ही शरीफ इन्सान हूं और आदतन खून-खराबा पसन्द नहीं करता। बदकिस्मती से उस वक्त मैं पाहवा के पास ही था। अब जो होने वाला है तुम्हें बता दिया है। चाहो तो खुद को बरबादी से ।'

'तुम्हारा नाम?' ई0 पाल देशमुख एकाएक चीखा।

'उल्लू के पट्ठे, जाकर अपने परिवार को बचा, मेरे नाम का अचार डालेगा क्या?' सोहन लाल ने दांत किटकिटाकर कहा और रिसीवर रखने के पश्चात आस्तीन से माथे का पसीना पोंछा और बूथ से बाहर निकल आया।

दिन के तीन बज रहे थे। सूर्य पश्चिम की ओर जाने की तैयारियां कर रहा था। अब उसे भी इस शहर से कूच कर जाना था। क्योंकि तीरथराम पाहवा ने अपना आदमी बम्बई भेजकर सोहन लाल की तस्वीर मगवानी थी, जो उसकी हो ही नहीं सकती थी। क्योकि वह सोहन लाल ही नहीं।

□ □

□ □

सोहन लाल का मस्तिष्क तेजी से दौड़ रहा था। उसे इस शहर से फौरन निकल जाना था। जबकि तीरथराम पाहवा ने खासतौर से चेतावनी दी थी कि वह हर समय उसकी निगरानी में रहेगा। तो क्या पाहवा का कोई आदमी उसके आसपास मंडरा रहा है? सोहन लाल सतर्कता से इधर-उधर देखने लगा। वहां काफी ज्यादा भीड़ थी और इनमें कोई भी उसकी निगरानी करता हो सकता था।

सोहन लाल ने चौराहे से टैक्सी पकड़ी और एक खास दिशा में चलने को कहा। सोहन लाल ने सोचा कि मुमकिन है, पाहवा ने खाली उसे डराने के लिये, यह कहा हो?

खैर जो भी होगा, अभी सामने आ जायेगा।

पन्द्रह मिनट के पश्चात टैक्सी सुनसान इलाके में पहुंच

चुकी थी। सोहन लाल टैक्सी के पीछे लगी हरे रंग की कार को पहचान गया था कि वह लगातार टैक्सी के पीछे है।

'टैक्सी किसी फोन बूथ के पास रोकना।' सोहन लाल ने गम्भीर स्वर में कहा और सिगरेट सुलगा कर कश लेने लगा।

कुछ देर बाद टैक्सी बूथ के बाहर जा रुकी। सोहन लाल नीचे उतरा और बिना दायें-बांये देखे बूथ में प्रवेश करके, रिसीवर उठाया और डायल घुमाने लगा। उसी समय पीछे आ रही हरे रंग की कार फर्राटे से आगे निकल गई।

सोहन लाल ने रिसीवर रखा और वापस टैक्सी में जा बैठा। तभी उसकी निगाह, सामने, सीधी खाली सड़क पर पड़ी। कोई तीन सौ गज के फ़ासले पर, हरे रंग की कार रुकी हुई थी।

'वापस चलो ड्राईवर।' सोहन लाल ने सिगरेट का कश लेकर कहा।

ड्राईवर ने फौरन टैक्सी घुमाई और पूरी रफ्तार से दौड़ाने लगा। सड़क खाली थी। सोहन लाल ने पटलकर देखा। हरे रंग की कार बराबर उसके पीछे आ रही थी। वह सूख रहे होंठों पर जीभ फेर कर सामने देखने लगा। उसकी आंखों से जाहिर हो रहा था कि उसका दिमाग तेजी से दौड़ रहा है। रह-रहकर चेहरे पर तनाव की रेखाएं उजागर हो रही थीं।

टैक्सी में बैठे-बैठे ही उसने किराया चुकता किया और भीड़-भाड़ वाली जगह पर उतर गया। उतरने से पहले वह, शहर से निकल जाने की योजना बना चुका था। दोनों हाथ जेबों में डाले वह, बाजार में लापरवाही से टहलता रहा। आधा घंटा उसने यूं ही व्यतीत किया। फिर एक ऐसी दुकान में प्रवेश कर गया जहां से ड्रामा, नाटक वगैहरा का सामान मिलता था।

उसने वहां से बिलकुल असली लगने वाला नकली रिवाल्वर खरीदा और उसे जेब में डालकर बाहर आ गया। दो कदम चलने के पश्चात वह तुरन्त पलटा और दुकान में इस तरह प्रवेश कर गया जैसे वहां कुछ भूल आया हो। फिर वह तूफान की भांति दुकान के दूसरे रास्ते से बाहर निकला और लगभग भागने की सी गति से चलने लगा। उसका पीछा कौन सा व्यक्ति कर रहा है। यह जानने में उसने खामखाह वक्त बरबाद नहीं

किया भीड़ में कुछ उल्टे सीधे चक्कर काटने के पश्चात, उसने टैक्सी पकड़ी और वहां से पांच-सात मील दूर उतरकर पैदल ही आगे बढ़ गया।

फिर उसे रेस्टोरेण्ट दिखाई दिया तो वहां प्रवेश कर गया। वेटर को चाय, बटर, टोस्ट लाने को कहकर सिगरेट सुलगा ली। उसके बैठने के पश्चात् सात-आठ आदमियों ने भीतर प्रवेश किया। उनमें से किसी ने भी तवज्जो नहीं दी कि सोहन लाल क्या कर रहा है और सोहन लाल ने जरा भी परवाह नहीं की कि रेस्टोरेण्ट में आने वालों में से कोई उसे देख रहा है या नहीं। सोहन लाल को देखने पर महसूस हो रहा था कि उसके लिए कुछ समय सबसे अहम काम, सिर्फ चाय पीना था। बटर, टोस्ट खाने के पश्चात् यह सोहन लाल की पांचवीं चाय थी। उसे सर्व करने वाले वेटर के चेहरे पर परेशानी-सी उभरने लगी थी कि साला चाय पर चाय मंगवाये जा रहा है।

कोई एक घंटा बिताने के पश्चात् सोहन लाल ने वेटर को इशारे से पास बुलाकर बिल चुकता किया और पांच रुपये 'टिप' देने के पश्चात बाहर निकल आया। सिगरेट सुलगाकर, उसने तीन चार कश एक साथ लिए और पलटकर रेस्टोरेण्ट के मुख्य-द्वार को देखा, जहां से तीन व्यक्ति निकले। दो ने उसे देखा भी फिर वह अपने-अपने रास्ते पर बढ़ गये।

सोहन लाल लापरवाही से भरी चाल से चलने लगा। कुछ आगे जाने के पश्चात्, सड़क के दोनों ओर दुकानें शुरू हो गई। एक साड़ी की दुकान से उसने लाल सुर्ख साड़ी और लाल ही रेडीमेड ब्लाऊज खरीदा। फिर रैडीमेड कपड़ों की दुकान से ड्राईवर की सफेद यूनिफार्म ले ली।

इसके साथ-साथ ही वह आस पास भी देखता रहा था। आखिरकार उसे वह व्यक्ति नजर आ गया, जो साये के समान उसके पीछे था। वह तीस साल की उम्र का होगा। सिर पर पुलसियों की तरह छोटे-छोटे बाल थे। तंग मोरी की पेन्ट के नीचे हंटर शू पहन रखे थे। ऊपर हाफ बाजू की कमीज थी। बदन गठा हुआ था। इसे उसने रेस्टोरेण्ट में बैठे भी देखा था और उसके बाहर निकलने के पश्चात्, यही व्यक्ति सबसे पहले बाहर निकला था और अब उसे यहां नजर आया था।

सोहन लाल के चेहरे पर कोई भाव न आया। दोनों हाथों से पकड़े पैकिटों को संभालते हुए वह टैक्सी स्टैण्ड की तरफ बढ़ गया।

टैक्सी में बैठने के, तीन मिनट पश्चात् ही उसे इस बात का अहसास हो गया कि काले रंग की एम्बेसडर कार उसका पीछा कर रही है। पहले हरे रंग की कार और अब काले रंग की? यानि उस पर निगाह रखने वाले एक नहीं, एक से ज्यादा व्यक्ति हैं?

'तुम—।' सोहन लाल टैक्सी ड्राईवर से बोला—'सौ रुपया कमाना चाहते हो।'

'बिल्कुल साहब—। लेकिन मुझे करना क्या होगा?'

'पीछे काले रंग की कार आ रही है। उससे पीछा छुड़ाना है?'

टैक्सी ड्राईवर ने बैक मिरर में काले रंग की कार का निरीक्षण किया। 'ठीक है साहब, आप सौ का नोट तैयार कर लीजिये—।' कहने के पश्चात् टैक्सी ड्राईवर ने गियर बदला। कर, एक्सीलेटर पर पूरा पांव दबा दिया।

सोहन लाल ने जेब में से सौ का नोट निकालकर, हाथ में ले लिया।

□ □

□ □

शाम के आठ बज रहे थे। अंधेरा चारों तरफ फैल चुका था। शहर में चारों तरफ जगमगाहट होने लगी थी। सोहन लाल जानता था कि तीरथराम पाहवा इस शहर की हस्ती था। तगड़ी हस्ती। उसके आदमियों को धोखा देना कोई मामूली बात नहीं थी लेकिन वह धोखा दे चुका था। वह यह भी जानता था कि बेसब्री से उसे तलाश किया जा रहा होगा और किसी भी समय वह तीरथराम पाहवा की गिरफ्त में वापस पहुंच सकता था।

सोहन लाल पूरी सतर्कता के साथ लवर्स लेन में टहल रहा

था।

यह पतली और लम्बी सड़क थी। जिसके दोनों ओर जंगल था। चूंकि उसका इस्तेमाल नहीं होता था इसलिये सड़क पर लाईट का प्रबन्ध नहीं था। वहां घुप्प अंधेरा था और अंधेरा होने पर, अवसर की तलाश में लड़के-लड़कियां यहां आ जाते थे। कोई कार पर, कोई स्कूटर पर और मोटर साईकिलों पर।

नौ बजने तक वहां अच्छा-खासा तांता लग चुका था। जोड़े आ रहे थे, जा रहे थे। आखिरकार सोहन लाल को अपनी मन-पसन्द का जोड़ा मिल गया। नई फिएट कार में बैठे अपनी ड्यूटी भुगता रहे थे। लड़की बीस के आस पास थी और लड़का पच्चीस के ?

दोनों ही खूबसूरत थे। उनकी कार पेड़ों के झुरमुट में खड़ी थी।

सोहन लाल सावधानी से आसपास देखता हुआ कार के पास पहुंचा और बिना क्षण गंवाये ड्राईवर की सीट वाला डोर खोल कर भीतर प्रवेश कर गया। पलक झपकते ही, जेब से नकली रिवाल्वर निकालकर उन पर तान दिया।

दोनों पिछली सीट पर मौजूद थे। फौरन छिटककर अलग हो गये। चेहरों पर हड़बड़ाहट और बौखलाहट उभर आई। परन्तु रिवाल्वर को देखकर आंखें भय से फट गई। दोनों ने कस-कर एक-दूसरे को पकड़ लिया। उनके बदन थर-थर कांपने आरम्भ हो गये थे। चेहरे पीले पड़ गये।

सोहन लाल रिवाल्वर ताने बेहद शान्ति से उनके चेहरे देखता रहा। कुछ देर तक वहां चुप्पी छाई रही। लड़के-लड़की का आतंक चरम सीमा पर पहुंच गया तो सोहन लाल ने अपनी आवाज में दरिन्दगी भरकर कहा।

'अगर चिल्लाने की कोशिश की तो मैं तुम दोनों को शूट कर दूंगा और किसी को मालूम भी नहीं होगा। क्योंकि रिवा-ल्वर में साईलैंसर लगा हुआ है। गोली की आवाज भी नहीं आयेगी। अरे रिवाल्वर को क्या घूर रहे हो। साईलैंसर तुम्हें दिखाई नहीं देगा। यह रिवाल्वर का बिल्कुल नया मॉडल है। साईलैंसर इसके बीच में ही फिट है। कहो तो गोली चलाकर दिखाऊं।'

लड़की के कंठ से घुटी-घुटी चीख निकली और उसने भय से, लड़के को दोनों बांहों में जकड़ लिया। दोनों थर-थर कांप रहे थे।

'हमारे प-पास कु-कुछ नहीं है। जो है, वह तु-म्हें द-दे देते हैं। लड़के ने साहस करके कहा।

'नहीं बच्चों, तुम मुझे गलत समझ रहे हो—! मैं कोई लुटेरा नहीं हूं।' सोहन लाल की आवाज एकाएक मुलायम हो गई—'दरअसल मैं मुसीबत में फंसा इन्सान हूं। कुछ खतरनाक लोग मेरे पीछे पड़े हैं। वह मेरी जान लेना चाहते हैं और मेरी तलाश में शहर का चप्पा-चप्पा छान रहे हैं। मैं इस शहर से बाहर निकलना चाहता हूं और तुम दोनों मेरी सहायता कर सकते हो।'

'म मैं सम-झा नहीं, अ-आप क्या कह रहे हैं।'

'वक्त आने पर सब कुछ समझा दूंगा—। आज रात तुम दोनों को मेरे साथ-साथ रहना होगा। कोई चालाकी की तो गोली मार दूंगा।'

'न-हीं, हम कोई चा-ला-की नहीं करेंगे। लड़का घबराकर बोला।

'यह तो बहुत अच्छी बात कही तुमने। क्योंकि मैं जब भी किसी का कत्ल करता हूं यो मुझे बहुत दुख होता है। अब तुम यहां आ जाओ और मैं लड़की के साथ पिछली सीट पर बैठ जाऊंगा।'

'न-हीं-S-S-S।' लड़की के कंठ से चीख निकली।

'क्या नहीं—?' सोहन लाल गुर्राया।

लड़की की घिग्घ बंध गई। लड़का घबरा उठा।

'आप फिक्र न करें, यह घबरा गई है। अभी ठीक हो जायेगी।' लड़के ने शीघ्रता से कहा। वह डर रहा था कि सोहन लाल कहीं गोली न मार दे।

'तुम आगे आओ।' सोहन लाल क्रोध से बोला।

लड़का फौरन कार के भीतर ही सीट पार करके आगे आया और सोहन लाल पिछली सीट पर पहुंच गया। लड़की सहमकर सीट के कोने में सिमट गई।

'कार स्टार्ट करो और यहां से निकलो।'

लड़के ने कार स्टार्ट करके बैक की और फिर तेज रफ्तार से चलाते हुए लवर्स लेन से बाहर, खुली सड़क पर आ गया।

'तुम दोनों का क्या रिश्ता है। शादी का प्रोग्राम है या खाली-पीली मौज मस्ती हो रही है।' सोहन लाल ने शांत भाव में पूछा।

'शा-दी करने वाले हैं।' लड़के ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा।

दस मिनट तक सोहन लाल के बताये रास्ते पर चलकर कार रुक गई। सोहन लाल ने आस-पास देखा। यह शहर की उजाड़ जगह थी।

'तुम नीचे उतरो और वह सामने पुलिया के पीछे कुछ पैकिट पड़े हैं। उन्हें लेकर आओ। मेरी तरफ क्या देख रहे हो। जल्दी करो।'

लड़का दरवाजा खोलकर, तेज-तेज कदमों से पुलिया की तरफ बढ़ गया।

सोहन लाल ने लड़की को देखा। अकेली होने पर वह थर-थर कांपने लगी थी।

'घबराओ नहीं बेटी ! मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूं। मुसीबत में न होता तो तुम दोनों की तरफ आंख उठाकर भी न देखता।

लड़की गहरी सांसें लेने लगी।

लड़का पुलिया के पीछे पड़े पैकिट उठाकर ले आया। सोहन लाल ने पैकिट थामे और एक डिब्बा लड़की की तरफ बढ़ाकर बोला।

'इसमें दुल्हन की साड़ी, पेटीकोट और ब्लाऊज हैं। इसे ले जाओ और बिना कोई सवाल किये, पेड़ों के पीछे जाकर पहन आओ। एक बात का ध्यान रखना अगर तुमने भागने की कोशिश की तो मैं तेरे आशिक को गोलियों से भून दूंगा और तेरे आशिक ने भागने की कोशिश की तो मैं तुझे गोलियों से भून दूंगा। तीसरे अगर तुम दोनों ने भागने की चेष्टा की तो, मैं तुम दोनों को गोलियों से भून दूंगा।'

लड़की ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और डिब्बा थामे बाहर निकलकर सामने दिखाई दे रहे पेड़ों की तरफ बढ़ गई।

'ज-जल्दी आना—।' लड़के के गले में बड़ा-सा कांटा चुभ

रहा था।

लड़की के जाने के बाद, सोहन लाल हाथ में रिवाल्वर लिये कार से नीचे उतर आया। फिर रिवाल्वर दांतों में दबाया और अपने कपड़े उतारने के पश्चात् ड्राईवर वाली वर्दी पहनी तथा सिर पर वर्दी से मैच करती टोपी पहन ली।

कुछ ही देर में लड़की सुर्ख साड़ी और ब्लाऊज पहने वहां आ गई।

'गुड—!' सोहन लाल ने प्रसन्नता से लड़के से कहा— 'अब तुम कार ले जाओ और इसे फूलों से सजाकर ऐसे लाओ, जैसे ब्याह के पश्चात्, डोली सजी कार होती है।

लड़का सिर हिलाकर कार में बैठा कि सोहन लाल ने कहा।

'तुम्हें याद है न कि अगर तुम वापस न आये तो मैं क्या करूंगा?'

'हां। तु-तुम लड़की को मार दोगे।

'तुम्हारी याददाश्त अच्छी है। पुलिस को इनफार्म करने पर भी यही होगा।

'मैं-मैं कुछ नहीं करूंगा। आधे घंटे में वापस आ जाऊंगा।'

तुम्हारी मर्जी है। आना हो तो आ जाना, नहीं तो घर जाकर सो जाना।'

लड़का कार तेजी से आगे बढ़ा ले गया।

सोहन लाल कमर पर हाथ बांधे बेचैनी से टहलने लगा। लड़की चन्द कदम दूर पेड़ से टेक लगाकर, सोहन लाल को देखती रही। अब उसे विश्वास हो रहा था कि सोहन लाल किसी और तरह का नुकसान नहीं पहुंचायेगा। उसे सिर्फ अपने काम से मतलब है।

आधे घंटे में लड़का, कार को फूलों से सजाकर ले आया।

सोहन लाल को राहत मिली। वरना उसे शक था कि लड़का उड़न छू न हो जाये।

'चलो! अब किसी ब्यूटी पार्लर जाकर, लड़की पर दुल्हन का मेकअप करना है।'

□ □

□ □

'तुम दोनों के नाम—?'

'मेरा दीपक है, यह रजनी।' लड़के ने फौरन उत्तर दिया।

सोहन लाल ड्राईवर को वर्दी पहने कार चला रहा था। पिछली सीट पर दीपक और उसके साथ रजनी दुल्हन के मेकअप में बैठी थीं। साड़ी के घूंघट के कारण आधा माथा ढका हुआ था।

कार तेजी से शहर की सीमा की तरफ दौड़ी जा रही थी। कार पर फूल ही फूल, हार के रूप में चारों तरफ पड़े हुए थे। बिल्कुल डोली से सजी कार लग रही थी। सोहन लाल जानता था कि तीरथराम पाहवा की निगाहों से बचना आसान काम नहीं था। शहर के हर नाके पर उसके आदमी मौजूद होंगे। इसलिये डोली से सजी कार में, ड्राईवर के रूप में छिपकर, उसने भागने की योजना बनाई थी। उसे पूरा विश्वास था कि इस तरह उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जायेगा।

'आप-ह-में कहां ले जा रहें हैं?' दीपक ने साहस इकट्टा करके पूछा।

'घबरा मत बेटे! हम सिर्फ राजगढ़ तक ही जा रहे हैं। वहां पहुंचकर तुम दोनों आजाद हो और कहीं भी जा सकते हो।'

कार तेज गति से भागती रही। सोहन लाल का ख्याल गलत नहीं था। शहर की सीमा पर नाकेबन्दी की गई थी। सीमा बैरियर पर चार कारें खड़ी दिखाई दे रही थी। पुलसिये दूर से हो मुस्तैद दिखाई दे रहे थे।

सोहन लाल ने कार आखिरी कार के पीछे खड़ी कर दी।

'तुम्हें मालूम है ना, क्या और कैसे बात करनी है?'

'ज-जी—।' दीपक सूखे होंठों पर जीभ फेरकर बोला।

'चेहरे पर बारह क्यों बज रहे हैं। मुस्कराओ, यह मत भूलो कि तुम शादी करके आ रहे हो, अपनी मां की चिता को आग देकर नहीं।'

दीपक सकपकाया फिर कठिनता से चेहरे को सामान्य

बनाया। टूटी-फूटी मुस्कराहट भी किसी प्रकार अपने चेहरे पर ले आया।

'साला ठुल्ला आ रहा है।'

सोहन लाल की आवाज सुनकर दीपक ने खिड़की से बाहर देखा। एक हवलदार डण्डा घुमाते हुए कार तक आ पहुंचा था। सोहन लाल खानदानी ड्राईवर की तरह अपनी सीट पर चुप्पी साधे बैठा रहा। कार के भीतर की 'डोम.लाईट' आन थी। रजनी घूंघट ओढ़ पूर्ववतः मुद्रा में थी।

'कार में क्या है?' हवलदार ने पूछा और भीतर झांकने लगा।

'कुछ नहीं हवलदार साहब! दीपक बोला, डोली की कार है। साथ में मेरा ड्राईवर है। लेकिन बात क्या है। इतनी पूछताछ क्यों?'

'एक बहुत ही खतरनाक मुजरिम की तलाश की जा रही है। ठहरो, मैं साब से बात करके आता हूं—।' कहने के पश्चात् हवलदार वापस चला गया।

आगे वाली की जांच पड़ताल हो रही थी।

सुना तुमने—?' सोहन लाल हंसा। 'यह लोग खतरनाक मुजरिम की तलाश कर रहे हैं। यानि मुझे। जबकि मैंने यहां कोई जुर्म नहीं किया। यह हरामजादे जनता के रक्षक हैं। तीरथ-राम पाहवा के हाथों के खिलौने।'

'तीरथ राम पाहवा?'

'यह, पाहवा तो अण्डरवर्ल्ड का दादा है।'

'हां —। उसी हरामजादे से बचने की कोशिश कर रहा हूं। मुझे तलाश करने के लिये कुत्ते ने शहर की पुलिस भी बिखरा दी है।'

दीपक मुंह फाड़े सोहन लाल को देखता रह गया।

'आपकी तीरथराम पाहवा से दुश्मनी है?'

'सुनकर, तेरी मां क्यों मरे जा रही हैं। सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कहा तो दीपक सकपका कर बाहर देखने लगा।

तभी हवलदार, ई० के० साथ आता दिखाई दिया। कार की हैडल.ईट में उनके शरीर चमक रहे थे। साथ में एक बिना वर्दी का व्यक्ति था। सोहन लाल की आंखें सिकुड़ गई। इसमें

दो राय नहीं कि वह व्यक्ति पाहवा का आदमी था और उन्हीं कमाण्डो में से एक था जो उसे फ्लैट पर लेने आये थे। सोहन-लाल के दोनों हाथ स्टेयरिंग पर कस गये। चेहरा भी पत्थर की भांति सपाट हो गया।

'डोली कहां से आ रही है —?' पास आते ही ई0 ने पूछा।

'सिकन्दराबाद से ई0 साहब —। आपको अगर किसी मुज-रिम की तलाश है तो उसे तलाश कीजिए। हमसे इतने प्रश्न क्यों पूछे जा रहे हैं?' दीपक ने झल्लाहट का प्रदर्शन किया।

पाहवा का आदमी आगे बढ़ा। उसने पहले दीपक के चेहरे को देखा फिर रजनी का चेहरा, घूंघट उठवाकर देखा, तत्पश्चात उसकी निगाहें सोहन लाल की पीठ पर केन्द्रित हो गयीं जो वर्दी में बुत की भांति सीधा बैठा था।

'ड्राईवर साहब, अपना चेहरा तो दिखाइये।' पाहवा का आदमी बोला।

सोहन लाल दांत किटकिटाकर रह गया। यह आदमी उसका चेहरा बहुत अच्छी तरह पहचानता था। गर्दन घुमाने का मतलब था मुसीबत में फंसना। उसे पहचानते ही उसने रिवा-ल्वर निकाल लेनी थी। वक्त गंवाना यहां मूर्खता थी। सोहन-लाल ने पहली गियर डाली और एक्सीलेटर पर पूरा पांव दबा दिया।

कार जोरों से उछली, पाहवा का आदमी और ई0 छिटक-कर दूर हो गये। स्टेयरिंग घुमाते हुए, सोहन लाल ने सामने खड़ी कारों से कार को बचाया और आगे बढ़ाता ले गया।

पचास गज के फासले पर खाली ड्रम सड़क के बीचों-बीच कतार के रूप में खड़े थे। सोहन लाल ने परवाह ना की और ड्रमों को टक्कर मारता हुआ, कार भगाता ले गया।

यह सब सिर्फ चन्द सैकिण्डों में हो गया।

पाहवा का आदमी तेज रफ्तार से भागा और ई0 की मोटर साईकिल स्टार्ट करके, कार के पीछे डाल दी।

'यह आपने क्या किया —?' दीपक हड़बड़ाया-सा बोला।

सोहन लाल के दोनों हाथ स्टेयरिंग पर, और पांव एक्सी-लेटर पर दबाया था।

'वह पाहवा का आदमी था और मुझे पहचानता था —।'

सोहन लाल ने भिचे दांतों से कहा—'तुम आगे वाली सीट पर आ जाओ।'

'क-यों?'

'कोई हरामजादा।' सोहन लाल बैक मिरर में देखता हुआ बोला—'मोटर साईकिल पर हमारा पीछा कर रहा है। तुम ड्राईविंग सीट संभालो मैं कार छोड़ना चाहता हूं।'

दीपक बिना आनाकानी किए आगे वाली सीट पर आया। ड्राईविंग सीट संभाल ली। अदला-बदली करते समय कार थोड़ी सी ठहराई और फिर सीधी चलने लगी। इतने में ही दीपक का चेहरा पसीने से भर गया था। वह बार-बार बैक मिरर में, पीछे आ रही मोटर साईकिल को देख रहा था।

'कार की रफ्तार पूरी तेज कर दो।'

दीपक ने ऐसा ही किया। रजनी ने घूंघट उठा दिया था। वह आतंकित दिखाई दे रही थी। चेहरे का मेकअप पसीने से खराब हो रहा था।

'आगे पीछे की लाईटें बुझा दो।'

दीपक ने सोहन लाल के शब्दों पर तवज्जो दी और हैड-लाईट, टेल लाईट बुझा दी। डोमलाईट तो पहले ही बुझा दी गई थी।

'एक्सीडन्ट हो जायेगा।' हैडलाईट बुझाने के कारण दीपक अंधेरे में ठीक तरह से देख भी नहीं पा रहा था। वहां स्ट्रीट लाईट गायब थी।

'हो जाने दो।' सोहन लाल गर्दन घुमाकर, पीछे आ रही मोटर साईकिल को देख रहा था। जबड़े भिचे हुए थे। कार और मोटर साईकिल के बीच दो सौ गज का फासला था। जो कि कम अधिक हो रहा था।

'कुछ आगे जाकर कार की स्पीड कम करना। सोहन लाल बोला।

'क्यों?'

'मैं कार से कूद जाऊंगा। उसके बाद तुम कार सीधा बढ़ाते ले जाना। तुम लोग वापस जा सकते हो। पीछे आने वाले को समझा देना कि तुम दोनों रिवाल्वर के दबाव के तहत, सब कुछ कर रहे थे।'

कार में तीखा सन्नाटा व्याप्त रहा।

दीपक ने कार सीधी की और सोहन लाल लम्बी कूद के सहारे सड़क किनारे बनी झाड़ियों में गिरा। बदन में कई जगह खरोचें आ गयीं। वह फौरन सीधा हुआ और दूर जा रही कार को देखने लगा, जिसकी लाईटें अब रोशन हो उठी थीं।

तभी कुछ गज दूर तेज शोर के साथ सड़क पर से मोटर साईकिल निकल गई। सोहन लाल के होंठों पर मुस्कान आ गई। वह उठकर कपड़े झाडने लगा। सिर पर पड़ी कैप तो छलांग लगाते समय ही गिर गई थी। फिर वह जंगल के रास्ते वापस उसी शहर चल पड़ा जहां से वह भागा था।

□ □

□

रात भर पैदल चलते-चलते जब थक गया तो जंगल में ही कोई मुनासिब जगह देखकर सो गया। सुबह मुंह अन्धेरे ही चल पड़ा। सूर्य की पहली किरण के साथ ही सोहन लाल ने शहर में प्रवेश किया। उसे पूरा विश्वास था पाहवा को उसके शहर से फरार होने की खबर मिल गई होगी। रात साढ़े दस बजे वह बैरियर तोड़कर भागा था। इस बात को अब साढ़े आठ घंटे बीत चुके थे। अब तक तो पाहवा रो-धोकर भी शांत हो चुका होगा। साथ ही उसे इस बात का शत-प्रतिशत विश्वास था कि उसके कमरे की निगरानी नहीं हो रही होगी। क्योंकि पाहवा एण्ड कम्पनी की निगाह में वह शहर से बाहर था।

टैक्सी पकड़कर वह अपने फ्लैट की तरफ रवाना हो गया। रास्ते में लाल बत्ती पर जब टैक्सी रुकी तो उसने अखबार खरीद लिया।

फ्लैट से कुछ पहले टैक्सी रुकवाकर, उसे चलता किया और खुद सावधानी से पैदल ही आगे बढ़ने लगा।

जब उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसके फ्लैट की निगरानी नहीं हो रही तो वह आगे बढ़ा और ताला खोलकर कमरे में प्रवेश कर गया। गन्दे नाले से उठती दुर्गन्ध का भभका उसकी

सांसों में टकराया। उसने आहत भाव से खिड़की को देखा, जिसके पीछे गन्दे पानी का नाला बह रहा था। फिर कपड़े उतार कर बाथरूम में प्रवेश कर गया।

नहा धोकर उसने कपड़े बदले और सिगरेट सुलगाकर, अखबार लिए चारपाई पर जा बैठा। अखबार के प्रथम पृष्ठ पर निगाह पड़ते ही उसके जिस्म में सनसनी-सी दौड़ गई। मस्तिष्क झनझना कर रह गया। शरीर के रोंये, बदन में सिहरन सी पैदा करने लगी। आंखें फटकर चौड़ी हो गई। धोखे वाली बात बिल्कुल नहीं थी।

प्रथम पृष्ठ पर दीपक और रजनी की लाशों की तस्वीरें थीं। जिन्हें नैशनल हाईवे नम्बर छः पर मारा गया था। दीपक के शरीर में दो गोलियां पाई गईं और रजनी को मारने से पूर्व उसके साथ बलात्कार किया गया, फिर उसे शूट किया गया। पुलिस हत्यारे की तलाश कर रही है। तस्वीरों के साथ न्यूज में सिर्फ यही छपा था। उसके नीचे ई० पाल देशमुख के परिवार वालों की हत्या का विवरण और मृतकों की तस्वीरें छपी हुई थीं। खबर में कहा गया था कि यह हत्यायें जाती रंजिश की वजह से की गई हैं। पुलिस सरगर्मी से हत्यारों को पकड़ने की चेष्टा कर रही है।

दो मासूमों को बिना वजह मार दिया गया। सोहन लाल का मस्तिष्क पागल हुआ जा रहा था। दीपक और रजनी उसके कारण ही मारे गये थे। उनको दरिन्दगी से मारा गया था। रजनी के साथ बलात्कार किया गया और यह सब उसी ने किया होगा जो मोटर साईकिल पर उनके पीछे आ रहा था।

उसका चेहरा सोहन लाल की आंखों के सामने घूम गया। मन ही मन उसने दृढ़ निश्चय किया कि दीपक और रजनी की मौत का बदला उसकी जान से लेगा जबकि आज तक सोहन लाल ने किसी का कत्ल नहीं किया था। आदतन वह खून-हत्या से खौफ खाने वाला व्यक्ति था। परन्तु अगर दिमाग बदल जाये

तो उससे बड़ा जिद्दी कोई नहीं था। हथियार रखना उसके असूल के खिलाफ था, लेकिन अब उसे हथियार की सख्त जरूरत महसूस होने लगी।

वह बाहर निकला और कमरे को ताला मारकर बाजार की तरफ बढ़ गया। नाश्ता करने के पश्चात, बिल चुकाया और सिगरेट सुलगाकर बाहर आ गया। उसे कोई ऐसी जगह तलाश करनी थी जहां से रिवाल्वर मिल सके।

तभी सोहन लाल की पीठ पर किसी ने हाथ रखा। सोहन लाल बिजली की सी तेजी से घूमा। वह हर प्रकार के खतरे से निपटने के लिये तैयार था। परन्तु पीछे वाले का चेहरा देखते ही ठिठक गया। वह सुन्दर लाल था। जेबकतरा सुन्दर लाल।

सुन्दर लाल ने आस पास देखा फिर दबे स्वर में बोला।

'उस्ताद, मेरे पीछे आओ।'

कहने के पश्चात वह मुड़ा और आगे बढ़ गया। सोहन लाल असमंजसता से भरी निगाहों से उसे देखता रहा, फिर होंठ काटते हुए उसके पीछे चलने लगा।

दस मिनट चलने के पश्चात वह एक मकान में घुसा और दांई तरफ बने कमरे के बाहर लटक रहा ताला खोलकर, भीतर प्रवेश कर गया। सोहन लाल उसके साथ था। भीतर आते ही सुन्दर लाल ने दरवाजा बन्द किया और बोला।

'क्यों उस्ताद जीने से तंग आ गये हो क्या?'

सोहन लाल ने गहरी निगाहों से उसे देखते हुए सिगरेट सुलगाई फिर कुर्सी पर बैठते हुए, एक टांग दूसरी पर रखकर कह उठा।

'क्या हुआ है?'

सुन्दर लाल ने हड़बड़ाकर, सोहन लाल को घूरा।

'तुम पूछ रहे हो, क्या हुआ है? हैरानी है। तीरथराम पाहवा से दुश्मनी मोल लेने के पश्चात सरेआम घूम रहे हो। शायद मालूम नहीं, आज सुबह से ही अण्डरवर्ल्ड में हंगामा मचा हुआ है। हर किसी की जुबान पर तीरथराम पाहवा और सोहन लाल यानि कि तुम्हारी ही चर्चा है। पाहवा तुम्हें हर कीमत पर जिन्दा पाना चाहता है। उसने इस शहर के दादाओं में ऐलान कर दिया है कि जो तुम्हें जिन्दा पकड़कर उसके हजूर

में पेश करेगा, उसे वह मोटा इनाम देगा। रात तुम शायद भागने के चक्कर में विशालगढ़ की तरफ गये थे, इसलिये उसने विशाल गढ़ के दादाओं में भी यही एलान किया है। अब हर कोई तुम्हें पकड़कर, तीरथराम पाहवा की आंखों का तारा बनने का सपना देख रहा है।'

'तुमने तारा बनने की चेष्टा क्यों नहीं की ?'

'उस्ताद, एक बार तो मैं जरूर कोशिश करता, अगर तुम्हारी जगह कोई और होता। मैं अहसान फरामोश नहीं हूं जो भूल जाऊं। मेरी यह जिन्दगी तुम्हारी दी हुई है। उस दिन तुम मुझे न बचाते तो वह हरामजादे दादा लोग मुझे काटकर किसी गन्दे नाले में बहा देते। तुम्हारे कहने पर ही उन लोगों ने मेरी जिन्दगी बख्शी थी फिर मैं तुम्हें मौत के मुंह में जाने की कोशिश कैसे कर सकता हूं ?'

सोहन लाल के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान आ गई।

'हो तो जेबकतरे, लेकिन ईमान बहुत ऊंचा पाया है।'

'लेकिन उस्ताद तुम बम्बई वाले सोहन लाल नहीं हो, यह तो सब को मालूम हो चुका है। अब यह बताओ कि तुमने झूठ क्यों बोला ?'

'मेरा तो धन्धा ही यही है।' सोहन लाल हंसा, 'किसी नये शहर में जाता हूं और खुद को दूसरे शहर के अण्डरवर्ल्ड का दादा साबित करके, माल झाड़कर रफूचक्कर हो जाता हूं। बहुत माल पीटा है इस धन्धे से। लेकिन इस बार पाहवा के बीच में कूद पड़ने के कारण पासा पलट गया।'

'खैर कुछ भी हो उस्ताद, मैं यह नहीं भूल सकता कि तुमने मेरी जान बचाई थी। तुम मुझे पूरी बात बताओ क्या हुआ था, अभी कई प्रश्न मेरे मस्तिष्क में घूमरे हैं।'

सोहन लाल ने उसे सब कुछ बता दिया। कुछ देर तक वहां सन्नाटा छाया रहा।

'उस्ताद, मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हें इस शहर से बाहर निकाल सकूं।'

'नहीं।' सोहन लाल शांत किन्तु दृढ़ स्वर में बोला, 'अभी तो इस शहर से बाहर जाने की इच्छा बिल्कुल भी नहीं है।'

'क्यों उस्ताद ?'

'दरिन्दगी की भी हद होती है। दीपक और रजनी बेकसूर थे। उन्हें ख्वामख्वाह बर्बता से मार दिया गया। मैं इन दो हत्याओं का सबक पाहवा को सिखाना चाहता हूं। जिसने उन दोनों को मारा है। मैं उसे पहचानता हूं और उसकी हत्या करने के पश्चात ही, इस शहर से बाहर जाऊंगा।'

'क्या कह रहे हो उस्ताद, तु—तुम पाहवा के आदमी की हत्या करोगे ?'

'हां।' सोहन के दांत भिंच गये, 'उस हरामजादे को उसके किये की सजा जरूर दूंगा। तु—तुम—कहीं से मुझे रिवाल्वर दिलवा सकते हो ?

सुन्दर लाल ने गले से थूक निगली और सहमति से सिर हिला दिया। चेहरे पर भय की सफेदी उभर आई थी।

□ □

□ □

ई0 पाल देशमुख ने अपनी बूढ़ी मां, जवान बीवी की चिताओं को आग दी और नन्हें मे बच्चे को पानी में बहा दिया। उसकी आंखें अंगारों की तरह लाल हो रही थीं। एकाएक वह कई बरस बूढ़ा लगने लगा था। आंखों के सामने बार-बार लाशें घूम रही थीं। लाशों को अग्नि देते समय उसके डिपार्टमेंट के कई बड़े आफिसर वहां मौजूद थे। स्वयं एस0 पी0 खन्ना आया था।

अब घर में दो-चार पुलिस वाले और चंद पड़ोसी थे।

फिर वह भी चले गये। पड़ौस की बूढ़ी और उसके साथ काम करने वाला सब ई0 मेहरचंद रात भर उसके साथ रहा। ई0 पाल देशमुख की आंखों में नींद का नामोनिशान भी नहीं था। दिन निकलने पर वह नहा धोकर, कपड़े बदलने के पश्चात, सीधा हैडक्वाटर पहुंचा।

इसमें कोई दो राय नहीं थी कि तीरथराम पाहवा ने ही उसके परिवार का खात्मा कराया है। गर्मा-गर्मी में वक्त नहीं मिला था। अब इस बारे में एस0 पी0 से बात करना चाहता था।

दरवाजा धकेलकर वह भीतर आया तो एस0 पी0 खन्ना किसी फाईल में व्यस्त था।

'आओ देशमुख।' एस0 पी0 खन्ना सहानुभूति भरे स्वर में बोला।

पाल देशमुख के होंठ हिले, परन्तु कोई शब्द ना निकला।

'आराम से बैठो ई0 पाल।'

ई0 पाल टूटे कदमों से चलता हुआ कुर्सी पर जा बैठा।

'जो कुछ भी हुआ उसका सख्त अफसोस है। डिपार्टमेंट पूरी कोशिश करेगा कि हत्यारों को पकड़कर, फांसी पर चढ़ा दिया जाये।'

'मुझे आपकी बात पर पूरा विश्वास है।'

ई० पाल की बात बीच में ही अधूरी रह गई। टेबल पर पड़ा फोन बजने लगा। एस0 पी0 खन्ना ने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया।

'हैलो ओह पाहवा, कहो भई, हमारी कैसे याद आ गई। हां-हां ऐसा ही कहोगे, तुम हो ही ऐसी चीज हां हां-हां-हां कहो। क्या आज शाम को तुम्हारा जन्मदिन है, मेरा आना जरूरी है क्या? नहीं भई, मैं गरीब बन्दा हूं और तुम्हारे जन्मदिन पर मामूली सा तोहफा ही दे सकता हूं। ओ० के० माई डियर तीरथराम पाहवा। मैं शाम को हाजिर हो जाऊंगा। दोस्तों का जन्मदिन हो और मैं न आऊं यह कैसे हो सकता है।' हंसते हुए एस0 पी0 खन्ना ने रिसीवर रख दिया। चेहरे पर से खुशी झलक रही थी।

ई0 पाल देशमुख का चेहरा पत्थर की भांति सपाट हो चुका था। मस्तिष्क में सिर्फ एक ही नाम गूंज रहा था। तीरथराम पाहवा? क्षण भर के सौवें हिस्से में उसने अपने मस्तिष्क से यह विचार निकाल दिया कि वह अपने परिवार के समूचे नाश का कारण, 'पाहवा' को नहीं बतायेगा। एस0 पी0 खन्ना और तीरथराम पाहवा दोस्त हैं। कुछ भी कहना फिजूल होगा।

'हां तो तुम क्या कह रहे ई0 पाल।'

ई0 पाल देशमुख की विचारतन्द्रा भंग हुई। वह सपाट स्वर में बोला।

'जी मैं कह रहा था कि मुझे पूरा विश्वास है कि डिपार्टमेंट

मेरे परिवार के हत्यारों को अवश्य खोज निकालेगा।'

'क्यों नहीं, आखिर यह पुलिस डिपार्टमेंट की इज्जत का सवाल है।' एस0 पी0 खन्ना ने फौरन सिर हिलाया, 'मैं समझ नहीं पा रहा हूं। तुम्हारा दुख: किस प्रकार बांटूं। अगर हत्यारे मेरे सामने आ जायें तो मैं-मैं ।'

ई0 पाल देशमुख उठ खड़ा हुआ।

'मैं चलता हूं सर।'

'हां हां क्यों नहीं। तुम चाहो तो दो महीने की छुट्टियां ले लो।'

'तेहरवीं तक तो मुझे वक्त नहीं मिलेगा, उसके बाद मैं इस बारे में सोचूंगा।' ई0 पाल ने हौले से सिर हिलाया फिर इजाजत लेकर बाहर निकल गया।

बाहर आकर वह छांव में खड़ा हुआ और सड़क पर दौड़ते वाहनों को देखने लगा। उसका मस्तिष्क जाने कहां-कहां भटक रहा था। आंखों के कोने-कोने तक परेशानी की लहर थी। होंठ कभी भिंच जाते तो कभी लटकने लगते।

फिर वह वहां से हिला और पैदल ही आगे बढ़ने लगा।

जाने कब तक चलता रहा। सुबह उठने के पश्चात से अब तक कुछ भी नहीं खाया था। इसी कारण ही एकाएक पेट में दर्द सा उठा। उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और आस पास देखा। फिर एक गली में प्रवेश कर गया।

गली के कोने में रेस्टोरेण्ट था। वहां से उसने चार अंडों का आमलेट खाया और बाहर निकलकर टैक्सी पकड़ ली। खाने के बीच वह फैसला कर चुका था कि उसे क्या करना है?

तीरथराम पाहवा जैसी खतरनाक हस्ती से टकराना, उसके लिये नामुमकिन नहीं था। लेकिन अपने परिवार की सामूहिक हत्या का प्रतिशोध लेना उसकी जिन्दगी का अब अहम हिस्सा था। कानून द्वारा पाहवा को सजा नहीं दिलवाई जा सकती थी। क्योंकि इस शहर के कानून की धाराएं सिर्फ उसके इशारे पर चलती थी। वह कानून का मामूली सा नुमाईन्दा था और कानून पाहवा के लिए खेल था। उसकी उंगलियों पर नाचता था। कानून की दफाएं तोड़कर, उन्हें जोड़ना उसका शौक था। पाहवा जैसी हस्ती से टकराने का साहस आम आदमी में नहीं

हो सकता था। कुछ ऐसा ही उसके साथ था। वह पुलिस आफिसर जरूर था लेकिन इतना हिम्मती नहीं था कि तीरथराम साहबा के खिलाफ जेहाद छेड़ सकता।

इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि टैक्सी सैंट्रल जेल के सामने रुकी। ई० पाल ने किराया चुकता किया और बड़े से फाटक की तरफ बढ़ गया। वहां खड़े दोनों पहरेदार उसे बहुत अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने ई0 पाल को सैल्यूट दिया और बड़े से फाटक के बीच लगा छोटा-सा दरवाजा खोल दिया तो वह भीतर प्रवेश कर गया। चेहरे पर सर्द भाव छा चुके थे। सिकुड़ी-सी निगाहें वहां दिखाई दे रहे कैदियों को देखने लगीं। साथ ही कदम जेलर के कमरे की तरफ बढ़ते जा रहे थे। अब टांगों में कम्पन नहीं हो रहा था बल्कि चाल में दृढ़ता व्याप्त थी। चेहरा, अपने द्वारा किये गये फैसले के प्रति, निर्णायक ढंग से, खामोश सहमति प्रदान कर रहा था।

जेलर रामसरन गुप्ता बावन वर्षीय अच्छी सेहत वाला चुस्त व्यक्ति था। सिर पर नहीं के बराबर बाल थे। चेहरा किसी सेब की भांति सुर्ख था। पेट सामान्य ढंग से आगे बढ़ा हुआ था। किसी जमाने में वह, होंठों पर मूंछें रखता था। परन्तु अब वह क्लीन शेव रहना ही पसन्द करता था।

कमरे के बाहर ही जेलर रामसरन गुप्ता के नाम की तख्ती लगी हुई थी। बाहर खड़ा चपरासी बीड़ी फूंकने में व्यस्त था। दूर से कैदियों का शोर, कानों में पड़ रहा था। चूंकि ई0 पाल यहां कई बार आ चुका था इसलिए अमूमन हर कोई उसे पहचानता था। चपरासी ने उसे देखकर सैल्यूट दिया, बीड़ी वाला हाथ फौरन पीठ पीछे पहुंच गया।

ई0 पाल अपने विचारों में खोया, दरवाजा धकेलकर भीतर प्रवेश कर गया। जेलर रामसरन गुप्ता अपने आफिस में टहल रहा था। किसी के भीतर आने की आहट पाकर वह ठिठका, और पलटकर देखा।

दोनों क्षण भर एक-दूसरे को देखते रहे थे। जेलर रामसरन गुप्ता के चेहरे पर दर्द के भाव विद्यमान होने लगे। जबकि ई० पाल का चेहरा पत्थर की भांति हो रहा था।

जेलर रामसरन गुप्ता आगे बढ़ा और उसके कंधे पर हाथ

रखकर बोला, 'कैसे हो पाल ?'

'अच्छा हूं।' ई0 पाल ने स्थिर स्वर में कहा।

'मैंने तुम्हारे परिवार के बारे में अखबार में पढ़ा तो...।'

'बहुत दुखः हुआ, यही ना ?' ई0 पाल ने उसकी बात काट-कर अजीब से लहजे में कहा।

जेलर रामसरन गुप्ता ने गम्भीरता से, मूक सहमति दी।

'सबको ही दुःख होता है, ऐसी बातें सुनकर खुशी नहीं होती।' ई0 पाल वहां से हिला और शांत स्वर में कहते हुए, आगे बढ़कर कुर्सी पर बैठ गया, 'आप की बेटी राधिका कैसी है ?'

'अच्छी है। उसे बहुत अच्छे ससुराल वाले मिले हैं।' राम-सरन गुप्ता उसे गहरी निगाहों से देखने लगा।

ई0 पाल काफी देर तक कुछ नहीं बोला। खामोश बैठा टेबल पर फैला रखे अपने हाथों को देखता रहा।

रामसरन गुप्ता उसके सामने, टेबल कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

'अपने पर काबू रखो पाल. जिन्दगी में कभी-कभी ऐसा।'

'जेलर साहब।' ई0 पाल की आंखें जलने लगीं, चेहरा सुलग उठा, 'मेरी बूढ़ी मां, जवान बीवी, छोटा सा बच्चा, निर्म-मता से मार डाला गया और आप कहते है मैं खुद पर काबू रखूं; बहुत खूब। दूसरों को तसल्ली देने की कला सबको आती है, परन्तु खुद को तसल्ली पर रखना बहुत कठिन होता है। सिर्फ तीन साल पहले की बात है जब कुछ बदमाशों ने आपकी बेटी राधिका का अपहरण कर लिया था। तब रोते हुए आपने मेरे पांव पकड़ लिये थे कि मैं आपकी बेटी को बचा लूंगा। तब, जबकि वह जिन्दा थी, आप दहाड़े मार-मारकर रो रहे थे। मेरा तो सब कुछ खत्म हो चुका है और आप कहते हैं कि मैं अपने पर काबू रखूं।'

जेलर रामसरन गुप्ता ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। चेहरे पर दर्द के भाव लहरा रहे थे। आंखों में ई0 पाल के प्रति दया थी।

तब जबकि आपकी बेटी बदमाशों के कब्जे में थी, मैंने तीन दिन; बिना सोये भाग दौड़ करके आपकी बेटी को बचा लिया

था। याद है आपको ?'

'म-मैं यह कैसे भूल सकता हूं।' रामसरन गुप्ता मन ही मन तड़प उठा।

'तुमने तब मुझे नई जिन्दगी दी थी। मेरे परिवार को तबाह होने से बचाया था। मेरी बेटी की जिन्दगी आज तुम्हारी ही दी हुई है। लेकिन तु-तुम कहना क्या चाहते हो ?'

'जब मैंने आपकी बेटी को आपके हवाले किया था तो याद है आपने क्या कहा था ?' ई0 पाल की हालत विक्षिप्तों की भांति हो रही थी। आंखों में आंसुओं से डूबे अन्गारे भड़क रहे थे। 'आपने कहा था कि जिन्दगी में कभी मेरी जान की जरूरत पड़े तो बेटा, बेहिचक मेरे पास आ जाना।'

'हां।' रामसरन गुप्ता के चेहरे के भाव बदल गये। 'मैं एक बार कहने के पश्चात, भूलता नहीं, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने यही कहा था और आज भी यही कहता हूं, बोलो, किस रूप में आज तुम्हें मेरी जान की जरूरत है। चूंकि मैं तुम्हारे अहसान के नीचे हूं, इसलिये तुम्हारा एक इशारा मेरे लिये काफी होगा। मेरे होंठों से ना नहीं निकलेगी, आजमाकर देख लो। 'बोलो क्या चाहते हो ?' जेलर रामसरन गुप्ता के चेहरे पर असीम दृढ़ता के भाव छा चुके थे।

ई0 पाल ने सर्द निगाहों से रामसरन गुप्ता को देखा फिर कुर्सी से उठकर पीछे खुला दरवाजा बन्द किया और पलटकर बोला।

'जेलर साहब, मुझे आपकी जान नहीं, शंकर दास चाहिये।'

'शंकर दास ?' जेलर रामसरन गुप्ता चौंककर उछल पड़ा। हैरानी से फटी फटी निगाहें उस पर जा टिकीं।

'हां जेलर साहब ! मुझे शंकर दास चाहिये।' ई0 पाल एकाएक शब्द चबाकर बोला, 'आज यह जानने का वक्त आ गया है कि आप वास्तव में मेरे अहसान के नीचे हैं या आज तक डायलाग ही बोलते रहे हैं।'

'तु-तुम पागल हो गये हो क्या ?' जेलर रामसरन गुप्ता स्थिर स्वर में कह उठा। शंकर दास बहुत ही बर्बर, जालिम और दरिन्दा है। शहर में शेर आ जाये तो इतना आतंक नहीं उठेगा जितना कि शंकर दास के खुलेआम सड़क पर आ जाने से

पैदा होगा। तु-तुम तो शंकर दास को भली भांति जानते हो। उसे तुमने ही तो पकड़ा था। मैं आज तक हैरान हूं कि वह तुम्हारे काबू में कैसे आ गया, जबकि तुम्हारे जिस्म में, उसके द्वारा चलाई गई दो गोलियां, धंसी हुई थीं।'

'तभी तो शंकर दास की जरूरत है मुझे, क्योंकि यह मैं ही जानता हूं, वह कितना खतरनाक, वहशी दरिन्दा है। लोगों ने तो उसके कारनामे सुने है जबकि मैंने उससे टक्कर ली थी। आज वही दरिन्दा मेरे दिल में जल रही तीन चिताओं की आग को ठण्डा कर सकता है?'

'क-क्या मतलब?' जेलर रामसरन गुप्ता ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी, 'जेलर साहब, मेरे खानदान को जिसने गोलियों से उड़ा दिया है उसे मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं और उतनी ही अच्छी तरह जानता हूं कि मैं उससे अपने खानदान की तबाही का बदला नहीं ले सकता। लेकिन शंकर दास बखूबी उससे टक्कर ले सकता है। मैं शंकर दास को मोहरा बनाना चाहता हूं। शंकर दास उस इंसान का एक-एक जर्रा बिखराकर रख देगा।'

'नहीं।' जेलर रामसरन गुप्ता बेचैनी से दोनों हाथ मलता हुआ बोला, 'यह सरासर असम्भव बात है। आज सत्रह तारीख है। इक्कीस को उसे फांसी हो रही है। शंकर दास तुम्हें नहीं मिल सकता पाल।'

'आप चाहें तो मुझे मिल सकता है।' ई0 पाल के जबड़े भिच गये। आंखों में लाली व्याप्त हो गई, 'शंकर दास को फरार करवाया जा सकता है मैंने आपकी बेटी की इज्जत और उसकी जान बचाई थी। इस बात को ध्यान में रखकर मेरी बात का जवाब दीजियेगा जेलर साहब, आपने मुझे वचन दिया था कि वक्त आने पर आप मुझे अपनी जान भी दे सकते हैं। आज मैं मुसीबत में हूं और मुझे आपकी जान नहीं, सिर्फ सहायता चाहिये। शंकर दास को फांसी नहीं होनी चाहिये। आज की तारीख में शंकर दास मेरे लिये बहुत ही क़ीमती चीज है।'

'पागल मत बनो पाल—मैं•••,'

'मुझे बहलाने की चेष्टा न कीजिये जेलर साहब, क्योंकि जब आपकी जवान बेटी का अपहरण किया गया था तो मैंने

आपको बहलाया नहीं था। बल्कि अपनी औकात से ज्यादा मेहनत और दौड़ धूप करके, उसे अपनी ही बहन समझकर, तलाश करने की चेष्टा की और कामयाब भी रहा। आपकी बेटी को तलाश करने का वायदा किया था और वायदा पूरा करके दिखाया था जेलर साहब। दोनों हाथ फैलाकर, मजबूरी जाहिर करते हुए यह नहीं कहा था कि नब्बे करोड़ की जनसंख्या में से आपकी बेटी को कैसे तलाश करूं। क्योंकि आपने अपनी इज्जत की दुहाई देते हुए मेरे पांव पकड़ लिये थे और रो रहे थे। जवान बेटी के अपहरण होने के दुख का अहसास तो मुझे नहीं हो सकता था लेकिन मैं महसूस अवश्य कर सकता था और मैंने महसूस किया था तभी तो मैंने आपसे वायदा किया था कि आपकी बेटी को जल्द से जल्द ढूंढ़कर ला दूंगा। ठीक इसी तरह आप यह भी महसूस कीजिये कि मेरे परिवार को गोलियों से उड़ा दिया गया और उनकी चिताओं के अंगारे मेरी छाती पर बोझ बने, सुलग रहे हैं।'

जेलर रामसरन गुप्ता बुत की मानिन्द उसे देखता रहा।

'आपने कहा था कि मेरे परिवार की मौत का आपको दुःख है। अगर वास्तव में दुख है तो मेरा दुख बांटिये जेलर साहब! आपकी बेटी तलाश करके मैंने आप पर वास्तव में अहसान किया था कि वक्त आने पर आप मेरे लिये अपनी जान भी दे देंगे, अगर वह वायदा सच्चा था तो उस वायदे को पूरा कीजिये जेलर साहब! अगर आप यह सब नहीं कर सकते तो मर्दों की तरह मुंह खोलकर इंकार कर दीजिये, ताकि मैं किसी और शंकर दास को तलाश कर सकूं।'

जेलर रामसरन गुप्ता की मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं आया।

भिचे दांतों से ई0 पाल ने टेबल पर घण्टी पर हाथ मारा। बाहर घण्टी बजने की आवाज सुनाई दी।

'मैं शंकर दास से मिलना चाहता हूं। किसी को मेरे साथ कर दीजिये ताकि मुझे उसके पास छोड़ आये।' ई0 पाल जेलर की आंखों में देखता हुआ कह रहा था। 'वापसी पर मैं आपसे अपनी बात का जवाब लूंगा, तब तक सोच लीजियेगा।'

तभी दरवाजा खुला और बाहर खड़े चपरासी ने भीतर

प्रवेश करके सैल्यूट दिया, 'हुक्म साब।'

जेलर कुछ सामान्य स्थिति में आया।

'वार्डन, राजकिशोर को बुलाओ।' जेलर ने धीमे स्वर में कहा और चपरासी सैल्यूट मारकर बाहर निकल गया।

□ □

□ □

जेल का यह खास हिस्सा था। यहां आम या मामूली कैदिय को नहीं रखा जाता था। इन अंधेरी कोठरियों में सिर्फ वही कैदी रखे जाते थे जो बेहद ही खतरनाक और मानवता के नाम पर कलक हों। जिनके लिये इन्सान की कीमत चींटी के बराबर हो, और इन कोठरियों में मौजूद सब कैदियों को फांसी मिल चुकी थी। अंधेरे से भरी छोटी-छोटी कोठरियों में पड़े रहने के बावजूद भी इनके हाथ पांवों में मोटी-मोटी जंजीरों की बेड़ियां डालनी पड़ती थीं। इसलिये कि कहीं सिपाही या खाना लाने वाले को नुकसान न पहुंचा दें, या फिर इनमें से कोई फरार होने की चेष्टा न करें।

फांसी पाये कैदियों से हर तरह की उम्मीद की जा सकती थी। इसी कारण इन्हें कोठरियों से बाहर, तभी निकाला जाता जब बहुत ही जरूरत पड़ती। नहीं तो इन्हें आसमान देखना तक नसीब नहीं होता था।

यह जगह अक्सर सुनसान ही रहती। सिर्फ खाने के वक्त ही कदमों की आहट गूंजती या फिर दिन में दो दफा कोठरियों में पड़े मटकों में बाहर से पानी डालकर भरा जाता। उसके बाद फिर मौत सा सन्नाटा छा जाता।

वार्डन राजकिशोर, ई० पाल को सबसे आखिरी कोठरी के सामने छोड़ गया। कोठरी में अंधेरा छाया हुआ था। उसके वहां रुकते ही बेड़ियों और जंजीरों की खनखनाहटें सुनाई दीं।

ई० पाल ने निगाह घुमाकर देखा, जिस गैलरी से आया था, वह सुनसान पड़ी थी। दिन में भी वहां अंधेरा था जिसे दूर करने के लिए बल्ब जल रहे थे। वार्डन राजकिशोर, गैलरी पार

करके जा चुका था।

ई० पाल की नजरें पुनः अंधेरे से भरी कोठरी पर जम गई। हाथ बढ़ाकर उसने कोठरी के बाहर लगा स्विच दबाया, कोठरी के भीतर लगा बल्ब रोशन हो उठा।

पैंतालिस वर्षीय शंकर दास बेड़ियों में जकड़ा, सीधा खड़ा उसे ही देख रहा था। कसरती गठा हुआ बदन। घुंघराले बाल। बदन पर कैदियों की वर्दी। परन्तु चेहरा क्लीन शेव था। लगता था जैसे सुबह ही शेव कराई हो।

दोनों कई पल एक-दूसरे को देखते रहे। एकाएक शंकर दास ठठाकर हंस पड़ा। बेड़ियों की खनखनाहट वहां गूंज उठी।

'आओ ई० आओ।' शंकर दास ने अपनी हंसी रोकते हुए कहा, 'शायद यह देखने आये हो कि ज्यों-ज्यों फांसी का दिन नजदीक आता जा रहा है, त्यों त्यों मेरी क्या हालत हो रही है। लो देख लो, अच्छी तरह देख लो ई0 पाल देशमुख, शंकर दास शान से जिया है और शान से मरेगा। मेरी सेहत में कोई फर्क नहीं नजर आ रहा होगा तुम्हें। हर रोज पेट भरकर खाता हूं। आज कल तो भूख कुछ ज्यादा ही लगने लगी है। इसी से तुम अन्दाजा लगा सकते हो कि मुझे मौत का कोई गम, भय या खौफ नहीं। आज सत्रह तारीख है सिर्फ चार दिन और उसके बाद मुझे फांसी पर लटका दिया जायेगा। इक्कीस तारीख को शंकर दास की मौत पर हस्ताक्षर किये जायेंगे। तुम शायद यही जानने आये थे कि मौत को नजदीक देखकर मुझे कैसा महसूस हो रहा है।'

ई0 पाल दोनों हाथ जेबों में डाले शान्ति से उसे देखता रहा।

'क्यों ई0, मुझे खुशी के हाल में देखकर तुम्हें सांप तो नहीं सूंघ गया।'

ई0 पाल पूर्ववत: मुद्रा में खड़ा रहा।

'कमाल है।' शंकर दास मुस्कराया, 'खुद चलकर मेरे पास आये हो और बोल भी नहीं रहे। सच मानो ई0 मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं। तुमने अपनी डयूटी निभाई थी। अपना फर्ज पूरा किया था। मुझे कानून के सींखचों के पीछे फैंककर। बहादुर मां के बेटे हो, वरना कई पुलिस वाले मुझे गिरफ्तार करने के चक्कर

में, बारी-बारी मेरे हाथों से मरते रहे। वह जंग सिर्फ तब तक की थी जब तक मैं आजाद था। अब तो मेरी किसी से दुश्मनी नहीं। मैंने तुम पर गोलियां चलाईं। तुम्हें घायल किया तो इसलिये कि तुम मुझे पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। फिर जब तुमने मुझे पकड़ लिया, तो तुम बाजी जीत गये। मौत के खेल में तो हार-जीत चलती ही रहती है। इसलिये ज्यादा देर दुश्मनी नहीं रखनी चाहिये और ।'

'मैं दुश्मनी खत्म करने में यकीन रखता हूं।' ई0 पाल ने उसकी बात काटकर कहा, 'तुम्हें मैंने फांसी के फंदे पर पहुंचा दिया तो दुश्मनी खत्म हो गई। वैसे मेरी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं थी। बल्कि कानून की दुश्मनी तुमसे थी और वह बात कब की समाप्त हो चुकी है।'

'यही तो मैं कहना चाहता हूं ई0 कि अब हमें दोस्तों की तरह मिलना चाहिये। कुछ ही दिनों का मेहमान हूं इस दुनिया में इसलिये सबसे हंस-बोलकर जाना चाहता हूं।' शंकर दास के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान आ गई।

'आज तुम्हारी बातें सुनकर कौन कह सकता है कि तुमने सिर्फ बीस दिन में बाईस लोगों को चुन चुनकर कत्ल किया था।'

'वक्त-वक्त की बात है ई0।' शंकर दास लापरवाही से बोला, जैसी हरामजादी बीवी मुझे मिली थी, उसके किए कारनामों को देखकर, हर शरीफ और इज्जतदार इन्सान ऐसा ही करता। और तुम सुनाओ बाहर का मौसम कैसा है ? बहुत दिन हो गये सूर्य की रोशनी देखे, अब तो सिर्फ दिन का उजाला ही देखूंगा इक्कीस तारीख को, जब फंदा मेरे गले में डाला जायेगा। मेरी दिली ख्वाहिश है कि मुझे फांसी के बाद मेरे जिस्म को तुम ही आग देना। मेरे बैंक में कुछ पैसा पड़ा है, वह तुम्हें दे जाऊंगा। उस पैसे से मेरी चिता का शानदार प्रबन्ध करना, मैं नहीं चाहता कि सरकार गीली लकड़ियों से, मेरे जिस्म को आग लगाये। जिन्दगी भर तो सुलगता रहा हूं। मरने के बाद नहीं सुलगना चाहता।' शंकर दास हंस पड़ा।

ई0 पाल ने जेबों से दोनों हाथ निकालकर अपनी आंखें मली और बोला।

'मैं तुमसे कुछ बात करने आया हूं शंकर दास।'

बेड़ियों की खनखनाहट गूंजी और शंकर दास सलाखों के पास आ गया। उसकी पैनी निगाहें पाल के चेहरे को नोंचने लगी।

'खास बात है क्या ?'

'हां।'

'कहो ?'

'तुम बहुत ही होसलेमंद और बहादुर हो। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है।'

'मेरी जरूरत है तुम्हें।' शंकर दास हंस पड़ा, 'बहुत गलत कह रहे हो, मेरी जरूरत तो अब उस जल्लाद को है जिसने मुझे फांसी पर लटकाने के पश्चात सरकार से इनाम के तौर पर रुपये और शराब की बोतल हासिल करनी है।'

'मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूं। तब तुम यकीन करोगे कि मैं मजाक नहीं कर रहा।' ई0 पाल ने व्याकुल स्वर में कहा और उसे अपने परिवार की सामूहिक हत्याओं के बारे में बताने लगा।

दस मिनट तक लगातार ई0 पाल बोलता रहा। शंकर दास के चेंहरे पर कई तरह के भाव आ जा रहे थे। आंखें ई0 पाल के होंठों पर ही जमी थीं। ई0 पाल खामोश हो गया। उसका चेहरा, दिल और जिस्म का एक-एक हिस्सा प्रतिशोध की भावना से जल रहा था।

शंकर दास को खामोश पाकर ई0 पाल दांत भींचकर बोला।

'हो सकता है यह तीन हत्याएं तुम्हारे लिये मामूली बात हों, क्योंकि तुम खुद ही खतरनाक हत्यारे हो, लेकिन मैं…।'

'नहीं ई0।' बेड़ियों की आवाज वहां गूंज उठी, 'जैसे तुम सोच रहे हो, ऐसी कोई बात नहीं। निर्दोष लोगों की हत्या मानवता के नाम पर कलंक है। मैंने हत्याएं की हैं, शरीफ इन्सान खतरनाक हत्यारा बन गया लेकिन मेरा भगवान जानता है कि जिन्हें मैंने मारा है, वह मर ही जाने के लायक थे। कोई बेगुनाह इन्सान मेरे हाथों नहीं मरा, शायद इस तरफ तुमने ध्यान दिया हो।'

ई० पाल उसकी बात पर ध्यान न देकर बोला।

'शंकर दास, मैं तीरथराम पाहवा से नहीं टकरा सकता लेकिन तुम टकरा सकते हो, प्रतिशोध की आग जो मन-मस्तिष्क में जल रही है, उसे तुम ठण्डा कर सकते हो। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है, मैं चाहता हूं तुम मेरी लड़ाई लड़ो। तुम तो मरने वाले हो, तुम्हें फांसी हो जायेगी, अगर पाहवा से मेरी जंग लड़ते हुए मर गये तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। मरना तो तुम्हें हर हाल में है ही। यह तुम्हरी किस्मत ही होगी कि तुम पाहवा से जंग जीत जाओ और जिन्दा बच जाओ। अगर जिन्दा बच गये तो वह जिन्दगी तुम्हारी अपनी होगी, कहीं दूर जाकर तुम शराफत से जिन्दगी बिता सकते हो।'

बेड़ियों की खनखनाहट गूंजी, शंकर दास ने दोनों हाथों से सलाखों को थाम लिया। वह ई० पाल की आंखों में देख रहा था।

'तुम मुझे यहां से बाहर निकाल सकते हो।' उसके स्वर में फुसफुसाहट आ गई।

'हां।' ई0 पाल ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा।

'मैं आजाद हो जाऊंगा?' स्वर में अजीब-सा भाव आ गया।

ई0 पाल ने सहमति से सिर हिला दिया।

'और तुम्हें विश्वास है कि आजाद होने के पश्चात मैं इसी शहर में रहकर, तुम्हारे लिए तीरथराम पाहवा से लड़ाई लड़ूंगा।'

'हां?'

'अगर मैं फरार हो गया तो।'

'तो मैं किसी और को तलाश कर लूंगा।' ई0 पाल ने उसकी आंखों में झांका, 'लेकिन अभी तक मैंने तुम्हारे बारे में जो कुछ जाना है, उस लिहाज से दगाबाजी तुम्हें छूकर भी नहीं गई।'

शंकर दास के होंठों पर मुस्कराहट दौड़ गई।

'शायद तुम ठीक कहते हो। मिलिट्रीमैन की जुबान ही पत्थर की लकीर है।'

'मैं सिर्फ शंकर दास की बात कर रहा हूं यानि तुम्हारी।'

शंकर दास ने हौले से सिर हिलाया और ई0 पाल को सोच पूर्ण निगाहों से देखने लगा। ई0 पाल के चेहरे पर व्याकुलता की तह जम चुकी थी।

'तुमने जवाब नहीं दिया ?'

'मुझे तुम्हारी आफर मंजूर है ई0।' शंकर दास ने कहा 'और यह सब मैं तुम्हारे नहीं अपने लिये कर रहा हूं। खुद को बचाने के लिये कर रहा हूं कि शायद फांसी से बच कर पूरी जिन्दगी जी सकूं। बाई दा-वे-। मैं यहां से निकलूंगा कैसे ?'

'जेलर की सहायता से।'

'वह बूढ़ा खूसट मुझे जेल से निकलने देगा ?' शंकर दास के माथे पर बल पड़ गये। आखें सिकुड़ने लगी।

'बिलकुल निकलने देगा।'

'विश्वास नहीं आता।' शंकर दास ने गहरी सांस ली 'प्लान क्या है ?'

'प्लान ? प्लान तुम्हें जेलर ही बतायेगा। बार-बार मेरा तुम्हारे पास आना ठीक नहीं। शायद अब हमारी मुलाकात जेल से बाहर ही होगी।'

'मेरी फांसी में सिर्फ चार दिन बचे हैं।'

'तुम किसी बात की फिक्र न करो। तुम्हारी जिन्दगी की तुमसे ज्यादा मुझे जरूरत है शंकर दास।' ई0 पाल का चेहरा दहकने लगा।

शंकर दास हौले से हंस पड़ा।

'तुम चाहे कुछ भी कहो ई0, लेकिन मेरी जिन्दगी सिर्फ मेरी ही है और उसकी जरूरत भी सिर्फ मुझे ही है। मेरे यहां से निकलने के पश्चात, जब तक पाहवा का कामतमाम नहीं हो जाता, तब तक मैं तुम्हारा हर बात खुशी से कबूल करूंगा। अब फौरन मुझे यहां से निकालने का प्रबन्ध करो। वरना मैं तो जीने की सारी उम्मीदें बहुत पीछे छोड़ बैठा था। एक बात तो समझ में आ गई कि जब तक इन्सान जिन्दा है, तब तक जिन्दगी की आशा ही आस है। वैसे मैं तो खुद को तब से ही मरा हुआ समझ रहा था जब मुझे फांसी की सजा सुनाई गई थी।'

तुम नहीं मरोगे शंकर दास, कानून तुम्हें कभी फांसी पर नहीं लटका सकेगा। यह जुदा बात है कि नीरजराम पाहवा के

साथ जंग में मारे जाओ।'

'परवाह नहीं।' शंकर दास के होंठों से वहशी कहकहा उबल पड़ा।

□ □

□ □

पिछले छः घण्टों से तीरथराम पाहवा के होटल जय गणेश के आस पास, सामने या कभी दांये-बांये, सावधानी से, सबकी निगाहों से खुद को बचाते हुए सोहन लाल टहल रहा था। यूं उसे इस बात का ज्ञान था कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है उसके लिये खतरा भी बढ़ता जा रहा है। किसी की निगाह उस पर भी पड़ सकती है। परन्तु जेब में पड़ा भारी रिवाल्वर, उसके शरीर से टकराता हुआ, उसके हौसले को बुलन्दी पर पहुंचाने की चेष्टा कर रहा था।

अब शाम के सात बजने जा रहे थे। दिन, रात की तरफ सरकता जा रहा था। सोहन लाल के सब्र का पैमाना अब भर चुका था। वह सिर्फ उसे मारना चाहता था। जिसने दीपक और रजनी को बर्बरता से मारा था। परन्तु वह अभी तक नजर न आया, अलबत्ता तीरथराम पाहवा के और कई हरामजादे यदा-कदा दिखाई दे रहे थे।

सोहन लाल ने मन ही मन तय किया कि वह होटल में प्रवेश करेगा और पाहवा के ढेर सारे आदमियों को कत्ल कर के, पाहवा की ऐसी-तैसी करेगा। इसके साथ उसने यह नहीं सोचा कि कोई उसे भी शूट कर सकता है।

अभी इन विचारों में भटक रहा था कि एकाएक उसके जिस्म में तनाव आ गया। वह जय गणेश होटल के सदर द्वार के ठीक सामने, सड़क पर खड़ा था। उसने पाहवा के आठ कमाण्डो एक साथ बाहर निकलते देखे और इतनी दूर से भी उसने पह-चान लिया कि उनमें से एक, वही है जिसने दीपक और रजनी की हत्या की थी।

सोहन लाल के जबड़े भिंच गये। चेहरा सख्त हो गया।

आंखों में कठोरता व्याप्त हो गई। वह सब पोर्च में खड़ी कार की तरफ बढ़ रहे थे। सोहन लाल फौरन आगे बढ़ा और होटल के बाहर, बड़े से गेट के पास खड़ा हो गया। लोगों का आवागमन, शाम होने की वजह के कारण बढ़ चुका था। लेकिन उसकी निगाह तो अपने शिकार पर थी, जिसकी हत्या करके वह तीरथ राम साहब को समझा देना चाहता था कि उसके आगे, उसकी हकूमत नहीं चल सकती। वह किसी दादा के रौब में आने वाला नहीं?

उन आठों में से एक ने ड्राईविंग सीट का दरवाजा खोला और भीतर बैठ गया। सोहन लाल ने अपना हाथ जेब में डाला और उंगलियां रिवाल्वर के गिर्द लिपट गई। अन्य ने भी कार के अन्य तीन डोर खोले और भीतर बैठने की तैयारियां करने लगे।

अब सोहन लाल को सिर्फ अपने शिकार का सिर ही नजर आ रहा था। फुर्ती के साथ उसने जेब से रिवाल्वर निकाली और उसे दोनों हाथों में बांधकर, ट्रेगर दबा दिया।

अगले ही पल गोली उसके शिकार की खोपड़ी को फोड़ती हुई निकल गई। खून के छींटे बिखरे और वह कटे पेड़ की तरह नीचे गिर गया। उसके साथी चौंके और आश्चर्यजनक फुर्ती के साथ उन्होंने पोजीशन ले ली। रिवाल्वर उनके हाथों में चमकने लगे।

होटल में आते जाते लोग चीखते हुए सहमकर दायें-बांये अपनी जान बचाने के लिये दौड़े। जो अभी बाहर थे, वह सोहन को रिवाल्वर थामे देखकर भागने लगे। क्योंकि दो पल पहले ही उन्होंने सोहन लाल को फायर करते देखा था।

तभी कार की तरफ से गोली चली और गेट की मोटी सलाख से टकरा कर छिटक गई। सोहन लाल फौरन आड़ में हो गया। वह कहां है भीतर वालों को मालूम हो चुका था।

मन ही मन सोहन लाल खुश था कि एक ही वार में उसने अपने शिकार का कामतमाम कर दिया परन्तु वह चिन्ता में भी था कि वह उनकी नजर में आ चुका है। इससे भागने में कठिनाई आयेगी। उसके पास तो कोई कार वगैरहा भी नहीं थी जिससे फरारी में सहायता मिलती।

तभी एक साथ पांच फायर हुए, सोहन लाल को कोई नुकसान न हुआ। अलबत्ता गोलियों से, वातावरण दहल गया। सोहन लाल उसी आड़ में खड़ा तेजी से बचने का रास्ता खोज रहा था। ज्यादा देर यहां रहना खतरनाक था। पाहवा के आदमी पीछे वाले रास्ते से निकलकर, उस पर. गोलियां बरसा सकते थे।

तभी उसकी निगाह सिकुड़ गई। उनमें से एक, कारों की ओट में छिपता हुआ उसी ओर बढ़ता आ रहा था। जाहिर था कि किसी और ने भी उसकी तरफ आने का कोई और रास्ता अपनाया होगा। खतरा अब सिर पर आकर मंडराने लगा था। सोहन लाल की उंगली ट्रेगर पर जम गई। दांत भिंच गये। वह ख्वामख्वाह किसी और की हत्या नहीं करना चाहता था, परन्तु अब मरो या मारो वाली बात हो गई थी। उसे घेरा जा रहा था?

सोहन लाल की निगाहें कारों के बीच अटकी हुई थी।

कुछ क्षण पश्चात ही उसे कार के पीछे से सिर दिखाई दिया। सोहन लाल ने फुर्ती से निशाना बांधा और ट्रेगर दबा दिया। गोली कार के पीछे दिखाई दे रहे सिर में प्रवेश करती चली गई। सोहन लाल फौरन आड़ में से निकला और कार की तरफ रुख करके दो गोलियां चला दी। एक गोली कार के टायर में लगी और दूसरी उसकी छाती में, जो उसे देखकर, उस पर फायर करने आ रहा था।

होटल के आसपास का सारा वातावरण ऐसा हो गया था जैसे कोई इन्सान वहां रहता ही न हो। सोहन लाल पलटा और रिवाल्वर थामे तेजी से भागने लगा। एक बार भी उसने पीछे देखने की चेष्टा न की।

पाहवा के घर में घुसकर उसने उसके तीन कमाण्डो की हत्या कर दी थी। इस शहर में किसी के लिये भी यह मामूली बात नहीं थी।

पीछे से सोहन लाल पर अन्धाधुंध फायर किए गये। एक गोली उसकी बांह को झुलसाते हुए निकली परन्तु वह बच गया। कुछ आगे जाने पर उसे लाल बत्ती पर खड़ी कारें दिखाई दीं। क्षण भर ठिठककर उसने पीछे देखा तो जबड़े भिंच गये। पाहवा के

कई कुत्ते भौंकते हुए पीछे आ रहे थे। उसने रिवाल्वर सीधी करके एक साथ दो गोलियां चला दीं।

उसके द्वारा चलाई गई गोलियां किसी को लगी तो नहीं अलबत्ता यह फायदा अवश्य हुआ कि आने वालों की गति कम हो गई। सोहन लाल भागकर, लाल बत्ती के सबसे आगे खड़ी कार के पास पहुंचा, दरवाजा खोलकर उसने ड्राईवर को बांह से पकड़ कर, बाहर घसीटा और खुद ड्राईविंग सीट पर बैठते हुए लाल बत्ती की परवाह न करते हुए कार तूफानी गति से बढ़ा दी। खाली हो चुके रिवाल्वर को उसने जेब में ठूंस लिया।

अब उसे किसी बात की फिक्र नहीं थी। अपने निशाने की तरह ड्राईविंग पर भी पूरा भरोसा था।

□ □

□ □

रात ग्यारह बजे वह सुन्दर लाल के एक कमरे के फ्लैट पर पहुंचा। डुप्लीकेट चाबी उसके पास थी। दरवाजा खोलकर सोहन लाल भीतर प्रवेश कर गया। सुन्दर लाल घर पर नहीं था। दो घण्टे तक वह उसका इन्तजार करता रहा फिर थकान की वजह से बैड पर जा लेटा और सो गया।

सुबह जब उसकी आंख खुली तो उसने सुन्दर लाल को फर्श पर चादर बिछाये सोया पाया। सोहन लाल बाथरूम में घुस गया। नहा-धोकर बाहर आने पर उसने सुन्दर लाल को कमरे में टहलता पाया।

दोनों की आंखें टकरायीं।

'कैसे हो सुन्दर लाल ?' सोहन लाल मुस्कराया।

'अच्छा हूं।' वह चिन्तित स्वर में बोला, 'उस्ताद कल तुमने पाहवा के तीन आदमियों को मार दिया। तुम पहचाने गये हो। पाहवा ने एक लाख रुपये का इनाम उसके नाम ऐलान किया है जो तुम्हें जिन्दा या मुर्दा उसके सामने पेश करेगा। पूरे शहर में जाने कितने दादे तुम्हें तलाश कर रहे हैं। शहर का हर रास्ता 'सील' कर दिया गया है ताकि तुम फरार न हो सको। पाहवा

ने अपने सारे कारोबार बन्द करके, अपना सारा ध्यान तुम पर लगा दिया है। आखिर तुमने उसकी बादशाह के तीन प्यादों को मारकर, उसके अहम को भारी चोट पहुंचाई है। अण्डरवर्ल्ड में उसकी इज्जत तभी बरकरार रह सकती है जब वह तुम्हारी लाश के टुकड़े करके शहर के सारे चौराहों पर फैला दे।'

सोहन लाल मुस्कराया।

'और उसकी यह इच्छा कभी पूरी न होगी।'

'ऐसा न कहो। उस्ताद, वह पाहवा है, तीरथराम पाहवा। वह यूं ही नहीं अण्डरवर्ल्ड का सबसे बड़ा दादा बन बैठा। आज तक उसने जो चाहा है उसे पूरा करके दिखाया है। वह एक दिन तुम्हें यहां से भी ढूंढ लेगा।'

'यानि तुम्हें डर है कि पाहवा मेरे साथ-साथ तुम्हें भी नहीं छोड़ेगा। क्योंकि तुम पर्दे के पीछे रहकर उसके खिलाफ काम कर रहे हो।'

'उस्ताद पहली बात तो यह है कि मैंने तुम्हारी सहायता करके खुद ही अपने ताबूत में कील ठोंक ली है। दूसरी बात, यह जिन्दगी तुम्हारी ही दी हुई है। इसलिये तुम्हारे लिये चली भी गई तो चिन्ता नहीं। तीसरी बात, तुम्हारे साथ ही मेरी जिन्दगी है। तुम नहीं तो मैं नहीं। इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए मैं, इस लड़ाई में आखिर तक तुम्हारे साथ हूं।'

सोहन लाल ने मुस्कराकर उसके कंधे पर हाथ मारा।

'हो तो मामूली से जेबकतरे, लेकिन बातें शहंशाहों की तरह कर रहे हो।'

सुन्दर लाल मुस्कराकर रह गया।

'कहीं से आज का अखबार लेकर आओ। मैं पाहवा के आदमियों की मौत की खबर पढ़ना चाहता हूं।'

'अखबार तो, अखबार वाला फैंक गया होगा। बाहर पड़ा होगा।'

सुन्दर लाल कहने के पश्चात दरवाजा खोलकर बाहर गया। दो पल बाद ही अखबार लिये वापस लौटा। दरवाजा बन्द करके उसने अखबार सोहन लाल को दे दिया।

'तुम अखबार पढ़ो उस्ताद, मैं चाय बनाकर लाता हूं।' सुन्दर लाल किचन की तरफ बढ़ गया।

अखबार के मुख्य पृष्ठ पर उसकी निगाह जमकर रह गई। बड़े-बड़े अक्षरों में, शंकर दास की तस्वीर के बराबर में लिखा था।

फांसी पाया खतरनाक मुजरिम शंकर दास कल रात जेल से फरार हो गया। चार दिन के बाद उसे फांसी होने वाली थी। फरारी के समय उसने एक सब ई० और दो हवलदारों को रिवाल्वर से शूट कर दिया। पुलिस डिपार्टमैंट तफ्तीश कर रहा है कि शंकर दास अपनी कोठरी से बाहर कैसे निकला और उसके पास रिवाल्वर कहां से आई। मोटे तौर पर यह अनुमान लगाया जा रहा है। जेल का ही कोई कर्मचारी उससे मिला हुआ था। आंखों देखे गवाहों के अनुसार कल दिन में ई० पाल देशमुख उससे मिलने आया था। ध्यान रहे, दो दिन पहले ही किसी ने ई० पाल देशमुख के सारे परिवार को दिन दहाड़े गोलियों से उड़ा दिया था। अब, जबकि ई० पाल को अपने परिजनों की मौत के अफसोस में, अपने घर पर होना चाहिये था तो वह उस समय सैन्ट्रल जेल में, फांसी प्राप्त खतरनाक मुजरिम शंकर दास के पास क्या कर रहा था? तफ्तीश में इस बात पर भी ध्यान दिया जा रहा है कि शंकर दास की फरारी का सम्बन्ध ई० पाल देशमुख के साथ तो नहीं है?

'पट्ठे ने क्या किस्मत पाई है। चार दिन फांसी को रह गये और जान बचाकर भाग निकला।' सोहन लाल, शंकर दास की तस्वीर पर निगाहें जमाये बुदबुदा उठा।

▬ ▬

▬ ▭

'यह रहा आज का अखबार।' ई० पाल देशमुख ने, शंकर दास की तरफ पेपर उछालते हुए कहा, 'तुमसे सम्बन्धित सारी खबर इसमें है और सीधे-सीधे मुझ पर भी शक किया गया है। दो बार एस० पी० ऊपरी तौर पर मुझसे पूछताछ कर चुका है कि मैं जेल में तुमसे मिलने क्यों गया था। जवाब में मैंने सिर्फ यही

कहा है कि चूंकि तुम्हें मैंने पकड़ा था। मेरे पकड़ने के बाद ही तुम्हें फांसी की सजा सुनाई गई, इसलिये तुम्हें देखने की इच्छा बलवती हुई और तुमसे, मिलने जेल चला आया। एस0 पी0 को मेरी बात का यकीन तो नहीं हुआ, लेकिन इससे ज्यादा मुझसे पूछताछ नहीं की गई। अब मेरा डिपार्टमेंट मेरी निगरानी तब तक करता रहेगा जब तक उन्हें तसल्ली न हो जाये कि तुम्हारी फरारी में मेरा कोई हाथ नहीं।'

उसके खामोश होने पर शंकर दास ने, अखबार में छपी सारी खबर पढ़ ली। पढ़ने के बाद होंठों से गहरी सांस निकल गई।

'तुम्हारा कहना सही है ई0। इस खबर के अनुसार हर कोई तुम्हें शक भरी निगाह से देखेगा।' शंकर दास ने सिर हिलाकर कहा।

ई0 पाल ने जेब से रिवाल्वर और पन्द्रह हजार रुपये निकाले और शंकर दास की तरफ बढ़ाते हुए बोला।

'यह दशमलव ३२ का रिवाल्वर है। साथ में पन्द्रह हजार रुपये। वक्त आने पर पैसे दे दूंगा ताकि जंग में तुम कमजोर न पड़ सको।' ई0 पाल ने भारी स्वर में कहा, 'चूंकि मैं खुद शक के दायरे में आ गया हूं इसलिये इससे ज्यादा, तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकूंगा।'

'एक बात तो बताओ ई0।'

'क्या?'

'तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि तुम्हारे परिवार को तीरथराम पाहवा ने मारा है।'

'मैंने उसके कुछ आदमी पकड़कर हवालात में बन्द कर दिये। पाहवा ने चेष्टा की कि मैं उन्हें छोड़ दूं लेकिन मैं उसके दबाव में नहीं आया। कुछ ही घण्टों के बाद मुझे किसी अनजान व्यक्ति ने फोन पर बताया कि पाहवा मेरे परिवार का खात्मा करने जा रहा है। इतना कहकर उसने फोन रख दिया। मैं सीधा पुलिस स्टेशन से घर पहुंचा तो मेरा परिवार समाप्त हो चुका था।' ई0 पाल देशमुख व्याकुल हो गया। आवाज भरी उठी।

शंकर दास की निगाहें पुनः अखबार पर टिक गईं।

'एक बात ध्यान रखना शंकर दास, अगर तुम फिर पुलिस के हत्थे चढ़ गये तो कभी भूलकर मेरा नाम होंठों पर ना आये।'

शंकर दास हंस पड़ा।

'बहुत भोली बातें कर रहे हो ई0। तुम क्या समझते हो मैं अब पुलिस वालों के हाथ आऊंगा?'

'खैर, यह जगह छोड़कर फौरन निकल जाओ। मेरा दोस्त नाईट शिफ्ट में काम करता है। वह आने ही वाला होगा और मुझे यकीन है कि तुम पाहवा से अपनी जान बचाते हुए, मेरा प्रतिशोध पूरा करोगे।'

'जरूर।' शंकर दास ने अखबार उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, 'कल शाम पाहवा के होटल जय गणेश में किसी ने, पाहवा के तीन आदमियों को मार दिया है। इसी अखबार में यह खबर है और ।'

'मुझे मालूम है।' ई0 पाल ने सिर हिलाया, 'पाहवा ने अपने सारे काम छोड़कर, खुद को उसकी तलाश में लगा दिया है। वह जो कोई भी है, बहुत जीदार इन्सान है। उसने पाहवा के घर में घुसकर, उसे तमाचा मारा है।'

शंकर दास ने रिवाल्वर और रुपये जेब में डाले।

'अब तुम क्या करोगे?'

'कहीं न कहीं से तो शुरूआत करूंगा ही।' शंकर दास मुस्कराया।

'कल दोपहर की फ्लाईट से पाहवा का लड़का, किशन पाहवा, विलायत से वापस लौट रहा है। पाहवा उस पर अपनी जान छिड़कता है।' ई0 पाल का चेहरा एकाएक दहकने लगा। जबड़े मिच गये।

शंकर दास ने दो पल सोचने के बाद सिर हिलाया।

'ठीक है। शुरूआत यहीं से किए देता हूं।' शंकर दास का स्वर सख्त होने लगा, 'तुमने मुझे जेल से निकलवा कर, जिन्दगी की भीख दी है। इसलिये, मैं यह लड़ाई, तुम्हारी नहीं खुद अपनी समझकर लड़ूंगा।'

ई0 पाल ने होंठ भींच लिये। आंखें सुलगने लगीं।

'इस बात का अफसोस मुझे तमाम उम्र रहेगा कि मैंने

तुम्हारा साथ नहीं दिया।' ई0 पाल विवश-सा बोला।

'लेकिन मुझे खुशी है कि यह लड़ाई मैं अकेले लड़ने जा रहा हूं।' शंकर दास हंस पड़ा वहशी हंसी, 'पहली लड़ाई भी मैंने अकेले ही लड़ी थी ई0, हवस के बाईस दरिन्दों को मैंने चुन-चुनकर मारा था।'

'तब बात और थी। तुम्हारे पीछे न पुलिस थी और न ही पाहवा जैसे किसी दादे से टकराव था। अब तुम्हें दो तरफ से खुद को बचाना होगा।'

'मैं जा रहा हूं ई0 और एक बात ध्यान से सुन लो कि मैंने किसी से नहीं बचना, बल्कि सबको मुझसे बचना है। मेरे रास्ते मे जो कोई भी आयेगा, मेरे रिवाल्वर से निकली गोली उसका स्वागत करेगी। चाहे वह तीरथराम पाहवा का आदमी हो या कोई पुलिस वाला।' शंकर दास ने उसकी आंखों में झांकते हुए ठण्डे स्वर में कहा, 'अब एक आखिरी बात बता दो कि तुम्हारे इन्तकाम की सीमा कहां खत्म होती है।'

'तीरथराम पाहवा के कत्ल पर।'

'मैं कोशिश करूंगा ई0 कि इस मुकाम तक पहुंच सकूं।' शंकर दास ने दांत भींचकर कहा और लम्बे लम्बे डग भरने के बाद दरवाजे के पास पहुंचा और दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

□ □

सोहन लाल सारा दिन कमरे में बन्द पड़ा रहा। खामखाह बाहर निकलकर जान का खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। तीरथराम पाहवा के बारे में सोच-सोचकर उसके मन में, उसके प्रति नफरत-सी भरती जा रही थी। पाहवा उसे दरिन्दा लग रहा था जो सारे शहर पर छाया बैठा है। हर कोई उससे सहमा हुआ है। सबके दिलों पर पाहवा नाम का 'हव्वा' अपनी जगह बनाए हुये है।

अगर पाहवा ही मर जाये तो ? यह ठीक है कि उसकी जगह पर कोई दूसरा आ जायेगा, परन्तु कुछ देर के लिये हर कोई खौफ मुक्त अवश्य हो जायेगा और यह बात जगविदित हो जायेगी कि इन दादों को भी कोई मार सकता है।

उसे तलाश करने के लिए शहर में हर जगह नाकेबन्दी कर दी गई थी। वह जानता था कि शहर से फरार होना असम्भव है। लेकिन इस बात से भी भलीभांति वाकिफ था कि ज्यादा देर तक, इस तरह कमरे में बन्द भी नहीं रह पायेगा।

अंधेरा होने पर उसने लाईट आन नहीं की। करीब दस बजे सुन्दर लाल वापस लौटा तो उसने रोशनी की।

'दिन कैसा बीता उस्ताद ?'

'बोगस।' सोहन लाल ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा, 'सारा दिन बन्द कमरे में गुजार देना कहां की शराफत है। तुम बाहर की खबर सुनाओ।'

'बाहर का मामला गर्म है। हर किसी की जुबान पर तुम्हारा ही नाम है। पाहवा ने पुलिस वालों को भी तुम्हारी खोज में लगा दिया है।'

'पुलिस वालों को ?'

'हां ! सरकारी मशीनरी पाहवा की उंगलियों पर नाचती है।'

सोहन लाल के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान थिरक उठी।

'कोई और खबर ?'

'खास नहीं सिवाय इसके कि कल पाहवा का लड़का किशन पाहवा, विलायत से लौट रहा है।' सुन्दर लाल सिगरेट सुलगा कर कुर्सी पर बैठ गया।

'पाहवा का लड़का। कितनी उम्र होगी उसकी ?'

'अठारह, उन्नीस के दरम्यान।'

सोहन लाल की आंखों में चमक सा गई।

'सुन्दर लाल। पाहवा अपने लड़के को चाहता तो होगा ?'

'बहुत।'

'अगर वह मर जाये तो पाहवा पर क्या गुजरेगी ?'

सुन्दर लाल उछलकर खड़ा हो गया।

'क्या कहा उस्ताद ?' उसका चेहरा फक्क पड़ गया।

'किशन पाहवा की हत्या कर दी जाये तो, तीरथराम पाहवा की क्या हालत होगी ?'

'उस्ताद—तुम बहुत खतरनाक बात कह रहे हो।'

'मेरी बात का जवाब दो।'

'व-वह पागल हो जायेगा, सारे शहर को आग लगा देगा।'

सुन्दर लाल के गले में कांटे चुभने लगे। आंखें फटकर, दहशत से, फैल रही थीं।

सोहन लाल हौले से जहरीली हंसी हंस पड़ा।

'तब तो तीरथराम पाहवा के बेटे को मौत देना बहुत जरूरी है।'

'वह-वह तुम्हें छोड़ेगा नहीं उस्ताद।'

'अब वह कौन-सा मुझे छोड़ने वाला है।' सोहन लाल कहर से बोला, 'लेकिन मरने से पहले मैं दुश्मन के हाथ-पांव अवश्य तोड़ना चाहता हूं।'

'उस्ताद तुम बात बढ़ाने की कोशिश कर रहे हो।' सुन्दर लाल का चेहरा हल्दी के समान पीला पड़ चुका था।

'तुम नहीं समझोगे सुन्दर लाल। हर इन्सान के अपने उसूल होते हैं। मेरी आदत है कि बिना वजह, मैं किसी से लड़ता नहीं। खून खराबे से नफरत है मुझे। अगर उन निर्दोष दीपक और रजनी को पाहवा के आदमी ने नहीं मारा होता तो, मेरी पाहवा से कोई दुश्मनी नहीं होनी थी। जिसने उन दोनों को मारा, मैंने उसे मार दिया। बीच में एक-दो और रगड़े गये, खैर कोई बात नहीं बात को यहीं खत्म हो जाना चाहिये था परन्तु पाहवा को शायद अपनी हकूमत पर घमण्ड है। उसने मुझ पर इनाम घोषित कर दिये। फलस्वरूप शहर का हर दादा मुझे तलाश कर रहा है। पुलिस को मेरे पीछे लगा दिया और खुद भी अपने आदमियों के साथ मेरी तलाश में लग गया। यानि कि मेरा बचना हर हाल में कठिन है। सिर्फ एक ही सूरत है बचने की कि दुश्मन के हाथ-पांव तोड़ दूं। ताकि उसका ध्यान मरहम पट्टी की तरफ हो जाये और मैं बच जाऊं। उसे इतना ज्यादा बौखला दूं कि वह ढंग से सोच न सके। यही मेरे लिये फायदे की बात है। इसी कारण अब मैं पाहवा को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाऊंगा।'

सुन्दर लाल ने सूख रहे गले को थूक से तर किया।

'अगर तुम्हारा पत्ता साफ हो गया तो ?'

'किस्मत अपनी-अपनी।' सोहन लाल सरल हंसी हंस पड़ा।

'पाहवा का पूरा गैंग है। शहर का हर दादा उसके साथ है और तुम अकेले हो उस्ताद। वह तुम्हें चींटी की तरह मसल देगा। क्यों मौत के कुएं में छलांग लगाने जा रहे हो। कुछ दिन यहीं छिपे रहो, मैं तुम्हें शहर से बाहर निकलवाने का प्रबन्ध करता हूं।'

'मुझे लड़ना पसन्द नहीं और लड़ाई होने पर भागना पसन्द नहीं।' सोहन लाल ने उसकी आंखों में झांक कर सर्द स्वर में कहा।

सुन्दर लाल सूखे होंठों पर जीभ फेरने लगा।

□ □

□

ढाई बजे दोपहर में उस प्लेन ने एयरपोर्ट पर लैंड करना था जिसमें किशन पाहवा आ रहा था। अब एक बज चुका था। सोहन लाल एयरपोर्ट की लाबी में घूम रहा था। चेहरे पर मूंछें दाढ़ी लगा रखी थीं जो कि बहुत अजीब-सी लग रही थीं। परन्तु चेहरा इस कदर तक छिप गया था कि पाहवा का कोई आदमी एक निगाह में उसे नहीं पहचान सकता था। इस बात की सोहन लाल को तसल्ली थी।

अभी तक पाहवा का कोई आदमी एयरपोर्ट नहीं पहुंचा था।

खुद इसलिये पहले आ गया था कि अगर पाहवा कोई खास इन्तजाम कर रहा है तो वह उसकी निगाह में रहे। डेढ़ बज गया। सोहन लाल सावधानी से टहलता हुआ चारों तरफ निगाह रख रहा था। अब सिर्फ एक घण्टा प्लेन आने का रह गया। उसके ख्याल से आधे घंटे तक पाहवा को एयरपोर्ट पर होना चाहिये था।

एकाएक सोहन लाल की निगाह, पीछे वाली कुर्सियों की कतार में, कुर्सी पर बैठे एक व्यक्ति पर जा टिकीं। पहले भी उस पर तीन-चार बार निगाह जा चुकी थी। परन्तु अब उसे ध्यानपूर्वक देखने पर विवश हो गया था। न जाने क्यों उसे लग रहा था कि इसे कहीं देखा है। उसकी उम्र का ठीक से अन्दाजा लगाना कठिन था। सिर के बाल सफेद, काले, दोनों थे। बालों की अपेक्षा चेहरा कुछ ज्यादा ही तन्दुरुस्त लग रहा था। लम्बाई सामान्य प्रतीत हो रही थी। आंखों पर नजर का मोटा सा चश्मा मौजूद था। सबसे ज्यादा सोहन लाल को यह बात खटक रही थी कि वह चश्मे के शीशों के बीच में से देखने की बजाय, चश्मा नीचे करके नंगी आंखों से देख रहा था।

लाख सोचने पर भी सोहन लाल को ध्यान ना आया कि इसे कहां देखा है। अभी प्लेन आने में वक्त था। सोहन लाल वहां से हिला और लापरवाही दर्शाता हुआ उसके पास वाली खाली कुर्सी पर जा बैठा।

चश्मे वाले ने निगाहें घुमाकर उसे देखा फिर मुंह दूसरी तरफ फेर लिया। एयरपोर्ट की लाबी का शांत वातावरण, मस्तिष्क को बहुत अच्छा लग रहा था। सोहन लाल ने कुछ दूर बैठी अंग्रेज युवा लड़की को देखा जो छोटी सी स्कर्ट पहने बैठी थी। पांवों से लेकर, काफी ऊपर का हिस्सा हवादार हो रहा था। उस लड़की का मुआयना करके सोहन लाल ने सिगरेट सुलगाई और चश्मे वाले की ओर देखकर होले से बोला।

'मैंने तुम्हें पहले कभी देखा है?'

चश्मे वाले ने हाथ की उंगली से नाक को रगड़ा और गर्दन घुमाकर चश्मे के ऊपर से सोहन लाल को घूरा।

'तुमने मुझे देखा है?' चश्मे वाले ने स्थिर स्वर में कहा।

'हां।'

'कहां?'

'याद नहीं आ रहा।'

'तुम कभी फिनलैंड गये हो?' चश्मे वाला बोला।

'नहीं?'

'तो फिर तुमने मुझे कहीं नहीं देखा। मैं फिनलैंड का रहने वाला हूं और जिन्दगी में पहली बार हिन्दुस्तान आया हूं।'

'बहुत खूब।' सोहन लाल कटुता से बोला, 'तुम फिनलैंड के रहने वाले हो और हिन्दुस्तान पहली बार आये हो। जबकि हिन्दी बढ़िया बोल रहे हो और लहजे में पंजाबी का पुट भी है।'

चश्मे वाले ने उसे घूरा और फिर मुस्कराकर बोला।

'शायद तुम नहीं जानते कि फिनलैंड में बहुत ज्यादा पंजाबी बसे हुए हैं और मैंने वहीं से पंजाबी भाषा सीखी है। कभी फिन-लैंड आओगे तो सब कुछ समझ जाओगे।'

'हो सकता है।' सोहन लाल की आंखों में व्यंग का भाव था, 'वैसे यह तुम्हारा फिनलैंड अमृतसर या गुरदासपुर के आस-पास तो नहीं पड़ता ?'

'मुझे लगता है तुम भी फिनलैंड के रहने वाले हो।' चश्मे वाले का स्वर एकाएक सर्द हो गया, 'क्योंकि तुम्हारी दाढ़ी में कुछ गड़बड़ लग रही है। कितने की खरीदी है यह ?'

'अठारह रुपये की लेकिन तुमने चश्मा ऐसे ही खरीद लिया, तुम्हारी निगाह तो बिना चश्मे के ही बहुत अच्छी है। मैं देख रहा हूं तुमने काफी देर से चश्मे का इस्तेमाल नहीं किया, बेहतर है इसे किसी गरीब को दे दो, उसका तो भला होगा, अन्धे को दो आंखें मिल जायेंगी।'

चश्मे वाले ने सोहन लाल को खतरनाक निगाहों से देखा।

'कौन हो तुम ?'

'अपनी कमीज का एक बटन और बन्द कर लो, इससे 38 की रिवाल्वर नहीं दिखाई देगी, जो तुम्हारी पैंट में फंसी दिखाई दे रही है।'

चश्मे वाले ने फौरन कमीज का बटन बन्द कर लिया।

दोनों कई पल एक-दूसरे को देखते रहे।

'तुम्हारा नाम क्या है ?' चश्मे वाले ने शांत स्वर में पूछा।

'सोहन लाल कह लो।'

'यानि असली नहीं ?'

'नहीं, इस शहर के लोग मुझे इसी नाम से जानते हैं।' सोहन लाल मुस्कराया।

'लगता है कुछ ज्यादा ही पहुंची हुई चीज हो।' चश्मे वाला बड़बड़ाया फिर बोला, 'धन्धा क्या करते हो ?'

'तुम तो मेरी जन्मपत्री बनाने की कोशिश कर रहे हो।'

सोहन लाल ने सिगरेट का गहरा कश लिया, 'जरा अपनी कुण्डली के बारे में भी बताओ।'

चश्मे वाले ने पहलू बदला और आस-पास देखने लगा।

'मेरे बारे में जानने से तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा।'

'इसका मतलब मेरे बारे में जानकर तुम्हें फायदा हुआ है। तभी तो तुम मेरे बारे में पूछे जा रहे हो।' सोहन लाल ने शांत स्वर में कहा।

चश्मे वाला खामोश रहा।

'जान-बूझकर तुमने आंखों पर चश्मा चढ़ा रखा है ताकि चेहरे में कुछ बदलाव नजर आये। नंगी रिवाल्वर पैंट में फसाये घूम रहे हो। दूसरे तुम्हें देखकर मुझे शुरू से ही लग रहा है, पहले भी तुम्हें कहीं देख चुका हूं, एक मिनट, तुम जरा अपना चश्मा उतारोगे, हो सकता है फिर तुम्हारे बारे में पूछने की कुछ जरूरत ही न महसूस हो।' कहने के साथ ही सोहन लाल ने उसकी नाक पर लटक रहा मोटा-सा चश्मा हाथ बढ़ाकर फौरन उतार लिया।

बिना चश्मे के उसका चेहरा देखते ही सोहन लाल चौंका। इसमें कोई शक नहीं था कि इस चश्मे ने उसका सारा चेहरा ही बदल डाला था। इसी कारण सोहन लाल जैसा इन्सान भी, पहचान न पा रहा था कि उसे कहां देखा है?

वह शंकर दास था। जिसकी तस्वीर कल सुबह उसने अखबार में देखी थी। शंकर दास ने हाथ बढ़ाकर उसके हाथों से चश्मा लिया और पुनः आंखों पर चढ़ा लिया। क्रोध के भाव उसके चेहरे पर छा चुके थे।

'मानना पड़ेगा बहुत किस्मत वाले हो शंकर दास जो फांसी लगने के चार दिन पूर्व, जेल से फरार हो गये। सोहन लाल हौले से हंसा।

'तो तुमने मुझे पहचान लिया?' शंकर दास कहर भरे स्वर में बोला।

'हां। कल अखबार में तुम्हारी तस्वीर देखी थी। मुझे हैरानी की बात है कि रिवाल्वर लिए एयरपोर्ट पर क्या कर रहे हो? तुम्हें तो इस शहर से कहीं दूर होना चाहिये था।'

'अब तुम मेरे बारे में पुलिस को इन्फार्म करोगे?' शंकर

दास का स्वर ठण्डा था।

'नहीं, ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं। क्योंकि पुलिस को मेरी तलाश है। तुम अपने बारे में बताने में हिचक रहे हो, शायद इसलिये कि मैं गद्दारी करके पुलिस को न बता दूं।' सोहन लाल हंसा, 'मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूं इससे शायद तुम्हें तसल्ली मिले कि मैं पुलिस के पास हरगिज नहीं जा सकता। कल अखबार के पहले पेज पर एक खबर तुम्हारे जेल से फरार होने की थी और दूसरी खबर मुझसे सम्बन्धित थी। मैंने इस शहर के सबसे बड़े दादा तीरथराम पाहवा के तीन आदमियों को गोलियों से उड़ा दिया था।'

शंकर दास के चेहरे पर छाये भाव बदले।

'तुमने पाहवा के आदमियों को, उसके होटल में घुसकर मारा था।'

'हां और अब पाहवा के लड़के किशन पाहवा का काम तमाम करने आया हूं जो कुछ देर बाद आने वाली फ्लाईट से, विलायत से लौट रहा है। मैंने सब कुछ तुम्हें इसलिये बताया कि मुझे किसी का खौफ नहीं। पुलिस का नहीं, पाहवा का नहीं, तुम्हारा नहीं। अब कहो क्या कहते हो?'

शंकर दास के चेहरे पर अजीब से भाव छा चुके थे।

'तु-तुम अ-अब किशन पाहवा को मारने आये हो?' उसने हैरानी से पूछा।

'हां।' एकाएक सोहन लाल की आंखें सिकुड़ गई, 'वह तुम्हारा कोई सगे वाला तो नहीं लगता?'

शंकर दास के होंठों पर मुस्कराहट खेल गई।

'मैं भी यहां पर किशन पाहवा की हत्या करने ही आया हूं?'

'क्या?' सोहन लाल को अपना गला खुश्क होता हुआ महसूस हुआ।

'हां। हम दोनों एक ही काम करने आये हैं। क्यों न इस काम को मिलकर किया जाये।' शंकर दास अपनेपन से बोला।

'मुझे कोई एतराज नहीं, लेकिन तुम्हारी पाहवा से क्या दुश्मनी, उसके लड़के की हत्या करने पर क्यों तुले हुए हो?'

सब कुछ अभी मत पूछो।' शंकर दास हंसा, 'किशन पाहवा

की छुट्टी करने के बाद आराम से कहीं बैठेंगे, फिर बात करेंगे। आजकल कहां रह रहे हो ?'

सोहन लाल ने उसे सुन्दर लाल का पता बता दिया।

'ठीक है। काम खत्म होने पर, मैं वहीं पहुंच आऊंगा। मेरे पास कहीं भी छिपने की जगह नहीं है ?' शंकर दास ने प्रश्न भरी नजरों से उसे देखा।

सोहन लाल ने क्षण भर सोचा फिर सिर हिलाकर बोला।

'अच्छी बात है, आ जाना, लेकिन सावधानी के साथ, मैं नहीं चाहता कि आते समय, अपने साथ, किसी प्रकार की मुसीबत लेते आओ।'

'निश्चित रहो।' शंकर दास ने पूर्णतया विश्वास से कहा, 'मेरे कारण तुम किसी खतरे में नहीं पड़ोगे। अब हम दोनों, एक से दो हो गये हैं। जिस काम को करने आये हैं, उसे बाखूबी अन्जाम दे सकते हैं। वक्त बहुत कम रह गया है। बेहतर होगा हम इस तरफ ध्यान दें कि पाहवा के लड़के से कैसे निपटना है, वैसे मेरा ख्याल है कि प्लेन आने के समय पाहवा के आदमी एयरपोर्ट पर फैल चुके होंगे।'

'ठीक कह रहे हो। मुझे शक है कि पाहवा भी मौजूद होगा। आओ कैण्टीन में चलते हैं। बाकी बातें वहीं करेंगे।' सोहन लाल उठ खड़ा हुआ।

दोनों खतरनाक काम करने अकेले आये थे। अब दोनों को एक-दूसरे का सहारा था। उनके हौसले बुलन्द हो चुके थे।

□ □

□

वह छः कारें थीं। पांच में ड्राईवर को छोड़कर हर कार में छः छः व्यक्ति मौजूद थे। छटी कार में तीरथराम पाहवा और महेश चन्द्र थे। तीसरा ड्राईवर, वर्दी पहने मौजूद था। पाहवा के चेहरे पर, अपने लड़के से मिलने के कारण, खुशी फूट रही थी।

कारें एयरपोर्ट पर रुकीं। सबको उतार कर ड्राईवर कारें आगे बढ़ाते ले गये। अब तीरथराम पाहवा के साथ इकत्तीस व्यक्ति थे। हथियारबन्द, वक्त आने पर, अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार।

महेश चन्द्र तीसरे व्यक्ति को एक-तरफ ले गया और पांच मिनट तक उन्हें कुछ समझाता रहा। तब तक तीरथराम पाहवा ने सिगार सुलगाकर कश लेने आरम्भ कर दिये थे।

महेश चन्द्र वापस आ गया। तीनों आदमी एयरपोर्ट की इमारत में प्रवेश कर चुके थे। पाहवा ने कलाई में बंधी घड़ी में वक्त देखा।

'प्लेन आने में कितना समय बाकी है?'

'बारह मिनट सर।'

'अन्दर चलो।'

तीरथराम पाहवा, महेश चन्द्र के साथ भीतर प्रवेश कर गया।

□ ■

प्लेन पच्चीस मिनट लेट आया। आते ही एयरपोर्ट पर गहमा-गहमी-सी छा गई। तीरथराम पाहवा महेश चन्द्र के साथ एयरपोर्ट के काफी भीतर रनवे के पास मौजूद था। साथ में ई0 'आन ड्यूटी' सुरेश यादव था। वह पाहवा की चमचागिरी करने का, भरसक प्रयत्न कर रहा था। अगर इस समय उसका आफिसर भी आ जाता तो वह, उसकी परवाह न करता।

प्लेन रनवे पर कब का रुक चुका था। यात्री प्लेन से निकल-कर बस में सवार हो रहे थे। सामान लाने वाली गाड़ियां तेजी से अपना काम कर रही थीं।

'जाओ ई0।' पाहवा यात्रियों से भरी बस को आता देख-कर बोला, 'हमारा बेटा अगर बस में है तो उसे यहीं ले आओ, अन्यथा इन्तजार करो और जब आये तो उसे यहीं ले आना।'

'जी हां-जी हां, मैं अभी लेकर आता हूं।' ई0 ने कहा और

फौरन उस तरफ रवाना हो गया जिस ओर बस ने आकर रुकना था। धूप में प्लेन, चांदी के समान चमक रहा था।

पहली बस में ही किशन पाहवा था। ई0 उसे ले आया। किशन अपने पिता को देखते ही भागा और प्रसन्नता से चिल्लाता हुआ पाहवा से आ लिपटा। पाहवा ने उसे जोर से भींच लिया। बदन खुशी से कांपने लगा।

'कैसे हो किशन ?'

'अच्छा हूं पापा। आप कुछ कमजोर हो गये हैं।'

'कमजोर।' पाहवा ने उसे अपने से अलग किया और उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, 'बेटे, उम्र ढलती है तो इन्सान कमजोर हो ही जाता है। तुम तो अब बहुत बड़े हो गये हो ?'

'बस पापा। पूरे उन्नीस का, पिछले महीने हुआ।' किशन पाहवा ने छाती फुलाकर कहा और पाहवा ने हंसकर उसकी पीठ पर हाथ मारा। फिर वह पास खड़े ई0 से बोला, 'ई0, हमारे बेटे का सामान बाहर पहुंचा दो, वहां से हमारा आदमी, तुमसे ले लेगा ?'

'ओ0 के0 सर।' ई0 ने कहा और फुर्ती से एक तरफ बढ़ गया।

किशन पाहवा, महेश से बोला।

'हैलो मि0 महेश, हमें भूल गये ?'

'नहीं किशन साहब, मैं तो आपके फुर्सत पाने का इन्तजार कर रहा था।' मुस्कराकर कहते हुए, महेश चन्द्र ने किशन से हाथ मिलाया ?

'कम आन पापा, होटल चलते हैं। मैंने आपसे ढेर सारी बातें करनी हैं।' किशन तीरथराम पाहवा की कमर में हाथ डालकर बोला।

'मैं भी यही कहने वाला था।' पाहवा हंसा, 'तुम्हारा सामान होटल पहुंच जायेगा, चलो।'

बाप-बेटे एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले आगे बढ़ गये। महेश चन्द्र उनके पीछे हो लिया। भीतरी हिस्से को पार करके वह, एयरपोर्ट की लाबी में आ पहुंचे। किसी ने उन्हें रोकने की चेष्टा न की। क्योंकि हर कोई जानता था कि वह तीरथराम पाहवा है। लाबी में पाहवा के तीस कमान्डो इस अन्दाज से खड़े

थे कि पाहवा पर अचानक होने वाले हमले को वह पलक झपकते ही सम्भाल लें। हर कमान्डो इस समय चीते से भी ज्यादा फुर्तीला नजर आ रहा था। तीरथराम पाहवा ने महेश चन्द्र से कहा।

'हमारी कार सामने पहुंचा दो।'

'यस सर, मैंने यह आदेश पहले ही दे दिया है। कार आने ही वाली होगी।'

महेश चन्द्र ने तुरन्त सिर हिलाकर कहा।

'पापा, पांच साल पहले एयरपोर्ट इतना खूबसूरत नहीं था जितना अब हो गया है।' किशन ने मुस्करा कर चारों तरफ देखते हुए कहा।

उत्तर में तीरथराम पाहवा मुस्कराकर रह गया।

तभी सामने से एक कमाण्डो आया और उसने महेश चन्द्र को इशारा किया।

'सर।' इशारा पाते ही महेश चन्द्र बोला, 'कार बाहर आ गई है। आइए।'

पाहवा ने सिर हिलाकर मुस्कराते हुए अपने बेटे को देखा।

'श्योर पापा, आई० एम० रेडी। कम आन।' किशन ने पाहवा की निगाहों का मतलब समझकर, हंसते हुए कहा।

'आओ।' दोनों पुन: एक-दूसरे की कमर में बाहें डालकर आगे बढ़े।

'अपने देश का मजा ही कुछ और है। इंग्लैंड में ।'

तभी एकाएक जैसे वहां तूफान आ गया। मौजूद हर व्यक्ति अपनी जगह खड़ा, क्षण भर के लिये स्तब्ध-सा रह गया। एक तरफ से सोहन लाल निकलकर सामने आया और किशन पाहवा पर झपट पड़ा और रिवाल्वर निकालकर, किशन की कनपटी पर रख दिया।

अब सीन यह था कि सोहन लाल की बांई बांह, सांप की भांति किशन के पेट के गिर्द कसी हुई थी और दांये हाथ में पकड़ा रिवाल्वर उसकी कनपटी पर टिका था। चंद कदम पर पाहवा फटी-फटी आंखों से यह सब देख रहा था। अन्य की हालत भी उससे जुदा न थी।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि इतने तगड़े घेराव के

बीच कभी ऐसा कुछ भी हो सकता है।

'कौन-हो तुम ?' तीरथराम पाहवा ने फौरन खुद को संयत किया, 'इसे छोड़ दो, तुम्हें जो बात करनी हो, मुझसे करो।'

'मुझे इसी से बात करनी है पाहवा।' सोहन लाल जहरीले स्वर में बोला।

उसकी आवाज पहचानते ही पाहवा चौंका।

'सो-सोह-न लाल ?'

'हां! मैं सोहन लाल ही हूं। बम्बई का मशहूर गैंगस्टर। अच्छा हुआ तुमनें पहचान लिया, वरना मुझे अपने गाल पर लगी दाढ़ी उतारकर, तुम्हें अपने दर्शन देने पड़ते।' सोहन लाल ने कटुता पूर्ण स्वर में कहा, 'अब कैसे मिजाज हैं। सुना है तुमने मुझे तलाश करने के लिये, पुलिस को मेरे पीछे डाल दिया है। मुझ पर लाख रुपये का छोटा इनाम लगा दिया जिससे शहर भर के सारे दादा खाना-पीना छोड़कर मेरे पीछे लग गये। यह भी सुना है कि तुमने अपने सारे काम छोडकर, पहला काम मेरी तलाश का सोचा है। 'अब मैं तुम्हारे सामने हूं। पकड़ लो मुझे।'

तीरथराम पाहवा सिर से पांव तक जल उठा।

'मेरे बेटे को छोड़ दो सोहन लाल।'

'तुम।'

तभी चंद कदम दूर खड़े कमाण्डो ने मौका देखकर छलांग लगाई और उसकी रिवाल्वर वाली कलाई दोनों हाथों से पकड़ कर फर्श की तरफ कर दी। यह अचानक हो जाने की वजह के कारण सोहन लाल के शरीर को झटका लगा, किशन उसकी जकड़ से छूटकर फर्श पर जा गिरा और सकते की सी हालत में वहीं पड़ा रहा।

चूंकि कमाण्डो ने उसकी कलाई दोनों हाथों से पकड़, फर्श की ओर धकेल रहा था इसलिये कमाण्डो के साथ-साथ उसे भी नीचे झुकना पड़ा। इससे पहले कि कोई और, कमाण्डो की सहायता के लिये आगे बढ़ता। तेज गूंज के साथ फायर हुआ और गोली कमाण्डो की खोपड़ी में जा लगी। वह उछला और नीचे जा गिरा। फर्श खून से लाल होने लगा।

आजाद होते ही सोहन लाल ने चीते की भांति झपट्टा मारा और किशन को पुनः अपनी गिरफ्त में ले लिया।

सबने चौंककर देखा। परन्तु गोली चलाने वाला कहीं नजर न आया। यह सब-कुछ चंद सैकिन्डों में हो गया था। सामने खून उगल रही कमाण्डो की लाश पड़ी थी। खोपड़ी खील-खील हो चुकी थी।

वहां छाये भयानक सन्नाटे को, सोहन लाल ने अपने वहशी स्वर से भंग किया।

'तीरथराम पाहवा। तुम कुल मिलाकर तैंतिस हो। एक तुम। एक तुम्हारा बेटा, जो कि इस समय न होने के बराबर है। तीसरा तुम्हारा वफादार कुत्ता महेश चन्द्र और रेवड़ियों की भांति दिखाई दे रहे तीस कमाण्डो। इसमें कोई दो राय नहीं कि वह सब हथियारबन्द होंगे। लेकिन इस समय तुम तीस के तीस घिर चुके हो। मेरे साथ बावन आदमी हैं। एक मैं, एक वह जिसने फायर किया और पचास अन्य। सब रिवाल्वरों और हथगोलों से लैस हैं। अगर तुमने अपने बेटे को बचाने के लिये किसी चालाकी का इस्तेमाल किया तो, मेरे आदमी पूरे एयर-पोर्ट को उड़ा देंगे और पहला निशाना, तुम्हारा बेटा और तुम होगे। उन्हें मेरी भी परवाह नहीं होगी कि हथगोलों से मेरे कितने टुकड़े होते हैं। यानि हमारा मकसद तुम्हें सलामत छोड़ना नहीं है। मैं या मेरा हर आदमी, यहां कफन बांधकर आया है।'

एयरपोर्ट की लाबी में मौत का सन्नाटा छा गया। वहां मौजूदा सिक्योरिटी आसपास घेराव डालने लगी। सोहन लाल की बातें वह भी सुन चुके थे। सोहन लाल को पकड़ने से अहम काम, उनके लिये किशन पाहवा को बचाने का था। पाहवा के मामले में वह, बिना इजाजत मनमानी नहीं कर सकते थे। ऐसा करने पर, पाहवा उनकी बोटियां-बोटियां कर देता। सिक्योरिटी आफिसर ने सारी सीक्योरिटी को सावधान किया कि तभी कदम उठाया जाये जब, पाहवा के लड़के को किसी प्रकार का खतरा न हो।

एयरपोर्ट के रेडियो रूम में आप्रेटर, अपने आफिसरों को एयरपोर्ट पर हो रहे हंगामें के बारे में सूचित कर रहा था।

कुछ देर बाद ही शहर भर की पुलिस गाड़ियां और पुलिस डिपार्टमेंट के बड़े-बड़े ओहदेदार एयरपोर्ट की ओर दौड़ रहे थे।

सारे शहर में हंगामा मच चुका था। जंगल में आग के समान यह खबर फैल चुकी थी कि एयरपोर्ट पर किसी ने पाहवा के लड़के को पकड़ लिया है और पाहवा उसका बचाव करने में असमर्थ है।

सोहन लाल के चेहरे पर, जहान भर की खूंखारता के भाव छाये हुए थे।

तभी एक फायर और हुआ, एक चीख गूंजी फिर सन्नाटा छा गया।

सबने चौंककर देखा। ई० सुरेश यादव, जिसे कि पाहवा ने सामान लाने का काम सौंपा था वह फर्श पर पड़ा तड़प रहा था। छाती से खून बह रहा था। पास ही उसकी रिवाल्वर पड़ी हुई थी। कदाचित वह रिवाल्वर निकाल कर, सोहन लाल पर फायर करने वाला होगा कि गोली उसे जा लगी।

जब कमाण्डो मरा तो फायर किसी और दिशा से हुआ था और अब ई० सुरेश यादव पर फायर किसी और दिशा से हुआ था। इस बार शंकर दास किसी की निगाहों से बच न सका। वह चालीस फीट ऊंची, रैलिंग पर रिवाल्वर थामे, सावधानी से खड़ा था।

सबकी निगाह उस पर थी।

'खबरदार, मेरे किसी भी आदमी पर फायर करने का मतलब, किशन पाहवा की मौत है। सुना तुमने तीरथराम पाहवा, सबको खबरदार कर दो कि कोई भी उस्तादी दिखाने की फिक्र में न पड़े। वरना हमेशा के लिये अपने बेटे को खो बैठोगे।'

मौत का तीखा सन्नाटा वहां छा गया।

'कोई भी, कोई हरकत नहीं करेगा।' पाहवा ने गला फाड़कर कहा फिर सोहन लाल से बोला, 'अब तुम क्या चाहते हो?'

'मैं तुम्हारे लड़के के साथ यहां से निकलना चाहता हूं। बाहर तुम्हारी कार खड़ी है। मुझे कार तक पहुंचा दो।'

'चलो।' पाहवा ने कहा।

सोहन लाल, किशन को गिरफ्त में लिये, रिवाल्वर उसकी कनपटी से सटाये, सावधानी से, धीरे-धीरे आगे बढ़ा। तीरथराम पाहवा बॉडी गार्ड के तौर पर उनके साथ था।

'मेरे बेटे को तुम क्यों ले जा रहे हो?' तीरथराम पाहवा

बोला।

'तफरीह के लिये।' सोहन लाल गुर्राया, 'खामोश रहो, मैं बातें करके लापरवाह नहीं होना चाहता।'

अजीब-सा खौफनाक वातावरण वहां फैल चुका था। वहां मौजूद आने जाने वाले यात्री भी सदमे से दीवारों से चिपके हुए थे।

सोहन लाल ने तिरछी निगाहों से देखा। गैलरी पर शंकर दास नहीं था।

वह बाहर कार तक आ गया। सोहन लाल ने किशन को कार में धकेलकर, उसे स्टेयरिंग सीट पर बैठने को कहा और खुद पिछली सीट पर जा बैठा, रिवाल्वर पुनः उसकी खोपड़ी से सटा दी।

किशन पाहवा का बदन पसीना-पसीना हो रहा था। कटोरियों में भयभीत आंखें इधर-उधर सरक रही थीं। गले में जाने कहां से निकलकर, बड़ा सा कांटा चुभने लगा था। स्टेयरिंग पर जमी उंगलियां पसीने से चिपचिपा रही थीं।

सोहन लाल ने गर्दन घुमाकर, कार की खिड़की के पास खड़े पाहवा को देखा; जिसके जबड़े कठोरता से भिंचे हुए थे। आंखें सुर्ख हो रही थीं।

'पाहवा, कभी-कभी चींटी भी हाथी को मार देती है। छोटा-सा कारण भी कभी जंग में, हार बन जाता है।' सोहन लाल ने वहशी स्वर में कहा, 'मैं तुमसे कहीं ज्यादा खतरनाक हूं। अगर इसका अहसास तुम्हें अब नहीं तो बहुत जल्दी हो जायेगा। उस वक्त को याद करो जब मैं शहर छोडकर भागने की चेष्टा में था और तुम्हारे आदमियों के कारण भाग नहीं सका। अगर भाग जाता तो तुम्हें आज यह दिन न देखना पड़ता। उन दो निर्दोषों दीपक और रजनी को याद करो, तुम्हारे आदमी ने दीपक को गोली से उड़ा दिया और रजनी से बलात्कार किया फिर उसकी हत्या की। दीपक भी तुम जैसे किसी बाप का बेटा था। रजनी भी ऐसे ही किसी बाप की औलाद थी। आज तक तुमने बहुतों को कत्ल किया। बिछड़ने की पीड़ा क्या होती है यह अभी तुम नहीं समझोगे। कुछ दिन पहले ही तुमने एक ई० के पूरे परिवार को उड़ा दिया। क्योंकि वह तुम्हारे आदमियों को छोड़ नहीं रहा

था।' सोहन लाल की आवाज में वहशीपन आ चुका था।
'इन्सान का किया उसके सामने अवश्य आता है पाहवा। मुझे विश्वास है कि तुम्हारे सामने भी आयेगा, अब तुम्हारा बेटा कार स्टार्ट करने वाला है। याद रखो मैंने किसी भी पुलिस कार अथवा तेरी कार को अपने पीछे आते देखा तो, तेरे बेटे की हत्या कर दूंगा।'

तीरथराम पाहवा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

'नहीं, तुम्हारे पीछे कोई नहीं आयेगा, जरा रुको, मैं पुलिस वालों से बात कर लूं।' कहने के साथ ही पाहवा वहां से हिला-और कुछ दूर खड़े पुलिस आफिसर्स की तरफ बढ़ गया।

पुलिस जीपों से एयरपोर्ट का बाहरी आहता भर चुका था। हर जीप में मौजूद वायरलैस सैट आन थे।

तभी जाने कहां से निकलकर शंकर दास आया। दरवाजा खोलकर किशन की बगल में जा बैठा। उसके हाथ में रिवाल्वर थमी हुई थी। चेहरे पर खतरनाक भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। आंखों पर पड़ा नजर का चश्मा अब नहीं था। कदाचित वह उसने वक्ती तौर पर इसलिये पहन रखा था कि वक्त से पहले कोई उसकी सूरत पहचानकर, मुसीबत न खड़ी कर दे।

किशन, शंकर दास को देखकर और भी सहम गया।

तभी तीरथराम पाहवा वापस लौटा। बाप आते ही उसकी निगाह शंकर दास पर जम गई। क्षण भर उसे देखता रह गया।

तुम, शंकर दास हो, परसों रात तुम्हीं जेल से फरार...।'

काम की बात करो पाहवा।' पीछे बैठा सोहन लाल गुर्रा उठा, हमारे पास वक्त बहुत कम है।'

पाहवा ने अपने चेहरे पर क्रोध भरे भावों को, आने से रोका।

'जब तुम जाओगे तो, कोई भी इस कार के पीछे आने का साहस नहीं करेगा।'

'बीच रास्ते में भी कोई हमारे पीछे नहीं लगेगा।'

नहीं लगेगा।'

'अगर लगा तो तेरे बेटे को फौरन लाश बनाकर, चलती कार से सड़क पर फैंक दूंगा।' सोहन लाल दरिन्दगी से बोला।

तीरथराम पाहवा दांत किटकिटाकर रह गया।

'तुम लोग मेरे बेटे का क्या करोगे?' पाहवा एकाएक सूखे स्वर में कह उठा।

सोहन लाल के चेहरे पर उपहास पूर्ण मुस्कान थिरक उठी।

'चल बेटे।' सोहन लाल ने रिवाल्वर की नाल से किशन की खोपड़ी थपथपाकर कहा, 'कार स्टार्ट कर और निकल चल यहां से?'

'तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।' पाहवा ने सूखे स्वर में शीघ्रता से कहा। शंकर दास ने कार की खिड़की से रिवाल्वर वाला हाथ निकाला और रिवाल्वर पाहवा के पेट में घुसेड़कर कहर भरे स्वर में बोला।

'पीछे हट।'

पाहवा फौरन तीन-चार कदम पीछे हट गया।

सोहन लाल ने पुनः रिवाल्वर की नाल से, किशन की खोपड़ी खटखटाई। आतंक से घिरे किशन ने, कंपकपाते हाथों से चाबी घुमाई और कार स्टार्ट होने पर, गियर डालकर एक्सीलेटर पर पांव दबा दिया। हल्के से झटके के साथ कार आगे बढ़ गई। चेहरे पर पसीना ही पसीना हो रहा था। आंखों में दहशत नाच रही थी।

◘ ▭

◘ ▭

अगले पन्द्रह मिनट तक कार, सोहन लाल के इशारे पर भागती रही। किशन की हालत में कोई फर्क न आया। वह अभी तक सूखे पत्ते की भांति कांप रहा था। शंकर दास की पैनी निगाहें आसपास देख रही थीं।

कहीं कोई खतरा न था। कोई पीछे नहीं आ रहा था।

सोहन लाल ने कार रुकवाई। रिवाल्वर के साये में किशन को नीचे उतारा। शंकर दास बराबर उनके साथ था। भीड़-भाड़ से भरी जगह थी। इसलिये सोहन लाल को किशन पर रिवाल्वर ताने कइयों ने देख लिया। देखने वाले खौफ के मारे, कन्नी काटकर, वहां से दूर सरकने लगे।

शंकर दास और सोहन लाल की आंखें मिलीं। दोनों के चेहरों पर वहशियाना भाव झलक उठे। सोहन लाल पीछे हटा, रिवाल्वर जेब में डाल ली। अगले ही पल शंकर दास ने जेब से रिवाल्वर निकाली। किशन पाहवा की समझ में कुछ न आया। शंकर दास ने दरिन्दगी भरे ढंग से रिवाल्वर सीधी की और ट्रेगर दबा दिया। फायर की तेज आवाज के साथ, किशन पाहवा की खोपड़ी के चीथड़े-चीथड़े उड़ गये। देख रहे लोगों के होंठों से खौफपूर्ण चीख निकल गई।

किशन का शरीर किसी बोरे के समान कार से टकरा कर नीचे गिर गया।

सोहन लाल के होंठों से दरिन्दगी भरी खिलखिलाहट निकल गई।

'एक और एक हमेशा ग्यारह होते हैं। अगर हम या हममें से कोई एक, इस हरामजादे को एयरपोर्ट पर गोली से उड़ा देता तो शायद हम भी पाहवा के कमाण्डो की गोलियों के शिकार हो जाते।'

शंकर दास ने रिवाल्वर थामे अपनी खूनी निगाहें घुमायीं, जिस-जिस पर भी उसकी निगाह पड़ी, वह सिर से पांव तक कांप उठा। आते-जाते वाहन कब के रुक चुके थे। गश्त लगा रहे पुलिस वाले बुतों की भांति खड़े थे। किसी की हिम्मत न थी, एक कदम भी उस ओर बढ़ा सकते।

शंकर दास ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी और वापस जेब में डालकर, सोहन लाल को देखा। अगले ही पल वह पलटे और फुटपाथ पर चढ़ने के पश्चात्, पास ही पतली-सी गली में प्रवेश कर गये।

उनके जाने के काफी देर तक वहां पर मौत-सा सन्नाटा छाया रहा। किशन पाहवा की लाश लावारिशों की भांति पड़ी थी।

□ □

'सर—।' उनके जाते ही महेश चन्द्र ने पास आकर कहा—

'दूसरा आदमी शंकर दास था। दो रात पहले वह जेल से फरार हुआ जबकि चार दिन के बाद उसे फांसी होने वाली थी। हमारी शंकरदास से कोई दुश्मनी नहीं फिर...।'

'महेश—।' तारथराम पाहवा का स्वर क्रोध से धधकने लगा—'हमारी शंकर दास से नहीं ई0 पाल देशमुख से दुश्मनी थी। हमने उसके पूरे परिवार को गोलियों से उड़ा दिया था—।'

'मैं—समझा नहीं।'

'शंकर दास की फरारी का सम्बन्ध ई0 पाल देशमुख से जोड़ा गया है। यह खबर बहुत आम है। यानि ई0 पाल देशमुख को सरासर मालूम हो गया कि उसके परिवार की हत्या के पीछे हमारा हाथ है तो उसने मेरी जड़ें उखाड़ने के लिए शंकरदास को जेल से फरार करवाकर, उसका सहारा लिया—क्योंकि मुझसे टकराना उसके बस का नहीं है।'

'य—ह आप कैसे कह सकते हैं, हो सकता है कि ।'

'शक की कोई गुंजायश नहीं, मैं ठण्डे दिमाग से सोच-समझकर इस नतीजे पर पहुंचा हूं।' पाहवा ने सर्द स्वर में कहा—'तुम जाओ और ई0 पाल देशमुख को लेकर होटल पहुंचो, उस कुत्ते को, उसके किए की सजा मैं अपने हाथों से दूंगा—और मरने से पहले वह इस बात को भी अवश्य कबूल करेगा।'

'लेकिन सर, आपका बेटा, उसका क्या होगा?'

'शहर से बाहर जाने के सारे रास्ते सील हो चुके हैं। वह लोग बाहर नहीं निकल सकेंगे और शहर में रहकर कब तक हमारी निगाहों से छिप सकते हैं?' पाहवा ने स्थिर स्वर में कहते हुए सिगार सुलगा लिया।

'ज्यादा देर तक नहीं।' महेश ने होंठ काटते हुए कहा—'हो सकता है वह लोग आपके बेटे को लौटाने के लिए मोटी रकम मांगें।'

'कोई बात नहीं।' पाहवा के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान आ गई—'वह जो भी मांगेंगे, उन्हें मिल जायेगा और किशन की वापसी के बाद उनसे सब कुछ वसूल कर लिया जायेगा। तुम जाओ और ई0 को लेकर होटल पहुंचो, मैं आ रहा हूं।'

'राईट सर—।' बहेश ने कहा और पलटकर तेज-तेज कदमों से आगे बढ़ गया। उसकी चाल में कूट-कूटकर दृढ़ता भरी हुई थी।

लेकिन ई० पाल देशमुख बहुत चौकन्ना था। उसने हर आने वाले खतरे का अहसास पहले ही कर लिया था। एयरपोर्ट पर सादे कपड़ों में वह भी मौजूद था। उसने सारा नजारा खुद देखा। दिल में प्रसन्नता की लहरें फूट रही थीं। पाहवा का लड़का शंकरदास और उसके साथी के कब्जे में था। उसे हैरानी अवश्य थी कि शंकरदास का साथी कहां से आ गया। परन्तु इस बारे में उसने ज्यादा न सोचा।

अब सोचने की बात थी कि शंकरदास सबकी निगाहों में आ चुका है और हर किसी को शक है कि शंकरदास को उसने फरार करवाया है। लेकिन इस बात का किसी के पास ठोस सबूत नहीं है कि उसने शंकरदास को फरार करवाया है। परन्तु शीरथराम पाहवा जब शंकरदास के बारे में सोचेगा तो, वह फौरन समझ जायेगा कि कौन की बात क्या है?'

फिर पाहवा उसको तलाश करेगा और उसकी हत्या कर देगा।

ई० पाल एयरपोर्ट से हिला। टैक्सी पकड़कर घर पहुंचा और सूटकेस में कपड़े भरकर, स्टेशन की ओर रुख किया, फिर जो ट्रेन सबसे पहले आ रही थी, उसमें सवार हो गया।

जब तक यह लड़ाई जारी थी तब तक उसका इस शहर में कहीं दूर चले जाना ही बेहतर था। गाड़ी पटरियों पर सरकी तो उसकी सांस में सांस आई। कुछ देर पश्चात् वह, इस शहर से दूर होता जा रहा था।

कोई नहीं कह सकता था कि शहर में शुरू हो चुकी खूनी जंग का जन्मदाता वह है।

□ □

□ □

जब वह दोनों अलग-अलग फ्लैट पर पहुंचे तो सुन्दर लाल

आतंक में जकड़ा दिखाई दिया। सोहन लाल के माथे पर बल पड़ गये।

'क्या बात है?'

'म—मैं एयरपोर्ट पर गया था। वहां जो हुआ—म—मैंने देखा था।'

सोहन लाल के होंठों से गहरी सांस निकल गई।

'इसलिए तुम डर रहे हो?'

'तुमने अच्छा नहीं किया उस्ताद। इस तरह खुल्लम-खुल्ला पाहवा से दुश्मनी नहीं लेनी चाहिये थी।' सुन्दर लाल ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा—'तुम पाहवा की निगाहों से बच नहीं सकोगे। उसके हाथ बहुत लम्बे हैं। एयरपोर्ट पर अपने बेटे की वजह से बेबस हो गया था, नहीं तो भगवान ही जानता है कि क्या होता?'

'खैर, तुम फिक्र न करो, जो होना था वह तो हो ही गया।' सोहन लाल ने हौले से मुस्करा कर कहा—'इसे देखो, यह शंकरदास है, फांसी प्राप्त जेल से फरार मुजरिम, पहचानते हो?'

सुन्दर लाल ने मूक सहमति दे दी।

'चाय—चाय पिलाओ यार, इतना बढ़िया मेहमान तुम्हारे घर आया है। चाय के साथ ही पाहवा के बारे में बातें करेंगे।'

अनमने मन से सुन्दर लाल; किचन में चाय बनाने चला गया।

सोहन लाल और शंकरदास कुर्सियों पर जा बैठे।

'अब यह बताओ प्यारे, तुम पाहवा के पीछे क्यों पड़े हो? उसने तुम्हारी कौन सी भैंस खोल ली, जो तुम वसूली करने पर लगे हो?' कहने के पश्चात् सोहन लाल ने सिगरेट सुलगाकर गहरा कश लिया।

'मेरी पाहवा से कोई दुश्मनी नहीं।'

सोहन लाल ने हैरानी से शंकरदास को देखा।

'तो फिर क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो पाहवा से खार खाये बैठे हो। ठीक मौके पर जेल से फरार हुआ। उसके बाद तुम्हें इस शहर से हजारों मील दूर हो जाना चाहिये

था जबकि तुम एयरपोर्ट पर रिवाल्वर लिए पाहवा के लड़के की हत्या की ताक में मौजूद थे।

शंकरदास ने, हसकर सोहन लाल पर निगाह मारी फिर ई० पाल देशमुख से सम्बन्धित सारी बात उसे बता दी।

सुनकर कुछ देर तक सोहन लाल खामोश बैठा रहा।

'हां, ई0 पाल देशमुख के परिवार की हत्या का वारण्ट जब पाहवा ने जारी किया तो मैं वहीं था। मैंने ही ई0 पाल को फोन पर इत्तला दी थी कि वह अपने परिवार को बचा ले।'

'ओह—।' शंकरदास के होंठों से निकला—'लेकिन तुम पाहवा के पास क्या कर रहे थे? तुमने अपने बारे में मुझे कुछ भी नहीं बताया कि तुम्हारी पाहवा से क्यों लग गई?

'कोई खास बात नहीं थी। दरअसल किसी जमाने में मैं माना हुआ लुटेरा था। बड़ी से बड़ी लूट करना, चाहे वह बैंक हो या किसी मोटे सेठ का महलनुमा बंगला—मेरा पेशा था और हर दूसरी लूट में मुझे मजबूरन एक-दो कत्ल करने पड़ते। क्योंकि लूट के समय अक्सर कोई-न-कोई हीरो बनने की चेष्टा कर जाता था। आठ आदमियों का मेरा पूरा गैंग था। कभी इस शहर तो कभी उस शहर, हमारे गैंग ने खासा आतंक मचा रखा था।' कहते हुए सोहन लाल ने सिगरेट का लम्बा कश खींचा—'मुझे पकड़ना तो दूर, पुलिस कभी मेरा चेहरा भी न देख पाई थी। सिर्फ एक बार पुलिस मुठभेड़ में हमारे गैंग का एक आदमी मारा गया था। इससे ज्यादा पुलिस कभी हमारा नुकसान नहीं कर सकी। कई साल हमने देश भर में आतंक मचाये रखा। एक बार लूट के समय, जाने कैसे पुलिस को खबर लग गई और उसने बैंक को घेर लिया। हम लोगों ने मुकाबला किया। मेरे तीन साथी मारे गये। मेरी टांग पर गोली लग गई। कयामत ढा देने वाली पुलिस से हमारी मुठभेड़ हुई। मेरे चार साथी, किसी तरह मुझे बचाकर वहीं से भाग निकले। चूंकि मेरी टांग में गोली धंसी हुई थी, इसलिए भाग्य ने ही मुझे बचाया था। छिपकर मैं अपनी टांग का इलाज करवाता रहा, एकाएक न जाने क्यों खून-खराबे से मुझे नफरत-सी हो गई।' मैंने अपने गैंग से अलग होने का फैसला किया और अलग हो गया। गैंग की सरदारी कृपाराम नाम के साथी को सौंप दी। अलग होते

समय सिर्फ एक लाख रुपया मैंने लिया था जो कि जल्दी ही समाप्त हो गया। पेट भरने के लिए मैंने अजीब-सा रास्ता चुना। किसी नये शहर में जाता और खुद को किसी दूसरे शहर का दादा दर्शाकर, छोटे-मोटे बदमाशों से माल झाड़ता और रफूचक्कर हो जाता। इस शहर में भी मैं इसी कारण आया। कुछ से माल झाड़ लिया था और कुछ से झाड़ना अभी बाकी था कि इसी बीच तीरथराम पाहवा के आदमी मुझे लेने आ पहुंचे।'

'वह क्यों ?' शंकरदास ने पूछा जो कि दिलचस्पी के साथ उसकी बात सुन रहा था।

'क्योंकि यहां पर मैंने सबके सामने, खुद को बम्बई का मशहूर गैंगस्टर सोहन लाल कहना शुरू कर दिया, जो कि दो महीने पहले पुलिस से हुई मुठभेड़ में मारा गया था ! पूछने पर सबको यही जवाब दिया कि किसी और की लाश को पुलिस ने मेरी लाश समझा और मैं इसी मौके का फायदा उठाकर, बम्बई से भागकर यहां आ गया। मेरी आशा के विपरीत यहां यह खबर तेजी से फैल गई कि बम्बई का गैंगस्टर सोहन लाल इस शहर में छिपता फिर रहा है। तीरथराम पाहवा ने जब यह सुना तो, अपने आदमी भेजकर, मुझे बुलवा भेजा। न चाहते हुए भी मुझे जाना पड़ा, क्योंकि पाहवा इस शहर की दूसरी सरकार है। सब कुछ ठीक-ठाक रहा, लेकिन वह इस बात का अच्छी तरह यकीन कर लेना चाहता था कि मैं वास्तव में, वही, सोहन लाल हूं, जो कह रहा हूं। इसके लिये उसने अपना आदमी बम्बई भेजने का फैसला किया, ताकि वह सोहन लाल की तस्वीर लाकर; मेरी बात की सत्यता प्रमाणित कर सके।'

'फिर—?' शंकरदास ने पहलू बदला !

सोहन लाल ने कश लेकर, सिगरेट जूते तले मसली और पाहवा के साथ संबंध रखती सारी आप बीती उसे बता दी !

सुनने के बाद, शंकरदास ने कान खुजलाया और कहा !

'अब क्या इरादा है ?'

'मैं तीरथराम पाहवा जैसे दरिन्दे को खत्म कर देना चाहता हूं !' सोहन लाल के दांत भिंच गये, आंखें लाल हो गईं !

'मैं भी यही चाहता हूं।' शंकरदास ने शान्ति से कहा—'और इसके लिये हमें, खुल्लमखुल्ला मैदान में आकर उसे

ललकारना होगा।'

'कल यह भी कर देंगे।' सोहन लाल के स्वर में वहशीपन उभर आया और शकरदास के चेहरे पर पुन: वैसे ही क्रूरता के भाव आने आरम्भ हो गये जब उसने वासना के कुत्तों को खत्म करने का प्रण किया था और बीस दिन मे बाईस की हत्या कर दी थी।

सुन्दर लाल चाय ले आया, वह दोनों चाय पीने लगे। सुन्दर लाल प्याला लिये, उसके पास बैठ गया।

'तुमने यह तो बताया नहीं कि, तुम्हें फांसी की सजा क्यों हुई ?' कुछ घूंट लेने के पश्चात एकाएक सोहन लाल ने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा !

शकरदास के चेहरे पर क्रूरता छाने लगी !

'मैं मिलिट्री में था। मेरा ट्रांसफर अक्सर यहां वहां होता रहता था। कई साल पहले मेरी शादी हो चुकी थी। बहुत खूबसूरत बीवी थी। लेकिन यह तो मुझे बहुत ही बाद मे मालूम हुआ कि बहुत बड़ी हरामजादी भी थी ! जवानी के कुछ साल तो मौज मस्ती में कट गये ! इस बीच एक बेटी हुई। वह अपनी मां से कहीं ज्यादा खूबसूरत थी। मैं छोटा-सा खुशी परिवार पाकर बहुत खुश थी ! तभी मेरी ट्रांस्फर आसाम हो गई। तीन साल के लिये मुझे वहां जाना पड़ गया ! परन्तु इस बार मैं अपनी बीवी और बेटी को साथ न ले गया। कुछ तो जगह ठीक नहीं थी दूसरे वहां पर हो रहे अन्दरूनी झगड़े की वजह से ! मेरी बेटी सोलह साल की बहुत ही खूबसूरत जवान, निकल चुकी थी। मेरे आसाम जाते ही मेरी बीवी ने अपने 'पर' फैला दिये ! 'पर' तो वह पहले भी फैलाती रही थी किन्तु इसका मुझे अहसास न हुआ था। उसके यारों की लिस्ट बहुत लम्बी थी। ठीक बीस दिन के बाद हर एक की बारी आती थी। जब मैंने सुना तो तुम कल्पना नहीं कर सकोगे कि मेरी क्या हालत हुई होगी ! आज सोचता हूं तो लगता है शायद मैं सब कुछ बर्दाश्त कर लेता। ज्यादा बात होती तो अपनी बीवी को घर से निकाल देता। उसे तलाक दे देता। लेकिन जब मुझे मालूम हुआ कि मेरी बीवी ने, मेरी फूल सी बेटी को अपना राजदार बना लिया है।

सोलह साल की खूबसूरत कली, भी उसके यारों के बिस्तरे

नर्स करते लगी है तो मैं पागल हो उठा। मेरे मस्तिष्क में धमाके होने लगे। हर समय मुझे लगता कि अभी मेरे दिमाग की कोई नस फटेगी और मैं मर जाऊंगा।

कहते हुए शंकरदास ठिठका और गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। चेहरा आवेश के कारण सुर्ख हो गया था। आंखों में आग का तूफान नाचता दिखाई दे रहा था।

सोहन लाल और सुन्दर लाल बुत बने उसे देख रहे थे।

'यह सब कुछ मेरे दोस्त ने मुझे बताया जो मेरा भाई बना हुआ था।' शंकरदास ने हांफते हुए पुनः कहना शुरू किया। वह पूरे बीस आदमी थे जो मेरी बीवी और मेरी बेटी के साथ ऐश करते थे। हर रात मेरा घर कोठा बन जाता और दिन श्मशान, सारा दिन मां-बेटी सोई रहती। मेरे दोस्त ने मुझे बहुत तसल्लियां दे। लेकिन वह भी जानता था और मुझे भी बहुत अच्छी तरह मालूम था कि सब कुछ बरबाद हो चुका था। मैंने बहुत धैर्य के साथ सोचा और जो फैसला किया, उससे मैं आज तक सन्तुष्ट हूं। मैंने अपने सर्विस रिवाल्वर से अपनी बीवी और बेटी को गोलियों से उड़ा दिया।

मैंने उन जड़ों को समाप्त कर दिया जहां से मेरी तबाही शुरू हुई थी। इतने पर ही मेरे दिल में जलती आग ठण्डी हुई। तब मैंने उन बीस शख्सियतों को भी मारने का फैसला किया जो मेरी बरबादी में शामिल थे। हर रोज एक को चुनकर मारता रहा पुलिस लाशें उठाकर, परेशान होने लगी। हर कोई जान चुका था कि यह सब क्यों हो रहा है। कौन कर रहा है। पुलिस हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गई। मेरे केस का इन्चार्ज इन्स्पेक्टर पाल देशमुख ही था। वह मुझे पकड़ने की पूरी चेष्टा कर रहा था। बहुत जीदार इन्स्पेक्टर है।

मैं उससे बचता हुआ अपनी जिंदगी के सबब के आखिरी मुकाम पर पहुंच गया। आखिरी कुत्ता, आखिरी दुश्मन बीसवां हरामजादा, मैंने उसका सीना भी गोलियों से चाक कर दिया। तब मैंने अपने दिल की आग को ठण्डा होते हुए महसूस किया।

परन्तु इन्स्पेक्टर पाल देशमुख समझ चुका था कि मेरा आखिरी शिकार कौन है। वह वहां पर घात लगाये हुआ था। वह मुझे रोक नहीं सका, मैंने अपना आखिरी शिकार कर लिया

था। परन्तु उसी समय मुझे इन्स्पेक्टर पाल ने घेर लिया। मैंने खुद को बचाने के लिए बहुत संघर्ष किया।

इन्स्पेक्टर पाल को मेरी दो गोलियां लगी, परन्तु इस पर भी वह पीछे न हटा, उसने खाली हाथों से मेरे साथ लड़ाई की और मुझे पकड़ लिया। मैं आज तक हैरान हूं, जिस्म में दो गोलियां लगें, उसने मुझसे मुकाबला किया और मुझे बेबस कर दिया। फिर अदालत में केस चला, बचने की गुंजाईश का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था और मुझे फांसी की सजा दे दी गई।

शंकरदास ने भारी स्वर में कहा और उसी की पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बन्द कर लीं।

बुत बना सोहन लाल का शरीर हिला, सिगरेट सुलगाकर गहरा कश लिया। सुन्दर लाल ने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए, चाय के खाली कप उठाये और किचन की तरफ बढ़ गया।

कल पाहवा से टकराने का दृढ़ फैसला उन्होंने ले लिया था। बाहर किशन पाहवा की लाश मिलने पर, शहर में क्या तूफान आ चुका है, इस बात से वह अन्जान थे और ना ही इस बारे में जानने की, उन्होंने कोई चेष्टा की।

□ □

□ □

चन्द घण्टों में ही तीरथराम पाहवा बहुत बूढ़ा लगने लगा था। आंखें भीतर धंस-सी गयी थी। बदन में ढीलापन, चेहरे पर मुर्दानी की छाप पड़ चुकी थी। कुछ देर पहले ही वह अपने जवान बेटे किशन की लाश देखकर वापस लौटा था। अपने बेटे की मौत के साथ-साथ उसे पूरी दुनिया ही समाप्त होती नजर आ रही थी। चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा उसे दिखाई दे रहा था।

काश उसे पहले मालूम होता कि वह दोनों, किशन को कत्ल करने के लिए उसका अपहरण कर रहे हैं तो एक बार अवश्य

जान पर खेलकर भी उसे बचाने की चेष्टा करता।

इस समय पाहवा अपने होटल के खास कमरे में टेबल के पीछे उसी पर आंखें बन्द किए बैठा था। सूख रहे होंठों पर पपड़ी जमी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। बदन तो जैसे कुर्सी पर लुढ़का हुआ लग रहा था।

एकाएक कमरे में अजीब सी ध्वनि गूंजने लगी। पाहवा ने आंखें खोलीं जहां कि सिर्फ सुर्खी ही व्याप्त थी। पोपटे मनों भारी हो रहे थे। उसने हाथ बढ़ाकर, टेबल पर दिखाई दे रही बटनों की प्लेट में से एक बटन दबाया। सामने दिखाई दे रहा दरवाजा खुल गया। बाहर खड़ा महेश चन्द्र भीतर आया तो दरवाजा खुद-ब-खुद बन्द हो गया।

पाहवा उदास सूनी निगाहों से उसे देखने लगा।

महेश चन्द्र के चेहरे पर भी तूफान गुजरता महसूस हो रहा था। वह भारी कदम उठाता हुआ टेबल के पास आ खड़ा हुआ। उसने निगाह भरकर पाहवा का निरीक्षण किया फिर दोनों हाथ बांधे, सिर झुकाये खड़ा हो गया।

'कोई काम था?' पाहवा के जैसे मुद्दत से बन्द होंठ खुले हों। क्षीण या स्वर कंठ से निकला। जैसे मेहनत के पश्चात गले से यह शब्द निकाल पाया हो।

'जी नहीं।' महेश चन्द्र ने बुझे स्वर में कहा 'वैसे मैंने छः कमाण्डों का एक दस्ता इन्स्पेक्टर पाल की खोज में लगा दिया है। अगर वह इस शहर में हुआ तो बारह घण्टे के भीतर सामने होगा, शहर से बाहर चले जाने की दिशा में उसे तलाश करने में कुछ दिन अधिक लग जायेंगे। लेकिन वह बच नहीं सकेगा।'

तीरथराम पाहवा ने उसे देखा फिर एकाएक जैसे बिजली का करंट लगा हो। वह फौरन सीधा होकर बैठ गया। आंखों में वहशियाना भाव दिखाई देने लगे। चेहरा क्रूरता से भर गया। हाथ बढ़ाकर उसने सिगार सुलगाया।

'महेश!' पाहवा का स्वर सर्द था।

,य—यस—सर।'

'किशन वापस तो नहीं आ सकता?'

'न—नहीं स—र।' महेश चन्द्र की सांसों में अटकाव आने लगा। पाहवा का यह रूप उसके लिए नया नहीं था।

'मैं भी यहीं सोच रहा हूं कि किशन वापस नहीं आ सकता। मरने वाले कभी वापस नहीं आते। अगर ऐसा होता तो वह सब जिन्दा हो चुके होते जो आज तक हमारे हाथों से मरे है।' कहने के पश्चात पाहवा ने सिगार का लम्बा कश खींचा, फिर धुआं उगलकर पुनः कहा —'किशन मेरी जिंदगी का इकलौता मकसद था। शायद उसी के कारण, बूढ़ा होने के पश्चात भी खुद को कभी बूढ़ा महसूस नहीं किया। इसके साथ ही, मेरी जिंदगी भी खाली हो गई। अब मैं यह कुर्सी छोड़ देना चाहता हूं, कहीं दूर जाकर शान्ति से भरी जिंदगी जीना चाहता हूं। क्यों ठीक है ना?'

'जी... जी जैसा आप उचित समझें।' महेश चन्द्र ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी!

'लेकिन।' पाहवा के स्वर में क्रूरता का समावेश आ गया —'जाने से पहले मैं अपने आखिरी दुश्मनों को कुत्ते की मौत मार देना चाहता हूं। सोहन लाल और शंकर दास मुझे जिन्दा या मुर्दा चाहिये।'

'मैं समझ गया सर।'

'समझ गये तो अब क्या करोगे?'

'आपने कुछ सोचा तो हो कह दीजिये।'

तीरथराम पाहवा ने ऐशट्रे पर सिगार रखा और दोनों हाथों की उंगलियों आपस में फंसा कर, टकटकी बांधे महेश को देखने लगा।

'हमारे पर ऐसे कितने आदमी है, जिन्हें हम फौरन इस्तेमाल में ला सकते है?'

'बहुत है सर।' महेश दृढ़ स्वर में बोला—'हमें जितने भी आदमियों की जरूरत होगी उतने फौरन इकट्ठे कर लिये जायेंगे।'

पाहवा हिला और कुर्सी से उठकर, पीठ पर हाथ बांधे टहलने लगा। जबड़ों में खिचाव आ जाने के कारण चेहरा, कुरूप लगने लगा था।

'शहर के हर इलाके में पन्द्रह आदमी इस तरह फैला दो कि इलाके में जाने और आने वालों का चेहरा उनकी निगाह से गुजरे। हर टुकड़ी में दो आदमी ऐसे होने चाहिये जो सोहन लाल और शंकरदास को जानते हों। पुलिस स्टेशन या जेल से

शंकरदास की तस्वीर मिल जायेगी, उसके प्रिंट निकलवाकर अपने आदमियों में बंटवा दो। सोहन लाल को तो कई जानते होंगे।'

'यस सर।'

'छः घण्टों में यह काम पूरा हो जाना चाहिये।' पाहवा सांप की भांति फुंकार उठा।

'बिल्कुल हो जायेगा सर, आप निश्चित रहें।' यदेश चन्द्र के चेहरे पर खतरनाक भाव विद्यमान हो गये—'छः घण्टों में तो पूरा शहर लाशों में तब्दील किया जा सकता है—और।'

'नहीं, बिना वजह किसी को न मारा जाये।' शायद अब पाहवा को अपनों से जुदा होने के ग़म का अहसास होने लगा था—'हमें सिर्फ दो लाशें इकट्ठी करनी हैं। सोहन लाल और शंकरदास की लाशें। इनकी लाशें कहीं से भी ढोकर लाओ।'

□ □

□ □

अगले दिन सुबह दस बजे सुन्दर लाल ने सोहन लाल और शंकरदास को नींद से जगाया। सुन्दर लाल की घबराहट चरम सीमा पर थी। चेहरे पर भय की सफेदी पुती हुई थी। दोनों ने ध्यान पूर्वक उसके चेहरे को देखा।

'क्या हुआ, सब ठीक तो है ना?' शंकरदास ने पूछा।

'मुसीबत सिर पर नाच रही है और तुम दोनों आराम से सोये हुए हो।' सुन्दर लाल ने सूखे स्वर में कहा और दोनों फौरन सीधे होकर बैठ गये।

'कैसी मुसीबत?' सोहन लाल की आंखें सिकुड़ गईं।

'शहर के चप्पे—चप्पे में तीरथराम पाहवा ने अपने आदमी फैला दिये हैं। भगवान ही जानता है कि उसने इतने आदमियों का इंतजाम कैसे किया, लेकिन इस वक्त शहर का हर छोटे से लेकर बड़ा बदमाश उसके लिए काम कर रहा है। हर इलाके की उसने इस तरह नाकेबन्दी करवा दी है कि किसी का भी, छिपकर गुजर जाना असंभव है। और मालूम हुआ है कि वह

नाकेबंदी तब तक रहेगी जब तक तुम दोनों को पाहवा खत्म नहीं कर देता। खिड़की का पर्दा हटाकर देखो, पाहवा के आदमी दिखाई दे जायेंगे। हर किसी के पास हथियार हैं और उन्हें इस बात की पूरी छूट है कि तुम दोनों को भून दिया जाये।'

'यानि हम यहां से बाहर नहीं जा सकते ?'

'हरगिज नहीं।'

शंकरदास उठा और खिड़की के पास पहुंचकर, थोड़ा सा पर्दा हटाकर बाहर देखा, दो पल बाहर देखने के पश्चात् उसने पर्दा छोड़ा और वापस आ बैठा। कोई कुछ न बोला, गहरी खामोशी वहां छा चुकी थी।

'मैं चाय बनाकर लाता हूं।' सुन्दर लाल किचन की तरफ बढ़ गया।

सोहन लाल ने सिगरेट सुलगा ली।

'इन परन्तु मामूली बातों से हमें नहीं डरना चाहिये।' कुछ क्षण उ का ब शंकरदास ने कहा और प्रश्न भरी निगाहों से सोहन लाल ह खने लगा।

'तुम य ख्याल अपने दिल से निकाल दो कि मैं डर गया हूं।' सोहन लाल हंसा—'मुझे सिर्फ डराना आता है और हम आज तीरथराम पाहवा के होटल जय गणेश जाकर उसे डरा देंगे! ठीक है ना ?'

'बिल्कुल ठीक।' शंकरदास का चेहरा चमकने लगा।

'हमें पाहवा को अच्छी तरह समझा देना है कि और भी बहुत बैठे हैं। अकेले वह ही दादागिरी नहीं कर सकता।'

'उसके पास फोर्स है! यही बात हमें तकलीफ दे रही है।'

'देखा जायेगा अगर।'

तभी सुन्दर लाल चाय के प्याले थामे वहां आया और दोनों को एक-एक थमाता हुआ बोला—

'पाहवा इन्स्पेक्टर पाल देशमुख को तलाश कर रहा है। इन्स्पेक्टर पाल गायब है। पाहवा ने एक स्पेशल दस्ता सिर्फ इन्स्पेक्टर पाल को तलाश करने के लिए तैनात किया है।'

'क्यों ?' सोहन लाल ने पूछा।

'पाहवा ने एयरपोर्ट पर शंकरदास को पहचान लिया था। चूंकि यह अफवाह पहले ही आम थी कि शंकरदास को जेल से

फरार करवाने में इन्स्पेक्टर पाल का हाथ है। सुना है कि कुछ दिन पहले पाहवा ने इन्स्पेक्टर पाल के परिवार को उड़ा दिया था। इन्स्पेक्टर पाल ने पाहवा से बदला लेने के लिए, शंकरदास को जेल से फरार करवा कर पाहवा के पीछे डाल दिया। यह आम कहानी है जो शहर में सबकी जुबानों पर दौड़ रही है।' कहने के पश्चात सुन्दर लाल, प्रश्न भरी निगाहों से शंकरदास को देखने लगा।

शंकरदास ने, सोहन लाल को देखा !

'शायद इन्स्पेक्टर पाल को खतरे का एहसास हो गया होगा। इसी कारण वह पाहवा को मिल नहीं रहा और कहीं अण्डरग्राउण्ड हो गया है।'

'हो सकता है।' सोहन लाल ने गर्दन हिला दी।

□ □

□ □

सुधीर गोस्वामी ? अव्वल दर्जे का धूर्त ! मक्कार, फलवा नजर आये तो, अपने बाप का गला भी काट देने वाला। ऐसे इंसान को अगर पुलिस में नौकरी मिल जाये तो क्या कहने ! जाहिर है, वह अपनी तनख्वाह से भी पांच-सात गुना ज्यादा कमाता होता।

वैसे सुधीर गोस्वामी पुलिस में कांस्टेबल था। हर चोर-उचक्के से उसने खाने—चाने का रिश्ता बना रखा था। चोरी-चकारी और जेबकतरों के लिए तो वह फरिश्ता था। जब भी यह लोग फंसते, सुधीर गोस्वामी चक्कर चलाकर, उन्हें छुपा देता। बदले में अपना मेहनताना ले लेता।

वैसे भी चोरी में या जेबकतरी में उसका हिस्सा अवश्य होता। शराफत से उसके पास दस प्रतिशत पहुंच जाता। वह सिर्फ कांस्टेबल था। अगर इंस्पेक्टर होता तो इसमें कोई शक नहीं था कि हर वक्त आधा शहर उसकी जेब में होना था।

वही कांस्टेबल सुधीर गोस्वामी, पुलिस स्टेशन के पिछवाड़े बैठा, बीड़ी पर बीड़ी फूंके जा रहा था। पिछले एक घण्टे से वह

गम्भीरता से सोच रहा था। ऐसे वह तब सोचता, जब कोई बड़ा मसला उसकी खोपड़ी में फस जाता था।

उसकी विचारधारा का केन्द्र सुन्दर लाल था।

सुन्दर लाल को वह एक लम्बे अर्से से जानता था। वह जेबकतरा था और अपनी कमाई का दस प्रतिशत, शराफत से उसके चरणों में चढ़ाकर जाता था और पकड़े जाने पर, कई बार उसे इंस्पेक्टर के हत्थे से छुड़ाया भी था।

वही सुन्दर लाल कल से उसके पास सात चक्कर लगा चुका था, रात देर तक उसके गिर्द मंडराता रहा और सुबह सवेरे भी दर्शन देने आ पहुंचा। उसका इकलौता सवाल होता कि शहर का क्या हाल है? शंकरदास और सोहन लाल के बारे में क्या कदम उठाये जा रहे हैं?

शंकरदास और सोहन लाल के बारे में तो पाहवा कद उठा रहा था और पुलिस के कदम उठाने की रफ्तार बहुत ही सुस्त थी। पाहवा ने जो भी कदम उठाया, पुलिस वालों को फौरन खबर हो जाती। इसलिए सुन्दर लाल, सुधीर गोस्वामी के गिर्द चक्कर लगा रहा था।

कांस्टेबल सुधीर गोस्वामी को, उसकी दिलचस्पी बड़ी अटपटी लगी। पूछने पर सुंदर लाल ने हंस कर टाल दिया।

यहां तक तो सब कुछ ठीक रहा।

सुधीर गोस्वामी को जो कुछ भी मालूम था, वह सुंदर लाल को बता दिया। आज सुबह सुंदर लाल को पुनः आया देखकर सुधीर गोस्वामी चिढ़ गया। उसने साफ-साफ कह दिया कि दोबारा इस मामले में उसके पास न आये।

सुंदर लाल उसकी जान पहचान का था। उसने जेब से सौ का नोट निकालकर, सुधीर गोस्वामी की हथेली में दबा दिया। बस यहीं पर गजब हो गया। सुधीर गोस्वामी ने उसे पाहवा के नये कदम के बारे में बताया। सुंदरलाल फिर आने को कहकर चला गया।

कांस्टेबल सुधीर गोस्वामी फौरन पुलिस स्टेशन के पिछवाड़े एकान्त में पहुंचा, बीड़ी पर बीड़ी फूंकते हुए सोचने लगा और सोचते-सोचते उसे घण्टे से ऊपर का समय हो चुका था।

अब इसमें कोई दो राय नहीं थी कि मामला वास्तव में गड़-

बड़ है। सुन्दर लाल पागल नहीं था जो उसे यूं ही सौ का नोट थमा गया। इतनी दिलचस्पी तो किसी से भी नहीं होती कि जेब से पैसे देकर, खामखाह की बातें जानी जाएं। यानि सुन्दर लाल खबरें इकट्ठी करके शंकर दास और सोहन लाल तक पहुंचा रहा है। इस बात को कोई बेवकूफ भी समझ सकता था।

कांस्टेबल सुधीर गोस्वामी को लगा अब वक्त आ गया है कि मोटा नावां पीट सकता है। सुन्दर लाल को शंकरदास और सोहन लाल की खबर थी और पाहवा हर कीमत पर उन दोनों को चाहता था।

सुधीर गोस्वामी जब पुलिस स्टेशन के पिछवाड़े से निकला तो उसकी आंखें चमक रही थीं। उसने वर्दी उतारकर, सादी पैंट-कमीज पहनी और बिना किसी को कुछ कहे पुलिस स्टेशन से बाहर आकर टैक्सी पकड़ी और पाहवा के होटल जय गणेश जा पहुंचा।

अपनी जिन्दगी में वह पहली बार इस होटल में आया था।

'मुझे श्रीमान पाहवा साहब से मिलना है?' कांस्टेबल सुधीर गोस्वामी ने स्वागत कक्ष के काउण्टर पर खड़ी खूबसूरत युवती से कहा।

युवती के होंठों पर छाई मुस्कराहट एकाएक गायब हो गई। उसने ध्यानपूर्वक सुधीर गोस्वामी को देखा फिर कहा।

'सारी, पाहवा साहब नहीं मिल सकते। आप फिर कभी आईयेगा।'

सुधीर गोस्वामी एकाएक मुस्करा पड़ा।

'मुझे मिलना है?' सुधीर गोस्वामी ने काउण्टर पर कोहनियां टिकाकर कहा—'पाहवा साहब परेशान हैं और मैं उनकी परेशानियों का हल हूं। समझीं?'

'अगर यह कोई मजाक हुआ तो आपके हक में यकीनन बुरा होगा।' युवती ने स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी।

'मुझे कुछ भी समझाने की चेष्टा न करो?' पहले की अपेक्षा सुधीर गोस्वामी के स्वर में सख्ती आ गई।

युवती ने फौरन इण्टरकाम का रिसीवर उठाया और बटन दबाकर धीमे शब्दों में कुछ कहने के पश्चात रिसीवर रख दिया।

दो क्षण बाद ही काउण्टर के पास एक आदमी हाजिर हुआ। युवती ने सुधीर गोस्वामी की तरफ इशारा किया। सुधीर गोस्वामी ने आने वाले पर भरपूर निगाह डाली फिर उसके साथ हो गया। रास्ते में कोई बात नहीं हुई।

कुछ क्षणों के पश्चात वह व्यक्ति ठिठका और सामने दिखाई दे रहे दरवाजे की तरफ उसने इशारा किया। सुधीर गोस्वामी ने हल्का-सा झटका दिया और दरवाजा धकेलकर भीतर प्रवेश कर दिया।

उसके साथ आये व्यक्ति ने भीतर आने की चेष्टा न की?

कमरे में प्रवेश करते ही सुधीर गोस्वामी की निगाहें टेबल के पीछे कुर्सी पर बैठे इन्सान पर स्थिर हो गई। जो कि महेश चन्द्र था।

'मुझे पाहवा साहब से मिलना था।' उसने आस-पास देखते हुए कहा।

'बैठो?' महेश चन्द्र ने चुभती निगाहों से उसे देखा।

सुधीर गोस्वामी अनमने मन से टेबल के पास पड़ी कुर्सी पर पर जा बैठा।

'मैं पाहवा साहब से...।'

'खामोश रहो।' महेश चन्द्र ने उसकी बात काटकर उखड़े स्वर में कहा—सिर्फ वही कहो जो तुमसे कहने को कहा जाये?'

सुधीर गोस्वामी मन-ही-मन झल्लाकर रह गया।

'कौन हो तुम?'

'सुधीर गोस्वामी!'

'करते क्या हो?'

'पुलिस में हूं? कांस्टेबल!'

'बहुत खूब!' महेश चन्द्र के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे—'लेकिन मैं यह समझने में नाकाम हूं कि तुम पाहवा साहब से क्यों मिलना चाहते हो?'

'मेरे पास कोई ऐसी जानकारी है जो उनके लिये फायदेमन्द हो सकती है? शायद आज की तारीख में उन्हें इसी जानकारी की जरूरत है?'

'मसलन?' महेश चन्द्र के माथे पर बल उभर आये?

'सोहन लाल और शंकरदास।'

'तुम जानते हो कि यह दोनों कहां हैं ?'

'मैं तो नहीं जानता ? लेकिन कोई है जो यह जानता है कि यह दोनों कहां हैं और उस जानने वाले को जानता हूं ?'

'कम शब्दों में, जल्दी और बहुत जल्दी पूरी बात कह डालो ?' महेश चन्द्र के हाथों की उंगलियां कुर्सी के हत्थे से लिपट गई।

बिना किसी जल्दी के सुधीर गोस्वामी ने जेब से सौ का नोट निकाला और उसकी तहें खोलकर, महेश चन्द्र को दिखाकर बोला।

'यह नोट कुछ देर पहले किसी ने इसलिये दिया है कि मैं उसे शहर में हो रही हर वह खबर उसे बताऊं जो सोहन लाल और शंकरदास से ताल्लुक रखती हों ? समझे कुछ ?'

उत्तेजना से महेश चन्द्र का चेहरा सुर्ख होने लगा।

'कौन है वह ? कहां रहता है ? उसका नाम क्या है ?'

सुधीर गोस्वामी ने मुस्कराकर नोट जेब में डाला और जेब से बीड़ी निकालकर सुलगाई और गहरा कश लिया। दांत भींचे कठोर निगाहों से महेश चन्द्र उसे देखता रहा।

'जहां तक जवाब देना, मैं मुनासिब समझता था, मैंने जवाब दिए। अब इससे आगे जवाब देना, मेरे लिये कुछ कठिन हो रहा है ?' सुधीर गोस्वामी ने शान्ति से कहा—'अब तुम मेरे कुछ सवालों का जवाब दो। वह सवाल यह है कि तुम कौन हो ?'

महेश चन्द्र के चेहरे पर छाये भाव एकाएक गायब हो गये। उसके भावहीन चेहरे पर सिर्फ आंखों में सख्ती व्याप्त हो चुकी थी। उसने दराज खोलकर सिगरेट निकाली और सुलगाकर उसे देखा।

'मेरा नाम महेश चन्द्र है। मैं पाहवा साहब का दायां हाथ हूं।'

'अच्छी बात है ? मेरा भी यही ख्याल था कि तुम महेश ही हो सकते हो ? वैसे पाहवा साहब होटल में मौजूद नहीं हैं क्या ?'

'हैं ? लेकिन वह किसी से भी नहीं मिलेंगे। कल उनके जवान बेटे की हत्या हो गई है ? जिसका उन्हें बहुत दुःख है। अब अगर तुम कोई काम की बात करना चाहते हो तो बोलो, नहीं तो चलते बनो।' महेश चन्द्र ने सर्द स्वर में कहा। जबकि उसका

यत्न कर रहा था कि रिवाल्वर निकालकर, उसे शूट कर दे। लेकिन वह अपनी इच्छा को जबरन दबाये हुए था। क्योंकि वह शंकर दास और सोहन लाल तक पहुंचने का रास्ता जानता था। जिसे कि वह हर कीमत पर जानना चाहता था।

'शायद तुम अभी तक नहीं समझे कि मैं तुम लोगों को शंकर दास और सोहन लाल तक पहुंचा सकता हूं। जिन्हें पकड़ने के लिये शहर का हर आदमी नाकाम हो रहा है?' सुधीर गोस्वामी ने पहलू बदलते हुए विचलित स्वर में कहा।

'मैं तुम्हारे हर शब्द का मतलब समझ रहा हूं।' महेश चन्द्र ने कटु स्वर में कहा।

सुधीर गोस्वामी दो पल तक महेश चन्द्र के चेहरे पर निगाहें दौड़ाता रहा फिर दृढ़ता भरे स्वर में बोला।

'यह जानकारी देने का मुझे कितना इनाम मिलेगा।'

'तुम क्या चाहते हो?' महेश चन्द्र के होंठों पर कसाव आने लगा।

'एक लाख रुपया।'

महेश चन्द्र ने सिगरेट का कश लेकर सिगरेट ऐश ट्रे में डाली, फिर खड़े होकर शान्त निगाहों से सुधीर गोस्वामी को देखा।

'ऐसे सौदों के फैसले पाहवा साहब खुद करते हैं? तुम रुको, मैं उनसे बात करके आता हूं?' कहने के पश्चात महेश चन्द्र बाहर निकल गया।

सुधीर गोस्वामी एकाएक अजीब-सी बेचैनी महसूस करने लगा। उसे लगा कि कुछ हो रहा है, लेकिन अपनी बेचैनी की तह तक न पहुंच पा रहा था।

दो मिनट बाद ही महेश चन्द्र वापस आ गया।

'एक लाख तुम्हें मिल जायेगा।' महेश चन्द्र कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—'अब कहो वह कौन है जिसने तुम्हें सौ का नोट?'

'लेकिन लाख रुपये?'

'मिल जाएंगे।'

'सौदा हाथों, हाथ हो तो ज्यादा अच्छा रहता है?'

महेश चन्द्र की आंखों में जहरीले भाव उजागर हो गये। वह पुनः कुर्सी से उठा और पीछे दिखाई दे रही अलमारी खोलकर,

उसने सौ-सौ के नोटों की दस गड्डियां निकालीं और टेबल पर ढेर कर दीं।

सुधीर गोस्वामी का शरीर उत्तेजना से कांपने लगा। नोटों पर निगाहें दौड़ाते हुए, बार-बार सूखे होंठों पर जीभ फेर रहा था।

'इन्हें उठा लो?'

महेश चन्द्र के कहने की देर थी कि सुधीर गोस्वामी ने हाथ की कांपती उंगलियों से गड्डियां उठाईं और अपनी कमीज में डाल ली। पेट और पीठ के साथ लगी गड्डियों की चुभन उसे बहुत भली लग रही थी।

'बोलो?' महेश चन्द्र ने उसकी आंखों में झांका।

'उसका नाम सुन्दर लाल है। वह जेबकतरा है?' साथ ही सुन्दर लाल के घर का पता बता दिया। फिर बोला—'हो सकता है दोनों उसके घर पर ही छिपे हों? अब मैं चलता हूं। जरूरत पड़े तो मुझे फिर बुला लेना।' कहने के पश्चात सुधीर गोस्वामी दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

पूरा लाख रुपया उसकी जेब में था। जो कि वर्तमान स्थिति में उसके लिये बहुत भारी रकम थी। पुलिस में कांस्टेबल की घटिया नौकरी छोड़कर इस लाख रुपये से वह कोई भी छोटा-मोटा धन्धा कर सकता था।

चार कदम आगे बढ़ते ही उसकी विचार तन्द्रा टूटी। उसके रास्ते में, ठीक सामने कोई आ गया था। उसने देखा, वह पाहवा के ही कमांडो में से एक था। यह देखकर भय की लहर उसके शरीर में दौड़ गई कि उसका हाथ जेब में था।

'पीछे हटो?' भय और आतंक मिश्रित स्वर में वह चीख-सा पड़ा।

'अगर अपनी जिन्दगी चाहते हो तो खामोशी से मेरे पीछे चले आओ?' वह स्थिर लेकिन कठोर स्वर में बोला।

सुधीर गोस्वामी समझ गया कि महेश चाल चल गया है, बल्कि उसकी जिन्दगी के क्षण भी गिने-चुने रह गये हैं। लाख रुपया उसके पास था और वह ऐसे वक्त में मौत को गले लगाने को तैयार नहीं था।

'क्या बकवास कर रहे हो?' सुधीर गोस्वामी ने खुद पर

काबू पा लिया। उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ रहा था।

'रिवाल्वर निकालकर समझूं?' उसने कटु स्वर में कहा।

'कहां है रिवाल्वर?'

अगले ही पल उसने जेब में पड़ा हाथ बाहर निकाल लिया। हाथ की उंगलियों में दबे रिवाल्वर का रुख उसकी तरफ था। सुधीर गोस्वामी क्षण भर के लिये सिर से पांव तक सिहर उठा। परन्तु दूसरे ही क्षण किसी चील की भांति रिवाल्वर पर झपट्टा मारा। वह हर सम्भव कीमत पर, अपने गिर्द छा चुकी मौत की दीवार को हटा देना चाहता था।

हाथ-पांव सूखे पत्ते की भांति कांप रहे थे।

दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये।

'पागल मत बनो?' रिवाल्वरधारी गुर्राया—'तुम इस समय घिरे हुए हो, चाहो तो अपने आस-पास देख लो। मैं इसी पोजीशन में रहूंगा?' दोनों के हिलते शरीर क्षण भर के लिये स्थिर हो गये। सुधीर गोस्वामी ने बिजली की-सी गति के साथ चारों तरफ निगाह घुमाई।

वह करीबन आठ-दस लोग थे। जिनके हाथ तो जेबों में थे, परन्तु वह किसी भी वक्त बाहर आ सकते थे।

दोनों तरफ ही मौत थी। सुधीर गोस्वामी ने संघर्ष करने का फैसला किया और पुनः रिवाल्वर हथियाने की चेष्टा करने लगा।

रिवाल्वरधारी को शायद आशा न थी कि खुद को घिरा पाकर भी वह रिवाल्वर झपटने की चेष्टा करेगा। इसी कारण रिवाल्वर से उसकी पकड़ ढीली हो गई और फलस्वरूप, पहले झटके में ही रिवाल्वर सुधीर गोस्वामी के हाथों में फिसल आई, जो कि उसने तुरन्त सामने वाले के पेट से सटा दी।

'खबरदार हिलना नहीं, चालाकी, नहीं, अपने साथियों से कह दो, वह गोली न चलाएं, वरना गोलियों से मैं तुम्हारा पेट फाड़ दूंगा।' सुधीर गोस्वामी भय से चिल्लाकर, खतरनाक स्वर में बोला।

रिवाल्वरधारी का चेहरा सफेद पड़ गया। पेट में चुभ रही रिवाल्वर की नाल, कच्चे धागे पर लटक रही तलवार के समान

लग रही थी। उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर, कुछ दूरी पर फैले अपने साथियों को देखा।

होटल की लाबी में मौजूद अन्य लोग सहमकर वहां से खिसकने लगे। पल भर में ही वहां अजीब-सा खौफयुक्त माहौल बन चुका था।

'बाहर चलो!' सुधीर गोस्वामी आतंक भरे स्वर में कह रहा था—'मुझे बाहर तक पहुंचा दो, अपने साथियों को कह दो कि कोई पीछे न आये, वरना मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। तुम मर जाओगे। जल्दी करो, खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो। ठहरो, पहले हाथ ऊपर कर लो?'

उसने हाथ ऊपर कर लिये।

'अब मुड़कर बाहर की तरफ चल पड़ो।' सुधीर गोस्वामी की जान निकली जा रही थी—'जितनी देर लगायेगा, उतनी ही जल्दी हम मर जाएंगे, मुझे तेरे साथी मारेंगे और तुझे मैं?'

महेश चन्द्र भी इसी बीच दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया था। मामला समझते ही उसकी, आंखों में खून उभर आया।

हाथ ऊपर उठाये व्यक्ति ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर, महेश चन्द्र को देखा। महेश ने फौरन सिर हिलाकर उसे इशारा किया तो वह बाहर की ओर बढ़ने के लिये मुड़ गया।

'मेरे साथ-साथ—रहना, नहीं तो—?'

बाकी के शब्द सुधीर गोस्वामी के गले में ही रह गये। महेश चन्द्र के इशारों पर आस-पास खड़े कमाण्डो ने गोलियां चला दीं। पूरी आठ गोलियां कुछ ऐसे कोने से चलाई गईं कि वह, एक साथ, सारी-की सारी सुधीर गोस्वामी के शरीर में धस गईं। दो गोलियों से तो उसकी खोपड़ी के चीथड़े-चीथड़े उड़ गये। उसके हाथ में थमा रिवाल्वर, उसके शरीर से सटा था। उंगली ट्रेगर पर दबने के लिये बिल्कुल तैयार थी, परन्तु इसके बावजूद भी वह ट्रेगर न दबा सका। गोली न चला सका।

गोलियों की तेज गूंज से पूरा होटल कांप उठा था।

सुधीर गोस्वामी का शरीर कटे वृक्ष के समान नीचे जा गिरा। हाथ में थमी रिवाल्वर छूट गई। कमीज के भीतर पड़ी कुछ नोटों की गड्डियां बाहर आ गिरी। हाथ ऊपर उठाये व्यक्ति

के गले में फंसी सांस तेजी से निकली और उसके चेहरे का रंग वापस लौटने लगा। उसने नीचे पड़ी रिवाल्वर उठाकर, वापस जेब में डाल ली।

फिर वहां हर कोई तेज गति से भागने लगा सुधीर गोस्वामी की लाश हटाकर, खून से लथपथ वह जगह साफ कर दी गई। सारे चेहरे वहां से गायब हो गये थे और सब कुछ पहले के समान चलने लगा।

□ □

□ □

'आगे से नहीं पीछे से निकलेंगे।'

शंकरदास ने निगाह घुमाकर सोहन लाल को देखा।

'मैं भी यही सोच रहा था. शंकरदास ने सहमति से सिर हिलाया—'पीछे का रास्ता साफ है। हम बिना किसी खतरे के यहां से निकल सकते हैं ?'

'नहीं ?' पास खड़े सुन्दर लाल ने कहा—'हर इलाके को इस तरह घेरा है कि उन लोगों की निगाह से बचना असम्भव है ? कहीं-न-कहीं टकराव हो जाना मामूली बात है।' सुन्दर लाल का चेहरा चिन्ता से भरा हुआ था।

'अगर ऐसा वक्त आया तो हम पीछे नहीं हटेंगे।' सुन्दर लाल ने दृढ़ स्वर में कहा—'हम, सामने आने वाले को भूनकर रख देंगे।'

सुन्दर लाल खुश्क होंठों पर जीभ फेरकर रह गया।

'पीछे का दरवाजा खोलकर, एक निगाह बाहर डालो। अब हम यहां से फौरन निकल जाना चाहते हैं ?' शंकरदास ने सुन्दर लाल से कहा।

सुन्दर लाल ने बिना कुछ कहे आगे बढ़कर, पिछली ओर खुलने वाला दरवाजा खोलकर बाहर झांका। मकान के साथ-साथ लम्बी गली जा रही थी। जिसके बीच में से दांये बांये छोटी-छोटी गलियां निकल रही थीं।

शंकरदास और सोहन लाल उसके पीछे आ खड़े हुए थे।

सुन्दर लाल ने गर्दन घुमाकर उन्हें देखा।

'रास्ता साफ है ?'

सुन्दर लाल की बगल से निकलकर, दोनों बाहर आ गये।

'अपना ध्यान रखना ?' सुन्दर लाल ने गहरी सांस लेकर दरवाजा बन्द कर लिया।

दोनों आगे बढ़ गये। चेहरों पर हल्की कठोरता व्याप्त हो चुकी थी।

'हमें आपस में थोड़ा-थोड़ा फासला रखना चाहिये। शंकर दास ने कहा—'मैं आगे चलता हूं, तुम बीस कदम पीछे रहो ?'

सोहन लाल के सहमति से सिर हिलाने पर, शंकरदास आगे बढ़ गया।

गली समाप्त हो गई। कोई खतरा न आया, गली के किनारे पर शंकरदास ठिठका फिर पांच-सात कदम पीछे सरक आया।

'क्या हुआ ?' सोहन लाल पास पहुंचकर दबे स्वर में बोला।

'गली के बाहर बांई तरफ दो आदमी खड़े हैं। उनके हाव-भाव बता रहे हैं कि वह पाहवा की तरफ से हैं।' शंकर दास ने कहा।

'सुन्दर लाल ठीक ही कहता था ?'

दोनों की आंखें टकराईं। आंखों में प्रश्न उभरा और फिर उनके चेहरों पर छाने वाले भावों ने, प्रश्न का उत्तर दे दिया। अगले ही पल दोनों ने जेब में पड़े रिवाल्वर निकालकर हाथों में ले लिये।

शंकरदास पलटा और तेज-तेज कदम उठाता हुआ गली से बाहर निकल गया। तीन-चार कदम के फासले पर पीछे सोहन लाल था। कुछ दूर खड़े दोनों व्यक्तियों ने उन्हें देखा। साथ ही उनकी निगाह रिवाल्वरों पर पड़ी।

'वह रहे ?' उनमें से एक गला फाड़कर चिल्लाया। इसके साथ ही उन्होंने रिवाल्वरों के लिये जेबों में हाथ डाला।

शंकरदास ने रिवाल्वर वाला हाथ उठाया और ट्रेगर दबा दिया। गोली सामने वाले की छाती में लगी और वह उछलकर पीठ के बल नीचे जा गिरा। इससे पहले कि दूसरा कुछ कर पाता उसका भी यही हाल हुआ।

गोली के धमाकों ने शान्त वातावरण में सनसनी फैला दी।

'भागो शंकरदास !' सोहन लाल चिल्लाया—'दो मिनट के भीतर ही सबको मालूम हो जायेगा कि हम यहां हैं। फिर वह शिकारी कुत्तों की तरह हमारे पीछे लग जाएंगे।'

दोनों ने एक दिशा पकड़ी और दौड़ पड़े। उनके चेहरे सख्त हो चुके थे। आंखों में वहशियाना भाव छा गये।

'जो भी सामने आये उसे भून दो, कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं ?' शंकरदास भागते हुए चिल्लाया।

अभी उन्होंने दूसरी गली भी पार नहीं की होगी कि एक व्यक्ति हाथ में रिवाल्वर लिये भागता हुआ-गली में प्रविष्ट हुआ। सोहन लाल और शंकरदास की रिवाल्वरें एक साथ गरज उठीं।

दो गोलियां सामने वाले का लगीं और वह नीचे गिर गया। उसकी लाश को फलांगते हुए दोनों भागते चले गये।

गली पार करके बिना कहीं मुड़े वह, सामने वाली गली में प्रवेश करते चले गये। परन्तु इन्हीं क्षणों के बीच, उन्होंने देख लिया कि पीछे रह गई गली के दोनों मोड़ों से, कुछ आदमी भागते हुए आ रहे थे।

'तेज भागो, वह लोग पीछे हैं ?' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा।

'हरामजादे !' शंकरदास जहर भरे अन्दाज में दहाड़ा।

चंद सैकिंडों में ही वह गली के मोड़ पर पहुंच गये। सामने सड़क थी। वाहन आ-जा रहे थे। अगले ही क्षण वह ठिठके। दो व्यक्ति रिवाल्वर थामे खड़े थे और उनकी निगाहें गली पर पी थीं।

उन्होंने शंकरदास सोहन लाल की झलक भी पा ली थी।

'अब ?' दोनों की निगाहें मिलीं।

इससे पहले कि वह कुछ कहते, पीछे से फायर हुआ। गोली उनके पास से गुजर गई। शंकरदास दांत भींचे पलटा और रिवाल्वर सीधी करके, धड़ाधड़ ट्रेगर दबा दिये। गोली तो किसी को नहीं लगी, अलबत्ता पीछे आने वाले छिटककर छिप गये। गोलियों के धमाकों से गली अभी तक गूंज रही थी।

तभी सोहन लाल ने ट्रेगर दबाया। गली के बाहरी तरफ सड़क की ओर खड़े व्यक्तियों में एक के कन्धे पर गोली जा लगी

वह गिरा। दूसरा फौरन पलटकर भागा। उसके कदमों की आहट उनके कानों में गूंजती रही।

'भागो?'

'पट्ठों ने तगड़ा इन्तजाम किया है?'

उसी समय पीछे से गोली चली जो कि दीवार से लगकर छिटक गई।

दोनों तेजी से सड़क की तरफ भागे। पीछे से कदमों की आहट आने लगी।

'कोई टैक्सी, कार वगैरहा पकड़ने की कोशिश करो?' शंकरदास भागते हुए चिल्लाया—'नहीं तो यह कुत्ते हमारा शिकार कर लेंगे?'

'हरामजादे बहुत सारे हैं। दो-चार, पांच-सात होते तो अब तक अपनी मांओं के पास पहुंच चुके होते।' सोहन लाल ने दांत किटकिटाकर कहा।

भागते हुए सड़क के किनारे पहुंचे। वहां कोई भी टैक्सी वगैहरा नहीं थी। दो-चार कारें अवश्य तेज रफ्तार से सड़क पर जाती दिखाई दीं।

दोनों बिना रुके, सड़क के किनारे भागने लगे।

पीछे आने वाले आठ थे। वह भी सड़क के किनारे पहुंचे और उनके पीछे भागने लगे। सबके हाथों में रिवाल्वरें थीं। परन्तु सोहन लाल और शंकर दास रिवाल्वर की रेंज से दूर थे और यह फासला कभी भी कम हो सकता था।

तभी सड़क के दूसरी ओर फुटपाथ पर खड़ी कार अपनी जगह से हिली और धीरे-धीरे रेंगती हुई सड़क पर आ गई। कार में एक व्यक्ति स्टेयरिंग सम्भाले हुए था और दूसरा पिछली सीट पर स्टेनगन लिये बैठा था। उसकी जहरीली निगाहें, भागते हुए, उन आठों पर टिकी हुई थीं।

'कार को धीरे-धीरे उनके पास लो?' स्टेनगन वाला बोला और स्टेयरिंग सीट पर बैठे व्यक्ति के हाथ-पांव हरकत में आ गये।

कार उन आठों की तरफ लपकी।

कार ज्योंहि उनके समीप पहुंची, पीछे बैठे व्यक्ति ने, कार की खिड़की से छः इंच स्टेनगन की नाल बाहर निकाली और

घोड़ा दबा दिया।

छर्रों का राऊण्ड, तेज आवाज के साथ बाहर निकला और वह आठों पीड़ा से चिल्लाते हुए नीचे गिरकर तड़पने लगे। उनके शरीर में अनेकों सूराख-पैदा हो चुके थे। जहां सिर्फ खून-ही-खून था।

ब्रेनगन चलने की आवाज सुनकर सोहन लाल और शंकर दास ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा फिर आश्चर्य से ठिठककर रुक गये। इसी बीच कार उनके पास पहुंचकर रुक गई।

दोनों ने पिछली सीट पर बैठे व्यक्ति को देखा। वह मुस्कराया और हाथ में थमी ब्रेनगन उन्हें दिखाते हुए, विजेता के रूप में हिलाया फिर उसने दरवाजा खोलकर भीतर आने का इशारा किया।

दोनों ने असमंजसता से एक-दूसरे को देखा।

'कार में आ जाओ, मैं दुश्मन नहीं हूं और दोस्ती का नमूना, तुम लोगों के पीछे आ रहे, उन आठों को मारकर, अभी दिया है?'

सोहन लाल और शंकर दास कार में जा बैठे। दरवाजा बन्द हो गया। कार रफ्तार से आगे बढ़ गई। इतना सब कुछ होने पर भी दोनों ने हाथ में पकड़ी रिवाल्वरें जेब में न डालीं।

अभी तक हाथों में थमी रिवाल्वरें देखकर, ब्रेनगन वाला मुस्करा पड़ा।

'कौन हो तुम?' सोहन लाल ने उसे घूरा।

'कुछ ही देर में तुम दोनों को मालूम हो जायेगा, लेकिन विश्वास करो, मैं तुम लोगों का दुश्मन नहीं हूं? यह ब्रेनगन तुम्हारे पांवों के पास रख देता हूं, ताकि किसी बात का शक-शुबहा न रहे?' कहते हुए उसने ब्रेनगन कार के फर्श पर रख दी—'तुम दोनों कुछ देर के लिये नीचे झुक जाओ, अगर पाहवा के आदमियों ने कार को घेर लिया तो हममें से कोई भी नहीं बचेगा; अब उन्होंने तुम दोनों की तलाश बड़े पैमाने पर शुरू कर दी होगी—शायद तुम लोग नहीं जानते कि तुम्हारे निकलते ही, वह इलाका घेर लिया गया है जहां पर तुम सुन्दर लाल के साथ रह रहे थे। अब तक सुन्दर लाल पाहवा के क्रूर हाथों में पहुंच चुका होगा।'

'क्या ?'

'कुछ मत पूछो, सिर नीचे करके झुक जाओ, दस मिनट के बाद आराम से बातें करेंगे ?'

□ □

□ □

खुदाई मददगार की वजह के कारण सोहन लाल और शंकर दास मन-ही-मन आश्चर्यचकित थे। इस समय दोनों एक घटिया मकान के छोटे से कमरे में मौजूद थे। उनके सिवाय उन्हें लाने और एक अन्य व्यक्ति वहां पहले से ही था। वह चालीस साल की उम्र का था। चेहरे पर जख्मों के पुराने निशान स्पष्ट चमक रहे थे। छोटे-छोटे सिर के बाल, गठा हुआ बदन, मोटी नाक उन्हें देखते ही मुस्कराया।

'आओ—आओ, मैं कबसे तुम दोनों का इन्तजार कर रहा था।'

सोहन लाल और शंकर दास की निगाहें आपस में मिलीं ?

'क्यों, तू हमारा इन्तजार करने वाला कौन होता है ?' सोहन लाल ने उखड़े स्वर में कहते हुए सिगरेट सुलगाई—'क्या नाम है तेरा, कहां का रहने वाला है ?'

'नाराज मत होइये साहब।' वह हंसा—'मेरा नाम जयचंद पाटिया है। बैठिये ना, खड़े क्यों हैं साहब।' उसने कुर्सियों की तरफ इशारा किया।

दोनों कुछ सोचकर कुर्सियों पर बैठे और शंकरदास ने साथ आये व्यक्ति को देखा, जोकि सावधानी से, बुत की मानिन्द खड़ा था।

'तुम कार में क्या कह रहे थे कि सुन्दर लाल, पाइवा के क्रूर पंजों में पहुंच चुका है।' शंकरदास ने उलझन भरे स्वर में पूछा।

परन्तु जवाब जयचंद पाटिया ने दिया।

'हुजूर, आप लोग इस प्रश्न के बाद, दूसरा प्रश्न करेंगे कि हम कौन हैं, आपसे क्या चाहते हैं। आपको यहां क्यों लाए हैं,

वगैहरा-वगैहरा, इसलिये बेहतर है कि आप कुछ देर खामोश रहें और मैं बोलता रहूं। जब मैं अपनी बात पूरी कर लूंगा तो आपको सारी बातें समझ में आ जायेंगी, जिन्हें आप समझने की असफल चेष्टा कर रहे हैं।'

शंकरदास और सोहन लाल की निगाहें जयचंद पाटिया पर जा टिकीं।

जयचंद पाटिया ने उन्हें सुधीर गोस्वामी के बारे में बताया कि कैसे वह पाहवा के दरबार में पहुंचा और उसने सुन्दर लाल को पाहवा की निगाहों में ब्लैकलिस्ट किया।

'अब मैं आपको अपने बारे में बताता हूं ताकि पूरी बात समझने में आसानी हो। मैं पाहवा का पहला नम्बर दुश्मन हूं। यानि उसके बाद मुझे ही इस शहर का दादा बनना है। आज की तारीख में अगर पाहवा को सही मायनों में खतरा है तो सिर्फ मुझसे। इस तरह पाहवा का दुश्मन, मेरा जिगरी दोस्त। पाहवा के आदमियों के बीच, ज्यादा नहीं तो चंद एक आदमी, मेरे घुसे हुए हैं। उनसे मुझे खबर मिल गई कि तुम दोनों सुन्दर लाल नामक जेबकतरे के साथ रह रहे हो और पाहवा के कमांडो सुन्दर लाल के घर धावा बोलने जा रहे हैं। मेरे लिये इतना ही काफी था। इससे पहले कि पाहवा के आदमी वहां पहुंचते, मेरे आदमियों ने वह इलाका घेर लिया, जहां सुन्दर लाल रहता था। हमें सुन्दर लाल के घर का पता नहीं मालूम था और ऐसे नाजुक वक्त में किसी से सुन्दर लाल के घर का पता पूछना मुनासिब नहीं था। क्योंकि मैं सीधे-सीधे पाहवा से दुश्मनी लेकर बेमौत नहीं मरना चाहता। हमने यही प्लान बनाया कि जब पाहवा के आदमी तुम दोनों को पकड़कर ले जा रहे होंगे, तब हम, तुम दोनों को उनसे छीनने की चेष्टा करेंगे। लेकिन ऐसी नौबत नहीं आई। तुम दोनों की किस्मत अच्छी थी कि वक्त पर सुन्दर लाल के मकान से बाहर निकल आये और मेरे आदमी की नजर में आ गये।' कहने के पश्चात् जयचंद पाटिया खामोश हो गया।

सोहन लाल और शंकरदास की निगाहें आपस में मिलीं।

'ऐसे खतरनाक-वक्त में मैंने तुम लोगों को अपने खास अड्डे पर नहीं बुलवा भेजा। क्योंकि मैं पाहवा को किसी भी तरह के

शक में नहीं डालना चाहता था। यह जगह खतरों से दूर और सुरक्षित है। पाहवा के परिन्दे भी यहां नहीं पहुंच सकते।' जयचंद पाटिया के होंठों पर जहरीली मुस्कान नाचने लगी।

सोहन लाल ने सिगरेट का गहरा कश लिया और सिगरेट फर्श पर फेंक कर जूते तले मसल दी। शंकरदास ने पहलू बदला।

'वह तो सब ठीक है बन्धुवर—।' सोहन लाल ने जयचन्द पाटिया की आंखों में झांका—'अब सवाल यह पैदा होता है कि तुम हमें यहां क्यों लाये। यह तो हम मान नहीं सकते कि तुम सिर्फ हमारा दीदार ही करना चाहते थे।'

'ठीक समझे तुम—।' जयचन्द पाटिया मुस्कराया—'मैं तुम दोनों को पिछले चौबीस घंटों से, बेसब्री से तलाश कर रहा था। तुम पाहवा से दुश्मनी उतारने के ख्वाहिशमंद हो और मैं भी। हम लोग अगर मिलकर चलें तो बहुत ही जल्द मंजिलें तय कर सकते हैं। तुम दोनों के पास हिम्मत है! जिगरा है! अक्ल है और बखूबी इसका इस्तेमाल कर रहे हो।'

'साफ-साफ कहो।' शंकरदास बोला।'

'पाहवा की अस्सी प्रतिशत ताकत उसका होटल जयगणेश है। उसके सारे काम वहीं होते हैं। अगर वह होटल न रहे तो वह अधमरा हो जायेगा। उस हालत में उस पर बहुत आसानी से हाथ डाला जा सकता है। वह होटल उसके लिये एक किले के समान है या यूं समझ लो कि उस होटल में पाहवा की जान है। होटल खत्म होते ही, पाहवा भी खत्म हो जायेगा। उसका रसूक मिट्टी में मिल जायेगा। वह सड़कों पर भागता दिखाई देगा।'

'अगर ऐसा है तो तुमने आज तक यह काम क्यों नहीं किया ?'

'यह कोई मामूली काम नहीं है।' जयचन्द पाटिया ने मुंह बनाया—'पाहवा अपनी जान के बराबर, होटल की हिफाजत करता है। वह भी इस बात को समझता है, कि जब तक होटल सलामत है। होटलनुमा किला नहीं रहेगा तो उसके दुश्मन, उसे घेरकर, उसकी बोटी-बोटी तोड़ लेंगे और उसके नमक हलाल कमांडो भी उसे न बचा पायेंगे।'

सोहन लाल ने नई सिगरेट सुलगाई।

'तो तुम यह चाहते हो कि पाहवा के होटल को उड़ा दें।'

'बिल्कुल! इसमें हम दोनों का फायदा है। आप पाहवा की हकूमत समाप्त करना चाहते हैं और इसके लिये, उसके होटल तबाह होने पर जब उसके आदमी मक्खियों की भांति इधर-उधर भागेंगे तो उन्हें सम्भालने वाले, मुझ जैसे कई जयचन्द पाटिया बैठे हैं। आधा शहर पाहवा से बदला लेना चाहता है।'

'यानि कि तुम्हें हमारा कंधा बहुत पसन्द आया, जिस पर बन्दूक रखकर तुम चलाना चाहते हो।' सोहन लाल ने कहा।

'कुछ भी समझ लो।' जयचन्द पाटिया हंसा—'वैसे तुम दोनों अन्धाधुन्ध गोलियां दागे जा रहे हो, अगर तुम्हारे कंधों पर बन्दूक रखकर, एकाध फायर कर भी दिया तो कौन-सा तुम्हारा कुछ घिस जायेगा।'

'तुम क्या समझते हो कि हम रिवाल्वरों की गोलियों से पाहवा के होटल की धज्जियां उड़ा देंगे?' शंकरदास बोला।

'नहीं हजूर।' एकाएक जयचन्द पाटिया का चेहरा खिल उठा—'रिवाल्वर की गोलियां तो इन्सान का सीना छलनी करने के लिए होती हैं। दीवारों का सीना छलनी करने के लिए बारूद होता है, जिसका मेरे पास ढेर लगा हुआ है। उस बारूद से पूरा शहर उड़ाया जा सकता है।'

□ □

□ □

पाहवा के होटल जयगणेश के ठीक बायीं, तरफ बराबर बनी, चौदह मंजिला इमारत, जगन्नाथ मैन्शन के ग्यारहवें फ्लोर पर जयचन्द पाटिया का बहुत बड़ा आफिस था। जिसमें आठ कमरे थे। उसकी खिड़की, जयगणेश की तरफ ही खुलती थी। नौ मंजिली जयगणेश होटल, जगन्नाथ मैन्शन के सामने बौना-सा लगता था जबकि सिर्फ पांच मंजिलों का फर्क था।

सब कुछ जानने सुनने के बाद प्लान शंकरदास ने बनाया। उसने जयचन्द पाटिया को पावरफुल हैंडग्रेनेड उस आफिस

में पहुंचा देने को कहा। जयचन्द पाटिया तो खुद भी यही चाहता था। उसने फौरन, जगन्नाथ मैन्शन इमारत के ग्यारहवें फ्लोर पर मौजूद अपने आफिस में, इतने ज्यादा हैंडग्रेनेड पहुंचा दिये कि उनसे जयगणेश जैसे दो होटल उड़ाये जा सकें। शंकरदास ने सोहन लाल की ड्यूटी जगन्नाथ मैन्शन के ग्यारहवें फ्लोर पर, जयचन्द पाटिया के आफिस में लगा दी। उसका काम सिर्फ इतना था कि बिना रुके, हैंडग्रेनेड 'जयगणेश पर' पर फेंकते जाना था।

सोहन लाल ने फौरन यह काम करना मंजूर कर लिया।

'जयगणेश के दूसरी तरफ, आड़ में शंकरदास ने जयचन्द पाटिया के दो आदमियों की ड्यूटी लगाई कि वहां उन्हें होटल पर हैंडग्रेनेड फेंकने थे।

इसी तरह दो आदमी होटल के पिछली ओर।

तीन आदमी उसने खुद अपने साथ रखे। उसने 'जय गणेश' के सामने की ओर से हल्ला बोलना था।

अब इस काम में कोई वक्त नहीं था। हर कोई अपने-अपने ठिकाने पर पहुंच चुका था। शंकरदास तीन आदमियों के साथ दो किलोमीटर दूर, कार में बैठा था। स्टेयरिंग सीट पर ड्राईवर मौजूद था। सबके पास पर्याप्त मात्रा में हैंडग्रेनेड और राईफलें थीं। शंकरदास ने दो रिवाल्वर अपने कपड़ों में छिपा रखे थे।

रात का अंधेरा फैल चुका था। साढ़े नौ बज रहे थे। अब शंकरदास ने सारा काम समाप्त करने का फैसला कर लिया था। ई0 पाल देशमुख से किये गये वायदे के अनुसार वह पाहवा को मारकर, इस शहर से कहीं दूर, शान्त जगह निकल जाना चाहता था। जहां उसे अपनी बाकी की जिन्दगी बिना किसी शोर-शराबे से गुजारनी थी। इस खूनी खेल से उसका मन उकता गया था। इसी कारण उसने सोच लिया था कि रात का खेल, आखिरी खूनी खेल होगा।

'चलें?' उसके साथ बैठे व्यक्ति ने पूछा।

'नहीं। तीन मिनट पड़े हैं। तुम सबके हथियार तैयार हैं?' शंकरदास ने पूछा।

हां।'

'फिर चैक कर लो।'

'जरूरत नहीं, हमारे हथियार, हमें वक्त पर कभी धोखा नहीं देते।' एक ने दृढ़ और आत्मविश्वास से भरे स्वर में कहा।

उन्हें घड़ी की सुइयां धीमी चलती महसूस हो रही थीं। सबके शरीरों में उत्तेजना व्याप्त थी। ड्राईवर बीड़ी के कश पर कश लगाये जा रहा था।

जब तीन मिनट पूरे होने में पच्चीस सैकिन्ड रह गये तो शंकरदास बोला।

'चलो!'

ड्राईवर ने फौरन बीड़ी फेंकी, कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। हैड लाईट की तीव्र रोशनी अंधेरे को चीरती हुई सड़क पर पड़ रही थी।

दूर से होटल 'जयगणेश' का साईन बोर्ड जगमगाता दिखाई दिया। फिर कार होटल के ठीक सामने, सड़क के पार रुकी।

दरवाजे खोलकर शंकरदास और उसके तीनों साथी बाहर निकल आये। राईफलें उनके हाथों में थमी थीं। पीठ पर बंधे थैलों में हैंडग्रेनेड भरे पड़े थे। उसी क्षण कार आगे सरकी फिर, तेज गति के साथ अंधेरे में गायब हो गई। तीनों के चेहरे पत्थरों जैसे सपाट हो चुके थे।

शंकरदास के होंठ भिचें थे।

'चलो।' शंकरदास ने कहा—'जो भी सामने आये उसे भून दो! मैं शुरूआत करके दूसरी पार्टियों को सिगनल दे दूं।' कहते हुए उसने जगन्नाथ मैन्शन ग्यारहवें फ्लोर पर निगाह दौड़ाई। खिड़की खुली हुई थी और उसमें से कोई बाहर झांकता हुआ दिखाई दे रहा था। वह सोहन लाल ही होगा? शंकर दास ने अनुमान लगाया और अपने साथियों के साथ, सड़क पार करके होटल के गेट पर जा पहुंचा।

हाथों में नंगी राईफलें देखकर आते-जाते लोग ठिठके। फिर फौरन ही इधर-उधर सरकने लगे, गेट पर खड़े दो में से एक दरवान उन्हें देखते ही फौरन भीतर की तरफ भागा।

शंकरदास के साथी ने उस पर राईफल तान्नी चाही

परन्तु शंकरदास ने हाथ मारकर उसकी राईफल नीचे की ओर पीठ पर लटक रहे थैले में से हैंडग्रेनेड निकाला फिर उसकी पिन निकालकर, हैंडग्रेनेड को किसी पत्थर की तरह, निशाना लेकर उसे मारा।

अगले ही पल कान फाड़ देने वाला तेज धमाका हुआ और भाग रहे दरबान के चीथड़े-चीथड़े उड़ गये

इसके साथ ही शुरूआत हो गई। वहां धमाकों की आवाजें गूंजने लगीं। दायें बायें और पीछे की ओर हैंडग्रेनेड आकर होटल पर गिरने लगे। भीतर से आ रही अफरा-तफरी से भरी चीखें सुनाई देनी शुरू हो गयीं।

'आहते में फैल जाओ। पाहवा का जो भी आदमी दिखाई दे उसे भून दो। हैंडग्रेनेडों से होटल को तबाह करने की पूरी कोशिश करो। चारों तरफ से दुश्मन पर हमला हो रहा है। दुश्मन बौखला चुका है। उसे समझने का मौका न दो और किसी भी हालत में होटल में प्रवेश न करना।' आहते में घुसते हुए शंकरदास ने जल्दी-जल्दी कहा।

फिर चारों अलग हो गये। हर किसी ने अपनी समझ के मुताबिक पोजीशन ले ली। पाहवा के आदमी हथियारों के साथ होटल के बाहर निकलने की चेष्टा कर रहे थे। परन्तु राईफल की गोलियां उनके चीथड़े उड़ाकर, उन्हें वापस अन्दर धकेल रही थीं।

वातावरण सुलग उठा था। धमाके! बारूद की गंध और चीखों के अलावा किसी को और कुछ वहां दिखाई-सुनाई नहीं दे रहा था।

शंकरदास ने पार्किंग में खड़ी कारों के बीच पोजीशन ले ली थी। परन्तु अभी तक एक फायर भी नहीं किया था। जबकि गोलियां बरसाते कई दुश्मन उसके निशाने पर थे। वह फायर करके दुश्मन को अपनी पोजीशन का अहसास नहीं दिलाना चाहता था। सब कुछ उसकी योजना के मुताबिक ही हो रहा था बराबर चारों तरफ से धमाके गूंज रहे थे। हर धमाका पाहवा के होटल को कमजोर बनाता जा रहा था।

फिर उसने कपड़ों में हाथ डालकर लकड़ी का छोटा-सा बक्सा निकाला। यह जबरदस्त शक्ति वाला टाईम बम था।

धयचन्द पाटिया ने विश्वास के साथ कहा था कि यह बम्ब होटल की ईंट से ईंट अलग कर देगा। बक्सा खोलकर उसने बम्ब को देखा फिर बन्द करके वापस कपड़ों में रख लिया।

उसके बाद कारों में से होता हुआ, होटल के सदर द्वार की तरफ बढ़ने लगा। सबसे ज्यादा खतरा सदर द्वार पर था। वहां भीतर की तरफ से पाहवा के आदमी गोलियां बरसा रहे थे और बाहर की ओर से उसके आदमी द्वार पर गोलियां बरसा रहे थे। आग के शोले हर ओर चमक रहे थे।

मोहन लाल अपना काम हिम्मत और मेहनत से कर रहा था। क्योंकि उसकी तरफ वाले हिस्से में ज्यादा और लगातार धमाके गूंज रहे थे। उठता हुआ धुआं और चिंगारियां आसमान को छूने की चेष्टा कर रही थीं।

दायीं ओर पिछली तरफ से धमाकों की गूंज जारी थी। शंकरदास के विचारानुसार होटल का काफी बड़ा हिस्सा तबाह हो चुका था।

शंकरदास होटल में कहीं, मुनासिब जगह पर टाईम बम्ब लगाना चाहता था लेकिन वह भीतर प्रवेश करने का ठीक मौका न था, कोई भी गोली उसे लग सकती थी, आखिरकार उसने यही फैसला किया कि जब तक गोलियां चल रही हैं, तब तक उसका इसी तरह छिपा रहना ही ठीक है।

भीतर से आ रही चीखों की आवाजें उसके कानों में पड़ रही थीं। भीतर ठहरे मुसाफिर आतंक से मरे जा रहे थे। होटल पर हर तरफ से हमला हो रहा था। वह कहीं से भी बाहर नहीं निकल सकते थे। यहां तक कि पाहवा के आदमी भी बौखलाए हुए थे। होटल से बाहर निकलकर ही वह दुश्मनों का मुकाबला कर सकते थे और वह होटल से बाहर नहीं निकल सकते थे। मेन द्वार पर अन्धाधुन्ध गोलियां बरसाई जा रही थीं।

और पिछले द्वार पर हैण्ड ग्रेनेड फेंके जा रहे थे।

शंकरदास ने कार के पहिये से टेक लगा ली। दांये हाथ की तर्जनी उंगली राईफल के ट्रेगर पर थी। वह किसी भी तरह के अचानक आ जाने वाले खतरे से निपटने के लिये हर प्रकार से तैयार था। हर मिनट में दो तीन बार मैं ऐसी आवाजें, होटल के द्वार की ओर से उसे सुनाई दे जाती थीं। धमाकों और

गोलियों का आरम्भ कुछ इस प्रकार हुआ था कि उसे लग रहा था जैसे सदियों से यह धमाके सुनता आ रहा है।

शंकरदास अपनी जगह से हिला और सिर ऊपर करके होटल के मेन द्वार की तरफ झांका। वहां पर लाशें ही लाशें बिखरी नजर आ रही थीं। अभी तक उसे किसी और दिशा से चीख की आवाज न सुनाई दी थी। इसका मतलब कि उसके साथ आये व्यक्तियों में से कोई भी अभी हताहत नहीं हुआ था।

सदर द्वार की ओर देखते हुए शंकरदास की आंखें सिकुड़ गयीं। जहां वह था, वहां से मेन द्वार के भीतर स्पष्ट देखा जा सकता था। उसे पाहवा के कमांडो का ढेर लगा दिखाई दिया जो हाथों में हथियार सम्भाले खड़े, बाहर आने के मौके की तलाश में थे। शंकरदास ने अनुमान लगाया कि अगर वह सब एक साथ बाहर की ओर भागे तो इन चलती गोलियों के बीच उनमें से कुछ ही मरेंगे और अधिकांश जिन्दा बचकर, बाहर अंधेरे में पोजीशन ले लेंगे।

बहुत खतरनाक बात थी। अगर ऐसा हो गया तो यह लोग इन पर हावी हो जायेंगे जो कि होना नहीं चाहिये। शंकरदास किसी को भी अपनी स्थिति का अहसास नहीं दिलाना चाहता था। लेकिन अब बात दूसरी थी। अगर भीतर दिखाई दे रहे, सारे कमांडो हवा के झोंके की भांति बाहर आ गये तो उसकी सारी योजना मिट्टी में मिल जायेगी। फिर तो शायद वह टाईम बम्ब भी होटल में नहीं लगा पायेगा। वह सीधा हुआ, पीठ पर मौजूद थैलों में से कुछ हैंडग्रेनेड निकालकर अपने पास रखे और एक की पिन निकालकर, द्वार के भीतर, एक तरफ कमांडो पर निशाना लेकर फेंक दिया। एक जबरदस्त धमाका हुआ और देखते ही देखते दो-तीन कमांडोज के चिथड़े-चिथड़े उड़ गये। अन्य सब हड़बड़ाकर पीछे हो गये। शंकरदास ने दांत भींचकर दो ग्रेनेड और फेंके।

एक तो मेन द्वार के समीप दीवार पर लगा और दीवार का वह हिस्सा उधड़ गया। क्षण भर के लिए वहां धूल ही धूल फैल गई। साथ ही उसके साथी जो, गोलियां बरसा रहे थे। उन्होंने देखा-देखी, गोलियां छोड़कर ग्रेनेड फेंकने शुरू कर

दिये।

फिर तो जैसे तबाही आ गई। ग्रेनेड द्वार से होते हुए होटल के भीतर भी गिर रहे थे। होटल की दीवारों पर भी लग रहे थे और पहली दूसरी मंजिल की खिड़कियों से होकर भीतर भी गिर रहे थे।

देखते ही देखते होटल का वह हिस्सा खण्डहर में परिवर्तित होने लगा। पहले की अपेक्षा चीखों में अब बढ़ोतरी हो गई थी। भीतर से गोलियां चलनी बन्द हो गई थीं। कदाचित वह लोग अपनी जान बचाने के लिये पीछे हट गये थे।

□ □

□ □

सोहन लाल पिछले डेढ़ घण्टे से कहर बरसा रहा था। जिस हिस्से में वह हैंडग्रेनेड फेंक रहा था, होटल का वह हिस्सा बुरी तरह तहस-नहस हो गया था। चेहरा और बदन पसीने से लथपथ हो चुका था। बांहों में थकावट आ जाने के कारण, हल्का-हल्का दर्द हो रहा था। हाथ में पकड़ा हैंडग्रेनेड उसने पूरी शक्ति से फेंका। अंधेरे में कहीं चिंगारियों के साथ-साथ जोर से धमाका गूंजा।

एक ओर रखा सिगरेट का पैकेट सोहन लाल ने उठाया और सिगरेट सुलगाकर गहरा कश लिया। इतनी देर लगातार मेहनत करने के कारण, सिर में हल्का-हल्का दर्द होने लगा था।

तीन-चार कश लेने पर उसे राहत सी महसूस हुई। मस्तिष्क में छाया तनाव कम हो गया। फिर वह खिड़की से बाहर होटल जयगणेश पर निगाह दौड़ाने लगा। जिसका बहुत बड़ा हिस्सा तहस-नहस हो चुका था।

सोहन लाल ने कमरे में निगाहें दौड़ाई? अभी भी वहां पर काफी ज्यादा मात्रा में हैंडग्रेनेड मौजूद थे। नीचे, गोलियां और हैंडग्रेनेडों के धमाके बराबर कानों से टकरा रहे थे।

सोहन लाल ने फैसला किया, कुछ देर और हैंडग्रेनेड फेंकने

के पश्चात वह नीचे जाकर अपने साथियों की सहायता करेगा, क्योंकि हैंड ग्रेनेडों से वह होटल को जितनी हानि पहुंचा सकता था, वह पहुंचा दी थी।

सिगरेट समाप्त करके वह पुनः हैंडग्रेनेड फेंकने लगा।

यह काम करते हुए अभी दस मिनट भी न बीते होंगे कि कदमों की तेज आवाजें उसके कानों में पड़ने लगीं। वह ठिठका, तभी दरवाजे पर पूरे वेग से थपथपाहट होने लगी। उसकी आंखें सिकुड़ गयीं।

'दरवाजा खोलो वरना तोड़ दिया जायेगा।' बाहर से खूंखार स्वर सुनाई दिया।

सोहन लाल ने होंठ काटते हुए नई सिगरेट सुलगा ली। निगाहें दरवाजे पर थीं, जहां बराबर थपथपाहट हो रही थी।

'तोड़ दो दरवाजा।'

सोहन लाल के बदन में सिहरन दौड़ गई। आवाज पहचानने में उसे जरा भी कठिनाई न हुई। वह पाहवा के दांये हाथ महेश चन्द्र की आवाज थी।

अगले ही पल दरवाजे पर जोर-जोर से धक्के पड़ने लगे।

तभी नीचे से आती आवाजों से उसे महसूस हुआ कि वहां लड़ने का अन्दाज बदल गया है। पहले आ रही आवाजों को वह पहचान रहा था कि उसके साथी हावी हैं। लेकिन अब लग रहा था जैसे वह आवाजें दब गयीं हों और अन्य हथियारों के चलने की आवाजें वहां गरजने लगी थीं।

उसी समय तेज आवाज के साथ दरवाजा टूट कर नीचे गिरा और धड़धड़ाते हुए दो आदमी भीतर आ गये। सोहन लाल ने फुर्ती के साथ हैंडग्रेनेड उठाकर फेंकना चाहा।

'बस हरामजादे बस!' महेश चन्द्र का दहशत भरा स्वर उसके कानों से टकराया तो हैंडग्रेनेड वाला उठा हाथ उठा ही रह गया

दरवाजे के बीचों बीच ब्रेनगन थामे महेश चन्द्र खड़ा था। उसकी आंखें खून उगल रही थीं। पीछे भी उसके गुर्गे खड़े थे। जिनके हाथों में ब्रेनगनें मौजूद थीं। दो गुर्गे, जो कमरे के बीच आ चुके थे, अब उन्होंने जेब में से रिवाल्वरें निकालकर, हाथ में ले ली थीं।

सोहन लाल किसी बुत की मानिन्द खड़ा रह गया। सारा कमरा उसे घूमता-सा महसूस होने लगा। कमरे में हैंडग्रेनेडों का ढेर लगा था। अगर उसने हैंडग्रेनेड इन पर दे मारा तो, यह अपने हाथों में थमे हथियारों का इस्तेमाल करेंगे। इसी बीच ब्रेनगन से निकलने वाले छर्रे कमरे में पड़े ग्रेनेडों को लगेंगे और फिर शायद कुछ भी न बचे।

दो में से एक गुर्गा आगे बढ़ा और उसके हाथ से हैंडग्रेनेड ले लिया। सोहन लाल बेजान-सा खड़ा रह गया।

महेश चन्द्र आगे आया और दांत भींचकर ब्रेनगन की नाल उसके पेट में मारी। सोहन लाल दोनों हाथों से पेट थामे, चीखकर दोहरा हो गया। मौत के भाव उसके चेहरे पर गहरे हो गये।

'कुतिया की औलाद!' कहते हुए महेश चन्द्र ने ब्रेनगन की नाल उसके गाल पर मारी। सोहन लाल चीख कर पीछे जा गिरा। मुंह में खून भर आया। जिसे थूका तो बीच में एक दांत भी था—'तुम भूल गये कि किससे टकराने चले थे। पाहवा से टक्कर लेने और जीतने के लिए तुम लोगों को बीसियों जन्म लेने पड़ेंगे। दो-चार यह नन्हें-मुन्ने हथगोले फेंककर तुम हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। बांध दो कुत्ते को।'

महेश चन्द्र के कहने की देर थी कि उसके हाथ-पांव बांध दिये गये।

महेश चन्द्र क्रोध में पागल हो रहा था। उसका गुस्सा अपनी जगह वाजिब था। आगे बढ़कर उसने जोरदार लात सोहन लाल की पीठ पर मारी। सोहन लाल चीखकर, फिरकनी की तरह लुढ़क गया।

इतने सारे आदमी होने के बावजूद भी वहां मौत-सा सन्नाटा छाया रहा। सोहन लाल की भयभीत मौत से भरी निगाहें हर एक पर घूमती हुई महेश चन्द्र पर जा कर, स्थिर हो रही थीं। मन ही मन उसे अपने पर क्रोध आ रहा था। मौत से बचने का एक चांस था उसके पास। हाथ में पकड़े हैंडग्रेनेड को वह दरवाजा टूटते ही इन पर फेंक देता। मरना तो उसे था ही, लेकिन उसके साथ यह भी मर जाते, एक प्रतिशत चांस था कि वह किसी प्रकार खुद को बचा लेता। परन्तु यह सब तो-बीती

हुई सोचें थीं। जो होना था वह तो हो ही चुका था।

'इसके शरीर के साथ हैंडग्रेनेड बांधो और इसे खिड़की से बाहर वैसे ही फेंक दो, जैसे यह हैंडग्रेनेड फेंक रहा था।' महेश चन्द्र ने शब्दों को चबा कर कहा।

'न-हीं-ऽ-ऽ-ऽ।' महेश चन्द्र की बात सुनकर सोहन लाल की रूह फना हो गयी।

लेकिन सोहन लाल की सुनने वाला वहां था ही कौन। बन्धनों में वह छटपटाकर रह गया, सबने अपने हथियार एक तरफ रखे, अपने काम में जुट गये। सोहन लाल आतंक भरी निगाहों से उन्हें देखने लगा। उसकी मौत का समान उसकी आंखों के सामने इकट्ठा हो रहा था।

वह चीखने लगा। चिल्लाने लगा। ऐसी भयावह मौत से छुटकारा पाने के लिए उन्हें गालियां देने लगा कि शायद कोई क्रोध में आकर उसे गोली मार दे। लेकिन कोई फायदा न हुआ। महेश चन्द्र की सुलगती निगाहें, सोहन लाल के आतंक भरे चेहरे पर ही टिकी रहीं।

पन्द्रह मिनट में सब अपने काम से फारिग हो गये। हैंड ग्रेनेडों की पिनें निकालकर, उन्हें कपड़े के सहारे सोहन लाल के शरीर से बांध दिया गया था। कुछ ग्रेनेड उसकी कमीज के भीतर डाल दिये थे जो कि उसकी पीठ और पेट से टकरा कर बदन में सिहरनें पैदा कर रहे थे।

'फेंक दो।' महेश चन्द्र दांत भींचकर सर्द स्वर में बोला।

सोहन लाल की आंखें आतंक से फट गयीं। वह इस तरह महेश चन्द्र को देखने लगा जैसे वह पागल हो गया हो। जब उसे उठाया गया तो वह चीखने, चिल्लाने उछलने लगा। परन्तु बन्धनों के कारण, कुछ न हो सका।

वह उसे खिड़की के पास ले गये, फिर किसी रबड़ के बबुए की भांति खिड़की से बाहर फेंक दिया। सोहन लाल की दहशत पूर्ण चीख उसके कानों में शीशे की तरह घुलती चली गई।

नीचे गिरते हुए सोहन लाल का दिल उछलकर मुंह में जैसे आ पहुंचा। चारों तरफ मौत ही मौत उसे नजर आ रही थी। नीचे जाते हुए। आंखें फाड़कर नीचे देखा तो रूह कांप उठी। तभी तीव्रता के साथ उसका कंधा नीचे वाली मंजिल की

खिड़की के छज्जे से टकराया।

सोहन लाल तड़पा, अनजाने में ही उसके बायें हाथ की उंगलियां छज्जे की मुंडेर पर जा टिकीं। उसके जिस्म को तीव्र झटका लगा और नीचे जाता शरीर रुक गया। सोहन लाल के मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी। दो क्षणों के बाद उसे अहसास हुआ कि क्या हो गया है। उसने फौरन दायें हाथ से भी छज्जे की मुंडेर थाम ली। पल भर के लिए उसे लगा कि वह बच गया है। बुरी हालत हो रही थी, सांस उखड़ रही थी। उसे अपना ही नहीं शरीर के साथ कपड़े में लिपटे ग्रेनेडों का भी बोझ संभालना पड़ रहा था। चंद पलों की राहत के पश्चात उसने ऊपर देखा।

जिस खिड़की से उसे फेंका गया था, वहां पर कोई भी नजर ना आया। सोहन लाल ने मन ही मन चैन की सांस ली। अगर ऊपर वाले को मालूम हो जाता कि इत्तफाक से उसके हाथ में छज्जे की मुंडेर आ गई है और वह गिरने से बच गया है तो वह बड़े आराम से ग्रेनेड उठाकर उसकी खोपड़ी का निशाना लेकर उसे मार सकते थे, परन्तु सब ठीक था।

सोहन लाल ने नीचे निगाह मारी तो जैसे जान ही निकल गई। वह बहुत ऊपर लटक रहा था। नीचे कारों की कतारें नजर आ रही थीं और अन्धेरे के सिवाय कुछ भी आंखों को नजर ना आया। सोहन लाल के चेहरे पर आतंक के साए मंडरा उठे। उसने घबरा कर आस पास देखा। ऐसा कोई भी सहारा नजर न आया कि जिसको पकड़ कर मुंडेर से छुटकारा पाकर खुद को बचा पाता। उसके चेहरे का रंग हल्दी की तरह पीला पड़ गया। मौत के भय से सारा चेहरा और शरीर पसीने से भर उठा। सिर के बालों से भी पसीने के गीलेपन का अहसास हुआ।

इतना तो वह समझ गया कि इस तरह ज्यादा देर मुंडेर थामे नहीं रह सकेगा। हाथ की उंगलियां अभी से दर्द करने लगी थीं। दिल कर रहा था कि मुंडेर छोड़ दे परन्तु जान का मोह ऐसा न करने पर उसे मजबूर कर रहा था, लेकिन वह जानता था, इस प्रकार लटके रहने का सिलसिला ज्यादा देर नहीं

नहीं चलने वाला। देर-सबेर में पीड़ा-दर्द और थकान के मारे उसे मुंडेर छोड़नी ही पड़ेगी।

उसके बाद उसके जीवन का खेल खत्म।

एकाएक उसके शरीर को हल्का-सा झटका लगा। ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके शरीर का बोझ हल्का हो गया हो। कमर के साथ बंधा कपड़ा तो पेट पर बांधे ग्रेनेडों वाला कपड़ा खुल गया था और सारे ग्रेनेड कपड़े सहित नीचे गिरते चले गये थे। चन्द पलों के उपरान्त ग्रेनेडों के फटने के धमाके उसके कानों में पड़े। सोहन लाल ने भगवान का नाम लेकर आंखें बन्द कर लीं। ग्रेनेडों के जिस्म से जुदा होते ही, मस्तिष्क से मौत का आधा भय तो समाप्त हो गया था। परन्तु वह वहीं लटका था, इस बात का अहसास था कि ज्यादा देर इस प्रकार नहीं लटका रह सकेगा।

सोहन लाल ने आंखें खोलीं। अब बचने का एक ही रास्ता था कि जिस मुंडेर पर पंजे गड़ाकर वह लटका था, उस छज्जे के ऊपर चढ़ जाये। इकलौती यही सूरत थी।

सोहन लाल ने हिम्मत इकट्ठी की। सिर से पांव तक वह दहशत से भर उठा कि हर हाल में उसे अपनी जान बचानी ही है। उसने पुनः सावधानी से छज्जे की मुंडेर पर दोनों हाथों की उंगलियां गड़ायीं और उछलकर कोहनियों को छज्जे पर अटकाना चाहा। बुरी किस्मत, हाथ की उंगलियां और दर्द करती, कलाई तो पहले ही साथ छोड़ने को तैयार थी और पंजों के हिलते ही पंजों ने साथ छोड़ दिया।

सोहन लाल ने संभलने की बहुत चेष्टा की, परन्तु कुछ भी कामयाबी हासिल नहीं हुई। छज्जे पर से उसके हाथ छूट गये और वह पुनः भारी शोरी के साथ जमीन की तरफ गिरता चला गया।

सोहन लाल के होंठों से दहशत भरी चीख निकल गई।

□ □

□ □

सोहन लाल को ऐसा लगा जैसे कि किसी ने उसके कूल्हों

पर तगड़ा हथौड़ा दे मारा हो।

गिर तो वह सिर और पीठ के बल रहा था, परन्तु जब नीचे आकर उसका जिस्म टकराया तो वह कूल्हे थे, उसे ऐसा लगा जैसे उसके कूल्हे जमीन में धंस गये हों। होंठों से चीख भी नहीं निकली और उसकी आंखें बन्द हो गयीं। चेतना लुप्त-सी हो गई। मस्तिष्क काफी हद तक ठीक-ठाक चल रहा था, परन्तु होश गुड़मुड़ पड़े थे। वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था कि उसके साथ क्या हुआ है? मरा वह नहीं था, इस बात का अह-सास था उसे, परन्तु जिन्दा कैसे बच गया, वह समझ नहीं पा रहा था। उसमें हिलने की भी शक्ति शेष न बची थी। पूरा जिस्म पीड़ा के कारण सुन्न पड़ा हुआ था। कूल्हे तो ऐसे लग रहे थे जैसे हैं ही नहीं। जिस्म से जुदा होकर वह कहीं दूर जा गिरे हों।

वह बेजान-सा पांच मिनट तक वैसे का वैसा ही पड़ा रहा, फिर किसी प्रकार उसने पीड़ा से भरे हुए टूटे जिस्म को संभाला। होंठों से दर्द भरी कराहें भी निकलीं। सोहन लाल ने आंखें खोलीं। चारों तरफ उसे अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आया। धीरे-धीरे उसकी आंखें देखने के काबिल होने लगीं। हल्के से टटोल-कर उसने अपने दांए बांए का अहसास लिया। तब उसे लगा कि वह जमीन पर नहीं है। मन ही मन वह चौंका, हैरान हुआ, पूरी तरह आंखें खोलकर उसने दांयें-बांयें देखा।

वह मारुति कार की छत पर था और उसके गिरने से मारुति की छत एक फीट तक करीब इस तरह नीचे धंस गई थी कि वह उसके बिलकुल फिट आ पड़ा था। सोहन लाल ने आंखें बन्द करके मन ही मन भगवान और मारुति कार को धन्यवाद दिया, जिसने उसे बचा लिया था; यह एक बात थी कि खौफ और पीड़ा के मारे वह उठने के काबिल न था। यहां तक कि भरपूर चेष्टा के पश्चात भी वह छत पर बने गड्ढे से निकल नहीं पा रहा था।

अथाह-कड़ी और लम्बी मेहनत के पश्चात सोहन लाल कार की छत से छुटकारा पाकर नीचे आया। मौत के भय और खौफ से उसकी टांगें कांप रही थीं। उसे अभी भी यकीन नहीं था कि वह बच निकला है। सिर उठाकर उसने ऊपर देखा फिर मन ही

मन सिहर उठा। उल्लू के पट्ठे महेश चन्द्र ने तो उसे मारने में कोई कसर ना छोड़ी थी, परन्तु बचाने वाला उससे बड़ा था।

सोहन लाल को अपने जिस्म के हिस्से अलग-थलग मालूम हो रहे थे। कूल्हे तो सुन्न से पड़े हुए थे। जो कन्धा गिरते समय छज्जे से टकराया था, उसका हाल बुरा था। कांपती टांगों का तो ऐसा हाल था, जैसे लगातार दो दिन दौड़ता रहा हो। वह साथ देने से इन्कार कर कर रही थीं, परन्तु यहां भी ज्यादा देर खड़ा नहीं रहा जा सकता था। चारों तरफ खतरा ही खतरा था। महेश चन्द्र अपने आदमियों के साथ इस तरफ आ सकता था। वैसे उसके इस तरफ आने का चांस कम ही था, वह सोच भी नहीं सकता होगा कि सोहन लाल को ऊपर वाले ने बचा लिया है। परन्तु यहां खड़े रहना भी ठीक नहीं था। सोहन लाल ने अपने शरीर को सीधा किया, कार का सहारा छोड़ा। होंठों से दर्द भरी चीख निकल गई। लेकिन इस वक्त जिस्मानी हालत को भूलना ही बेहतर था।

सोहन लाल अपने शरीर की हालत को दुरुस्त करने के लिए धीरे-धीरे हाथ-पांव हिलाने लगा।

□

□ □

'जयगणेश' के मेन द्वार का बहुत बड़ा हिस्सा तबाह हो चुका था। अब वह लोग हैंडग्रेनेडों के साथ-साथ राईफलों का भी प्रयोग कर रहे थे। एक घंटा तो शंकरदास अपने साथियों का साथ देता रहा। फिर उसने धीरे-धीरे दुश्मन पर हमला करना बन्द कर दिया।

वह किसी तरह होटल में प्रवेश करके टाईम बम्ब लगाना चाहता था और उसे होटल में प्रवेश करने का मौका नहीं मिल रहा था।

कुछ देर के पश्चात उसे महसूस हुआ कि एकाएक हथियारों की तेज आवाजें गूंजने लगी थीं। वह फौरन सीधा हुआ और

थोड़ा सा सिर उठाकर देखा। अगले ही पल उसे महसूस हो गया कि दुश्मनों ने उसके तीनों साथियों को घेर लिया है और उन पर गोलियां बरसाये जा रहे हैं। वह शायद इसलिए बच गया था कि उसने काफी देर से फायरिंग बन्द कर रखी थी। कदाचित दुश्मनों ने सोचा होगा कि वह कबका अपनी जगह छोड़ चुका है।

पीछे और बायीं तरफ से भी धम कों की आवाजें कम हो गयी थीं।

शंकरदास को महसूस हुआ कि वक्त गुजरता जा रहा है। कुछ ही देर में पाहवा के आदमी हर तरफ काबू पा लेंगे, फिर वह कुछ भी न कर सकेगा।

काफी देर से पुलिस सायरनों की आवाजें गूंज रही थीं। पुलिस कार पर लगी लाल लाईटें किसी फ्लैश की लाईट के समान चमक रही थीं। इतना तो वह समझ ही चुका था कि पुलिस ने वह सारा इलाका घेर लिया है परन्तु अभी तक उस ओर से कोई एक्शन नहीं लिया गया था।

शंकरदास ने पीठ पर लटक रहा थैला नीचे रखा। राईफल पहले ही एक ओर रख दी थी। कपड़ों में से उसने रिवाल्वर निकालकर, हाथों में लीं फिर कारों की ओट में छिपते-छिपाते, वह उस हिस्से की तरफ बढ़ने लगा था, जहां सोहन लाल हैंडग्रेनेड फेंक रहा था, परन्तु अब हैंडग्रेनेड फेंकने बन्द हो चुके थे। पाहवा के आदमी उसी टूटे-फूटे हिस्से में से बाहर निकले थे। अब शंकरदास उसी हिस्से में से होटल में प्रवेश करके वहां टाईम बम्ब लगाना चाहता था।

कुछ देर बाद वह बिना किसी दिक्कत के उस जगह पर पहुंच गया। सोहन लाल ने वास्तव में अपना काम पूरा कर दिया था। हैंडग्रेनेड ने कुछ इस ढंग से तबाही मचाई थी कि उस जगह की मरम्मत होनी भी असम्भव थी।

शंकरदास टूटी-फूटी इमारत और मलबे की तरफ बढ़ने लगा। अन्धेरा इस काम में उसका सहायक हो रहा था। बारूद की गंध वहां तीव्रता से फैली हुई थी? दूसरी ओर ब्रेनगन राईफलों और रिवाल्वरों के चलने की आवाजें उसके कानों में बिना रुके पटाखों के समान पड़ रही थीं। शंकरदास ने साव-

धानी से रिवाल्वर पकड़ा हुआ था। आंखें चीते के समान चौकन्नी और खुद सतर्क था।

मलबे के पास क्षण भर ठिठक कर उसने, जगन्नाथ मैन्शन की ग्यारहवीं मंजिल की ओर देखा, जहां से सोहन लाल हैंड-ग्रेनेड फेंक रहा था। परन्तु वहां कुछ भी नजर न आया। शंकर-दास को हैरानी हुई कि सोहन लाल कहां गायब हो गया? परन्तु इन सोचों में उसने वक्त बरबाद नहीं किया और मलबे को फलांगता हुआ मीनार की तरफ बढ़ गया।

वहां कोई भी न था। सब बाहर मोर्चा संभालने में व्यस्त थे।

मलबा समाप्त हुआ तो शंकरदास एक कमरे में पहुंचा, जो तहस नहस हो चुका था। छत में दरारें उत्पन्न हो चुकी थीं, एक तरफ की दीवार बिलकुल ही टूटी हुई थी। वह बिना रुके आगे बढ़ा।

उस कमरे से बाहर निकलते ही उसे लम्बी गैलरी दिखाई दी। वह तेज-तेज कदम उठाता हुआ गैलरी में बढ़ गया। हैरानी की बात थी कि वहां कोई भी नजर नहीं आया। शायद हैंड-ग्रेनेडों के भय के कारण इस तरफ का हिस्सा लोगों ने खाली कर दिया था। गैलरी की एक तरफ कमरों की कतार थी और उसे पूरा यकीन था कि वह सारे कमरे पूर्णतया खाली होंगे।

गैलरी की समाप्ति पर, दांयीं-बांयीं तरफ मोड़ था। उन मोड़ों से पहले ही उसे लिफ्ट बनी दिखाई दी। शंकर ने लिफ्ट चैक की। वह चालू हालत में थी। बिना क्षण गंवाये वह भीतर प्रवेश कर गया और दूसरी मंजिल के लिए बटन दबाया।

चंद क्षणों में ही वह दूसरी मंजिल पर था। वहां भी गैलरी थी और पास ही मोड़ थे। रिवाल्वर संभाले वह आगे बढ़ा और आगे जाकर दांयीं तरफ मुड़ गया। उसके पास आखिरी काम; किसी ऐसी मुनासिब जगह टाईम बम्ब लगाना था कि फटते ही होटल का हर हिस्सा उड़ जाये।

तभी सामने से होटल के दो कर्मचारी बदहवास से आते दिखाई दिये। उसे देखते ही ठिठके, फिर हाथ में दबी रिवाल्वर देखते ही उनकी आंखें दहशत से चौड़ी हो गयीं। इससे पहले कि वह पलटकर भागते, शंकरदास ने दांत भींचकर दो-बार ट्रैगर

दबाया। दो धमाके हुए और दोनों चीखते हुए गिरकर तड़पने लगे। उनकी छातियों पर खून के धब्बे प्रकट हो गये।

अब शंकरदास लगभग भागने के से अन्दाज में आगे बढ़ने लगा। रिवाल्वर की गूंज हर ओर गूंज गई होगी। कभी भी, किसी भी तरफ से खतरा आ सकता था।

जाने किस-किस रास्ते से वह गुजरता हुआ, होटल के बीच के हिस्से में आ पहुंचा, अभी तक कोई खतरा सामने नहीं आया, अलबत्ता, कुछ नई आवाजें उसके कानों में पड़नी आरम्भ हो गई थीं। जाहिर था होटल में उसकी तलाश आरम्भ हो चुकी है। खास तौर पर दूसरी मंजिल पर।

चूंकि वह होटल के बीच के हिस्से में पहुंच चुका था, इसलिये यहां पर आते-जाते लोग दिखाई दे रहे थे। वह वही थे जो होटल में ठहरे हुए मुसाफिर थे। परन्तु इस समय हर कोई मौत के भय से कांप रहा था। शंकरदास ने रिवाल्वर जेब में डाल ली। रिवाल्वर के कारण वह खामख्वाह किसी की निगाहों का केन्द्र नहीं बनना चाहता था। अब उसकी निगाहें कोई ऐसी जगह तलाश कर रही थीं जहां बम्ब लगाया जा सके।

तभी उसे पाहवा के आदमी आते दिखाई दिए। उसके सामने होटल में ठहरने वाले चन्द एक मुसाफिर खड़े थे और उनके पास से कमाण्डो आ रहे थे।

बहुत खतरनाक वक्त था। अगर उन्होंने देख लिया तो सारी योजना मिट्टी में मिल जायेगी। उसने फौरन आस-पास देखा। कुछ दूरी पर उसे एक बन्द दरवाजा दिखाई दिया। सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए वह फौरन दरवाजे की तरफ लपका, हैंडिल पर हाथ रखकर दबाया तो दरवाजा खुल गया, वह तुरन्त भीतर प्रवेश कर गया और दरवाजे पर सिटकनी चढ़ा दी।

लेकिन गड़बड़ हो चुकी थी। पाहवा के कमाण्डों की निगाह उस पर पड़ चुकी थी। वह भागते हुए वहां पहुंचे और दरवाजा खटखटाने लगे।

'दरवाजा खोलो वरना तोड़ दिया जायेगा।'

'भारी मुसीबत।' शंकरदास ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

'तुम बच नहीं सकते शंकरदास।' बाहर से एक आवाज

आई—'मैंने तुम्हें पहचान लिया है। तुम चारों तरफ से घिर चुके हो। बेहतर होगा खुद को हमारे हवाले कर दो। दरवाजा खोल कर हाथ ऊपर उठा लो।'

शंकरदास होंठ भींचे दरवाज़े को देखने लगा।

'सुना नहीं तुमने वह लोग क्या कह रहे हैं? दरवाजा खोल दो।'

शंकरदास उछलकर पलटा। पीछे वर्दी पहने वेटर खड़ा था। वह कमरा, होटल का स्टोर रूम था। चूंकि उसके भीतर प्रवेश करते ही दरवाजे पर थपथपाहट आरम्भ हो गई थी, इसलिए आस पास निगाह दौड़ाने का उसे वक्त नहीं मिला था। वेटर खौफ पूर्ण निगाहों से उसे देख रहा था।

शंकरदास की आंखों में कहर के भाव आ गये। उसने जेब में हाथ डालकर, रिवाल्वर निकाल ली। वेटर की आंखें आतंक से फट पड़ीं। इससे पहले कि वेटर उल्टी सीधी उछल-कूद करता शंकर दास उछला और रिवाल्वर के दस्ते का भरपूर प्रहार उसके सिर के पृष्ठ भाग में किया। अगले ही पल वेटर कराह कर, सिर थामे नीचे लुढ़कता चला गया।

मिल्ट्री की नौकरी ज्वाइन करने से पहले ट्रेनिंग के दौरान उसे इन बातों का प्रशिक्षण दिया गया कि इन्सान के सिर पर कहां वार करके बेहोश किया जा सकता है। वरना आम इन्सान तो सिर पर वार कर-करके सिर फोड़ दे और आदमी मर जाये, लेकिन बेहोश न हो सके। इस तरह बेहोश करने का एक खास आर्ट था, जिससे शंकरदास भली भांति वाकिफ था।

'दरवाजा तोड़ दो, और अपने अपने हथियारों पर काबू रखो। उसे देखते ही गोलियों से भून दो।' बाहर से आती कठोर आवाज सुनायी दी। शोर और आहटों से उसे महसूस हो गया कि वह अब ज्यादा आदमी इकट्ठे हो चुके हैं।

दरवाजों पर भारी-भारी ठोकरें पड़ने लगीं।

'शंकरदास के जबड़ों में कसाव आ गया। आंखों में मौत के चिन्ह उजागर हो गये। जिस्म की मांसपेशियां तन गयीं। मौत दरवाजे पर दस्तखत दे रही थी। उसने हिलते हुए दरवाजे को देखा फिर रिवाल्वर जेब में डालकर, कपड़ों में छिपाया टाईम बम्ब निकाल लिया।

अब बचने का कोई रास्ता नहीं था। लेकिन मरने से पहले वह इन सबकी मौत का इन्तजाम भी कर देना चाहता था। टाईम बम्ब के बाहर दिखाई दे रही तारों को उसने जोड़ दिया, टाईम बम्ब की घड़ी की सुई में एकाएक हरकत हुई और वह टिक-टिक की आवाज के साथ आगे बढ़ने लगी। दरवाजे की थपथपाहटों में अब तेजी आ गई थी। जोरदार ठोकरें वहां पड़ रही थीं। शंकरदास ने एक बार भी दरवाजे की तरफ न देखा। उसने बम्ब फटने का टाईम सैट किया जो कि अब से सिर्फ पांच मिनट बाद का था। फिर उसने टाईम बम्ब को चादरों के रैक के पीछे आहिस्ता से रख दिया।

उसे जयचन्द पाटिया के शब्द याद आये—इस टाईम बम्ब में बहुत ज्यादा पावर है। अगर यह पाह्वा के होटल में फट जाए तो वहां की एक-एक ईंट इस तरह अलग हो जायेगी कि उन्हें फिर से काम में न लाया जा सके।

शंकरदास ने रिवाल्वर जेब से निकाली और हिलते दरवाजे को देखने लगा। दरवाजे पर पड़ रही ठोकरें, उसे अपने मस्तिष्क में महसूस हो रही थीं। चेहरा पत्थर के समान सख्त और भावहीन हो चुका था, फिर वह निगाहें दौड़ाता हुआ, कमरे को देखने लगा। एकाएक उसकी निगाह, सिकुड़कर, सामने दीवार पर स्थिर हो गई। वहां पर दो-बाई-दो फुट का एक खाना दिखाई दे रहा था जिस पर प्लाईवुड का पेन्ट किया, सरकाने वाला छोटा-सा टुकड़ा लगा था।

शंकर बिल्ली के समान लपटकर आगे बढ़ा और प्लाई का वह छोटा-सा टुकड़ा, सरका कर एक तरफ किया तो उसकी आंखें खुशी से चमकने लगीं। वह दीवार के बीच लगा ऐसा खाना था, जिसमें से सामान दूसरी तरफ पहुंचाया जाता था। दूसरी तरफ भी स्टोर रूम की तरह ही कोई कमरा था। देर करना बेवकूफी थी। जिन्दगी और मौत उसके सिर पर मंडरा रही थी। रिवाल्वर जेब में डाली और दो-बाई-दो फुट के खाने में पहले हाथ डाले, फिर सिर और किसी सांप की भांति रेंगता हुआ दूसरे कमरे में जा गिरा।

इस कमरे में कोई भी नहीं था। शंकरदास का दिल छाती के साथ जोर-जोर से टकराने लगा। मौत को उसने पीछे धकेल

दिया था, रिवाल्वर जेब से निकालकर हाथ में ली और आगे बढ़कर हैंडिल दबाते हुए दरवाजा रफ्तार के साथ खोला और रिवाल्वर वाला हाथ आगे कर दिया ताकि द्वार पर दुश्मन घात लगाए बैठे हों तो उन्हें संभलने का मौका न मिले।

परन्तु बाहर कोई भी नहीं था।

जिस कमरे में बम्ब लगाया था। उसका दरवाजा दूसरी तरफ खुलता था और इस कमरे का दरवाजा दूसरी तरफ। किसी प्रकार का खतरा सामने नहीं आया। वह बाहर निकला और दरवाजा बन्द करके दबे पांव आगे भागने लगा। यह छोटी सी गैलरी थी। तभी पीछे से आती जोरदार आवाज उसके कानों में पड़ी तो वह समझ गया, दरवाजा टूट गया है और वह लोग भीतर आ गये होंगे। वह फौरन समझ जायेंगे कि वह किस प्रकार फरार हुआ है। उसने घड़ी देखी। टाईमबम्ब लगाए साढ़े तीन मिनट बीत चुके थे। डेढ़ मिनट के बाद यहां हर तरफ तबाही ही दिखाई देनी थी।

शंकरदास तेजी से भागने लगा। वह इन दीवारों में फंस-कर नहीं मरना चाहता था। उसने अपना काम पूरा कर दिया था। अब उसके सामने जिन्दगी थी जिसे वह कहीं दूर शान्ति की जगह पर बिताना चाहता था, यह उसकी जिन्दगी का आखिरी हंगामा था। तीरथराम पाहवा टाईम बम्ब के ब्लास्ट के बाद बच नहीं सकेगा। वह जानता था कि पाहवा इसी होटल में है। अपने आफिस में है और इस विश्वास के साथ बैठा होगा कि उसके आदमी हर प्रकार की स्थिति पर काबू पा लेंगे। इन्स-पेक्टर देशमुख से किए गए वायदे के अनुसार पाहवा की मौत होनी लाजिमी थी, जो कि टाईम बम्ब फटते ही हो जानी थी।

शंकरदास को दीवार पर लगी खिड़की दिखाई दी। वह तुरन्त ही उसके पास पहुंचा। खिड़की एक मंजिल ऊंची थी, परन्तु उसके पास लम्बाई ऊंचाई नापने का वक्त नहीं था। वह चौखट पर चढ़कर कूदने ही वाला था कि उसे पास से गुजरती लोहे की पाइप दिखाई दी। उसने हाथ बढ़ाकर पाइप थामी और तेजी से नीचे सरकने लगा। रिवाल्वर उसने मुंह में दबा लिया था। दूसरी मंजिल समाप्त होते ही पाइप भी समाप्त हो गई। वह दीवार के भीतर कहीं जाकर लुप्त हो गई थी।

शंकरदास ने पाइप से हाथ छोड़ दिया। वह सीधा नीचे जाकर गिरा और संभलते-संभलते भी लुढ़क गया।

फिर उठा और तीर की भांति भाग खड़ा हुआ। कुछ क्षण में ही उसे होटल का पिछला हिस्सा दिखाई दिया जिसे कि उसके आदमियों ने हैंडग्रेनेडों के द्वारा तबाह कर डाला था। शंकरदास को अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं आया कि वह बाहर आ गया है। उसका थक चुका शरीर, फुर्ती से भर गया। टाईम बम्ब फटने में कोई वक्त नहीं रह गया था। वह किसी भी आने वाले सैकिण्ड में फट सकता था। वह उसी प्रकार दौड़ता हुआ होटल के पिछले ध्वस्त हिस्से में पहुंचा और मलवा फलांगते हुए वह बाहर की तरफ़ बढ़ने लगा। मलबे पर ही उसे कुछ लाशें दिखाई दीं, परन्तु उन्हें देखे बिना वह आगे बढ़ता रहा।

ज्योंही वह होटल के दायरे से बाहर पहुंचा। कान फाड़ देने वाला, जबरदस्त धमाका हुआ। जिसकी गूंज से कानों के पर्दे फटते हुए महसूस हुए। धरती का कम्पन इस कदर तेज था कि वह लड़खड़ाकर नीचे जा गिरा। बिना वक्त गंवाये वह उठा और सामने भागा। शंकरदास इस जगह से दूर निकल जाना चाहता था। अभी चंद फिट ही आगे बढ़ा होगा कि तीव्र गति से आती ईंट उसके कंधे से टकराई, वह पूरी शक्ति से चीख उठा। उसके पांव उखड़ गये। उसका बदन कुछ आगे जाकर सड़क से टकराया और लुढ़कता हुआ सड़क के पार खड़ी कार से टकरा कर रुक गया। शंकरदास गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। बदन में कई जगह खरोंचे आ गयी थीं। कपड़े कई जगह से फट गये थे। उसने कराह कर आंखें खोलीं और पाहवा के होटल की तरफ आंखें गढ़ा दीं। वातावरण में धूल ही धूल थी। आंखें खोलने में कठिनाई पेश आ रही थी, परन्तु उसने किसी तरह आंखें खोलकर देखा, पाहवा का होटल खण्डहर की तरह हो गया था। उसके होंठों पर मुस्कराहट उभर आई। वह जीत चुका था। वह विजेता था।

एकाएक मृत पड़ा वातावरण जिंदा हो उठा। पुलिस का तगड़ा घेराव फौरन हरकत में आ गया। सायरन पुनः चीखने लगे। कारों की हैडलाईटें रोशन हो गई। वह सब धड़ाधड़ कारों

से बाहर निकलने लगे।

शंकरदास की हालत अजीब सी हो गई। पाहवा के होटल को तबाह करने के चक्कर में, वह भूल ही चुका था कि होटल को कबका पुलिस घेर चुकी है। अभी भी वक्त था वह निकल सकता था। जब रात का अन्धेरा और बम्ब की तबाही में व्यस्त पुलिस वालों की निगाह में धूल झोंक सकता था। उसके आस-पास कोई पुलिस वाला नहीं था। वह उठने की सोच ही रहा था कि, वही कार, जिससे टकराकर वह रुका था। उसका दरवाजा खुला। शंकरदास ने लेटे ही लेटे देखा, कार में से एक भारी बूट बाहर निकला, बूट उसके पेट पर पड़ने लगा फिर भीतर वाले व्यक्ति ने, टांग आगे बढ़ाकर, बूट सड़क पर टिकाया और बाहर आ गया।

तो क्या यह भी पुलिस कार है?

फिर अन्य दरवाजे खोलकर दो और पुलिस वाले बाहर निकले और शंकरदास के गिर्द खड़े हो गये।

शंकरदास उनके जिस्म पर पड़ी वर्दियां पहचान चुका था।

'कौन हो तुम?' एक पुलिस वाले ने अधिकार भरे स्वर में पूछा।

शंकरदास ने कोई जवाब न दिया। उत्पन्न हो चुकी स्थिति पर हैरान था।

'कार से टार्च निकालो।' एक ने कहा, दूसरे ने कार की खिड़की में से हाथ डालकर, टार्च निकाली और रोशन करके रोशनी शंकरदास पर डाली।

शंकरदास आंखें फाड़े उसी प्रकार पड़ा रहा।

रोशनी उसके चेहरे पर आकर स्थिर हो गई।

'य—यह तो शंकरदास है। तभी एक पुलिस वाले ने चौंककर कहा—'कुछ दिन पहले ही जेल से फरार हुआ था। इसे फांसी की सजा हो चुकी है।'

नहीं-नहीं, वह शंकरदास नहीं है। शंकरदास ने चीखकर कहना चाहा, परन्तु होंठों से कोई शब्द ना निकला। जुबान चिपककर रह गई थी।

अगले ही पल उसके जिस्म से पुलिस रिवाल्वर सट गई। दूसरे पल एक ने पुलिस विसल होंठों में दबाकर बजा दी। फिर

पुलिस के बूटों की आवाजों से वातावरण गूंज उठा। वहां धड़ाधड़ पुलिस वाले पहुंचने लगे।

शंकरदास ने गहरी सांस लेकर आंखें बन्द कर लीं। सब कुछ समाप्त हो चुका था। अगर उसे मालूम होता कि उसकी आखिरी मंजिल फांसी का फंदा ही है तो वह पाहवा के होटल से कभी भी बाहर न आता। अपने ही लगाये बम में खुद भी समाप्त होकर रह जाता। वह मिलिट्री मैन था। जान से जान देने में फक्र समझता था। अपनी जान दे देने से, फांसी तक उसे जो घुट-घुटकर जीना था, उससे बच जाता। परन्तु किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता था

□ □

□ □

सोहन लाल टूटता-फूटता, जैसे-तैसे आगे बढ़ने लगा था। हिम्मत तो उसमें बहुत बची थी। परन्तु जिस्म साथ नहीं दे रहा था। एक निगाह उसने दयगणेश के उस हिस्से पर डाली जहां उसने ग्रेनेड फेंके थे। वहां की हालत देखते ही वह मन ही मन खुश हो गया। अगर उसकी हालत जरा भी काबिल होती तो अपनी पीठ ठोककर खुद को शाबाशी अवश्य देता। परन्तु कराह कर ही उसने काम चलाया।

अब ग्रेनेडों के धमाकों के बीच फायरिंग की आवाजें भी शामिल हो गई थीं।

सोहन लाल समझ गया कि पाहवा के आदमी संभलकर हरकत में आने शुरू हो गये हैं। उसे शंकरदास का ध्यान आया। वह कहां होगा। क्या कर रहा होगा। अगले ही पल सोहन लाल ने सिर झटककर शंकरदास का विचार अपने मस्तिष्क से निकाला। इस समय वह अपनी हालत देखने के तो काबिल नहीं था, शंकरदास के बारे में सोचने का क्या फायदा। सोहन लाल का मन अभी वहां से जाने का नहीं कर रहा था परन्तु उसका शरीर, वहां ठहरने की इजाजत नहीं दे रहा था। उसे इलाज और डाक्टर की आवश्यकता थी। उसके बाद आराम की। कोई

और वक्त और हालात होते तो वह एक कदम भी ना चलता। परन्तु यहां चारों तरफ मौत ही मौत थी, जिससे वह दूर हो जाना चाहता था।

सामने की तरफ से निकलने में भारी खतरा था। वहां ग्रेनेडों और गोलियों का इस्तेमाल ज्यादा हो रहा था। उसे कुछ भी लग सकता था और फिर पुलिस गाड़ियों के सायरन अब उसके कानों में बजने लगे थे। यानि कि पीछे से निकल जाना ही बेहतर था।

सोहन लाल जैसे तैसे तेजी से पीछे की तरफ बढ़ने लगा।

पांच मिनट पश्चात जब वह जयगणेश के पिछवाड़े की सड़क तक पहुंचा तो वहां का दृश्य देखते ही ठगा सा रह गया। फिर तेजी से दो कदम पीछे हटकर दीवार की ओट में हो गया। पल भर में ही, उसके शरीर में छाया दर्द जाने कहां गायब हो गया। टूटा—झुका जिस्म एकदम सीधा हो गया। होंठ भिंच गये। चेहरे पर सोच और चिंता के भाव छाते चले गये।

सामने ही शंकरदास पुलिस के घेरे में था।

वह ढेर सारे पुलिस वाले थे। शंकरदास उनके बीच बेबस खड़ा था। उसकी स्थिति देखकर ही, सोहन लाल समझ गया था कि शंकरदास गया। वह नहीं बच सकेगा पुलिस से! सोहन लाल की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और क्या कर सकता है। वह अकेला था और मात्र एक रिवाल्वर थी उसके पास! जबकि सामने शंकरदास को घेरे खड़े पुलिस वाले करीब चौदह थे और उनमें से चार के पास हथियार थे। वैसे भी सोहन लाल के अपने विचार थे कि पुलिस वालों के सामने तो छाती फुलाकर भी सांस नहीं लेनी चाहिये। कतराकर ही निकल जाना ठीक है। टकराने की तो बात ही बहुत दूर की थी परन्तु शंकरदास उसके सामने पुलिस के घेरे में था।

सोहन लाल होंठ भींचे सोच रहा था कि वह क्या कर सकता है। क्या एक रिवाल्वर के बलबूते पर चौदह पुलिस वालों का मुकाबला करके उसे बचा सकता है? नहीं, शंकरदास को नहीं बचा सकता। इनके बीच में आने का मतलब ही खुद को ही मुसीबत में डालना। कहीं वह भी कानून के घेरे में जा फंसा तो, सारी उम्र जेल में ही पिसकर रह जायेगा। सोहन लाल ने

वहां से निकल चलने का फैसला किया। उसने जेब में पड़ी रिवाल्वर को थपथपाया। इस शहर की पुलिस की निगाहों में वह साफ था, सिवाय इसके कि पाहवा के इशारे पर पुलिस वालों को भी उसकी तलाश थी। वहां से पलटने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। सामने की तरफ ज्यादा खतरा था। इधर कुछ ही पुलिस वाले थे, जिनसे बचकर निकला जा सकता था। वैसे भी अब उनका ध्यान शंकरदास जैसे मगरमच्छ की तरफ था, इसलिये उसकी तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही किसे होगी।

यह सोहन लाल का विचार था।

सोहन लाल दीवार की ओट से निकला और धीरे-धीरे चलता हुआ सड़क पर आ गया था। उसे उन पुलिस वालों के, शंकरदास के पास से ही निकलना था। इस समय मात्र यही दिक्कत थी उसे। मस्तिष्क की व्यस्तता बढ़ जाने के कारण, अब उसका शरीर कम ही पीड़ा हो रहा था। चाल भी काफी हद तक ठीक थी। 'ऐ रुको।' पुलिस वालों का तेज स्वर उसके कानों से टकराया, तब वह उनके करीब से गुजर रहा था।

सोहन लाल के होंठ भिंच गये। फिर वह सामान्य चेहरा लिए पलटा।

सबसे पहले उसकी निगाह शंकरदास से टकराई। सोहन लाल को सामने पाकर शंकरदास की आंखें चमक उठीं। उसे आशा की किरण नजर आने लगी कि शायद सोहन लाल उसे बचा ले।

हथियार लिए पुलिस वाला उसके पास पहुंचा।

'कौन हो तुम?' पुलिस वाले का स्वर, बेहद सख्त था।

'कौन हूं।' सोहन लाल ने माथे पर बल डालकर कहा—'देख नहीं रहे, आदमी हूं। तुम्हारे बोलने का ढंग ठीक नहीं है। मैं होटल के भीतर हो रही बमबारी से बचकर निकला हूं। घायल हूं। तुम्हें मेरे साथ सहानुभूति होनी चाहिये। लेकिन तुम तो ऐसे बात कर रहे हो, जैसे मैंने ही यह सब किया हो।'

पुलिस वाला कुछ ढीला हुआ।

'ठीक है। ठीक है। अब जाओ यहां से।' पुलिस वाले ने उसे चलता करने की चेष्टा की।

सोहन लाल आगे बढ़ने को हुआ कि अन्य पुलिस वाले का स्वर सुनकर ठिठका।

'यह तो मुझे सोहन लाल जैसा लगता है।'

'सोहन लाल?' सोहन लाल के पास खड़े पुलिस वाले ने, दूसरे पुलिस वाले को देखा।

'वही, जिसकी पाहवा को तलाश है।' हुलिया वैसा ही लगता है इसका।'

सोहन लाल का दिल जोरों से धड़का।

उसके पास खड़े पुलिस वाले ने उसे घूरा।

'क्या नाम है तेरा।'

'राम सिंह।'

'असली कि नकली।' पुलिस वाले ने बेहद सख्त स्वर में कहा।

सोहन लाल ने फौरन खुद को संभाला। फक्क पड़े चेहरे पर कंट्रोल किया। धड़कते दिल को समझा था कि काबू से बाहर मत हो। और हिम्मत करके तीखे स्वर में कह उठा।

'तुम पुलिस वाले हो कि क्या हो। कभी मेरा नाम पूछते हो। कभी मुझे सोहन लाल कहते हो। कभी मेरे नाम को नकली कहते हो। ज्यादा से ज्यादा थाने ही ले चलोगे ना मुझे। ले चलो! वहां तुम सबको विश्वास दिला दूंगा कि मैं राम सिंह ही हूं और मेरे बाप का नाम अमर सिंह है।'

पुलिस वाला अनिश्चित सा खड़ा रहा।

शंकरदास की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

तभी उसके पास खड़ा पुलिस वाला निर्णायक ढंग से कह उठा।

'सोहन लाल, पाहवा का दुश्मन है और सामने पाहवा का होटल उड़ाया जा रहा है। बात कुछ समझ में आती है। इसे थाने ले चलो वहां जाकर इससे बात करेंगे। जीप में बिठा दो इसे।'

सोहन लाल की खोपड़ी उलट गई। वह समझ गया कि फंस गया। बुरे हाल फंसा। अगले ही पल सोहन लाल ने मन ही मन खुद को पक्का किया और शंकरदास को घेरे खड़े पुलिस वालों की तरफ तेजी से बढ़ा और उनमें मौजूद सब इन्स्पेक्टर के करीब पहुंच कर ठिठका।

'इन्स्पेक्टर साहब। यह तो ज्यादती है। किसी शरीफ नागरिक को बिना वजह परेशान किया जा रहा है—मैं...।'

'पुलिस स्टेशन चलकर बात करना।' सब इन्स्पेक्टर ने रूखे स्वर में कहा फिर पास खड़े पुलिस वालों से बोला—'शंकरदास के हाथों में हथकड़ी डाल दो। कड़ी सुरक्षा में इसे थाने ले जाओ; मैं यहां से निपटकर पहुंचता हूं।'

तभी जैसे तूफानी हलचल-सी हुई।

फिर सब कुछ थम गया।

सोहन लाल की रिवाल्वर, सब इन्स्पेक्टर की कमर पर लग चुकी थी और सोहन लाल की बांहें सब इन्स्पेक्टर की गर्दन से लिपट गई थी। उंगली ट्रेगर पर थी।

सब इन्स्पेक्टर ठगा सा खड़ा रह गया था।

सोहन लाल की उंगली ट्रेगर पर, चेहरा कठोर और खतरनाक हुआ पड़ा था।

अन्य पुलिस वाले भी यह सब देखकर ठगे से रह गये थे।

'हिलना नहीं।' सोहन लाल गुर्राया।

'य—यह क्या कर रहे हो?'

'चुप।' सोहन लाल दहाड़ा'...'जुबान मुंह में।'

सब इन्स्पेक्टर दांत भींचकर रह गया।

शंकरदास अपनी जगह से हिला और एक हाथ से रिवाल्वर ले ली।

'तुम पागल तो नहीं हो गये। सब इंस्पेक्टर बोला—'जानते हो क्या कर रहे हो।'

'जानता हूं।'

'पुलिस से टकराने का मतलब।'

'जानता हूं। मेरा तो धन्धा यही है।' सोहन लाल कड़वे स्वर में कह उठा—'उल्लू के पट्ठे हो तुम सब लोग। कुत्ते हो। तनख्वाह सरकार से लेते हो और जी हजूरी तीरथराम की करते हो। तुमसे अच्छा तो मैं ही हूं। जो करता हूं, सबके सामने तो करता हूं।'

'तुम—तुम।'

'जुबान मुंह में रख।' सोहन लाल ने बढ़ाया।

सब इन्स्पेक्टर ने खतरा भांप कर फौरन मुंह बन्द कर लिया।

सोहन लाल और शंकरदास की निगाहें मिलीं।

'चलो।' सोहन लाल ने अच्छी तरह, सब इन्स्पेक्टर को रिवाल्वर केसाये में ले लिया।

'कहां?' सब इन्स्पेक्टर के चेहरे का रंग उड़ा।

'अपनी पुलिस गाड़ी की तरफ! उसका इस्तेमाल हम करेंगे। यहां से जाने के लिए।'

'तुम पागल तो।'

'नहीं हुआ। मेरे खानदान में कोई पागल नहीं हुआ तो मैं कैसे हो सकता हूं।' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा 'जो मैं कह रहा हूं, वही कर, वरना तेरी गिनती शहीदों में होने लगेगी।'

अपने आफिसर्स को रिवाल्वर के दबाव में देखकर सब पुलिस वाले सीधे खड़े थे। वह जानते थे कि, उनकी गलत हरकत सब इस्पेक्टर की जान ले सकती है।

तभी शंकरदास, रिवाल्वर थामे दरिन्दगी भरे अंदाज में आगे बढ़ा!

'पुलिस गाड़ी की तरफ तूने चलना है कि नहीं।'

शंकरदास का खतरनाक स्वर सुनकर, सब इन्स्पेक्टर कांप सा उठा। कोई रास्ता ना पाकर, वह उनके साथ हो गया। सब पुलिस वाले वहीं खड़े रहे।

'तीरथराम पाहवा के होटल को तुम लोगों ने उड़ाया है।' सब इन्स्पेक्टर ने चलते हुए सूखे स्वर में पूछा।

'हां।'

'क्यों?'

'उसने हमारी विलायती भैंस खोल ली थी।' सोहन लाल शब्दों को चबाकर बोला।

इस जवाब पर क्षण भर के लिए सब इन्स्पेक्टर सकपकाया।

'पुलिस जीप की तरफ क्यों जा रहे हो?'

'यहां से जाने के लिए हमें कुछ चाहिए और पुलिस गाड़ी से बढ़िया सवारी इस समय और क्या हो सकती है।'

'पुलिस गाड़ी को ले जाने का मतलब समझते हो तुम लोग।'

'किसी पुलिस वाले की हत्या कर देने से तो, कम ही मतलब निकलता होगा।'

शंकरदास की धमकी सुनकर, सब इन्स्पेक्टर खामोश हो गया।

वह लोग पुलिस जीप के करीब जा पहुंचे।

शंकरदास ने, सब इन्स्पेक्टर की रिवाल्वर वहां से दूर उछाल दी। फिर वह उछलकर जीप की स्टेयरिंग सीट पर बैठा और जीप स्टार्ट की। सोहन लाल उसकी बगल में आ बैठा। उसकी रिवाल्वर सब इंस्पेक्टर की तरफ तनी हुई थी जो कि बेबस करे अन्दाज में खड़ा था।

'चलें' सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कहा।

अब सब इंस्पेक्टर क्या कहता।

शंकरदास ने जीप आगे बढ़ा दी और पलों में ही वह दोनों वहां से दूर होते चले गये। सोहन लाल ने रिवाल्वर जेब में डालकर सिगरेट सुलगा ली।

'पुलिस जीप से हमें फौरन छुटकारा पाना है। यह हमें फंसा भी सकती है।' शंकरदास बोला।

'पा लो।'

दस मिनट पश्चात ही, वह दोनों जीप को सड़क के किनारे छोड़कर पैदल ही आगे बढ़ गये थे। दोनों के चेहरों पर गम्भीरता थी। शंकरदास ने गहरी सांस लेकर सोहन लाल को देखा।

'मजा नहीं आया। होटल के भीतर मौजूद, पाहवा जिंदा ही बच गया होगा।'

'क्या कहा जा सकता है। हो सकता है मर भी गया हो।'

'अगर यही सिलसिला पन्द्रह मिनट और चलता तो तब शायद मर जाता। अभी वह नहीं मरा।'

सोहन लाल गहरी सांस लेकर रह गया।

'यह बातें बाद की है। सोचो कि अब हम जायें कहां। सुंदर लाल वाला ठिकाना तो गया हाथ से। उसे पाहवा के आदमी ले जा चुके है। उसका घर अब पाहवा की निगाह में है।'

शंकरदास होंठ भींचे चलता रहा।

'अब एक ही रास्ता बचा है हमारे पास।'

'कौन सा?' शंकरदास ने उसे देखा।

'जयराम पाटिया। हमारे छिपने और आराम से रहने का इन्तजाम वह करेगा।' सोहन लाल ने विश्वास भरे स्वर में कहा—'हमें उसकी और उसे हमारी जरूरत है।'

'ठीक कह रहे हो।'

कुछ आगे जाकर दोनों टैक्सी पर सवार हो गये। सोहन लाल की आंखों के सामने वह दृश्य घूम उठा, जब वह ऊपर से नीचे गिरा था। खौफ के मारे बदन में एक साथ जाने कितनी सिरहनें दौड़ती चली गईं। वह समझ ना पाया कि जिंदगी में कौन सा काम उसने अच्छा किया था कि जो बच निकला है।

□ □

□ □

जयराम पाटिया से उनकी मुलाकात इस रात तो नहीं, अलबत्ता अगले दिन सुबह नाश्ते के समय हुई। रात को जयराम पाटिया वहां नहीं था। कहां था, यह बात वहां मौजूद आदमियों को भी पता नहीं थी। रात दोनों चैन की नींद सोये।

उनकी नाश्ते की टेबल भी सुबह ग्यारह बजे लगी थी। वह दोनों नाश्ता करने की तैयारी में थे कि पाटिया ने भीतर प्रवेश किया। उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी।

'गुड मार्निंग—बोथ।'

जवाब में सोहन लाल और शंकरदास मुस्कराये।

'मुझे आशा है रात अच्छी बीती होगी।' पाटिया उनके सामने कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

'कौन सी रात।' सोहन लाल ने सिर उठाया—'यहां चने से पहले वाली रात या यहां पहुंचने के बाद का हिस्सा हम गहरी नींद सो रहे थे।'

जवाब में पाटिया हंसकर रह गया।

नाश्ता शुरू हुआ।

'तुमने नाश्ता नहीं किया अभी तक?' सोहन लाल ने पाटिया को देखा।

'कब का कर लिया?'

'फिर दोबारा?'

'क्या फर्क पड़ता है।' जयराम पाटिया हंसा—'लंच समझकर कर लूंगा।'

सोहन लाल ने मुंह बिचकाया। फिर वह सारे नाश्ते में व्यस्त हो गये।

'रात का हादसा क्या रंग लाया?' शंकरदास ने पूछा।

'जो भी रहा, ठीक रहा।' जयराम पाटिया ने गम्भीर स्वर में कहा—'पचास प्रतिशत हिस्सा, होटल का खत्म हो गया अब वह इस्तेमाल के काबिल तो रहा ही नहीं।'

'मैं होटल के बारे में पूछ नहीं रहा हूं।'

'तो?'

'पाहवा के बारे में पूछ रहा हूं। वह जिंदा है कि मर गया?'

जयराम पाटिया अजीब से अन्दाज में मुस्कराया।

'अगर तुम यह सोचते हो कि तुम्हारे इतना भर कर देने से पाहवा मर जायेगा, तो वह कबका मर चुका होता। इतना आसान नहीं है पाहवा को खत्म करना।' जयराम ने कड़वे स्वर में कहा—'आसान होता तो कबका, तीरथराम का किस्सा ही खत्म हो चुका होता।'

'तुम करते।'

'हां?'

'तो अब क्यों नहीं कर देते?'

'कल तुम्हें बताया तो था।' जयराम ने चुभते स्वर में कहा—'तीरथराम पाहवा से निपट पाना मेरे बस का नहीं है। वह बहुत ज्यादा ताकत रखता है और उसके मुकाबले, मैं कुछ भी नहीं रखता।'

'मतलब कि तीरथराम पाहवा बच निकला?'

'वह खतरे में ही कहां था, जो बच निकलता।' जयराम का स्वर कड़वा हो गया—'उसे मारने के लिए एक साथ होटल जय-

गणेश को नीचे गिराते तो, तब वह मरता।'

'पुलिस के आने के बाद होटल से निकला होगा?'

'हां, शान से पुलिस के बीच में से निकला है।' पाटिया ने गहरी सांस ली।

शंकरदास कुछ नहीं बोला!

नाश्ता समाप्त हुआ!

'काफी आ गई। तीनों काफी के घूंट भरने लगें।

'तुम दोनों रात को पुलिस के फंदे में आ गये थे?' एकाएक जयराम ने पूछा।

'तुमसे किसने कहा?'

'पुलिस के बीच इस बात की चर्चा है।'

'हां! पुलिस के फंदे में फंसकर बच निकले। नहीं तो अब तक हमारा किस्सा खत्म था।'

जयराम पाटिया ने सिर हिलाया और काफी के साथ सिगरेट सुलगा ली।

'अब क्या करोगे तीरथराम के बारे में?'

'चिंता मत करो। कुछ तो करेंगे ही?' सोहन लाल ने कहा—'कम से कम इस बात का वायदा तो किया कि पाहवा जिंदा नहीं बचेगा। बिल्कुल निश्चिन्त रहो।'

सोहन लाल के शब्द सुनकर, जयराम पाटिया के चेहरे पर तसल्ली के भाव उभरे।

'अब जयराम भाई एक बात तो बताओ।' सोहन लाल बोला।

'क्या?'

'तीरथराम अब जयगणेश में तो नहीं रहेगा?'

'नहीं। वहां रहने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। वह तो खण्डहर हो गया।'

'तो अब वह कहां रहेगा?'

'कहां रहेगा?' जयराम पाटिया ने चौंककर, सोहन लाल को देखा।

'हां! उसका दूसरा ठिकाना?'

जयराम पाटिया के चेहरे पर सोच भरी गम्भीरता के भाव उभरे।

'क्या हुआ ?' सोहन लाल उसे खामोश देखकर बोला—
'पाहवा के और ठिकाने की तुम्हें खबर नहीं।
'एक क्या, उसके तो पचासों ठिकाने की खबर है मुझे।' जयराम ने घूंट भरा।

'फिर ?'

'पाहवा, किस ठिकाने को सुरक्षित समझ कर ठिकाना बनाता है, इस बारे में यकीन के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता।' जयराम पाटिया होंठ भिचते चले गये।

'मतलब कि तुम मालूम नहीं कर सकते ?'

'क्यों नहीं कर सकता ! अवश्य कर सकता हूं।' पाटिया ने सिर हिलाया।

'तो मालूम करो, जयगणेश तबाह होने के बाद, पाहवा ने अपना ठिकाना कहां बनाया है।'

जयराम पाटिया ने शंकरदास और सोहन लाल को देखा।

'शाम तक यह खबर फैल जायेगी। मेरे आदमी पाहवा के पाले में मौजूद हैं। पता चल जायेगा।'

'तो शाम को आओगे ?' सोहन लाल बोला।

'हां ! मैं ना आया तो मेरा मैसेज।'

'तुम्हारा मैसेज सिर्फ फोन पर होना चाहिए।' सोहन लाल ने उसकी आंखों में देखा—किसी आदमी को मत भेज देना। हम नहीं चाहते कि हमारा ठिकाना कोई जाने। जिस तरह तुम्हारे आदमी, पाहवा के पाले में हैं इसी तरह उसके आदमी भी तुम्हारी किसी जेब में घुसे हो सकते है।'

जयराम पाटिया उठ खड़ा हुआ !

'मैं खुद ही आऊंगा।'

'रिवाल्वर की गोलियां भी लेते आना।' शंकरदास बोला !

'कौन-से रिवाल्वर की ?'

शंकरदास और सोहन लाल ने अपनी रिवाल्वर दिखाई !

जयराम ने दोनों रिवाल्वरों का मेक और नाम देखा !

'लेता आऊंगा ! कुछ और चाहिए ?'

'नहीं, तुम शाम को पहुंच जाना। हमें खबर चाहिए कि पाहवा कहां पर है ?'

'मिलेगी। खबर मिलेगी कि पाहवा कहां पर है।' जयराम

पाटिया ने विश्वास भरे स्वर में कहा—'और मुझे पूरा विश्वास है कि उस खबर का तुम सही इस्तेमाल करोगे।'

सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कुछ कहना चाहा कि जयराम बाहर निकल गया।

'साला।' सोहन लाल बड़बड़ा उठा—'हमारे कंधे पर बंदूक रखकर चला रहा है।'

'हम तो अपने कंधे पर बंदूक रखकर चला ही रहे हैं। अगर जयराम भी हमारी बंदूक में अपनी एकआध गोली डाल देता है तो क्या फर्क पड़ता है।' शंकरदास ने हंसकर कहा।

□ □

□ □

सोहन लाल के चेहरे पर एकाएक गम्भीरता के भाव नाचने लगे थे।

'अब क्या करना है?'

'क्या करना है। पाहवा को खत्म करना है। क्यों?' शंकरदास ने उसे देखा।

'सोच ले, शंकरदास?' सोहन लाल ने सिगरेट सुलगा कर कश लिया।

'इसमें सोचने की क्या बात है।' शंकरदास ने हैरानी से उसे देखा।

सोहन लाल ने कश लिया और गम्भीर स्वर में कह उठा।

'तीरथराम पाहवा की मौत से ज्यादा जरूरी काम, सुन्दर लाल को, पाहवा की कैद से निकलना है।'

'सुन्दर लाल?' शंकरदास चौंका।

'हां! उसे पाहवा ने इसलिए पकड़ा है कि हम उसके घर पनाह लिए हुए थे।'

शंकरदास एकाएक कुछ नहीं कह सका!

'सुन्दर लाल को बचाने की चेष्टा करना हमारा फर्ज है। उसे कुछ नहीं होना चाहिए।'

शंकरदास ने सोच भरे अन्दाज में सिगरेट सुलगा ली।

'क्या सोच रहे हो शंकरदास ?'

'यह तो फालतू का लफड़ा हुआ।'

'फालतू का ?' सोहन लाल की आंखें सिकुड़ गयीं।

'हां ! मैं फांसी प्राप्त, फरार मुजरिम हूं। पुलिस मेरे पीछे है। कभी भी पुलिस की गिरफ्तारी में आ सकता हूं। गोली का शिकार हो सकता हूं। पाहवा के आदमी हमारे पीछे हैं और मेरा टारगेट तीरथराम पाहवा की हत्या करना है। ऐसे में, अगर सुन्दर लाल को बचाने के चक्कर में पड़ जाऊंगा तो, जान को खतरे में डालने और वक्त बर्बादी के सिवाय और कुछ नहीं होगा।'

सोहन लाल की आंखों में कड़वे भाव फैलते चले गये।

'हां ! यह बात तो है।' सोहन लाल का स्वर सामान्य था।

'बेहतर यही होगा कि हम पाहवा की तरफ ध्यान दें कि उसे कैसे खत्म किया जाये। सुन्दर लाल की तरफ तो ध्यान देना भी, हमारे हक में ठीक नहीं होगा। जंग के समय लक्ष्य देखा जाता है। जंग के मैदान में, हाथ में तलवार लेकर, घायल सिपाहियों की मरहम पट्टी नहीं की जाती।' शंकरदास ने कहा।

सोहन लाल की आंखों में कठोरता उभरी !

'तुम तो अपने मिलिट्री वाले रूल बता रहे हो। ठीक कहा ना मैंने शंकरदास।'

'हां ! मिलिट्री में हमें, जंग के दौरान पैदा होने वाले हालातों के लिए, यही सब बताया जाता है और ऐसा करना ही बेहतर रहता है। इन्सान अपना टारगेट जल्दी हासिल कर लेता है।'

सोहन लाल की आंखों में क्रोध के भाव उभरे।

'मेरे ख्याल में, तुम ठीक कह रहे हो शंकरदास।' सोहन लाल शान्त स्वर में बोला।

'मैं ठीक ही कहता हूं अगर सामने वाला समझे तो।'

'सामने वाला सब कुछ समझ रहा है। अब जरा—सामने वाला भी समझ ले।

शंकरदास ने सोहन लाल को देखा !

'जैसे मिलिट्री की पढ़ाई तूने मुझे बताई इसी तरह मैं भी तुझे अपनी पढ़ी-पढ़ाई बताता हूं। उसे समझ लेना प्यारे भाई ! क्योंकि तुम्हारी पढ़ाई तो चन्द आदमियों के बीच होती है, परन्तु

जो पढ़ाई मैंने पढ़ी है, वही दुनिया में ज्यादातर चलती है। उसके आगे मिलिट्री की पढ़ाई की कोई अहमियत नहीं।'

'तुम कहना क्या चाहते हो सोहन लाल ?'

सोहन लाल ने सिगरेट का कश लिया फिर गंभीर स्वर में बोला !

'मेरी पहली पढ़ाई यह है कि किसी का अहसान मत भूलो। और सुन्दर लाल ने बिना वजह हम पर अहसान किया था, हमें छिपने की जगह देकर, अपनी जान खतरे में डालकर, हमें अपने घर में रखकर।'

शकरदास की निगाहें, सोहन लाल पर थी !

'वह हमारे कारण फसा, हमारे कारण पाहवा का क्रूर पंजा उसकी जिंदगी के लम्हों पर जा गढ़ा है।' सोहन लाल के शब्दों में दृढ़ता उभर आई थी—'उस क्रूर पंजे को, सुन्दर लाल की गर्दन से दूर करना हमारा नैतिक फर्ज बनता है। मानवता यही कहती है। अपने साथी को हम कुण्ड में धकेल कर आगे बढ़ जाये, यह बात मेरे गले से नीचे नहीं उतरती और ना ही यह तुम्हारी मिलिट्री वाली जंग है, इस देश के दुश्मनों से। यह चन्द बदमाशों की, दादाओं की जंग है। जिसमें हर तरफ देखकर चलना पड़ता है। मैं अहसान-फरामोश नहीं है कि इन हालातों में सुन्दर लाल को मौत के मुंह में छोड़कर आगे बढ़ जाऊं।'

शकरदास के होंठ भिंच गये।

'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।'

'शायद।' सोहन लाल ने दांत पीसकर कहा—'और तब सुन्दर लाल का भी दिमाग खराब हो गया था, जब इस शहर में तीरथराम के डर से मुझे पनाह देने वाला कोई नहीं था, परन्तु उसने मुझे अपने घर में छिपाया। लोग तुम्हारा नाम सुनकर डरने लगते है। परन्तु उसने तुम जैसे खतरनाक आदमी को भी अपने घर में रखने से इन्कार नहीं किया। जबकि वह चाहता तो स्पष्ट तौर पर मना कर सकता था। परन्तु उसने नहीं किया। शायद वह पागल था।'

होंठ भींचे शकरदास उसे देखता रहा।

'पाहवा को खत्म करना है। ठीक है। खत्म हो जायेगा, वह ! बाद में खत्म हो जायेगा, पहले सुन्दर लाल को पाहवा की

कैद से निकालना है। क्योंकि अगर उसे कुछ कर दिया गया तो, फिर वह जिंदा नहीं हो सकेगा। जबकि पाहवा तो जिंदा ही रहेगा, मैं नहीं समझता कि उसे दिल का दौरा पड़ेगा।'

'कैसी बेवकूफी वाली बातें कर रहे हो तुम?' शंकरदास तेज स्वर में बोला—'मेरी पोजीशन को भी समझने की चेष्टा करो। मुझे पुलिस तलाश कर रही है और अब तो तीरथराम पाहवा को भी खबर मिल गई होगी कि तुम्हारे साथ मैं भी उसके पीछे हूं। उसके आदमी भी मुझे तलाश करना शुरू कर चुके होंगे। दोनों तरफ से भारी खतरा है मुझे! जितना वक्त बीतता जायेगा, मेरे लिए खतरा बढ़ता जायेगा। मैं अपना काम खत्म करके फौरन इस शहर से निकल जाना चाहता हूं। अगर सुन्दर लाल को बचाने के चक्कर में पड़ा तो शायद जिंदा ना बच पाऊं। पाहवा के आदमियों की या पुलिस की गोली मुझे खत्म कर देगी। मेरी और तुम्हारी पोजीशन में बहुत फर्क है सोहन लाल।'

'हां!' सोहन लाल ने होंठ भींचकर सिर हिलाया—'वास्तव में बहुत फर्क है।'

शंकरदास ने उसके अन्दाज को महसूस करके कहा!

'शायद तुम मेरी बात को गंभीरता से नहीं ले रहे।'

'मैं इस समय गंभीर हूं। कम से कम अपनी बात के प्रति तो बहुत गंभीर हूं।' सोहन लाल ने कश लेकर कुर्सी पर बैठे ही बैठे टांगें फैला लीं—'पाहवा को भूलकर, सुन्दर लाल को हर हालत में बचाया जायेगा। उसके बाद ही पाहवा के इन्तजाम के बारे में सोचा जायेगा।'

'सोहन लाल।' शंकरदास के होंठों से गुर्राहट निकली। चेहरा सुर्ख हो उठा।

सोहन लाल की आंखें सिकुड़ी। माथे पर बल पड़े। टांगें समेटकर वह सतर्क हो गया।

'हां!'

शंकरदास खतरनाक अन्दाज में उसे घूरता रहा। बोला कुछ नहीं।

'बोल! दहाड़ कर क्या कहना चाहता है तू।'

शंकरदास की मुद्रा में कोई फर्क नहीं आया।

'तू ठीक नहीं चल रहा।' शंकरदास ने सुलगते स्वर में

कहा।

'मेरा भी यही ख्याल है। खैर—तू चाहता है कि तीरथराम पाहवा का किस्सा खत्म किया जाये।'

'हां! मेरे पास इतना वक्त नहीं कि सुन्दर लाल को बचाने के फेर में पड़ूं।'

'मत पड़!'

'क्या मतलब?' शंकरदास की आंखें सिकुड़ीं।

'तू पाहवा के पीछे लग जा। हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जा। साले की मुंडी मरोड़ कर रख दे।'

'और तू तू क्या करेगा?'

'मैं।' सोहन लाल मुस्कराया—'सुन्दर लाल को तलाश करके, उसे बचाऊंगा।'

शंकरदास का चेहरा क्रोध से स्याह पड़ गया।

'तू ऐसा नहीं करेगा।'

'तो कैसा करूंगा?'

'मेरे साथ मिलकर, पाहवा की गर्दन···।'

'नहीं! मैं अपनी मर्जी का मालिक हूं। जो मेरे मन में आयेगा, वही मैं करूंगा।' सोहन लाल ने सख्त स्वर में कहा—'और अपने लहजे को सम्भाल, तेरी आवाज कुछ ठीक नहीं आ रही।'

शंकरदास का चेहरा दरिन्दगी से भरे भावों से, भर उठा।

'सोहन लाल।' शंकरदास के होंठों से गुर्राहट निकली—'तू मेरे साथ रहेगा। मेरा कहना मानेगा।'

'फालतू मत बोल शंकरदास।' सोहन लाल का चेहरा सुर्ख हुआ पड़ा था।

'तू फाईनल इन्कार करता है।'

'डबल फाईनल इन्कार।'

शंकरदास ने दांत किटकिटाये।

अगले ही पल उसके हाथ में रिवाल्वर दबी नजर आने लगी। उंगली ट्रेगर पर और रुख सोहन लाल के चेहरे की तरफ था।

दो पल के लिए वहां मौत का-सा सन्नाटा छा गया।

दोनों एक-दूसरे की आंखों में देखते रहे।

'मैं तुझे दो घण्टे का वक्त देता हूं।' शंकरदास के होंठों से

सर्द स्वर निकला।

'किस बात के लिए।' सोहन की आंखों में सुर्ख शोले उछाले मार रहे थे।

'सोचने के लिए। फैसला कर ले कि तुझे सुन्दर लाल को आजाद करना है या मेरे साथ मिलकर पाहवा को खत्म करना है। अगर तूने मेरे साथ मिलकर, पाहवा को खत्म करने की हां ना भरी तो, मैं रिवाल्वर की सारी की सारी गोलियां तेरे शरीर में उतार दूंगा।'

'सोचकर कह रहा है।'

'हां!'

'तो सुन ले। मेरा फैसला वही है, जो मैं कर चुका हूं।'

'जल्दी मत कर। दो घण्टे हैं तेरे पास।'

'मुझे दो घण्टे नहीं चाहिए। जवाब दे दिया। बोल, क्या करेगा तू! मुझ पर गोलियां चलायेगा।'

'मुझे सोचने के लिए दो घंटे दिये जायें, यह बहुत जरूरी है।' इन दो घंटों में तुझे इस बात का अहसास भी हो जायेगा कि मुझे इन्कार का मतलब है, तेरी मौत।' शंकरदास वहशी स्वर में कह उठा।

सोहन लाल दरिन्दगी भरी निगाहों से, शंकरदास को देखे जा रहा था।

उन दोनों के अलावा वहां, मौत की सर्द खामोशी छा चुकी थी।

□

□ □

दो घंटे, शंकरदास के हाथ में थमी रिवाल्वर का रुख, सोहन लाल की तरफ रहा। सोहन लाल के प्रति वह बेहद सतर्क था कि कहीं मौका पाकर, अपनी रिवाल्वर ना निकाल ले। सोहन लाल का इरादा था जेब से रिवाल्वर निकालकर, शंकरदास को शूट करने का। परन्तु शंकरदास बेहद सावधान था। वह उसे हिलने तक की मोहलत ना दे रहा था। सोहन लाल को सिर से पांव तक खतरा ही खतरा नजर आ रहा था। उसे स्पष्ट महसूस हो रहा था कि अगर उसने शंकरदास की बात ना मानी तो, वह उसे शूट कर देगा।

परन्तु शंकरदास की बात मानने का मतलब था सुन्दर लाल

ने उनके लिए जान की बाजी लगा दी थी। अब वह मौत के मुंह में था। सिर्फ उनके कारण। वरना उसे क्या पड़ी थी, शाहका के खिलाफ काम करने की। अब उसे सहायता की जरूरत थी, और सोहन लाल हर हाल में उसके अहसान को उतार कर, उसकी जान बचाना चाहता था।

जबकि शंकरदास उसे अपने इशारे पर चलाने की चेष्टा में था।

उसका दिलो-दिमाग नहीं मान रहा था कि शंकरदास की बात माने।

मौत के सन्नाटे में दो घण्टे इसी प्रकार बीत गये।

'दो घंटे बीत चुके है।' शकरदास ने खतरनाक लहजे में कहा।

सोहन लाल में क्रूरता भरी निगाहों से शंकरदास की आंखों में झांका।

'बोल क्या फैसला किया तूने?'

कुछ कहने के लिए सोहन लाल ने मुंह खोला कि शंकरदास गुर्राहट भरे लहजे में कह उठा।

'जो भी कहना। सोच-समझकर कहना? यह तेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है?'

'मुझे तेरी बात मंजूर नहीं।' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा।

'क्या?'

'मैं किसी भी कीमत पर तेरी बात नहीं मानता? तू अहसान फरामोश हो सकता है, लेकिन सोहन लाल किसी का अहसान नहीं भूलता। बोला, क्या करेगा अब तू? मुझे गोली मारेगा?'

'हां और अगर तू मर गया तो तब सुन्दर लाल को कौन बचायेगा?'

'कोई भी मत बचाये? लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूं, उसे बचाने की चेष्टा अवश्य की जायेगी और तू तो वास्तव में कमीना इन्सान है शंकरदास। यह तो साबित हो ही गया है?'

'अभी साबित नहीं हुआ?'

'नहीं हुआ?' सोहन लाल ने खूनी निगाहों से शंकरदास को देखा।

'नहीं ?'

'मतलब कि मुझे गोली मारने के बाद साबित करेगा कि तू निहायत ही गिरा हुआ इन्सान है ?'

'साबित करने के कई तरीके होते हैं ?'

'कर ? साबित कर ? देखूं तो सही कि और कैसे गन्दगी भरे तरीके हैं तेरे पास ?'

शंकरदास ने हाथ में पकड़ी रिवाल्वर उंगली में घुमाई और उसे वापस जेब में डाल लिया।

सोहन लाल के होंठ भिंच गये। आंखें सिकुड़ गयीं।

शंकरदास ने सिगरेट सुलगाकर, कश लिया।

'मिलिट्री में हमें एक चीज और भी सिखाई जाती है ?' शंकरदास बोला।

'यह कि जब किसी को शूट करने का समय आये तो रिवाल्वर को जेब में डाल लो ?'

'नहीं ?' शंकरदास ने मुस्कराकर कहा—'बल्कि यह कि जंग के दौरान किसी के द्वारा किये गये अहसान को याद रखो, बेशक वह अहसान छोटे से छोटा भी क्यों न हो ?'

'और तुम, सुन्दर लाल के इतने बड़े अहसान को भूल रहे हो ?'

'भूल नहीं रहा ? बल्कि पीछे धकेल रहा हूं ? ऐसा करना इस समय मेरी मजबूरी का हिस्सा भी है ? क्योंकि मैं इस वक्त हालातों के चक्रव्यूह में बुरी तरह फंसा हुआ हूं ?' शंकरदास का स्वर शान्त था—'लेकिन तुम अपनी बात से पीछे हट रहे हो तो मैं कर भी क्या सकता हूं ?'

'कम से-कम मुझे गोली तो मार सकते हो ?' सोहन लाल कड़वे स्वर में बोला।

'नहीं ?' शंकरदास ने सिर हिलाया—'मैं तुम्हें डरा रहा था। सोचा था डरकर तुम रास्ते पर आ जाओगे। मेरा साथ दोगे पाहवा को खत्म करने में ? सुन्दर लाल को भूल जाओगे ? परन्तु तुम नहीं डरे।'

'सोहन लाल, उसे घूरता रहा।

'अब तुम्हारी ही रही ?'

'क्या मतलब ?'

'पहले हम सुन्दर लाल को, तीरथराम की कैद से निकालेंगे

उसके बाद पाहवा की मौत की सोचेंगे।'

सोहन लाल के चेहरे पर राहत के भाव आये। तनाव कुछ कम हुआ।

'लेकिन एक तरफ शायद तुम सोचना भूल गये ?'

'किस तरफ ?'

'तीरथराम पाहवा ने सुन्दर लाल को पकड़कर हमारे बारे में पूछा होगा कि हम कहां हैं ? हमारा दूसरा ठिकाना कौन-सा है। दूसरा ठिकाना हम नहीं जानते तो सुन्दर लाल क्या जानेगा। ऐसे में उसने यही कहा होगा कि वह नहीं जानता और उसकी बात पर विश्वास ना करके, उसे तरह-तरह की यातनाएं दी होंगी और उन यातनाओं के पश्चात इस बात का कोई भरोसा नहीं कि वह जिन्दा बचा हो या उसकी लाश नाले में पड़ी सड़ रही हो ?'

सोहन लाल ने गम्भीरता भरे अन्दाज मे गर्दन हिलाई।

'हां ? इस पहलू पर भी मैं सोच चुका हूं। अगर उसे मार दिया है तो उसकी किस्मत ! अगर वह जिन्दा है तो उसे बचा निकालना है। वह बेचारा खामखाह हमारे फटे में टांग अड़ा बैठा।' सोहन लाल ने कहा।

शंकरदास कंधे उचकाकर रह गया।

'सबसे पहले हमें सुन्दर लाल के बारे में मालूम करना है कि उसे कहां पर रखा गया है ?'

'शाम को जयराम पाटिया आयेगा। उससे बात करेंगे। वही सुन्दर लाल के बारे में हमें खबर देगा ?' शंकरदास ने कहा।

□ □

□ □

शाम आठ बजे, अन्धेरा होने के पश्चात जयराम पाटिया आया।

बातों का सिलसिला चालू हुआ।

'मालूम हुआ, तीरथराम के बारे में कि वह किस ठिकाने पर है ?' शंकरदास ने पूछा।

'हां ?' जयराम गम्भीर था—'पाहवा ने तो अपने बंगले को इस समय अपना आफिस बना लिया है ?'

'बंगले को ?'

'हां? जबकि उसके पास पचासों ऐसे ठिकाने हैं जहां सुरक्षित ढंग से अपना काम सम्भाल सकता है?'

शंकरदास के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

'जयगणेश' की तबाही पर, उसकी क्या प्रतिक्रिया है?' सोहन लाल ने पूछा।

'बहुत बुरी। वह पागल हुआ पड़ा है। जल बिन मछली की तरह तड़प रहा है। तुम लोगों को हर हाल में पाना चाहता है। अपने सारे आदमी उसने तुम दोनों की तलाश में लगा दिये हैं। उसके सख्त आदेश हैं कि अगर तुम लोग पकड़ में ना आ सके तो, फौरन गोलियों से उड़ा दिया जाये और बाहर की यह हालत है कि तुम लोग आधा घण्टा भी सुरक्षित सड़कों पर नहीं चल सकते और उसके आदमियों के घेरे में आ जाओगे?'

सोहन लाल के होंठ सिकुड़ गये।

'तीरथराम पाहवा का बंगला कहां पर है?' शंकरदास ने पूछा।

जयराम पाटिया ने बताया।

'हमारे रिवाल्वरों की गोलियां लाये हो?'

जयराम ने जेबों में से दो लिफाफे निकालकर टेबल पर रख दिये।

'मेरे ख्याल में गोलियां कम नहीं पड़ेंगी।' पाटिया बोला।

दोनों ने कुछ नहीं कहा।

'अगर तुम लोग उसके बंगले पर जाकर, कुछ करने की सोच रहे हो तो मत करना?'

'क्यों?'

'वहां तगड़ी सिक्योरिटी है। कोई भी भीतर नहीं जा सकता चला जाये तो जिन्दा बाहर नहीं आ सकता।'

'सिक्योरिटी में कुछ खास भी है?'

'खास कुछ नहीं?' गार्ड हैं और गने हैं।' जयराम पाटिया ने गम्भीर स्वर में कहा, मैं खुद चाहता हूं कि जल्द से जल्द पाहवा खत्म हो जाये। परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि पाहवा को मारने के चक्कर में तुम लोग खामखाह मर जाओ।' तुम दोनों को सशक्त कदम उठाना चाहिये। ऐसा कि पाहवा किसी भी हालत में बच ना सके। एक ही वार उस पर हो और काम तमाम हो जाये। अगर वह बार-बार बचता रहेगा तो सतर्क हो जायेगा।

उसके बाद उस पर हाथ डालना कठिन हो जायेगा। इसलिये वार एक ही होना चाहिये।

शंकरदास और सोहन लाल की आंखें मिलीं।

'जयराम ठीक कहता है?' सोहन लाल बोला।

'हां?' शंकरदास ने सिर हिलाया—'पाहवा के बारे में हमें ठण्डे ठण्डे की योजना बनानी चाहिये। जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये।'

'ऐसा ही करेंगे?' कहकर सोहन लाल ने सिगरेट सुलगाई।

दो पल के लिये वहां पर खामोशी रही।

'और मेरे खयाल में सिर्फ रिवाल्वरों से तुम लोग अपना काम नहीं कर पाओगे।'

'तो?'

'तुम लोगों को गनों की जरूरत पड़ेगी।

'जब वक्त आयेगा तो देख लेंगे? पहले कोई योजना तो बना लें जयराम!' सोहन लाल ने कश लेकर कहा—'तुम सुन्दर लाल के बारे में जानते हो ना, वो हमारे साथ था, जिसे पाहवा के आदमियों ने···?'

'मालूम है? सब मालूम है?'

'पाहवा ने, सुन्दर लाल को कहां रखा है?' सोहन लाल का स्वर गम्भीर था।

'क्यों?'

'क्योंकि वह हमारा साथी था।' सोहन लाल का स्वर सख्त-सा हो उठा।

जयराम पाटिया ने समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाया।

'समझा और अगर तुम लोग सोचते हो कि सुन्दर लाल को तीरथराम की कैद से निकाल लोगे तो यह गलती है तुम लोगों की? पाहवा अपने कैदियों का खास ध्यान रखता है?' जयराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

'तुम मालूम करके बताओ कि सुन्दर लाल कहां पर कैद है?' शंकरदास ने कहा।

जयराम पाटिया उठ खड़ा हुआ।

'ठीक है? सुबह नाश्ते पर आऊंगा?'

'सुन्दर लाल के बारे में मालूम करके?'

'हां?'

जयराम पाटिया विदा लेकर वहां से चला गया।

शंकर दास और सोहन लाल की निगाहें मिलीं।

'अब ?' सोहन लाल के होंठों से निकला।

'रात सोकर बिताई जाये तो ठीक नहीं रहेगा ?'

'तो क्या ठीक रहेगा ?'

'हमें पाहवा के बंगले को, वहां की सिक्योरिटी को एक नजर देख लेना चाहिये ?'

'हां ?' सोहन लाल ने सिर हिलाया—'ऐसा करना ही ठीक रहेगा।'

'यहां से निकलते ही हमें हर कदम पर सतर्क रहना है ? पाहवा के आदमी बिखरे, हमें तलाश कर रहे हैं ?'

'सतर्क तो रहेंगे ?' सोहन लाल मुस्कराया—'परन्तु हमारी तलाश वास्तव में भारी पैमाने पर है तो, हम कब तक खुद को बचा सकेंगे। देर-सवेर में उनकी नजर में तो आएंगे ही। तब !'

'सालों की ऐसी-की-तैसी।' शंकरदास ने वहशी स्वर में कहा 'जो भी सामने आयेगा, कुत्ते की मौत मरेगा। देखते हैं कौन हरामी हम पर हथियार तानने की हिम्मत करता है।' स्वर में गुर्राहट थी।

'क्यों, तुम्हारी मिलिट्री की पढ़ाई में, इसका भी कोई ईलाज बताया गया है ?' सोहन लाल हंसा।

'हां ?'

'क्या ?'

'साले के मुंह में रिवाल्वर की नाल घुसेड़ो और घोड़ा दबा दो।'

सोहन लाल गहरी सांस लेकर रह गया।

उसके बाद दोनों तैयार हुए। जयराम के टेबल पर रखे गोलियों से भरे लिफाफे से उन्होंने दो-दो मुट्ठियां भरकर गोलियां ठूंसी और बाहर निकल गये।

□ □

□ □

अगले दिन सुबह नौ बजे ही जयराम पाटिया वहां आ पहुंचा।

'सोहन लाल शंकरदास तब सोते ही उठे थे। पाहवा के

बंगले पर निगाह मारकर रात को तीन बजे दोनों लौटे थे और और सोते-सोते चार बज गये थे।

'तुम दोनों अभी तक सो रहे हो? मैं तो सोचकर आया था कि नाश्ता तैयार होगा।'

'तुम्हारे सोचने से क्या होता है?' सोहन लाल ने लापरवाही से कहा।

'रात हम बाहर निकल गये थे। पाहवा के बंगले की तरफ।' जयराम पाटिया चौंका।

'पाहवा के बंगले की तरफ?'

'हां?'

'क-क्या करने?' जयराम अभी तक हक्का-बक्का था।

'बंगले की सूरत देखने?' शंकर ने मुस्कराकर कहा।

जयराम पाटिया ने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

'हूं? तो क्या लगा वहां पर?'

'माना कि वहां पर सिक्योरिटी है। परन्तु ऐसा नहीं कि हम अपने कदमों का रुख मोड़ लें।

'अभी बाहर से, बाहरी रूप देखा है। तभी ऐसा कह रहे हो?' पाटिया बोला।

'हमने अपने हिसाब से अच्छी तरह ठोक बजाकर देखा है। जब बाहर का पहरा देख लिया तो भीतर का पहरा भी समझ सकते हैं कि क्या हो सकता है?' सोहन लाल ने कहते हुए जयराम पाटिया को देखा।

'कभी-कभी समझने में भूल भी हो जाती है सोहन लाल और वही भूल मौत का कारण बनती है?'

सोहन लाल की गहरी निगाहें पाटिया के चेहरे पर जम गईं।

'तो तुम ही बता दो, भीतर बाहर के पहरे के बारे में?'

'मालूम होता तो कल शाम ही बता देता। जो मालूम है। वह कल रात भी बताया था और अब भी बता रहा हूं कि वहां पर पांव रखना मौत को दावत देना है?' जयराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

'तो तुम क्या चाहते हो कि पाहवा को छोड़ दें?'

'ऐसा मैंने कब कहा?' जयराम पाटिया ने मुस्कराकर कहा।

'तो ?'

'मेरा कहने का मतलब है उस वक्त का इन्तजार करो ? कब पाहवा बंगले से बाहर निकलता है। तब उस पर वार कर पाना, ज्यादा आसान और ठीक रहेगा।'

'विचार बुरा नहीं ?' शंकरदास ने कहा—'परन्तु इस बारे में हमने क्या करना है ? कैसे करना है। यह तुम हम पर ही छोड़ दो और राय मत दो। तुम्हारे बार-बार टोकने से हमारा कदम गलत भी उठ सकता है जो कि हम लोगों के लिये घातक हो सकता है समझदारी इसी में है कि तड़पने वाले को अकेला छोड़ दिया जाये।'

जयराम पाटिया ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

'शायद तुम ठीक कहते हो ?'

'सुन्दर लाल के बारे में बोलो। मालूम किया उसके बारे में।' सोहन लाल ने पूछा।

जयराम पाटिया के चेहरे पर गम्भीरता के भाव उभरे।

'मालूम किया ? परन्तु इतना ही मालूम हो सका कि अभी तक वह जिन्दा है ? कहां है, यह नहीं मालूम हो सका ?' कहते हुए जयराम ने जेब में हाथ डालकर, तह किया कागज निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया 'इस कागज पर, पाहवा के खास आदमी महेश चन्द्र का पता लिखा है। महेश चन्द्र ही जानता है कि सुन्दर लाल को कहां रखा गया है ?'

सोहन लाल के चेहरे हर भूचाल के चिन्ह उभरे। उसने फौरन कागज थामा।

'महेश चन्द्र !' सोहन लाल के होंठों से वहशी जानवर की भांति गुर्राहट निकली।

'क्या हुआ ?' शंकरदास ने हैरानी से सोहन लाल को देखा।

'इस हरामजादे ने तो मेरा बिस्तरा ही गोल कर दिया था।' सोहन लाल के दांत भिंचे हुए थे।

'मैं समझा नहीं ?' शंकर दास की हैरानी कम नहीं हुई।

'मैं जयगणेश होटल के बगल की बिल्डिंग के जिस रूम से ग्रेनेड फेंक रहा था, वहां यह अचानक ही अपने आदमियों के साथ पहुंचा, मुझ पर काबू पाया और मेरे शरीर के गिर्द ग्रेनेड बांधकर खिड़की से बाहर मुझे उछाल दिया।' सोहन लाल जहरीले स्वर

मैं कह रहा था।

'क्या बकवास है?' शंकरदास ने मुंह बनाया—'इतनी ऊपर से गिरकर कोई बच सकता है?'

'हां?' सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कहा—'सोहन लाल बच सकता है।'

शंकरदास ने कुछ कहना चाहा कि जयराम पाटिया बोल पड़ा।

'चुप रहो? उसकी बात तो पूरी हो लेने दो?'

'फिर शंकरदास कुछ नहीं बोला।

सोहन लाल ने सारी आप बीती सुनाई।

शंकरदास के होंठों से गहरी सांस निकल गई।

'वास्तव में मारने वाले से, बचाने वाला बड़ा होता है?' शंकरदास कह उठा।

जयराम पाटिया को तो अभी तक विश्वास नहीं आ रहा था कि इतनी ऊपर से गिरकर सोहन लाल बच गया है? परन्तु अविश्वास का भी सवाल, पैदा नहीं होता था।

'अब यह हरामी मेरे हाथों से नहीं बचेगा?' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा।

'जो पता मैंने तुम्हें दिया है, वह महेश चन्द्र का नहीं, उसकी माशूका का है? जहां वह हर रात आता है? वहां पर महेश चन्द्र पर आसानी से काबू पाया जा सकता है। क्योंकि तब उसके साथ इसके सिर्फ दो खास गनमैन होते हैं। वरना, इसके अपने बंगले पर तो पहरे का तगड़ा इन्तजाम होता है?' पाटिया बोला।

'साला? हर रात माशूका के पास आ जाता है?' सोहन कहर से बड़बड़ाया 'और एक हम हैं कि आज तक माशूका की महक तक भी नहीं ली?'

'अब तेरी उम्र भी नहीं रही।' शंकरदास ने एकाएक हंसकर कहा।

'और इस बारे में मुझे कोई गिला भी नहीं। हर काम उम्र के हिसाब से होता है। मेरी यह उम्र दौलत इकट्ठी करने की है।'

'महेश चन्द्र को कब पकड़ोगे?' जयराम ने पूछा।

'आज रात ही।'

'कितने आदमी चाहिये?'

सोहन लाल ने जयराम पाटिया को घूरा।

'आदमी—! क्यों ?'

'रात के काम के लिये ?'

'कोई जरूरत नहीं। हम दो ही बहुत हैं।' कहने के साथ ही सोहन लाल ने, शंकरदास को देखा।

शंकरदास सिर हिलाकर रह गया।

'हथियार ?'

'वह भी हैं।'

'मेरी मानो तो मन वगैहरा ले लो ताकि—?'

'जरूरत नहीं।' सोहन लाल ने ऐसे स्वर में कहा कि जयराम ने फिर कुछ नहीं कहा।

'यह महेश चन्द्र मारा जाये तो, तीरथराम पाहवा को तकलीफ होगी ?' शंकरदास ने पूछा।

'तकलीफ! बहुत बड़ी तकलीफ होगी।' जयराम बोला—'पाहवा के सारे काम वही देखता है। कई काम तो पाहवा को भी मालूम नहीं होते, जिन्हें वह करता है।'

शंकरदास का चेहरा क्रूरता से भर उठा।

□ □

□ □

रात के ग्यारह बजे सोहन लाल और शंकरदास, जयराम पाटिया के बताये पते पर पहुंचे। शहर के बीचों-बीच स्थित, महंगे अपार्टमेंट में चौथी मंजिल पर फ्लैट था। अपार्टमेंट के मुख्य द्वार पर वाचमैन मौजूद था। रात ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। कुछ लोग ही यदा-कदा आते जाते दिखाई दे जाते थे। अपार्टमेंट के भीतर शान्ति थी।

दोनों ने एक-दूसरे को देखा। वह अपार्टमेंट के सामने सड़क पार, फुटपाथ पर खड़े थे। निगाहें एकटक अपार्टमेंट पर टिकी थीं। सब कुछ शान्त नजर आ रहा था।

'महेश चन्द्र भीतर होगा अपनी माशूका के पास।'

'क्या कहा जा सकता है ?' शंकरदास ने विचारपूर्ण स्वर में कहा।

'जयराम ने कहा था कि उसके साथ दो आदमी होते हैं। उन्हें अपने साथ अपार्टमेंट के भीतर, फ्लैट में तो ले जाने से रहा। जाहिर है, वह बाहर ही होंगे। परन्तु नजर नहीं आ

रहे।'

शंकरदास ने कुछ नहीं कहा।

'शायद महेश चन्द्र आज नहीं आया?'

'उसके दोनों आदमी चारदीवारी के भीतर भी तो कहीं हो सकते हैं। जरूरी तो नहीं कि वह गेट पर वाचमैन के पास खड़े होंगे। यहां खड़े रहकर हम सिर्फ बातें ही कर सकते हैं।'

'तो—?'

'भीतर चलते हैं। महेश चन्द्र की माशूका के पास।' शंकर दास दृढ़ स्वर में बोला।

सोहन लाल ने शंकरदास के चेहरे पर निगाह मारी।

'गेट पर खड़ा वाचमैन हमें जरूर रोकेगा। रात के समय शोर-शराबा नहीं होना चाहिये। बेहतर होगा कि किसी तरफ से चारदीवारी फलांग कर खामोशी से भीतर प्रवेश करें।'

'जैसा तुम ठीक समझो?' शंकरदास ने सिर हिलाया।

'हां! सब कुछ दिमाग में रखना है। लेकिन रिवाल्वर को हाथ में ही रखना। कहीं उसे भी सिर में मत रख लेना।' शंकर दास ने होंठ सिकोड़कर, आस पास देखते हुए कहा।

और फिर अगले दस मिनटों के पश्चात्, सोहन लाल और शंकरदास दायीं तरफ वाली दीवार फलांग कर भीतर थे। भीतर कम्पाउण्ड में तीव्र प्रकाश वाले बल्ब जल रहे थे। पर्याप्त प्रकाश था।

'यहां पर इस तरह चलो कि जैसे भीतर रहते हो और रात के समय टहल रहे हो। ऐसे अन्दाज में देखकर कोई भी शक नहीं कर पायेगा कि हम बाहर के हैं।' शंकरदास ने कहा।

बिना किसी दिक्कत के दोनों, अपार्टमेंट के मुख्य द्वार से भीतर प्रवेश कर गये। सामने ही छोटा-सा रिसेप्शन था जो कि इस समय खाली था। दांई तरफ लिफ्ट थी और बांई तरफ सीढ़ियां। दोनों बिना रुके लापरवाही से भरे अन्दाज में सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये।

दोनों सतर्क थे। सावधान थे। रिवाल्वरें बाहर निकलने को तैयार थीं।

परन्तु चौथी मंजिल तक पहुंचने में कोई भी खतरा सामने नही आया। अपार्टमेंट में रहने वाले दो-तीन लोग नीचे की तरफ गये भी, परन्तु किसी ने उनकी तरफ तवज्जो नहीं दी।

फोर्थ फ्लोर पर पहुंचकर, उन्होंने जयराम के दिए नम्बर वाला फ्लैट तलाश किया और उसके बंद दरवाजे के सामने जाकर ठिठक गये। दांये-बांये को पूरी गैलरी सुनसान थी।

दोनों की निगाहें टकराईं। आंखों ही आंखों में इशारे हुए।

सोहन लाल ने 'डोर' की साइड में, दीवार पर लगी बैल बजाई।

भीतर घंटी बजने की आवाज आई।

'पूछने पर क्या कहोगे कि कौन हो? वह सीधे-सीधे तो दरवाजा खोलेगी नहीं।'

'चुप रहो।' सोहन लाल ने दबे स्वर में कहा—'बात मत करो। अगर भीतर वालों को मालूम हो गया कि हम दो हैं तो फिर दरवाजा कभी भी नहीं खुलेगा। सारा मामला गड़बड़ होकर रह जायेगा।'

शंकरदास ने फौरन होंठ बन्द कर लिए।

भीतर से पहले आहट उभरी फिर मध्यम-सा नारी स्वर आया।

'कौन है?'

'दरवाजा खोलो।' सोहन लाल का स्वर सामान्य और विश्वास से भरा था।

'क्यों?'

'मैसेज देना है।'

'किसका?'

'तीरथराम पाहवा का।'

'मेरा पाहवा से कोई वास्ता नहीं। तुम गलत जगह पर आ गये हो।' भीतर से आवाज आई।

'तुम्हारा पाहवा से वास्ता नहीं। मालूम है मुझे। परन्तु उसका वास्ता है जो तुम्हारे पहलू में है। मैसेज उसके लिये है।' सोहन लाल ने स्वर में झल्लाहट पैदा की—'फोन पर भी बात हो सकती थी। परन्तु बात ही कुछ ऐसी है कि पाहवा ने मुझे खुद, यहां भेजा है। अब दरवाजा खोलना है तो खोलो, नहीं तो मैं चलता हूं। पाहवा से कह दूंगा कि तुमने दरवाजा नहीं खोला। महेश से बात नहीं होने दी।' सोहन लाल ने अंधेरे में तीर चलाया था। यह भी हो सकता था कि महेश चन्द्र भीतर

हो ही ना। अभी आया ही ना हो।

'तुम किससे बात करना चाहते हो। नाम लेकर बोलो।' युवती का स्वर फिर आया।

'महेश चन्द्र से। तुम सवाल बहुत पूछ रही हो। मेरे पास इतना वक्त नहीं कि बाहर खड़ा रहूं। महेश से बात कर लो या उसे दरवाजे तक ले आओ। वह दरवाजा खोल देगा।'

सोहन लाल के इन शब्दों ने असर दिखाया। भीतर बात करने वाली युवती समझ गई कि आने वाला पाहवा का ही आदमी है। उसने सिटकनी हटाकर दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलते देखकर सोहन लाल और शंकरदास का दिल खुशी से उछल पड़ा।

फिर सामने इतना खूबसूरत चेहरा नजर आया कि दोनों ही हक्के-बक्के रह गये। वह वास्तव में ऐसी थी कि उसके पास हर रोज आया जाये। महेश चन्द्र इस बारे में गलत नहीं था। उसने शंकरदास को भी देखा। जाने क्यों दोनों को देखकर उसकी आंखों में सन्देह के निशान उभरे?

'वह मेरे साथ है।' इतना कहकर सोहन लाल ने हाथ से दरवाजा धकेल कर पूरा खोलते हुए भीतर प्रवेश करता चला गया। युवती को उसने आगे सोचने का मौका ही नहीं दिया।

शंकरदास भीतर आया और दरवाजा बन्द करके सिटकनी चढ़ा दी।

युवती को विश्वास होने लगा कि मामला गड़बड़ है।

उधर शंकरदास का हाथ, जेब में पड़े रिवाल्वर पर जा टिका था।

युवती की तरह, यह बेहद खूबसूरत ड्राइंगरूम था और खाली था। कम से कम महेश चन्द्र वहां पर नहीं था। सोहन लाल की घूमती हुई निगाह, पुनः युवती पर जा टिकी।

'कहां है महेश? जल्दी बुलाओ उसे। हमें वापस पाहवा के पास भी पहुंचना है।' सोहन लाल बोला।

'कौन हो तुम लोग?' युवती के होंठों से विश्वास भरा स्वर निकला।

'बताओ तो कि—।'

'नहीं ! तुम लोग वह नहीं हो जो खुद को बता रहे हो। न ही तुम दोनों को पाहवा ने भेजा है। तुम लोग कुछ और ही हो।' युवती ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा।

शंकरदास कुछ कहने ही लगा था कि पीछे वाले कमरे के दरवाजे पर महेश चन्द्र नजर आया। वहां उन लोगों को मौजूद पाकर जोरों से चौंका। चेहरा कई तरह के भावों से भर उठा।

शंकरदास और सोहन लाल की निगाहें उस पर जा टिकीं।

'यह है महेश चन्द्र ?' सोहन लाल ने क्रूरता भरे स्वर में कहा।

'इतना तो मैं भी समझ सकता हूं।' शंकरदास सख्त निगाहों से महेश चन्द्र को देख रहा था।

महेश चन्द्र अभी तक हक्का-बक्का था। उसने युवती को देखा।

'यह लोग भीतर कैसे आ गये ?'

'कह रहे थे, पाहवा ने भेजा है।' तुम्हें मैसेज देना है।' युवती ने बेचैनी भरे स्वर में कहा।

'उल्लू की पट्ठी, पाहवा के नाम पर तू हर ऐरे-गैरे के लिये दरवाजा खोल देगी।' महेश चन्द्र ने दांत पीसकर कहा—'मैं भीतर था। तू मेरे से बात कर सकती थी। परन्तु नहीं की।'

युवती ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

महेश चन्द्र की खूंखार निगाहें शंकरदास पर जा टिकीं।

'तुम— तुम शायद शंकरदास हो।'

'अन्दाजा अच्छा लगा लेते हो।' शंकरदास ने तीखे स्वर में कहा।

महेश चन्द्र ने उसी अन्दाज में सोहन लाल को देखा।

सोहन लाल क्रूर निगाहों से उसे देख रहा था।

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम जिन्दा कैसे बच गये ? तुम्हें तो ग्रेनेडों से बांधकर काफी ऊपर से नीचे फेंका गया था।'

'हां ! काफी ऊपर से नीचे फेंका था मुझे। तो बचता कैसे ? यह तो अच्छा रहा कि उसी समय मैं सुपरमैन बन गया और

उड़ता हुआ, वहां से दूर चला गया।' सोहन लाल ने क्रूर स्वर में कहा।

महेश चन्द्र के दांत भिच गये। उसने पुनः शंकरदास को देखा।

'तुम्हारा हमारा कोई वास्ता नहीं। फिर तुम हमारे खिलाफ क्यों खड़े हो गये ?'

'कोई तो कारण रहा होगा।'

'मैं वही कारण जानना चाहता हूं ?'

'इस बारे में तुम्हें कुछ भी नहीं बताया जा सकता महेश चन्द्र ?' शंकरदास ने सख्त स्वर में कहा।

'यहां का पता तुम लोगों को किसने बताया ?' अब महेश चन्द्र सामान्य हो चुका था।

'तेरी खूबसूरत माशूका की खुशबू हमें यहां खींच लाई।' सोहन लाल ने जहरीले स्वर में कहा।

महेश चन्द्र की आंखों में क्रूरता चमकी। पलक झपकते ही उसने रिवाल्वर निकाल ली।

परन्तु शंकरदास उसकी हरकत को पहले ही पहचान चुका था। उसके हाथ में भी रिवाल्वर दिखाई देने लगी। पल भर में ही मौत का माहौल बन गया। दोनों ने एक-दूसरे को खूनी निगाहों से देखा।

युवती सहमकर पीछे हट गई। आंखों में आतंक के साये लहरा उठे।

'अपनी रिवाल्वर जेब में रख लो महेश चन्द्र।' कहते हुए सोहन लाल ने भी रिवाल्वर निकालकर हाथ में ले ली—'हम यहां पर खून-खराबा करने नहीं आये। लेकिन जरूरत पड़ी तो हमें इस पर भी कोई एतराज नहीं।

परन्तु महेश चन्द्र, चेहरे पर खतरनाक भाव लिये, रिवाल्वर ताने खड़ा रहा।

सोहन लाल ने शंकरदास पर निगाह मारी।

'रिवाल्वर वापस रखने का इसका कोई इरादा नहीं।' सोहन लाल ने कहा।

'परवाह नहीं।'

'यह गोली चला सकता है ?'

'मेरी जिम्मेवारी रही कि यह सिर्फ एक ही गोली चला पायेगा, दूसरी नहीं।' शंकरदास का स्वर क्रूर था।

'मतलब हममें से एक अवश्य जिन्दा रहेगा।' सोहन लाल वहशी हंसी हंसा।

'शायद दोनों ही रहें। इसका निशाना चूक भी सकता है या फिर गोली ऐसी-वैसी जगह पर लगे कि मौत ना हो।'

'हां।' सोहन लाल ने गर्दन हिलाई—'इस तरफ तो मैंने सोचा भी नहीं था।'

उनकी निगाहें पुनः महेश चन्द्र पर जा टिकीं। हाथों में रिवाल्वरें थीं।

महेश चन्द्र खुद को अजीब सी स्थिति में फंसा महसूस कर रहा था।

'तुम लोग यहां क्यों आये हो?'

'बात करने—।'

'क्या?'

'पहले रिवाल्वर जेब में रखो। हथियारों की मौजूदगी में हमें, मुंह से बात करने की आदत नहीं है।'

'तुम दोनों किसी भी हाल में बच नहीं सकोगे। पाहवा के हाथ बहुत लम्बे हैं।'

'फालतू की बात नहीं।' शंकरदास गुर्राया—'आराम से बात करना चाहते हो तो रिवाल्वर जेब में रखो। वरना हम तुमसे पहले चला सकते हैं। अगर तुम्हें मारना ही होता तो गोली हम कब की चला चुके होते।'

महेश चन्द्र ने दो पल सोचा फिर रिवाल्वर जेब में डाल ली।

सोहन लाल और शंकरदास ने भी रिवाल्वरें वापस रखीं।

'अब कहो?' महेश चन्द्र बोला। वह इन दोनों के प्रति बेहद सतर्क था।

'हमें सुन्दर लाल चाहिये।' सोहन लाल बोला।

'सुन्दर लाल—?' महेश चन्द्र चौंका।

'हां! इस समय वह तुम लोगों की कैद में है और हम उसे आजाद देखना चाहते हैं।' सोहन लाल ने एक-एक शब्द को

चबाकर कहा—'वह जहां भी है, उसे लाकर तुम हमारे हवाले करोगे।'

महेश चन्द्र के होंठों पर जहरीली मुस्कान नृत्य कर उठी। 'मैं सुन्दर लाल को लाकर, तुम लोगों को दूं।'

'हां—।'

'क्यों ?' महेश चन्द्र व्यंग्य से हंसा।

अगले ही पल सोहन लाल और शंकरदास के हाथों में रिवाल्वरें चमक उठीं।

महेश चन्द्र चौंका। अगले ही पल वह ठगा सा खड़ा रह गया।

'अब समझे ?' शंकरदास सख्त स्वर में बोला—'तुम यह काम क्यों करोगे ?'

'तो तुम लोग रिवाल्वरों के दम पर जबर्दस्ती मुझसे यह काम करवाना चाहते हो।'

'जैसा भी समझ लो। तुम्हारे इन्कार करने पर हम दूसरी बार तुम्हें नहीं कहेंगे। उस स्थिति में तुम्हें शूट करके चले जायेंगे। सुन्दर लाल का क्या है उसे तो हम जैसे-तैसे वसूल कर ही लेंगे।'

शंकरदास के स्वर में ऐसे भाव थे कि महेश चन्द्र को समझते देर ना लगी कि वास्तव में उसका इन्कार, उसकी जान ले सकता है। दो-दो रिवाल्वरों के सामने उसने खुद को बेबस महसूस किया। किसी से इस समय सहायता की आशा भी नहीं थी। बाहर उसके खास दो आदमी मौजूद थे। परन्तु उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि भीतर क्या हो रहा है ?

महेश चन्द्र एकाएक फैसला नहीं कर पाया कि क्या करें ? कैसे खुद को बचाये।

'हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है महेश चन्द्र।' सोहन लाल दरिन्दगी भरे स्वर में कह उठा—'या तो हमारा काम करो। नहीं तो हमें जवाब दो। ताकि तेरी खोपड़ी उड़ाकर, सुन्दर लाल के लिए कोई दूसरा रास्ता तलाश करें।'

'मैं ! मैं चाहकर भी यह काम नहीं कर सकता।' महेश चन्द्र ने विवशता भरे स्वर में कहा।

'क्यों ? तेरे पांवों में मेंहदी लगी है क्या ?' सोहन लाल ने

पूर्ववत लहजे में कहा।

महेश चन्द्र ने उसे देखा, फिर गम्भीर स्वर में कह उठा।

'सुन्दर लाल सख्त पहरे में है। अगर मैंने उसे वहां से निकाला तो, बात पाहवा तक फौरन पहुंचेगी और पूछने पर मैं पाहवा को क्या कहूंगा कि, सुन्दर लाल को मैंने तुम लोगों के हवाले किया है। वह मुझे भूनकर रख देगा। यह बात. पाहवा कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगा कि ऐसा कुछ हो।'

सोहन लाल ने शंकरदास को देखा।

'यह ठीक कहता है।' सोहन लाल बोला—'ऐसा करने से तो इसकी जान खामखाह चली जायेगी।'

शंकरदास ने विचार भरी मुद्रा में सिर हिलाया।

'ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि तुम सुन्दर लाल को खामोशी से, वहां से निकाल लाओ।'

'नहीं ऐसा सम्भव नहीं।'

दो पल के लिए वहां खामोशी-सी छा गई।

'फिर तो यह काम हमें ही करना पड़ेगा।' सोहन लाल बोला।

'कैसे?' शंकरदास ने कहा।

'इससे उस जगह का पता ले लेते हैं जहां पर सुन्दर लाल है।' सोहन लाल ने कहा।

'माना तुम ठीक कह रहे हो। परन्तु तब तक यह सुन्दर लाल को वहां से हटवा भी सकता है। आखिर है तो पाहवा का ही आदमी। इस समय इसे हमारी रिवाल्वरों ने मजबूर कर रखा है। यह जुदा बात है।'

सोहन लाल ने होंठ सिकोड़कर, महेश चन्द्र को देखा।

'इसे समझा देंगे कि यह ऐसा कुछ ना करे। अच्छी तरह समझा देंगे।' सोहन लाल बोला।

'यह समझ जायेगा?'

'समझाने का ढंग होना चाहिये।' सोहन लाल की आवाज में कड़वाहट आ गई।

'ठीक है देख लो समझाकर, अगर यह समझता है तो—नहीं—तो।' शंकरदास ने आगे के शब्द अधूरे छोड़ दिए।

सोहन लाल ने हाथ की उंगलियों में रिवाल्वर नचाकर,

महेश चन्द्र को देखा।

'क्यों—बात आई समझ में ?'

महेश चन्द्र ने होंठ भींच लिए।

'बता ! सुन्दर लाल कहां पर कैद है। झूठ बोलने की चेष्टा मत करना। हमारी तुम्हारी कोई दुश्मनी नहीं। अगर हमसे झूठ बोला तो, हम पाहवा को छोड़कर, तुम्हारे पीछे पड़ जायेंगे। वह तो पाहवा है जो अभी तक हमारे हाथों से दूर है। लेकिन तुम्हें तो हम घंटों में साफ कर देंगे।'

महेश चन्द्र का चेहरा विवशता से भर उठा।

'अब बोलेगा भी या मुंह बन्द रखे हमें देखता रहेगा।' सोहन लाल गुर्राया।

'इस मामले में मुंह खोलना मेरे लिए घातक हो सकता है। पाहवा को पता चल गया कि मैंने तुम लोगों को कुछ बताया है तो वह मुझे छोड़ने वाला नहीं।' महेश चन्द्र गम्भीर स्वर में बोला।

'पहली बात तो यह कि पाहवा को कुछ भी पता नहीं चलेगा। अपनी इस छोकरी को समझा देना कि यह मुंह बन्द रखे और दूसरी बात बार-बार पाहवा-पाहवा कहना छोड़ो। सीधी बात करो। जल्दी बोलो सुन्दर लाल को कहां कैद कर रखा है। पता ठीक बोलना।'

जो भी हो, महेश चन्द्र को अपनी जान सस्ते में छूटती लगी। वरना यह दोनों उसे शूट भी कर दें तो हालातों के मुताबिक यह मामूली बात होगी।

'मेरा नाम तो बीच में नहीं आयेगा ?' महेश चन्द्र ने पूछा।

'नहीं। बशर्ते कि तुम्हारा दिया पता सही हो।' सोहन लाल ने सख्त स्वर में कहा—'अगर तुम्हारा दिया पता गलत हुआ तो तुम्हारी जान बच नहीं सकेगी। मैं पहले भी कह चुका हूं।'

महेश चन्द्र ने पता बताया। जो कि पुरानी-सी कालोनी के मकान का था।

'सुन्दर लाल के साथ क्या किया जा रहा है ?' सोहन लाल ने पूछा।

'उससे तुम्हारे ठिकाने के बारे में पूछा जा रहा है।' महेश चन्द्र ने गम्भीर स्वर में कहा।

'यातना देकर?'

'हां।'

सोहन लाल के जबड़ों में कसाव आ गया। उसने एक निगाह युवती के हसीन चेहरे पर डाली। मामला निपटते देखकर उसके चेहरे पर राहत के भाव आने लगे थे।

'सुन्दर लाल इसी पर है न? सोच लो महेश चन्द्र।' शंकर दास सख्त स्वर में कह उठा।

'हां! उसने अभी तक मुंह नहीं खोला कि सोहन लाल कहां है?'

'कैसे खोलेगा मुंह! वह तो जानता ही नहीं कि मैं कहां हो सकता हूं।' सोहन लाल क्रूर स्वर में बोला—'उसका मेरा सिर्फ इतना ही रिश्ता था कि मैं उसके घर पर छिपा बैठा था।'

चंद क्षणों के लिए वहां शान्ति छाई रही। कोई कुछ नहीं बोला और इसी शान्ति ने महेश चन्द्र के मन में बेचैनी भर दी। रह-रहकर उसका हाथ, जेब में पड़ी रिवाल्वर को छूने लगा।

'और तो कोई काम नहीं, मेरे से।' महेश चन्द्र ने दोनों पर निगाह मारी।

'एक छोटा-सा काम है।' स्वर क्रूर था सोहन लाल का।

'हमारी तुमसे कोई दुश्मनी थी। सीधे-सीधे तुमसे दुश्मनी नहीं थी पाहवा के द्वारा ही, हमारे बीच तनाव पैदा हुआ। तनाव वाला मामला भी चल जाता। हम तुम्हें जिन्दा छोड़ जाते, अगर तुमने मुझे ग्रेनेडों के साथ बांधकर खिड़की से बाहर, मरने के लिए ना फेंका होता।' सोहन लाल का स्वर ठण्डा था।

महेश चन्द्र की आंखें सकुड़ गईं।

'तुमने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पूरा का पूरा वार किया था मुझे। यह तो मेरी किस्मत अच्छी रही कि उसी समय मैं सुपरमैन बन गया और बच गया। तब हम दोनों के बीच जाती दुश्मनी की नींव पड़ गई थी। तुमने, कैसे सोच लिया कि जिसे तुमने मारने की चेष्टा की वह तुम्हें जिन्दा छोड़ जायेगा।'

महेश चन्द्र के होंठ भिंच गये।

'परन्तु सुन्दर लाल का पता जानने के पश्चात् तुमने मुझे ना मारने का वायदा किया था।'

वायदा।' सोहन लाल का स्वर खतरनाक हो गया—'तुम लोग खामखाह हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गये और फिर यह आशा करते हो कि मैं अपने वायदे पर डटा रहूं। यह कैसे हो सकता है। कमीने लोगों के साथ, वायदे भी कमीने किए जाते हैं, जिनका कोई सिर पैर नहीं होता। मेरा वायदा भी ऐसा था।

महेश चन्द्र के होंठों से गुर्राहट निकली।

'अपने वायदे को झूठा मत बनाओ। यह अच्छी बात नहीं है।'

'मैं तो हूं ही झूठा आदमी।' सोहन लाल मौत की-सी हंसी हंस पड़ा—झूठ का ही खाता हूं। हर नये शहर में जाकर कभी बम्बई वाला सोहन लाल बन जाता तो कभी वर्दी डालकर, झूठा पुलिस वाला। यानि कि मेरा धन्धा ही झूठ पर टिका हुआ है। झूठा वायदा तो मेरे धन्धे की कील है।'

महेश चन्द्र की मुद्रा में कोई फर्क नहीं आया।

'नहीं बेबी। तभी शंकरदास का सर्द स्वर उभरा—'अपनी जगह से मत हिलो।' शंकरदास के हाथ में भी रिवाल्वर आ गई थी। युवती अपनी जगह पर खडी हो गई। उसके सरकते कदम रुक गये। वह दीवार के पास मौजूद ड्राज वाली टेबल के बेहद करीब पहुंच चुकी थी। शंकरदास के टोकते ही उसका चेहरा फक्क पड़ गया था।

सोहन लाल और महेश चन्द्र की निगाहें भी उसकी तरफ घूम गई थीं।

'वापस आओ।'

शंकरदास के शब्द सुनते ही, युवती लड़खड़ाती हुई पीछे हटकर, वापस आ गई।

शंकरदास आगे बढ़ा। टेबल के समीप पहुंचकर ठिठका और उसकी ड्राजें खोलने लगा। बीच वाली ड्राज में ऊपर—ऊपर ही रिवाल्वर मौजूद थी। शंकरदास ने रिवाल्वर को हाथ नहीं लगाया और सारे ड्राज बंद करके पलटा और युवती को देखने लगा। भय से युवती का चेहरा हल्दी की तरह पीला पड़

गया।

सोहन लाल की एक आंख महेश चन्द्र पर थी। महेश चन्द्र के प्रति वह पूरी तरह सतर्क था। जरा-सी चूक भी, महेश चन्द्र के रिवाल्वर से निकली गोली उसकी जान ले सकती थी और वह अपनी जान तो किसी भी कीमत पर गंवाना नहीं चाहता था। खास तौर से तब तक, जबकि सारी बाजी उसके हाथ में थी।

और महेश चन्द्र भी मौका ढूंढ रहा था, रिवाल्वर निकालने का। उसे पूरा विश्वास था कि अगर जेब में पड़ी रिवाल्वर उसके हाथ में आ गई तो वह इस मौत के खेल को अपने हक में पलट लेगा। परन्तु वह इस बात को भी महसूस कर चुका था कि सोहन लाल उसके प्रति पूरी तरह सतर्क है। अगर उसने जरा भी हरकत करने की चेष्टा की तो, सोहन लाल फौरन उसे शूट कर देगा। फिर भी वह इस चेष्टा में था कि रिवाल्वर निकाल सके।

युवती भयभीत निगाहों से, शंकरदास को देखे जा रही थी। उसके चेहरे पर मंडराते आतंक के साये और भी गहरे हो गये थे। रह-रहकर वह सूखे होंठों पर जीभ फेर रही थी।

शंकरदास उसके करीब पहुंचकर ठिठका और हाथ में पकड़ी रिवाल्वर की नाल उसकी ठोड़ी पर लगाते हुए मौत से भरे स्वर में कह उठा—तुम्हारी उम्र रिवाल्वरों से खेलने की नहीं है, बैड पर खेलने की है। अपनी उम्र से चार कदम आगे चलने से इन्सान कभी-कभी अपनी जान गंवा बैठता है।'

युवती पर जमे आतंक के साये और भी गहरे हो गये। उसकी सांस फसने-सी लगी।

'अब यहां से हिलना नहीं। आगे की तरफ भी नहीं। पीछे की तरफ भी नहीं। वरना...।'

शंकरदास की आवाज में भाव ऐसे थे कि युवती सिर से पांव तक सिहर गई।

शंकरदास पलटा।

'यही वह क्षण था, जब सोहन लाल मात्र पल के लिए महेश चन्द्र के प्रति लापरवाह हुआ और महेश चन्द्र को भी पल भर का ही वक्त चाहिये। उसने बिजली की फुर्ती से रिवाल्वर

निकाली। सीधी की ओर बिना किसी देरी के ट्रेगर दबा दिया। सब कुछ सपने की भांति फौरन हो गया।

उधर जब शंकरदास पलटा तो उसने महेश चन्द्र को हरकत में आते देखा। तब तक महेश चन्द्र रिवाल्वर निकाल चुका था। शंकरदास को इस बात का अहसास था कि जब मौत सामने खड़ी हो तो अपनी जान बचाने के लिए चूहा भी शेर हो जाता है। फिर वह तो महेश चन्द्र था।

शंकरदास ने सोचने की जरूरत नहीं समझी। फौरन ट्रेगर दबा दिया।

एक साथ दो फायर हुए। कानों को फाड़ देने वाले धमाकों ने कमरे को जैसे हिला दिया हो।

शंकरदास ने महेश चन्द्र पर फायर किया और महेश चन्द्र ने सोहन लाल पर। दोनों के फायरों में मात्र दो पलों का अन्तर था। शंकरदास के रिवाल्वर से निकली गोली महेश चन्द्र के गले की हड्डी को तोड़ती हुई बाहर निकल गई। महेश चन्द्र फायर करते समय महसूस कर चुका था कि शंकरदास उस पर फायर करने जा रहा है परन्तु इस सिलसिले में वह फौरन कुछ नहीं कर सकता था। इन्हीं सोचों और घबराहट में उसका हाथ हिल गया और उसकी चलाई गोली, सोहन लाल के सिर के करीब से बालों को झुलसाती हुई निकल गई। सोहन लाल बाल-बाल बचा।

युवती के होंठों से मौत से भरी चीख निकल गई।

सोहन लाल और शंकरदास की आंखें मिलीं।

'गोली की आवाज हो चुकी है। अब यहां रुकना ठीक नहीं।' सोहन लाल बोला।

'हमारा काम भी पूरा हो गया है। चलो।'

'यह ?' सोहन लाल का इशारा युवती की तरफ था।

'रहने दो इसे।' शंकरदास ने कहा—'इसकी जान लेने से हमें क्या फायदा ?'

'ठीक है ! लेकिन इसे पांवों पर खड़े छोड़ना हमारे हक में ठीक नहीं होगा। यह पाहवा को खबर कर सकती है कि हम सुन्दर लाल के पास जा रहे हैं।' सोहन लाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

शंकरदास ने तुरन्त सहमति भरे भाव से सिर हिलाया।

'मैं इसका ऐसा इन्तजाम कर जाता हूं कि कम से कम चार घण्टे यह बेहोश ही रहे।'

'सिर पर चोट मारोगे?' शंकरदास ने पूछा।

'हां।'

'ठहरो, यह काम मैं तुमसे बेहतर कर सकता हूं।' कहकर शंकरदास युवती की तरफ बढ़ा।

युवती के होंठों से दबी-दबी चीख निकली।

'भगवान के लिये मुझे मत मारो! प्लीज! मैं...।'

'चुप...।' शंकरदास के होंठों से गुर्राहट निकली।

युवती के दांत आपस में चिपक गये। आंखों में खौफ ही खौफ था।

'घूमो।'

'मैं।'

'सुना नहीं तुमने।' शंकरदास का स्वर क्रूर हो उठा।

कांपती टांगों से युवती मुड़ी। उसी पर शंकरदास ने होंठ भींच कर, एक के बाद एक, हाथ में दबी रिवाल्वर की नाल से दो चोटें उसकी कनपटी पर मारी।

युवती चीख भी नहीं सकी। दोनों हाथों से उसने सिर दबा लिया। घुटने मुड़े और नीचे जा गिरी। वह बेहोश हो चुकी थी, कनपटी से थोड़ा सा खून बह उठा था।

'अब यह कुछ घंटे होश में नहीं आयेगी।' शंकरदास ने कहा।

'निकलो यहां से!' सोहन लाल जल्दी से बोला —'फायरों की आवाज सुनकर, इसके बाहर मौजूद आदमी आते ही होंगे और हम सीढ़ियों से नीचे जायेंगे। जल्दी करो, जल्दी।'

उसके बाद सोहन लाल और शंकरदास बाहर निकले। बक्ती तौर पर उन्होंने रिवाल्वरें जेबों में डाल ली थीं। बाहर गैलरी में दो चार लोग नजर आये जो कि शायद गोलियां चलने की आवाजें सुनकर बाहर आ गये, परन्तु यह नहीं समझ पा रहे थे कि गोलियां चली कहां हैं।

दोनों उनकी तरफ ध्यान दिए बिना सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये, और अगले दो मिनटों में वह अपार्टमेंट से बाहर थे। किसी से भी उनका टकराव नहीं हुआ।

□ □

□ □

ठीक एक घण्टे बाद सोहन लाल और शंकरदास उस मकान के आगे मंडरा रहे थे जिसका पता महेश चन्द्र ने उन्हें बताया था कि सुन्दर लाल यहां पर कैद है। मध्यवर्गीय इलाके का मकान था। वास्तव में यह जगह ऐसी थी कि कोई सोच भी नहीं सकता था यह तीरथराम पाहवा जैसी हस्ती का ठिकाना हो सकता है और यहां किसी को कैद करके रखा जा सकता है।

दोनों की निगाहें मिली।

'यहां तो कोई पहरा भी नजर नहीं आ रहा। सोहन लाल बोला।

'मैं भी यही सोच रहा हूं।' शंकरदास अन्धेरे में निगाहें दौड़ाता हुआ कह उठा।

'सुन्दर लाल यहां होगा भी कि नहीं?' कहीं महेश चन्द्र ने गलत पता तो नहीं बताया।'

शंकरदास ने सोहन लाल के चिन्तित चेहरे पर निगाहें मारीं।

'कुछ भी हो सकता है। महेश चन्द्र ने अगर गलत पता बताया हो तो कोई बड़ी बात नहीं।' शंकरदास ने कहा—'वह हमें हर गलत बात करने की, झूठ बोलने की स्थिति में था, क्योंकि हम एकदम उसके सच-झूठ को जांच नहीं सकते थे, और ऐसा करके महेश चन्द्र वक्ती तौर पर अपनी जान बचा सकता था।'

'छोड़ो उस हरामजादे की बात।' सोहन लाल ने घड़ी पर निगाह मारी। रात का एक बज चुका था—'आओ भीतर चलते हैं। हम सही जगह पर हैं या गलत जगह पर, सामने आ

आयेगा।'

सोहन लाल ने आगे बढ़ना चाहा कि शंकरदास ने उसे फौरन टोका।

'हमारी मिलेट्री सर्विस के दौरान एक बात कूट-कूटकर हमारी खोपड़ी में भर दी जाती है कि दुश्मन को कमजोर मत समझो और उसके ठिकाने पर आंखें बन्द करके मत जाओ।'

'लेकिन अभी यह बात स्पष्ट नहीं हुई कि यह हमारे दुश्मन का ठिकाना है।'

'इसीलिये तो इस जगह को हमें दुश्मनों का ठिकाना ही समझना चाहिये।' शंकरदास ने गम्भीर स्वर में कहा—

'अगर यह जगह हमारे काम की ना हुई तो, तब इसे हम दुश्मनों का ठिकाना नहीं समझेंगे।'

सोहन लाल ने, शंकरदास की बात के पश्चात मकान पर पुनः गहरी निगाह डाली। वहां के एक कमरे की लाईट रोशन थी। भीतर किसी प्रकार की हलचल महसूस नहीं हो रही थी।

'मेरे ख्याल से पिछली तरफ से भीतर जाना चाहिए।' सोहन लाल बोला।

मकान के दायें-बायें अन्य मकान सटे थे, सिर्फ उसके पीछे और आगे मकान खुला था। आगे की तरफ बड़ी गली का हिस्सा था और पीछे की तरफ छोटी-सी गली थी।

'चलो।' शंकरदास ने गम्भीर स्वर में कहा।

दोनों गली से बाहर निकलकर, चक्कर काटते हुए मकान के पिछले हिस्से की छोटी गली में पहुंचे और फिर उसी मकान के पीछे वाले हिस्से में, मकान का पिछला दरवाजा भी था, जो कि बन्द था। दोनों ने एक-दूसरे को देखा फिर रिवाल्वरें निकालकर मुंह में दबाई और हल्की-सी छलांग लगाकर उन्होंने दीवार की मुंडेर थामी जो कि मात्र सात फिट ऊंची थी।

चन्द ही पलों के उपरान्त वह दोनों मकान की चार दीवारी के भीतर थे।

दांतों में फंसी रिवाल्वरें पुनः हाथों में आ गयी थी। दोनों बेहद सतर्क थे। मकान के पीछे वाले भाग में बिल्कुल अन्धेरा

था। सामने छोटी सी लॉबी थी। बांयीं तरफ किचन था और दायीं तरफ बाथरूम वगैरह। दोनों कुछ पलों तक नहीं खड़े रहे।

फिर सोहन लाल आगे बढ़ा और लॉबी में पहुंचकर ठिठका, निगाहें चारों तरफ घूम रही थीं। शंकरदास वहीं पर रिवाल्वर थामे, हर प्रकार के खतरे के प्रति सजग था। एक तरह से उसने सोहन लाल को पीछे से कवर कर रखा था। लॉबी में जब सोहन लाल की आंखें अन्धेरे में देखने की अभ्यस्त हो गयीं तो उसकी निगाहें अगल-बगल बने दोनों दरवाजों पर जा टिकी, जो मकान के भीतर खुलते थे और छोटी-सी लॉबी के कोने में थे।

सोहन लाल आगे बढ़ा। बेआवाज, फिर वह बन्द दरवाजों के समीप पहुंचकर ठिठका। हाथ से दोनों दरवाजों को खोलने की चेष्टा की, हैंडिल दबाए, परन्तु दोनों ही दरवाजे भीतर से बन्द थे?' शंकरदास उसके कानों में फुसफुसाया।

सोहन लाल ने सहमति से सिर हिलाया।

'कैसे खुलेंगे?'

'इसकी चाबी मिल जाए तो तुरन्त खुल जायेगा।' सोहन लाल ने व्यंग्य से कहा।

शंकरदास होंठ भींचकर रह गया।

'अब तो एक ही रास्ता है कि सामने की तरफ से जाकर दरवाजा खटखटाया जाये।' शंकरदास ने गम्भीर किन्तु दृढ़ स्वर में कहा—'फिर जो भी होगा देखा जायेगा।'

'मेरे ख्याल में उस हरामी महेश चन्द्र ने हमें गलत पता बताया है।' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा।

शंकरदास ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

'आओ, सामने की तरफ चलते हैं।' शंकरदास ने कहा।

'एक रास्ता है।'

'क्या?'

'दरवाजे पर लगे हैंडिलों के पेंच खोल कर, इस सिटकनी को बेकार कर सकते हैं, दरवाजा खोल सकते हैं, परन्तु दिक्कत यह है कि पेचों को खोलने के लिए हमारे पास पेचकस नहीं है।

शंकरदास विचार भरी निगाहों से सोहन लाल को देखने लगा।

'पेचकस तो इस समय कहीं से भी नहीं मिल सकता।' आखिरकार शंकरदास बोला।

'नहीं मिल सकता।'

'नहीं।'

'ठीक है, तुम यहीं रुको, मैं अभी आता हूं।' कहते हुए सोहन लाल ने रिवाल्वर जेब में डाली और पलटा।

'लेकिन।'

'मेरे आने का इन्तजार करो, कुछ ही देर में आ जाऊंगा।' कहने के पश्चात सोहन लाल आगे बढ़ा और दीवार फलांग कर, जिस तरह भीतर आया था, उसी तरह बाहर निकल गया।

फिर बीस मिनट के बाद सोहन लाल वापस लौटा। पेचकस के साथ।

'कहां से लाये?' शंकरदास की आवाज में अजीब से भाव थे।

'बहुत आसान बात है, रात के इस समय लगभग हर घर में ही दो पहिए वाले स्कूटर खड़े होते हैं और लगभग आधे स्कूटरों की डिग्गी में ऐसा सामान मौजूद होता है।'

'ओह!' शंकरदास मुस्कराया—'इस तरफ तो मैंने सोचा भी नहीं था।'

'कैसे सोचोगे, मिल्ट्री में रहे हो, ऐसी उल्टी बातें सोचना तो हम लोगों का काम है।'

वह दोनों बेहद धीमे स्वर में फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे।

सोहन लाल पेचकस थामे नीचे झुक गया और अन्धेरे में ही सिटकनी का पेच तलाश करके, पेचकस से उसे खोलने में जुट गया। अन्धेरे के कारण समय भी ज्यादा लग रहा था और काम भी ठीक प्रकार से नहीं हो रहा था। सोहन लाल इस बात का पूरा ध्यान रख रहा था कि पेचकस स्लिप होकर दरवाजे पर लगकर आवाज पैदा ना करे। इससे भीतर वाले सावधान हो सकते थे।

शंकरदास झुक कर बोला।

'लाईट जला दूं, सामने स्विच बोर्ड है।'

'नहीं।' सोहन लाल ने सिर हिलाया 'लाईट आन होने से भीतर वाले सावधान हो सकते हैं।'

'बिना लाईट के तुम काम नहीं कर पाओगे। तकलीफ होगी और...।'

'मेरी फिक्र मत करो, ज्यादा से ज्यादा वक्त लग जायेगा। इसकी कोई बात नहीं, हमारे पास वक्त ही वक्त है।' सोहन लाल ने लापरवाही से कहा और अपने काम में व्यस्त हो गया।

शंकरदास पास खड़ा रिवाल्वर थामे आस-पास निगाहें दौड़ाता रहा।

सोहन लाल सावधानी से अपने काम में जुटा रहा।

'एक घण्टे से कुछ मिनट ऊपर ही लगे, सोहन लाल को अपना काम निपटाने में, काम तो मामूली ही था, दो पेचों को खोलना, परन्तु चन्द दिक्कतें उसके सामने थीं। एक तो अन्धेरा, और फिर दरवाजे के एक तरफ ही उसे सपोर्ट थी, अगर दोनों तरफ से सपोर्ट होती तो दूसरी तरफ से पेचों में पेचकश लगा कर, मिनट भर में ही दोनों पेच खोल देता।

फिर भी यह उसकी काबलियत का ही नमूना था कि इस तरह इतने कठिन काम को उसने करीबन घण्टे में ही निपटा डाला था। यह जुदा बात थी कि वह सिर से पांव तक पसीने-पसीने हो उठा था। पेचों के खुलते ही सिटकनी लटक गई थी। उसकी ग्रिप समाप्त हो गई थी और उसका लॉक जुदा-सा हो गया था। सोहन लाल पेचकस एक तरफ रखकर उठा, बैठे-बैठे उसका पूरा जिस्म अकड़ गया था। उठकर वह जिस्म को सीधा करने लगा।

अब दरवाजे को सिर्फ धकेलने की जरूरत थी कि उसने पूरा खुल जाना था।

शंकरदास का चेहरा तसल्ली से भरा था कि काम सफलता पूर्वक निपट गया है। मेहनत और समय बरबाद नहीं हुआ। उसने भीतर जाने की जल्दी नहीं की। वह सोहन लाल को फ्रेश होते देखता रहा। दो मिनट में ही सोहन लाल ने अपना अकड़ा जिस्म दुरुस्त कर लिया था।

'चलो ?' शंकरदास धीमे स्वर में फुसफुसाया।

जवाब में सोहन लाल मुस्कराया और जेब से रिवाल्वर निकालकर हाथ में ली और आहिस्ता से आगे बढ़कर दरवाजे को धकेला, वह खुलता चला गया। करीब आधा खुला।

सोहन लाल ने भीतर कदम रखा।

तभी उसकी कमर से रिवाल्वर की नाल आ लगी। रिवाल्वर लगाने वाला आधे खुले दरवाजे के पीछे था। सोहन लाल ठिठका, उसके कदम लगभग जड़ होकर रह गये, ऐसी स्थिति की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। तभी उसके कानों में खतरनाक स्वर पड़ा।

'हिलना नहीं।'

सोहन लाल का इरादा तो वैसे भी हिलने का नहीं था।

शंकरदास ने अभी भीतर प्रवेश नहीं किया था। वह मिल्ट्री मैन था और इस प्रकार के खतरों के प्रति वह अकसर सजग रहता था। सोहन लाल की कमर से उसने रिवाल्वर लगते देख ली। वह सतर्क-सा होकर दरवाजे के बाहर ही दीवार की तरफ सरक कर दीवार की ओट में चिपक गया था। रिवाल्वर उसके हाथ में थी। वह चौकन्ना हो उठा था।

सोहन लाल की गर्दन घूमी और दरवाजे की ओट में खड़े व्यक्ति को देखा जिसने उसकी कमर से रिवाल्वर लगा रखी थी। वह पचास बरस का खतरनाक सा नजर आने वाला व्यक्ति था।

'मुंडी सीधी कर।' वह गुर्राया।

सोहन लाल ने फौरन हड़बड़ाकर सिर सीधा कर लिया।

'तेरा साथी कहां है ?' वह उसी खतरनाक लहजे में बात कर रहा था।

'साथी।' सोहन लाल के होंठों से निकला और सिर पीछे घुमाया। शंकरदास उसे नजर नहीं आया। वह समझ गया कि, भीतरी खतरे को देखकर शंकरदास दायें-बायें हो गया है सोहन लाल ने गर्दन सीधी की फिर चेहरे पर हैरानी लाकर बोला—'तुम किस साथी की बात कर रहे हो ?'

'जिससे तुम बातें कर रहे थे ?' वह दांत भींचकर बोला।

'पागल तो नहीं हो गये तुम। मैं किसी से बातें नहीं कर

रहा था। भला मेरे साथ कौन होगा ?'

'ज्यादा चालाक मत बनो, मैंने अपने कानों से बातों की आवाज़ें सुनी है।'

सोहन लाल ने सिर हिलाया और समझने वाले भाव से बोला।

'अब समझा, तुमने जो बातों की आवाज सुनी है वह दो की नहीं एक की है। मुझे अकेले में खुद से बातें करने की आदत है।' सोहन लाल ने बेहद संजीदगी भरे स्वर में कहा।

'बकवास करते हो, मैं ।'

'मेरे भाई !' सोहन लाल उसकी बात काटकर शांत स्वर में कह उठा—'मैं जो कह रहा हूं सच कह रहा हूं। मेरा विश्वास करो, झूठ बोलने का मुझे क्या फायदा। अगर विश्वास नहीं आता तो बाहर जाकर देख लो।'

कई पलों के लिये उनके बीच शान्ति रही।

'कौन है तू ?'

'देख भाई।' कहकर सोहन लाल पलटने को हुआ कि उसकी कमर में रिवाल्वर का दबाव बढ़ गया।

'वैसे ही खड़ा रह।' गुर्राहट उसके कानों में पड़ी।

सोहन लाल पुनः पहले की सी स्थिति में आ गया।

'जो कहना है इसी तरह खड़े-खड़े कह, और अपने हाथ में पकड़ी रिवाल्वर को गिरा दे। अपने से कम से कम छः फीट दूर।' उसके स्वर में सख्ती और खतरनाक भाव थे। वह बेहद सतर्क था।

सोहन लाल ने बिना कुछ कहे रिवाल्वर सामने उछाल दी, वह पांच छः फीट दूर जा गिरी। रिवाल्वर गिरने की आवाज उभरी, फिर शान्ति छा गई।

'अब कह।'

'मैं कह रहा था कि मैं मामूली-सा चोर हूं और यहां चोरी...।'

'मामूली-सा चोर !' उसने दांत भींचकर कटु स्वर में कहा—'रिवाल्वर रखने वाला, मामूली-सा चोर! वाह क्या बात कही है। शायद तुम्हें मालूम नहीं कि मामूली से चोर रिवाल्वर नहीं रखते।'

'आज कल रखते हैं।'

'रखते हैं?'

'हां! आजकल रखते है? क्योंकि चोरों को भी लोग डाकू समझकर, मार-मारकर, पूरी तरह मार ही देते हैं। इस कारण रिवाल्वर मैंने रखनी शुरु कर दी कि ऐसा मौका आये तो अपनी जान बचाई जा सके।'

साला, उल्लू का पट्ठा, चलाता है मुझे! क्या नाम है तेरा?'

'भजन सिंह।'

'हूं! तू अकेला है।'

'कितनी बार पूछेगा, बाहर जाकर देख ले।' सोहन लाल का स्वर तीखा हो गया।

उसने कुछ नहीं कहा। कई पलों तक वहां चुप्पी रही। सोहन लाल बोला।

'तेरा चेहरा और रिवाल्वर होना बता रहा है कि तू भी कोई शरीफ आदमी नहीं है।'

'तो?'

'मुझे इजाजत दे, मैं चलूं, रात हुई पड़ी है, जाकर कोई और शिकार देखूं। यहां आकर गलती कर दी मैंने।'

'तू कहीं नहीं जायेगा।'

'क्यों मेरे धन्धे का सत्यानाश करता है। कुछ कमा लेने दे मुझे।' सोहन लाल जोर से बोला।

'चले जाना, परन्तु हमें यह तसल्ली होने के पश्चात कि तू वास्तव में चोर ही है, कोई और नहीं है. और तेरा यहां आने का मकसद वास्तव में चोरी करना ही था।' वह सख्त स्वर में बोला।

'और यह तसल्ली कैसे होगी, झूठ-सच पकड़ने वाली मशीन है, तुम्हारे पास?'

'मेरे साथी आने वाले हैं, वही इस बात का फैसला करेंगे; मैं इस बारे में अकेला फैसला नहीं कर सकता।'

'यार क्यों बात को बढ़ा रहा है मेरी बात मान और मुझे जाने दे। मेरी रात खोटी मत कर। धंधे का...'

'चुप रह।' वह गुर्राया।

सोहन लाल खामोश हो गया।

'भीतर चल दूसरे कमरे में, दांयीं तरफ वाले दरवाजे की ओर।'

सोहन लाल ने लम्बी सांस ली और शराफत से उसके कहे मुताबिक आगे बढ़ गया।

वह व्यक्ति दरवाजे की ओर से निकला और पलटकर बाहर की तरफ देखा, जहां से सोहन लाल आया था, वहां उसे कोई नजर ना आया। पल भर वह सोचता रहा कि उसने हर हाल में दो व्यक्तियों की बातें सुनी हैं, बेशक पर बेहद मध्यम और कठिनता से सुनी थीं, हो सकता है यह चोर ठीक कह रहा हो कि उसे अपने आप से बातें करने की आदत है।

'भाई मेरे, मैं अकेला ही हूं।' सोहन लाल की सामान्य आवाज उसके कानों में पड़ी। उसने गर्दन घुमाकर सोहन लाल को देखा—'नहीं विश्वास तो बाहर जाकर अच्छी तरह देख ले।'

उसने सिर को झटका दिया, और रिवाल्वर थामे सोहन लाल की तरफ बढ़ता हुआ बोला।

'माना कि तू अकेला है। आगे चल, रुक मत।'

रिवाल्वर के साए में सोहन लाल ने भीतर प्रवेश किया, परन्तु भीतर की हालत देखते ही चौंक पड़ा, ठिठका-सा रह गया। सामने ही कुर्सी पर सुन्दर लाल मौजूद था। उसके हाथ-पांव बंधे हुए थे। बुरी हालत थी उसकी। शरीर पर जख्मों के निशान थे, चेहरे की बुरी हालत थी, एक आंख सूजकर नीली पड़ी हुई थी। स्पष्ट नजर आ रहा था कि उसे तगड़ी मार मारी जा रही है। उसका ठिकाना पूछने के लिए, जो कि वह जानता ही नहीं था।

'उस दूसरी कुर्सी पर जाकर बैठा था।'

'यह क्या है?' सोहन लाल ने पलटकर उसे देखा।

उसके चेहरे पर कड़वे भाव आ गये।

'यह भी तुम्हारी तरह चोर है।'

'चोर?' सोहन लाल चौंका।

'हां! यही कहता है यह, परन्तु हमें विश्वास नहीं आया, इसीलिए अब इसे बांधकर इससे पूछा जा रहा है। इसकी अप-

लियत क्या है। जब तक यह नहीं बतायेगा, तब तक इसकी यही हालत रहेगी।''

'हो सकता है यह वास्तव में चोर ही हो।'

'कुछ भी हो सकता है।' उसने खतरनाक स्वर में कहा—'तुम इसे जानते हो?'

'नहीं।' सोहन लाल ने सिर हिलाकर लापरवाही से कहा, 'मैंने इसे पहली बार देखा है।'

'चल, कुर्सी पर बैठ जा।'

सोहन लाल आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठ गया।

उस व्यक्ति ने कुर्सी खींची और दरवाजे के पास सरकाकर बैठ गया। रिवाल्वर उसके हाथ में रही। वह सावधान था और रिवाल्वर का रुख सोहन लाल की तरफ था। सोहन लाल के तसल्ली से भरे चेहरे को देखकर उसके मन में बार-बार यही आ रहा था कि हो सकता है यह वास्तव में चोर ही हो।

और सोहन लाल इसलिए निश्चिंत था कि बाहर शंकरदास मौजूद है जो कि इस स्थिति को आसानी से संभाल लेगा। उसका कुछ नहीं बिगड़ने वाला, और वह कुर्सी खींचकर बैठा भी दरवाजे के पास था। दरवाजे की तरफ उसकी पीठ थी। शंकरदास वहां पहुंचकर आसानी से उस पर काबू पा सकता था।

'इसकी हालत बता रही है कि यह काफी देर से बंधा हुआ है—'सोहन लाल बोला।

'तुम्हारा ख्याल ठीक है।' उसने रिवाल्वर थामे शांत स्वर में कहा।

तभी सोहन लाल को दरवाजे के पास शंकरदास नजर आया। सोहन लाल के चेहरे पर किसी तरह के भाव नहीं उभरे, वह बेहद शांत स्थिति में बैठा रहा।

सुन्दर लाल का सिर छाती की तरफ झुका हुआ था। वह अर्द्ध बेहोशी की हालत में था। कभी-कभार रह-रह कर उसके होंठों से निकली पीड़ा भरी कराह सुनाई दे जाती थी।

अगले ही पल शंकरदास ने भीतर प्रवेश किया और हाथ में दबी रिवाल्वर उसकी खोपड़ी से सटा दी।

वह चौंका, उसने उठना चाहा।

'बैठो रहो !' शंकरदास कहर भरे स्वर में बोला—'वरना भेजा फाड़कर रख दूंगा।'

वह हक्का-बक्का सा फौरन कुर्सी पर जम गया। कई पलों तक तो कुछ समझ नहीं पाया कि क्या हो गया है, परन्तु इतना समझ गया कि उसका शक ठीक था। वह दो थे, और बातें करने की आवाज उसने सुनी थी और वह महज उसका वहम नहीं था, हकीकत थी, परन्तु उसने लापरवाही इस्तेमाल करके खुद ही बेवकूफी कर बैठा था और अब उसके हक में खतरनाक अहोल उसके सिर पर सवार खड़ा था।

□ □

□ □

शंकरदास ने पीछे से हाथ आगे बढ़ाया और उसके हाथ से रिवाल्वर लेकर कमरे के कोने में उछाल दी। वह निहत्था क्या हुआ, जैसे उसकी जान ही निकल गई हो, चेहरा फक्क पड़ चुका था। आंखों में आतंक के साए मंडरा उठे थे। भय की मूर्ति बना कुर्सी से चिपका रह गया था वह।

सोहन लाल कुर्सी से उठा और दूसरे कमरे में फेंकी अपनी रिवाल्वर उठा लाया।

शंकरदास उसके सामने आया।

उसने शंकरदास को देखा, उसके चेहरे पर क्रूरता के भाव पाकर वह मन ही मन कांप उठा।

'तुम्हारे बाकी साथी कहां हैं ?' शंकरदास ने भिंचे दांतों से पूछा।

'बा-बाहर गये—गये हैं।

'कहां ? बाहर ग ।'

'पा-पाहवा, तीरथराम पाहवा का बुलावा आया था।' उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

'कि-किसी ने महेशचन्द्र की हत्या कर दी है, पाहवा सबको इकट्ठा कर रहा है।'

'कितनी देर हो गई उन्हें गए ?'

'घण्टा-भर हो गया है।' वह जल्दी से बातों का जवाब दिए जा रहा था, उसे डर था कि सामने खड़ा खतरनाक इन्सान, कहीं क्रोध में आकर उस पर गोली ना चला दे।

'कब तक आयेंगे वह ?'

'फुर्सत मिलने पर, घंटे में वापस भी आ सकते हैं, या फिर सुबह तक, वैसे वह जल्दी आने की कोशिश करेंगे, क्योंकि इस कैदी के पास मैं अकेला हूं।' उसने बेचैनी से कहा।

'कितने हैं वह ?'

'चार, मुझे मिलाकर पांच।' उसने कहा फिर हिम्मत करके पूछ बैठा—'तु-तुम लोग कौन हो ?'

शंकरदास के कुछ कहने से पहले ही सोहन लाल दरिन्दगी से कह उठा।

'तुमने सोहन लाल-शंकरदास का नाम सुना है ?'

इन शब्दों के साथ ही आतंक से उसकी आंखें फटती चली गयीं।

'तुम-तुम लोग वह दोनों हो। सोहन लाल, शंकरदास।' उसकी जैसे जान ही सूख गई हो? चेहरा फक्क पड़ गया। फटी-फटी-सी आंखों से वह उन्हें देखता रह गया।

'हां ! मुझे सोहन लाल कहते हैं।' सोहन लाल का स्वर पहले जैसा ही था।

उसकी खौफपूर्ण निगाहें शंकरदास की तरफ घूमी।

शंकरदास का चेहरा भयानक भावों से भर उठा।

'शंकरदास को देख रहे हो ?'

शंकरदास के कहने का अन्दाज ऐसा था कि उसकी रही-सही जान सूख गई।

सोहन लाल और शंकरदास की आंखें मिलीं।

'इसकी हालत चलने लायक नहीं है।' सोहन लाल ने कहा।

'हां ! मैं भी यही देख रहा हूं।'

तभी वह व्यक्ति सकते की-सी हालत में पूछ बैठा—

'महेश चन्द्र को तुम लोगों ने मारा है ?'

'हां ! हमने ही मारा है।' सोहन लाल क्रूरता से हंसा—'ऐसी-तैसी फेरकर रख दी साले की।'

उसने भयभीत निगाहों से सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

'तुम दोनों बहुत बड़े खतरे में हो। पाहवा महेशचन्द्र की हत्या बर्दाश्त नहीं करेगा!'

'हम तो पाहवा की तरफ से कबसे खतरे में हैं। देख नहीं रहा न! पाहवा के कुत्ते दर-बदर ठोकरें खाते हमें गोलियों से भूनने के लिए कदम-कदम पर तलाश कर रहे हैं।' सोहन लाल ने वहशी स्वर में कहा—'ऐसे में हम महेश चन्द्र को उड़ाये या उसके बाप को, वह और क्या कर लेगा हमारी सेहत पर क्या फर्क पड़ेगा।'

वह कुछ ना कह सका।

तभी शंकरदास बोला।

'इसके साथी कभी भी आ सकते हैं। वह आ गये तो मामला बढ़ सकता है।'

'ठीक है! उठाओ सुन्दरलाल को?'

'मैं उठाऊं?'

'हां! मुझे यहां और भी काम है।' सोहन लाल वहशी अन्दाज में हंसा।

'और काम?' शंकरदास ने प्रश्न भरी निगाहों से सोहन लाल को देखा।

'हां! इसका इन्तजाम भी तो करना है।' सोहन लाल ने उस व्यक्ति को देखा।'

उसकी आंखें दहशत भरे अन्दाज में फटती चली गई।

शंकरदास कुर्सी पर बंधे, सुन्दर लाल की तरफ बढ़ गया।

'तु—तुम—म मेरे साथ क्या करोगे?' वह आतंक भरे स्वर में कह उठा।

'वही, जो पहले तुम मेरे साथ कर देना चाहते थे?' सोहन लाल कड़वे स्वर में बोला।

उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। चेहरे पर छाये आतंक के साये गहरे होने लगे।

'न-हीं, भगवान के लिए मुझे मत मारो! मैं तो नौकर हूं! तुम्हारी मेरी क्या दुश्मनी! मैंने तो तुम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ा! वह गिड़गिड़ाए से अन्दाज में कह उठा।

'नहीं मारूं?' सोहन लाल ने होंठ सिकोड़े।

'न-हीं।' उसके होंठों से आशा भरा स्वर निकला।

'नहीं ?'

'नहीं। भगवान के लिए नहीं।'

तब तक शंकरदास, सुन्दर लाल के बंधन खोलकर, कंधे पर लाद चुका था।

'तुम निकलो।' सोहन लाल ने शंकरदास से कहा—'दीवार मत फलांगना, दरवाजा खोलकर निकलना।'

सुन्दर लाल बेहोशी की सी हालत में था। रह-रहकर उसके होंठों से पीड़ा भरी मध्यम-सी कराह निकल जाती थी। वह नहीं जानता था इस समय उसके साथ क्या हो रहा है।

'कब तक बाहर आ रहे हो ?' शंकरदास ने पूछा फिर कहा —'ज्यादा देर मत लगाना ?'

सोहन लाल ने सिर हिलाया। सुन्दर लाल को उठाये शंकर दास बाहर निकल गया।

सोहन लाल ने उस व्यक्ति को देखा फिर हाथ में पकड़ी रिवाल्वर हिलाई।

उसके चेहरे पर घबराहट के भावों ने पुनः जोर मारा।

'मैं तेरे को छोड़ रहा हूं।' सोहन लाल मुस्कराया।

यह शब्द सुनकर, उसके चेहरे पर, जिन्दगी की लहर दौड़ने लगी।

'दिल तो नहीं कर रहा तुझे छोड़ने का ! लेकिन तुम मुझे भले आदमी लग रहे हो। इसलिए जान बख्शी देता हूं ! आज के बाद शराफत से जिन्दगी बिताने की कोशिश करना। दोबारा कभी मेरे हत्थे मत चढ़ना।'

'हां-हां।' उसका स्वर खुशी से कांप उठा—'तुम ज-जो कह रहे हो, मैं वैसा ही करूंगा।'

'गुड ! मेरी बात मानेगा तो तेरा अगला जन्म संवर जायेगा, तू नौकर नहीं, पाहवा जैसा बनेगा अगले जन्म में।'

उसने खुशी भरे अन्दाज में सिर हिलाया। वह फौरन सोहन लाल से छुटकारा पाना चाहता था।

'उठो ?'

सोहन लाल का शब्द पूरा होते ही, वह फौरन उठ खड़ा हुआ।

'गुड ?' सोहन लाल मुस्कराया—'क़िस्मत वाले हो ! ख़ैर, घूमो ! पीठ मेरी तरफ़।'

वह फौरन घूम गया।

सोहन लाल ने ट्रेगर दबाया। नाल से निकली गोली ने उसकी खोपड़ी उड़ा दी।

'मेरे वायदे पर विश्वास करके, जिन्दगी से मुक्ति मिल गई और मुझे क्या चाहिये ख़ुशनसीब इन्सान !' सोहन लाल ने कहर भरे स्वर में कहा उसकी लाश को फलांगता हुआ, रिवाल्वर थामे कमरे से बाहर निकलता चला गया।

□ □

□ □

तीरथराम पाहवा ने सुलगती निगाहों से अपने सामने खड़े अपने आठ ओहदेदारों को देखा। जिनका नम्बर महेश चन्द्र के बाद आता था। वह आठों कुर्सियों के करीब बैठने की अपेक्षा, उनके करीब खड़े थे। चेहरों पर गम्भीरता और सतर्कता मौजूद थी ! निगाहें पाहवा के हरकत करते जिस्म पर।

पाहवा खूनी शेर की भांति उस खूबसूरत कमरे में टहल रहा था ! उसके मुंह से निकलने वाली तेज सांसें खतरनाक गुर्राहटों की तरह लग रही थी। चेहरे पर वहशीपन के भाव नाच रहे थे। भिंचे हुए दांत ! खिचाव के कारण चेहरा किसी भेड़िये के समान लग रहा था। सामने खड़े आठों ओहदेदार बेहद सतर्क थे। वह इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे कि पाहवा ऐसे खतरनाक रूप में कभी आता नहीं और जब आता है तो उसका यह खतरनाक रूप खून की नदियां बहाये बिना दूर नहीं होता।

पाहवा ठिठका। एड़ियों के बल घूमा और उसी अन्दाज में आठों को घूरने लगा।

पल भर के लिए वहां मौत का सा सन्नाटा छा गया।

'वह सिर्फ दो हैं ! सिर्फ दो।' तीरथराम पाहवा के होंठों से

सर्द स्वर निकला।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

'सब चलता है। चलता ही रहता है। घात-प्रतिघात तो हम लोगों के काम का हिस्सा है।' पाहवा की आवाज में बेहद खतरनाक भाव विद्यमान होने लगे थे—'लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि वह हमारा कोई भी कैसा भी नुकसान कर दे। महेश चन्द्र की मौत, कम से कम मेरे लिए तो बहुत बड़ा नुकसान का सौदा है। वह मेरे अधिकतर काम कंट्रोल करता था! मैं निश्चिन्त रहता हूं। और अब मेरे लिए दूसरा महेश चन्द्र जाने पैदा हो पायेगा या नहीं। मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या बन गई है। महेश चन्द्र की मौत मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

तीरथराम पाहवा ने भिंचे दांतों से आठों को निहारा।

'वह सिर्फ दो हैं। सोहन लाल और जेल से भागा मुजरिम शंकरदास और यह दो हमारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखते। दो सौ भी हों तो हम एक साथ उन्हें मसल सकते हैं। जवाब दो।'

पाहवा का दरिन्दगी से भरा यह रूप देखने वाला था।

'आप ठीक कह रहे हैं।' एक ने कहा।

'मैं ठीक कह रहा हूं।' पाहवा ने कहने वाले की आंखों में देखा।

'जी! आपने बिलकुल ठीक कहा।' वह पुनः स्थिर लहजे में बोला।

'उन दोनों के प्रति तुम लोगों की क्या राय है? क्या इन्तकाम करना चाहिये?'

'उन्हें उनके किए की सजा मिलनी चाहिये। हमें सबको दिखाना है कि कोई भी हमसे जीत नहीं सकता। ताकि भविष्य में कोई हमारे खिलाफ़ सिर ना उठा सके।' अन्य ने स्थिर किन्तु सख्त स्वर में कहा।

पाहवा ने होंठ भींचकर उसे घूरा।

'मुझे खुशी है कि तुम लोगों को समझ है कि दुश्मनों के साथ कब कैसा व्यवहार करना चाहिये।' तीरथदास पाहवा ने क्रूर स्वर में कहा 'तो तब तक इन दोनों के मरने की खबर, कब तक मुझे सुना रहे हो।'

'बहुत जल्द ?'

'बहुत जल्द की भी हद होती है समय की ?' तीरथराम पाहवा गुर्राया।

'ज्यादा से ज्यादा एक-दो दिन में।'

'ठीक है। ज्यादा से ज्यादा दो दिन तक मुझे सोहन लाल और शंकरदास की मौत की खबर चाहिये। अगर यह दोनों या दोनों में से कोई एक जिन्दा भी हाथ आ जाये तो कोई बुरा नहीं!' पाहवा ने पूर्ववतः लहजे में कहा—'जाओ अब तुम लोग। उन दोनों को तीसरे दिन तक जिन्दा नहीं रहना चाहिये। पाहवा के आखिरी शब्दों में धमकी थी जिसे महसूस कर वह आठों के आठों मन ही मन खौफ से सिहर उठे।

उनके बाहर जाने के बाद पाहवा भिंचे दांतों से वहशी भाव चेहरे पर लिए कमर पर हाथ बांधे काफी देर तक टहलता रहा। सोहन लाल और शंकर दास के प्रति आंखों में अंगारे दहक रहे थे।

एकाएक फोन की घंटी बजने लगी। पाहवा ठिठका फिर आगे बढ़कर रिसीवर उठाया।

'हैलो।'

'नमस्कार पाहवा साहब।' खनकती आवाज रिसीवर के माध्यम से पाहव के कानों से टकराई।

तीरथराम पाहवा के चेहरे पर छाया तनाव कुछ कम हुआ।

'तुम! रानी।'

'हां! आपकी रानी।' आवाज़ में हंसी थी।

'कैसी हो?'

'आपकी मेहरबानी से वक्त कट रहा है। छः दिन हो गये जनाब के दर्शन ही नहीं हुए।'

'व्यस्त था रानी।'

'आवाज में कुछ परेशानी-सी लग रही है।' रानी के शब्दों में मुस्कराहट थी।

'तुमने पहचाना है तो ठीक ही पहचाना है।' पाहवा ने गहरी सांस ली।

'सुनकर बहुत अफसोस हुआ कि तुम्हारा होटल उड़ा दिया गया। बहुत नुकसान हुआ तुम्हारा ?'

'हां ! भारी नुकसान !' पाहवा के होंठों से सख्त स्वर निकला—'होटल के उड़ जाने से मेरी आधी से ज्यादा ताकत खत्म हो गई है। तुम नहीं समझ सकोगी कि मेरी क्या हालत हो रही है इस समय।'

'मैं सब समझ रही हूं पाहवा साहब।'

'महेश चन्द्र की भी हत्या कर दी गई है।'

'ओह ! वह तो आपका खास—वफादार आदमी था।'

'हां ! उसका मर जाना दूसरी चोट है मेरे लिए।' पाहवा ने रिसीवर पर ही दांत भींचकर कहा।

'वह कैसे मरा ?'

'उन्हीं दो कुत्तों ने मारा है। सोहन लाल और शंकरदास ! लेकिन वह बचेंगे नहीं। देर सबेर में इनकी लाशें पड़ी होंगी शहर के किसी हिस्से में। मेरे खिलाफ खड़ा होकर कोई जिन्दा नहीं बच सका।'

'आप ठीक कह रहे हैं।' रानी का स्वर शान्त था—'मेरे पास आ जाइये ना। फोन पर इतनी लम्बी बातें हो नहीं सकती। बैठकर बातें करेंगे और आपकी दिमागी परेशानी भी काफी हद तक हल्का कर दूंगी।'

'हल्का कैसे ?' समझकर भी पाहवा ने पूछा। जाने क्या सोचकर उसके होंठों पर मुस्कान फैल गई थी।

'वैसे ही।' रानी की आवाज में खनकती हंसी थी।

पाहवा के होंठों पर मुस्कराहट उभरी।

'सच मानो तो तुम्हारे फोन आने से पहले ही मैं तुम्हारे पास आने की सोच रहा था। वास्तव में मुझे तुम्हारे साथ की जरूरत महसूस हो रही है।' कहते हुए पाहवा ने गहरी सांस ली।

'तो फिर देर किस बात की।'

'कोई देर नहीं ! छोटे-छोटे दो-चार काम हैं। उन्हें निपटा कर आता हूं।'

'कितनी देर तक ?'

'ज्यादा देर नहीं लगेगी।' कहने के साथ ही पाहवा ने रिसीवर रख दिया ! हालात तो अभी भी वहीं के वहीं थे, परन्तु रानी से बात करने के पश्चात मस्तिष्क के तनाव को काफी हद तक हल्का महसूस कर रहा था।

□ □

□ □

सुन्दर लाल होश में था। उसकी आंखों में खुशी के आंसू थे। वह बैड पर लेटा अपने करीब खड़े सोहन लाल और शंकर दास को आभार भरी निगाहों से देख रहा था। अपनी किस्मत पर उसे विश्वास नहीं आ रहा था कि पाहवा की कैद से वह बच निकला है।

'क्या बात है।' सोहन लाल ने उसे घूरा—'रोता क्यों है? कौन मर गया तेरा?'

'कोई नहीं मरा।' सुन्दर लाल ने भारी स्वर में कहा।

'फिर रोता क्यों है? जवाब दे।' सोहन लाल ने पूर्ववतः लहजे में कहा।

'तु-तुम लोगों ने मुझे पाहवा की कैद से बचाया। मेरी चिंता की-कि।'

'तो कौन-सा तीर मार दिया हमने।' सोहन लाल ने तीखे स्वर में कहा—'तेरी चिन्ता नहीं करेंगे तो राह चलते की करेंगे। तू हमारा खैरख्वाह था। भूल गया! अगर तेरे घर में हम सिर ना छिपाते। तू हमें अपने घर में ना घुसने देता तो पाहवा ने हम लोगों को कबका साफ कर दिया होता। मानता है ना?'

अब सुन्दरलाल क्या कहता।

'और फिर तुझे पाहवा ने क्यों पकड़ा। तेरी पाहवा से क्या दुश्मनी थी। हमें बचाने की चेष्टा में ही तो तेरी दुश्मनी पाहवा से हुई और उसने तुझे पकड़ा। यानि जो कुछ भी हुआ हमारी वजह से हुआ। तू पकड़ा गया तो हमारी वजह से पकड़ा गया। इसलिए हमारा भी इंसानी फर्ज बनता था कि तुझे बचाये, जैसे भी हो तुझे बचाया जाये। तुझे बचा भी लिया। तेरे पर कोई अहसान नहीं किया ऐसा करके।'

शंकरदास ने मुस्कराकर सुन्दर लाल का कंधा थपथपाया।

'फालतू मत सोचो सुन्दर। तुम घायल हो। आराम करो। तुम हमारे पर बहुत बड़ा अहसान कर चुके हो। वही बहुत है। हम उसे ही नहीं उतार सकते हैं। दो-तीन दिन लगेंगे। तुम्हारी हालत सुधर जायेगी।'

सुन्दर लाल गहरी सांस लेकर रह गया। उसके जख्मों पर दवा लगा दी गई थी। जरूरत की हर वस्तु उसे मुहैया करा दी गई थी। इस समय उसे सिर्फ आराम की आवश्यकता थी। जो भी हो इस बात के लिए वह सोहन लाल और शंकरदास का दिल से शुक्रगुजार था कि उसे पाहवा की कैद से निकाल लिया गया। अगर ऐसा ना होता तो उसकी मौत निश्चित थी। वह तो कैद में खुद को मरा ही समझ रहा था।

तभी बैल बजी।

शंकरदास ने सावधानी से दरवाजा खोला।

आने वाला जयराम पाटिया था।

पाटिया ने सुन्दर लाल को देखा तो उसके होंठों पर मुस्कान बिखर गई।

'यह शायद सुन्दर लाल होगा।' जयराम हौले से हंसा।

'हां।' सोहन लाल ने सिर हिलाया।

'इसे बचाकर वास्तव में बहुत बड़ा काम किया तुमने। कहां से बचाया इसे?'

शंकरदास ने बताया।

जयराम पाटिया ने हौले से सिर हिलाया।

'महेश चन्द्र के मरने की खबर तो मुझे मिल गई थी और मैं समझ गया था कि यह कारनामा तुम लोगों का ही है। परन्तु सुन्दर लाल को निकाल लाने के बारे में मैं नहीं जान सका था।'

सुन्दर लाल पाटिया को चेहरे से पहचानता था, उसने बेड पर बैठना चाहा।

'लेटे रहो।' जयराम पाटिया ने मुस्कराकर कहा।

सुन्दर लाल ने पुनः उठने की चेष्टा नहीं की।

'तुम आराम करो सुन्दर।' सोहन लाल बोला—'हम दूसरे कमरे में हैं।'

उसके बाद सोहन लाल, शंकर दास और जयराम पाटिया दूसरे कमरे में पहुंचे।

जयराम ने सिगरेट सुलगाई और कश लेकर गम्भीर स्वर में बोला।

'तीरथराम पाहवा के बारे में अब तुम लोगों का क्या प्रोग्राम है !'

शंकरदास ने मुंह बनाकर पाटिया को देखा।

'पाटिया ! हर काम वक्त पर, सब्र के साथ होता है। जल्द-बाजी अच्छी नहीं होती। तुम जब भी मिलते हो, आते हो, पाहवा के बारे में यही बात करते हो !' शंकरदास ने कहा।

'हां।' जयराम पाटिया ने मुस्कराकर सिर हिलाया—'मेरे मतलब की यही बात है, इसलिए मैं तो करूंगा ही। लेकिन इस वक्त मेरा इस बात के प्रति, मतलब कुछ और ही था।'

'क्या ?'

'तुम लोग पाहवा को निशाना बनाना चाहते हो। लेकिन पाहवा आसानी से हाथ नहीं आ रहा। पहले वह अपने होटल में सुरक्षित था अब वह अपने बंगले में सुरक्षित है। ऐसे में उस पर हाथ डालना मौत को दावत देना है।'

'जो तुम कह रहे हो वह तो हम भी जानते हैं जयराम।' सोहन लाल ने कहा।

'हां ! लेकिन अब जो बता रहा हूं, वह तुम लोग नहीं जानते ?' जयराम बोला।

'क्या ?'

'एक जगह ऐसी भी है कि जहां पाहवा पर हाथ डाला जा सकता है और इस जगह के बारे में मुझे सिर्फ दो घंटे पहले ही पता चला है। पाहवा के आदमियों में मौजूद मेरे आदमी ने मुझे यह जानकारी दी है।' जयराम पाटिया ने गंभीर स्वर में कहा और कश लेकर बोला—'पाहवा की रखैल है। रानी नाम है उसका ! पाहवा यदा-कदा उसके पास जाता रहता है और अब भी कभी भी, उसके पास जाने वाला है।'

'अब भी ?' सोहन लाल ने होंठ सिकोड़कर उसे देखा।

'हां। रानी, क्रीसेंट रोड पर कहीं रहती है। जब पाहवा वहां जाता है तो कोई तगड़ी सिक्योरिटी लेकर नहीं जाता। अपने विश्वास के तीन गार्डों को ले जाता है जो उसके साथ दूसरी कार में होते हैं। और इधर पाहवा वाली कार में सिर्फ

उसका ड्राईवर ही होता है। जो कि दस सालों से उसके साथ है। क्रीसेंट रोड की शुरूआत होते ही पाहवा अपने साथ के तीनों गार्डों को वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाता है। वह तीनों गार्ड भी नहीं जानते कि पाहवा कहां जाता है। सिर्फ वह ड्राईवर ही जानता है। वापसी पर पाहवा को वह गार्ड वहीं पर मिलते है। अगर पाहवा को ज्यादा देर रानी के पास रहना होता है तो वह गार्डों को बता देता है कि लगभग वह कब वापस आयेगा।'

दो पल के लिए जयराम की आवाज के साथ ही वहां चुप्पी छा गई।

सोहन लाल और शंकरदास की आंखें मिली। कुछ पलों तक मिली ही रही।

'इसका मतलब।' शंकरदास ने कहा—'पाहवा के ड्राईवर के अलावा और कोई नहीं जानता कि पाहवा क्रीसट रोड पर कहां जाता है। रानी कहां रहती है। सिर्फ उसका दस साल पुराना वफादार ड्राईवर ही जानता है।'

जयराम ने सिर हिलाया।

शंकरदास ने सिर हिलाकर सिगरेट सुलगाई।

'मतलब कि तीरथराम पाहवा जब क्रीसेंट रोड़ पर पहुंचे तो तभी हम उसे शूट कर सकते है।'

'मत भूलो कि उस समय उसके साथ तीन खतरनाक गार्ड भी होंगे और जंग तब खुले में होगी।' जयराम ने गम्भीर स्वर में कहा—'शायद वह लोग तुम्हें ही शूट कर दें। पासा पलट भी सकता है।'

'हां! ऐसा हो जाये तो कोई बड़ी बात नहीं।' शंकरदास ने सोच भरे स्वर में कहा।

सोहन लाल शान्ति से उनकी बातें सुन रहा था।

'हमें कोई और रास्ता सोचना चाहिये।' जयराम पाटिया बोला।

'तुम सोचो।'

'तुम दोनों ना सोच सके तो फिर मुझे ही कोई रास्ता निकालना पड़ेगा।'

'अब रास्ता निकाल लो।'

'क्यों तुम्हारा दिमाग बन्द हो गया है। जयराम पाटिया मुस्कराया।

'बन्द।' शंकरदास ने कहर भरी निगाहों से उसे देखा—'अभी तो मैंने खोला ही नहीं है फिर बन्द कहां से हो गया?'

'तो खोलो ना।'

शंकरदास ने आंखें सिकोड़कर उसे देखा।

'तुम्हें शायद पकी-पकाई खाने की आदत है जयराम पाटिया।' शंकरदास का स्वर कड़वा था।

'शायद।' जयराम मुस्कराया—'मेरे आदमियों ने मेरी आदत काफी हद तक बिगाड़ दी है। सब कुछ वही करते है जब कभी फंस जाते हैं तो, तब उन्हें रास्ता दिखाना पड़ता है।'

'ऐसे में अगर तुमने, पाहवा की जगह ले ली तो, तब काम कैसे करोगे?'

'तब जयराम पाटिया हंसा—'तब की तब देखना कि जयराम काम कैसे करता है।'

'मेरे ख्याल में पाटिया हम बेकार की बातें करके वक्त बरबाद कर रहे है।'

'हां! तभी तो कहता हूं फौरन कुछ सोचो।' जयराम पाटिया के चेहरे के भाव बदले।

शंकरदास ने कश लिया और कह उठा।

'मेरे ख्याल में, जो होगा देखा जायेगा, पाहवा को क्रीसेंट रोड़ पर ही घेरना ठीक रहेगा।'

'वहां खतरा होगा, गार्डों का।'

'पाहवा को रास्ते से हटाना है तो खतरा होगा ही हर जगह।'

जयराम पाटिया कुछ ना बोला।

'तीरथराम पाहवा ने आज ही रानी के पास क्रीसेंट रोड़ पर जाना है।' शंकरदास ने पूछा।

'आज ही नहीं! बल्कि किसी भी समय। जल्दी ही।'

'फिर तो हमें फौरन ही यहां से रवाना हो जाना चाहिये।' शंकरदास ने सोहन लाल को देखा।

सोहन लाल ने कुछ नहीं कहा।

'तुम कुछ नहीं कह रहे।' जयराम पाटिया ने सोहन लाल को देखा।

मैं तुम लोगों की बातें सुन रहा हूं। अभी कुछ करने की जरूरत महसूस नहीं हुई।' सोहन लाल बोला।

'तुम्हें शंकरदास की बात जंची कि...।'

'फालतू की बातें मुझे नहीं जंचती।' सोहन लाल ने तीखे स्वर में कहा।

'क्या मतलब ?'

'पाहवा को हम रानी के घर पर या उसके करीब ही कहीं पकड़ सकते हैं।'

जयराम पाटिया ने उखड़ी निगाहों से उसे देखा।'

'अवश्य ऐसा कर सकते हैं, बशर्ते कि हमें रानी के घर का पता हो।'

'पता लगाया जा सकता है।'

'कैसे ?'

पाहवा कार और ड्राईवर के साथ रानी के घर जाता है। क्रीसेंट रोड का इलाका बेशक कितना भी बड़ा क्यों ना हो अगर भरपूर कोशिश की जाये तो, कार और ड्राईवर को हम कहीं भी खड़ा पा सकतें हैं।'

जयराम पाटिया की आंखें सिकुड़ी।

शंकरदास के चेहरे पर अजीब से भाव आ गये।

उन दोनों को खामोश पाकर सोहन लाल कह उठा।

'लगता है मेरी बात पसन्द नहीं आई ?'

'ऐसी बात नहीं।' शंकरदास बोला—'बल्कि मैं तो सोच रहा था कि ऐसा मैंने क्यों नहीं सोचा ?'

'कोई फर्क नहीं पड़ता।' सोहन लाल मुस्कराया—'मैंने सोच लिया ?'

'तुम कभी-कभी ठीक सोच लेते हो सोहन लाल।' पाटिया ने हंसकर कहा।

'कभी-कभी नहीं, मैं अक्सर ही ठीक सोचता हूं।' सोहन लाल ने तीखी निगाहों से उसे देखा।

'हो सकता है तुम्हारा कहना सही हो। मैंने तुम्हें कभी

2

आजमाया नहीं। क्योंकि हमारा वास्ता कभी नहीं रहा।'

'ना ही रहे तो अच्छा है ?'

शंकरदास उनकी बातों पर ध्यान ना देकर बोला।

'चला, सोहन लाल हम ऐसा ही करेंगे। यहां रहना वक्त बरबाद करना है। अगर पाहवा अपने बगले से निकल गया तो फिर उसे तलाश कर पाना कठिन हो जायेगा।'

सोहन लाल की निगाहें जयराम पाटिया पर जा टिकी।

पाटिया ने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा।

'मैं और शंकरदास सारा दिन भी भटकते रहे तो पूरी क्रीसेंट रोड नहीं छान सकेंगे।'

'तो ?'

'पाहवा की कार और ड्राईवर ढूंढने से तुम्हारे आदमियों का इस्तेमाल किया जायेगा जयराम।'

'कैसे ?'

क्रीसेंट रोड के पास किसी जगह का नाम बताओ, जहां हम इकट्ठे हो सकें।'

एक किलोमीटर के फांसले पर म्यूजियम है।'

'ठीक है। तुम कम से कम बीस आदमियों को लेकर वहां पहुंचो। इन्तजार करो। हम वहीं मिलेंगे।'

'लेकिन मेरी क्या जरूरत है। मैं आदमी भेज देता हूं। बीस कहो चालीस कहो।'

सोहन लाल ने कड़ी निगाहों से उसे देखा।

'कुछ काम करने के नाम पर तुम्हारे बुरे हाल क्यों हो जाते हैं जयराम पाटिया।'

'जयराम पाटिया हंसा।

'बोला तो। मेरे आदमियों ने मेरी आदत बिगाड़ रखी है। मेरा सारा काम वह जो निपटा देते है।'

सोहन लाल एक-एक शब्द चबाकर कह उठा।

'म्यूजियम पर, तुम्हारे आदमियों के साथ तुम्हारे मिलने की जरूरत इसलिए है कि हम और तुम्हारे आदमी एक-दूसरे को पहचान सकें। उसके बाद तुम बेशक वहां से चले जाना। समझ में आई बात कि नहीं ?'

'आई।' जयराम मुस्कराया!

सोहन लाल वहां से निकलकर दूसरे कमरे में, सुन्दर लाल के पास पहुंचा।

सुन्दर लाल आंखें बन्द किए बैड पर लेटा था।

'कैसी हालत है तुम्हारी?' सोहन लाल ने पूछा।

'अभी तो वैसी ही है।' उसने आंखें खोली—'घायल जिस्म का बुरा हाल है। दो-चार दिन आराम की जरूरत है।'

'हूं! आराम करो। लेटे रहो। जल्दी ठीक हो जाओगे।' सोहन लाल मुस्कराया।

सुन्दर लाल के होंठों पर भी मुस्कराहट उभरी।

'हम जरा बाहर जा रहे हैं।'

'कहां?'

'पाहवा को निशाना बनाने। मालूम हुआ है, वह कहीं पहुंच रहा है।' सोहन लाल बोला।

'सम्भलकर?'

'निश्चित रहो।' सोहन लाल ने हौले से, विश्वास भरे ढंग से उसका कंधा थपथपाया।

'किस जगह पर पाहवा के मिलने की खबर है?' सुन्दर लाल ने पूछा।

'क्रीसैंट रोड पर! वह वहां किसी युवती से मिलने जाता है और आज भी जा रहा है।'

'वह अकेला तो होगा नहीं।'

'नहीं! गार्ड है उसके साथ! हम सब इन्तजाम कर लेंगे। जयराम के आदमी है हमारे साथ।'

'जयराम भी।'

'नहीं!' सोहन लाल ने कहा फिर एकाएक बोला—'यह जयराम कैसा आदमी है सुन्दर लाल।'

'कैसा क्या?'

'खुद को पाहवा के बाद का, बड़ा दादा कहना पसन्द करता है। परन्तु मुझे तो बेकार और डरपोक लगता है।'

सुन्दर लाल मुस्कराया। अजीब-सी मुस्कान उसके घायल चेहरे पर फैली।

'जयराम पाटिया के बारे में बहुत गलत विचार है तुम्हारे।'

'क्यों?'

'जयराम इतना खतरनाक इंसान है कि तुम सोच भी नहीं सकते। पाहवा से कहीं ज्यादा है वह! पाटिया के कारण, पाहवा को कई बार बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।' सुन्दर लाल ने बताया—'पाटिया छोटे-छोटे कामों में कभी हाथ नही डालता। सिर्फ उन्हीं कामों में हाथ डालता है, जहां उसे लगे कि उसकी जरूरत है। जयराम जब अपनी करनी पर आता है तो फिर उसे सम्भाल पाना कठिन हो जाता है। जयराम अगर मामूली शख्सियत होता तो, पाहवा कबका उसे रास्ते से हटा चुका होता।'

सुन्दर लाल की बात सुनकर, जयराम के प्रति सोहन लाल के विचार बदले।

'पाटिया।' हर काम में तुम्हें ही आगे कर रहा है और खुद पीछे हो रहा है। इसलिए मुझे लगा था कि जयराम में दम-खम है। परन्तु तुम्हारी बात सुनकर, मुझे वास्तव में महसूस होने लगा है कि जयराम काफी खतरनाक है।'

वह इसलिए पीछे हो रहा है कि, उसे खुद के आगे आने की आवश्यकता महसूस नहीं हो रही है। जब वह आगे आयेगा तो तब देखना उसका रूप! उससे खतरनाक तुम्हें कोई लगेगा ही नहीं।' सुन्दर लाल ने कहा।

सोहन लाल ने उसका कंधा थपथपाया।

'ठीक है। तुम आराम करो।'

'जा रहे हो, पाहवा से निपटने?'

'हां!'

'अपना ध्यान रखना।' सुन्दर लाल के चेहरे पर गम्भीरता थी।

सोहन लाल जवाब में मुस्कराया और बाहर निकल गया।

□ □

□ □

शंकरदास और सोहन लाल तीरथराय पाहवा के बंगले से काफी दूर कार के भीतर बैठे थे। परन्तु उनकी निगाहें पाहवा के बंगले के मुख्य गेट पर थी।

'पाहवा अभी तक नहीं निकला।' सोहन लाल बोला—'आधा घण्टा हो गया है।'

'इन्तजार की आदत डालो।' शंकरदास ने शान्त स्वर में कहा।

'और कितना इन्तजार करें।'

'सारा दिन।

'सारा दिन?' सोहन लाल ने अजीब-सी निगाहों से उसे देखा—'इस तरह सारा दिन बैठा नहीं जायेगा।'

'यही तो फर्क है तुममें और हममें। हम मिलिट्री वालों को यह पढ़ाई मिली होती है कि हर काम में सब्र का इस्तेमाल करो। दुश्मन सामने हो तब भी, सब्र के साथ उस पर वार करो। यह एक बहुत बड़ा इम्तिहान होता है। कई बार यही सब्र बड़े बड़े काम आसानी से निपटा देता है।' शंकरदास ने कहा।

सोहन लाल ने मुंह बिगाड़ा।

'तुम तो मुझे मिलिट्री वाला लैक्चर देने लगे।'

'समझा रहा हूं।'

'समझाओ मत। बल्कि खुद कुछ समझने की चेष्टा करो।' सोहन लाल ने कहा।

'क्या?'

'तुम्हारे मिलिट्री के लैक्चर में, यह बात भी शामिल होती है कि अगर दुश्मन खिसक गया हो तो उसके बंगले के बाहर कार में बैठे सिगरेट फूंकते रहो। वक्त बरबाद करते रहो।'

'क्या मतलब?'

'मतलब तो तुम भी समझ रहे हो शंकरदास।'

शंकरदास दो क्षणों के लिए खामोश हो गया।

'तुम्हारा क्या खयाल है। तीरथराम वास्तव में बंगले से, हमारे आने से पहले ही चला गया होगा ?'

'मैंने तो अपना विचार जाहिर किया है।' सोहन लाल अब गम्भीर हो गया था।

'अगर ऐसा हुआ तो, दोबारा ऐसा कोई मौका तलाश करने में काफी दिन लग सकते हैं।'

'हां ! आज हमें अच्छा मौका मिल रहा था।' सोहन लाल ने पहलू बदला।

कई पलों के लिए उन दोनों के बीच खामोशी-सी रही।

'अब कैसे मालूम किया जाये कि पाहवा क्रीसैंट रोड की तरफ रवाना हो चुका है कि नहीं ?'

'मालूम करने का कोई रास्ता नहीं। उसके बंगले से तो यह जानकारी मिलने से रही।'

दोनों असमंजसता भरी मुद्रा में आधा घण्टा और कार में बैठे रहे।

'कब तक इस तरह बैठे रहेंगे ?'

'दिन भर।' शंकरदास ने शांत स्वर में कहा।

'यह तो फालतू के लटक गये। मालूम हो कुछ होना है तो दो दिन भी बैठा जा सकता है।'

शंकरदास ने कुछ नहीं कहा।

'फाटक तो खुल रहा है।' एकाएक शंकरदास ने शीत लहजे में कहा।

सोहन लाल चौंका फौरन सीधा होकर बैठ गया। निगाहें दूर पाहवा के बंगले के फाटक पर जा टिकी।

'बाहर आने वाला कौन हो सकता है ?'

'यह तुम भी देख रहे हो और मैं भी।'

दोनों की निगाहें फाटक पर ही टिकी रही।

तभी एक लम्बी विदेशी कार फाटक से बाहर निकली। और सिर्फ आठ फीट के फांसले पर ही पीछे दूसरी कार थी। सोहन लाल ने एक ही निगाह में पहचाना कि आगे वाली विदेशी कार की पिछली सीट पर तीरथराम पाहवा मौजूद है। मात्र एक सैकिण्ड के लिए उसे पाहवा के चक्स की झलक मिली थी।

और जाहिर है पीछे वाली कार में उसकी हिफाजत के लिए गार्ड थे।

'पाहवा कहां है ?' शंकरदास ने पूछा।' आगे वाली कार में ?'

दोनों कारों के आने की दिशा इसी तरफ थी।

'नीचे झुको शंकरदास।' सोहन लाल व्याकुलता से बोला, 'कारें दूसरी तरफ आ रही है'

दोनों फौरन, इस प्रकार नीचे झुक गये कि बाहर से देखने पर कार के खाली होने का एहसास हो कारों के इन्जनों की आवाजों को सुनकर उन्हें महसूस हुआ कि कारें गुजर गई है।

दोनों फौरन सीधे हुए। एक-दूसरे को देखा।

शंकरदास ड्राईविंग सीट पर मौजूद था।

'यह अब क्रीसैंट रोड़ पर जा रहे हैं।' सोहन लाल बोला—'इनके पीछे चलो।'

'लेकिन—पाहवा कार में है भी कि नहीं ?' शंकरदास उलझन में था।

'है ?'

'तुमने देखा ?'

'देखा है तभी तो कह रहा हूं। जल्दी कर बेवकूफ! वरना सारा मामला गड़बड़ा जायेगा।'

शंकरदास ने कार स्टार्ट करके वापस घुमाई और काफी अधिक फासला रखकर आगे जाती पाहवा की दोनों कारों के पीछे डाल दी। कुछ देर पश्चात शंकरदास बोला।

'पाहवा आगे वाली विदेशी कार में होगा ?'

'हां!' सोहन लाल विचारों में डूबा कह उठा—'पीछे वाली कार में उसके बाडी गार्ड ?'

'सोहन लाल! इस बार हमें नहीं चूकना! पाहवा को खत्म करना है हर हाल में ?'

'देखेंगे ?'

'देखेंगे शंकरदास ने सिर घुमाकर, सोहन लाल को देखा।

'हर काम सोच के मुताबिक नहीं, हालातों के मुताबिक

होता है ? इरादा तो हमारा पाहवा की हत्या करने का ही है। परन्तु हम सफल होते हैं कि नहीं, यह तो आने वाले हालात ही बताएंगे। हमारी कोशिश जारी है ?'

शंकरदास ने कुछ नहीं कहा। निगाहें आगे जाती कारों पर टिका दीं।

'यह तो सामान्य गति से कारें चला रहे हैं ?' शंकरदास ने कहा।

'तेज चलाने की जरूरत भी क्या है ? माशूका के यहां ही जाना है ?' जंग पर तो नहीं ?

सोहन लाल का जवाब सुनकर, शंकरदास गहरी सांस लेकर रह गया।

आधे बाद पाहवा की और गार्डों की कार, उस सड़क पर जाकर रुकीं जहां से क्रीसैंट रोड शुरू होती थी। शंकरदास ने अपनी कार काफी पहले ही रोक ली। उन्होंने देखा पीछे वाली कार में से एक गार्ड उतरा और आगे बढ़कर, पाहवा की कार तक पहुंचा। पाहवा से बात की ? फिर पाहवा की कार आगे बढ़ गई। गार्ड वापस कार में बैठा। फिर गार्डों की कार मुड़ी और अन्य सड़क पर आगे बढ़ गई।

करीब मिनट भर सोहन लाल और शंकरदास कार में ही बैठे रहे।

'अब ?' शंकरदास ने सोहन लाल को देखा।

'मैं कार से उतरकर, यहीं रुकता हूं। नजर रखता हूं। तुम म्यूजियम पर जाकर जयराम से मिलो। उसके साथ मौजूद आदमियों को उससे हासिल करके, उन्हें यहां तक लाओ। फिर आगे काम करते हैं ?' कहने के साथ ही सोहन लाल ने दरवाजा खोला और कार से नीचे उतर गया।

शंकरदास ने कार आगे बढ़ा दी।

□ □

□ □

जयराम पाटिया, शंकरदास से बहुत खुशी से मिला। वह कार में ही बैठा रहा। शंकरदास के कुछ कहने से पहले ही सामने की तरफ इशारा करके, पाटिया बोला।

'वह देखो। वह सामने खड़े हैं, मेरे आदमी। जिनका इस्तेमाल तुम और सोहन लाल जैसे चाहो, वैसे कर सकते हो? बीस के लिये बोला था और पच्चीस लाया हूं?'

शंकरदास ने उस तरफ निगाह मारी।

वहां कई कारें खड़ी थीं। कुछ उनके बीच में बैठे थे कुछ बाहर भी खड़े थे।

वहां से निगाहें हटाकर, शंकरदास ने पुनः जयराम पाटिया पर निगाह मारी।

'उनमें एक नीले रंग की चैक शर्ट वाला है।' नजर आ रहा है।' जयराम बोला।

'हां?' शंकरदास ने उस तरफ निगाह मारकर कहा।

'वह पच्चीस के ऊपर है और खतरनाक आदमी है। सबको समझाने की अपेक्षा, सिर्फ उसे समझा देना कि तुम लोग क्या चाहते हो। उसका नाम अजय चौधरी है?' जयराम पाटिया ने कहा।

शंकरदास ने सिर हिलाया।

'और तुम?'

'मैं—मैं क्या?' उसकी बात का मतलब समझकर भी पाटिया अनजान बना रहा।

'तुम हमारे साथ नहीं आओगे?'

'क्या जरूरत है?' पाटिया लापरवाही से कह उठा।

'जरूरत तो बहुत है? तीरथराम पाहवा को खत्म नहीं करना क्या?' शंकरदास ने उसकी आंखों में झांका।

जयराम पाटिया मुस्कराया।

'इस काम के लिये तुम और सोहन लाल ही काफी हो? क्यों मुझे बीच में घसीटना चाहते हो?'

शंकरदास ने, जयराम पाटिया की आंखों में झांका।

'क्या देख रहे हो शंकरदास?' पाटिया हौले-से हंसा।

'सोच रहा हूं तुम कहीं डरपोक चूहे तो नहीं हो?' शंकरदास का स्वर कड़वा हो गया था।

'डरपोक चूहा।' जयराम पाटिया बड़बड़ाया फिर शांत स्वर में कह उठा—'यह लम्बी वार्ता का विषय है। तुम जाओ और बाकी का काम निपटो शंकरदास! इस बारे में फिर कभी बात करेंगे।'

शंकरदास ने उसे घूरा और फिर अपनी कार की तरफ बढ़ गया। इसके साथ ही उसने नीली चैंक शर्ट वाले की तरफ इशारा किया जो उसे ही देख रहा था। उसने इशारा समझा। जब शंकरदास वहां से रवाना हुआ तो नीली चैंक शर्ट वाला, अजय चौधरी भी कार पर उसके पीछे हो गया। यानि कि पच्चीस आदमियों से भरी तीन कारें, शंकरदास की कार के पीछे थीं।

जयराम पाटिया कार में उसी तरह बैठा उन सबको देखता रहा।

'डरपोक चूहा!' शंकरदास के शब्दों को बड़बड़ाते हुए, जयराम पाटिया के होंठों पर मुस्कराहट बिखर गई।

□

□ □

सोहन लाल! शंकरदास और अजय चौधरी, कार के पास इकट्ठे थे।

'तुम्हारे साथ कितने आदमी हैं?' सोहन लाल ने पूछा।

'पच्चीस।'

'इन सबके हैड हो तुम? पाटिया ने कहा था ऐसा।' सोहन लाल बोला।

'हां ?'

'पाटिया ने बताया था, क्या काम करना है तुम्हें ?' सोहन-लाल ने उसे परखने वाली निगाहों से देखा।

'खास नहीं ? कुछ हद तक मालूम है।' अजय चौधरी ने कहा—'तुम काम बोलो। करना हमारा काम है ?'

सोहन लाल ने सिर हिलाकर सिगरेट सुलगाई।

'कार का नम्बर नोट करो ?' सोहन लाल ने कहकर कार नम्बर बताया—'यह क्रीम कलर की विदेशी कार है। देखते ही समझ जाओगे कि मैंने इसी कार के बारे में कहा है। यह कार क्रीसेंट रोड़ के भीतर गई है। काफी बड़ी कालोनी है यह। इस समय कहां खड़ी है। किसके घर पर खड़ी है हमें नहीं मालूम ?'

'और यही मालूम करना है ?' अजय चौधरी ने सिर हिलाकर कहा।

'हां ?

'कार को तलाश करना है ?' अजय चौधरी की निगाह क्रीसेंड रोड की तरफ उठी।

'हां ? खामोशी से। चुपचाप शोर-शराबा नहीं होना चाहिए कार के साथ, करीब ही पैंतालीस पचास बरस का ड्राईवर भी होगा। हर काम गुप-चुप होना चाहिये ?' सोहन लाल ने उसे सतर्क किया।

'मुझे मालूम है, काम कैसे किया जाता है।' अजय चौधरी ने शांत स्वर में कहा—'वह कार किसकी है ?'

'जानना जरूरी है क्या ?'

'जरूरी तो नहीं ? फिर भी मालूम हो जाये तो ठीक रहेगा।' अजय चौधरी ने सोहन लाल को देखा।

'तीरथराम पाहवा की ?'

'पाहवा ?'

'हां ? तीरथराम पाहवा !' सोहन लाल ने उसकी आंखों में झांका—'पाहवा का नाम आते ही कोई दिक्कत तो पैदा नहीं हो गई। कोई डर। भय ! या घबराहट तो नहीं।'

'तुम कुछ ज्यादा ही सोचने लगे हो ?' अजय चौधरी ने कड़वे स्वर में कहा।

सोहन लाल कन्धे उचकाकर रह गया।

'कब तक ढूंढ लोगे उस कार को ?' शंकरदास ने पूछा।

'ज्यादा-से-ज्यादा घण्टे तक।' अजय चौधरी की आवाज में विश्वास का पुट था।

'फिर तो हम तुम्हारी वापसी का यहीं इन्तजार करते हैं।'

'ठीक है। मैं घण्टे भर बाद यहीं मिलूंगा।' अजय चौधरी ने कहा और पलटकर, सौ गज दूर खड़ी अपने आदमियों से भरी तीनों कारों की तरफ बढ़ गया।

'मेरे ख्याल में यह, अजय चौधरी काम निपटा लेगा। काफी तेज लगता है यह।'

शंकरदास सिर हिलाकर रह गया।

□ □

□ □

'घण्टे का डेढ़ घण्टा हो गया।' सोहन लाल ने बोनट से टेक लगाये कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मारते हुए कहा। फिर निगाहें कार के भीतर बैठे शंकरदास पर टिका दी।

'सुना तुमने, मैंने कुछ कहा।' सोहन लाल पुनः बोला।

'क्या ?' सुनने के बावजूद भी, शंकरदास बोरियत भरे अन्दाज में कह उठा।

'मैंने कहा, अपना वह शेर, अजय चौधरी तो दहाड़कर कह रहा था कि घण्टे भर में कार का पता लगाकर वापस आ जायेगा। लेकिन अब तो डेढ़ घण्टा बीत चुका है। अभी तक आया नहीं।'

'आ जायेगा।'

'वह तो मुझे भी पता है आ जायेगा। सारा दिन बिताकर रात को लौटा तो क्या फायदा ?'

'अब मैं क्या कहूं ?' शंकरदास उसी कार में पसरे-पसरे बोला।

सोहन लाल ने गहरी सांस लेकर क्रीसेंट रोड की तरफ निगाहें घुमा दी।

'जयराम पाटिया मुझे बड़ा हरामी लगता है?' शंकरदास ने कहा।

'कैसे?'

'हरामी हमें आगे करता फिर रहा है और खुद पीछे को भागे जा रहा है।'

'हरामी आदमियों की यही निशानी होती है।' सोहन लाल हौले-से हंसा।

'मुझे तो पूरा-का-पूरा डरपोक चूहा लगता है।'

'डरपोक चूहा!' सोहन लाल पुनः हंसा—'भूल में हो। डरपोक चूहा वह नहीं मैं हूं। यह तो जाने कैसे मुझमें इतनी हिम्मत आ गई पाहवा के खिलाफ खड़े होने की? वरना मैं तो किसी को घूंसा लगाने के भी काबिल नहीं था और न ही इस हक में रहता था कभी। खून-खराबे से तो मुझे दहशत होने लगती थी अगर पाहवा के आदमी लड़के-लड़की की हत्या न करते जिनकी कार का ड्राईवर बनकर, मैं इस शहर से निकल जाना चाहता था और यह काम वह मेरी रिवाल्वर के कारण मजबूर होकर कर रहे थे। बहरहाल एक बार मैं उनकी हत्या भी बर्दाश्त कर लेता। परन्तु उस मासूम युवती के साथ उन लोगों ने बलात्कार किया। फिर उसकी हत्या की?' सोहन लाल का स्वर भारी हो गया था—'शायद यही कारण था कि जिसने मेरी आत्मा को झंझोड़कर रख दिया था। हर समय मुझ पर छाये रहने वाले आतंक के साये जाने कहां छंट गये और मेरे भीतर छाया दरिन्दापन, जाने कहां से उभरकर बाहर आ गया और कहर बरस पड़ा तीरथराम पर। मैं खुद हैरान हूं कि मैं ऐसा कैसे बन गया।'

कार के भीतर बैठा शंकरदास, सोहन लाल के चेहरे को देखता रह गया। जहां सिर्फ उदासी-ही-उदासी थी। उसकी आंखें बता रही थीं कि अब वह जिन्दगी से थकता जा रहा है।

कई पलों तक उनके बीच चुप्पी व्याप्त रही।

'मैं जयराम पाटिया की बात कर रहा था।'

सोहन लाल ने निगाहें उठाकर कार के भीतर बैठे, शंकर-

दास को देखा।

'जयराम के बारे में तुम अपने मस्तिष्क में गलत ख्याल बसा रहे हो। पहले मैं भी ऐसा ही सोच रहा था। परन्तु सुन्दर से मेरी बात हुई तो उसने बताया कि जयराम पाटिया, पाहवा से भी खतरनाक है ! वक्त आने पर वह सब कुछ कर गुजरने की हिम्मत रखता है। परन्तु सामने तभी आता है, जब वह इस बात की जरूरत महसूस करता है कि उसे सामने आना चाहिये।'

शंकरदास के होंठ सिकुड़ गये।

'ऐसा ?'

'सुन्दर ने तो यही बताया था। मेरे ख्याल से गलत नहीं कहा होगा।'

'शंकरदास, सोहन लाल को देखता रहा। बोला कुछ नहीं।

सोहन लाल ने बोनट की टेक छोड़ी और कार में, शंकरदास की बगल में आ बैठा।

'एक घण्टे से खड़े हो। थोड़ी देर और खड़े हो लेते। तुम्हारी टांगों में काफी दम लगता है।' शंकरदास ने वक्त बिताने के लहजे से, व्यंग भरे स्वर में कहा—'तुम जैसों को खड़े होकर यूं ही टांगें तुड़वाने में मजा आता है।'

'अब तुम्हारी बारी है ?'

'खड़े होने की ?'

'हां ?'

'मेरा दिमाग ठीक है। मैं बैठा ही अच्छा हूं।'

'बैठे रहो। मैंने उठने के लिये तो नहीं कहा।' सोहन लाल का स्वर कड़वा हो गया।

दो घण्टे बीत गये।

अब सोहन लाल ही नहीं, शंकरदास भी बेचैनी से भर उठा

दोनों की निगाहें टकरायीं।

'सोहन लाल !' शंकर दास ने पहलू बदला। घड़ी में समय देखा। दोपहर के दो बज रहे थे।

'हां ?'

'दो घण्टे बीत चुके हैं। न तो अजय चौधरी आया और न ही, उसका कोई प्यादा।'

'अपनी मिलिट्री वाली ट्रेनिंग भूल गया। धैर्य ! धैर्य रखो जवान !' सोहन लाल व्यंग से बोला।

'चुप रह। जो मैं कह रहा हूं, उस पर बात कर। मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है।'

'कैसी गड़बड़ ?'

'कहीं, यह सारा मामला, पाहवा की निगाह में न आ गया हो ?'

'यह सम्भव नहीं ?' सोहन लाल ने नकारात्मक मुद्रा में सिर हिलाया।

'क्यों ?'

'जिस ढंग से हम काम कर रहे हैं। उस हिसाब से, पाहवा को किसी प्रकार का शक होना सम्भव नहीं।'

शंकरदास ने कन्धे उचकाये फिर बोला।

'गलतफ़हमी है तुम्हारी। मिलिट्री की सर्विस के दौरान हमें लिखवाया गया था कि हमेशा हर बात की आशा।'

'शटअप !' सोहन लाल ने दांत भींचकर कहा 'बात-बात पर मिलिट्री का रोना रोने लगते हो ? यहां हम कोई सरहद की जंग लड़ रहे हैं। एक बन्दे को मारना है। तुम तो बात का पहाड़ बनाने लगते हो ?'

शंकरदास ने सख्त निगाहों से सोहन लाल को देखा।

'मेरी निगाहों में मार-धाड़ के मामले में तुम अभी बहुत छोटे हो।'

'छोटा हूं ?'

'हां।'

'छोटा ही ठीक हूं ? पाहवा जब सामने आये तो, सम्भाल लेना उसे।' सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कहा—'मिलिट्री की सर्विस के दौरान तुम्हें इस बात की ट्रेनिंग तो मिली होगी कि

तीरथराम पाहवा को कैसे सम्भालना है।'

'बेकार की बात छोड़ो। सोचो कि अभी तक किसी की वापसी क्यों नहीं हुई।'

'बेकार की बात सोचने से कोई फायदा नहीं। आराम से बैठे रहो। शाम तक कोई नतीजा तो सामने आयेगा ही। तुम तो धैर्य का इस्तेमाल करना अच्छी तरह जानते हो। सोहन लाल ने लापरवाही से कहा।

शंकरदास ने दांत भींचकर, सख्त निगाहों से सोहन लाल को देखा।

जवाब में सोहन लाल ने उसे सुलगाने वाले अन्दाज में, दांत दिखा दिये।

शंकरदास का मन किया कि सोहन लाल का सिर फाड़ दे। लेकिन अपनी इस ख्वाहिश को दबाकर रह गया। वह भी जानता था कि सिवाय इन्तजार करने के उसके पास और कोई रास्ता नहीं।

तीसरा घण्टा पूरा होने को आया।

दोनों की बेचैनी चरम सीमा पर पहुंच गई थी।

'मुझे तो लगता है अजय चौधरी के न आने के पीछे भारी गड़बड़ है।' शंकरदास बोला।

सोहन लाल अब क्या कहता। वह व्याकुलता से भरा पड़ा था। सिर्फ कन्धे उचकाकर रह गया।

'मेरे ख्याल से हमें, जयराम पाटिया से बात करनी चाहिये।' शंकरदास बोला।

'वह क्या करेगा ?' सोहन लाल ने गर्दन घुमाकर, शंकरदास को देखा।

'कुछ तो करेगा ही ?'

'कुछ नहीं करेगा वह। अपने आदमी उसने हमारे हवाले कर दिये। उसका काम खत्म। हमारी तरह वह भी अन्जान होगा कि उसके आदमी इस समय कहां हैं और वैसे भी जयराय पाटिया से सम्बन्ध कहां बनेगा। क्या मालूम कहां पर होगा वह ?' सोहन

बोला।

शंकरदास होंठ भींचकर रह गया।

एकाएक सोहन लाल चौंककर सीधा हुआ। पूरी कार ही हिल उठी।

'वह आ रहा है?' सोहन लाल की आवाज गूंजी।

शंकरदास ने फौरन सामने देखा।

अजय चौधरी चार आदमियों के साथ उसकी कार की तरफ आ रहा था।

'गनीमत है।' अपना थोबड़ा तो दिखाया इसने।' शंकरदास के होंठों से निकला।

'थोबड़ा को छोड़। पहले यह तो देखें कि क्या तीर मारकर लौटा है अपना शेर!'

उन चारों आदमियों के साथ अजय चौधरी कार के करीब आकर ठिठका! अजय चौधरी ने गम्भीर निगाहों से दोनों को देखा। सोहन लाल आंखें सिकोड़कर उसे देख रहा था!

चौधरी के कुछ कहने से पहले ही सोहन लाल कह उठा।

'क्यों पहलवान तुम तो घण्टे भर में लौट रहे थे और अब तीन घंटे हो रहे हैं।'

हां! क्योंकि क्रीसेंट रोड पर वह कार नहीं थी। पाहवा क्रीसैंट रोड पर जाता ही नहीं। बल्कि क्रीसैंट रोड पार करके, आगे आबूलेन पर जाता है। हमने वहां पर उसकी कार और ड्राईवर को ढूंढा।'

'वाह! फिर तो तुमने बहुत हिम्मत वाला काम किया।' सोहन लाल खुशी से होले-से हंसा!

'क्या?'

'पाहवा को हमारे बारे में पता है कि हम क्या कर रहे है। जिसके कारण मेरे सारे के सारे आदमी उसके कब्जे में हैं। सिर्फ मैं अकेला ही इस समय आजाद हूं।' चौधरी ने कहा!

सोहन लाल और शंकरदास की निगाहें चौधरी के साथ मौजूद चारों पर घूमी!

'यह चार तो हैं तुम्हारे साथ ?'

'यह मेरे नहीं, पाहवा के आदमी हैं।'

'पाहवा के !' सोहन लाल के शब्द उसके होंठों में ही रह गये।

तभी चौधरी को पीछे खींचकर एक ने रिवाल्वर उसकी कमर में लगा दी। अजय चौधरी के चेहरे पर विवशता के भाव नाच उठे।

अन्य तीनों ने रिवाल्वर निकालकर सोहन लाल और शंकरदास की तरफ कर दी।

'हिलना नहीं। वरना।'

सोहन लाल और शंकरदास स्तब्ध रह गये।

'क—क्या चाहते हो तुम लोग ?' शंकरदास के होंठों से निकला।

'कार की पिछली सीट पर आ जाओ और अपनी रिवाल्वरें अगली सीट पर ही रखते जाना।'

'क्यों ?' सोहन लाल के होंठ भिंच चुके थे।

'तुम लोगों को पाहवा के पास ले जाना है। वह तुम लोगों के इन्तजार में है।'

एकाएक सोहन लाल का चेहरा फक्क-सा पड़ने लगा। जबकि शंकरदास के दांत भिंच गये। आंखों में सुर्खी और जल-जले के से भाव उजागर हो उठे थे।

□ □

□

तीरथराम पाहवा ने सामने खड़े सोहन लाल और शंकरदास को वहशी निगाहों से देखा। यह रानी का चार कमरों का खूबसूरत घर था जो कि पाहवा ने ही उसे दे रखा था।

वहां पर इस समय ज्यादा लोग भी नहीं थे। पाहवा था। रानी थी। चार वह थे जो सोहन लाल और शंकरदास को वहां लाये थे। दो अन्य खतरनाक इंसान और नजर आ रहे थे। इनके अलावा रिवाल्वर की जद में अजय चौधरी खड़ा था।

अजय चौधरी के अठारह आदमी, पाहवा के हाथ लगे थे, जिन्हें पाहवा के आदमी खत्म कर चुके थे। इस समय वहां मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था।

पाहवा के छः के छः आदमियों के हाथ में रिवाल्वर फंसी थी। फायर करने को तैयार थी।

सोहन लाल और शंकरदास को महसूस हो चुका था कि अब उन्हें बच निकलने का या कुछ भी करने का मौका नहीं मिलने वाला।

एक तरफ बला की हसीन रानी, कुर्सी की बाजू पर कुहनी रखे वहां का तमाशा देख रही थी। उसके चेहरे पर इत्मिनान के भाव थे। वह जानती थी जो भी होगा उसके खैरख्वाह, पाहवा के हक में होगा।

तीरथराम पाहवा ने दोनों को मौत से भरी निगाहों से देखते हुए सिगरेट सुलगाई।

'तो तुम ?' पाहवा ने सोहन लाल को देखा और दरिन्दगी भरे स्वर में कह उठा—'बम्बई अन्डरवर्ल्ड किंग सोहन लाल हो। यही कहा था ना तुमने मुझे ?'

'हां !' खतरनाक हालातों में फंसे देखकर, सोहन लाल ने खुद को मौत के खौफ से दूर कर लिया था।

'जबकि नहीं हो ?'

'नहीं ?'

'कौन हो ?' पाहवा एक-एक शब्द चबाकर भिंचे होंठों से पूछ रहा था।

'दाना-पानी चुगने वाला, छोटा शिकारी !' सोहन लाल मुस्करा उठा—'खुद को दूसरे शहर का बड़ा दादा दर्शाकर रौब मारकर, छोटे-मोटे बदमाशों से माल झाड़ना और फिर खिसके

शहर खिसक जाना ! मैंने तुम्हें कुछ नहीं कहा था ! तुम ही मेरे रास्ते में आये थे पाहवा ! जबरदस्ती मेरे पीछे पड़ गये थे।'

तीरथराम पाहवा मौत से भरी निगाहों से सोहन लाल को देखता रहा।

'तुमने मेरा बहुत कुछ तबाह कर दिया। मेरा होटल मेरी आधी ताकत थी और ?'

'छोड़ो उसकी बात ! वह तो कब का खत्म हो चुका।' सोहन लाल ने कड़वे स्वर में कहा !

पाहवा ने दांत किटकिटाये !

'महेशचन्द्र को भी तुमने मारा !'

'हां ! एक ही गोली में लद गया वह !' सोहन लाल पुनः हंसा !

'और मेरे खिलाफ पाटिया की सहायता भी तुमने ली।' पाहवा के होंठों से गुर्राहट निकली।'

'जी नहीं ! बल्कि उसने खुद आगे बढ़कर दी।'

'एक ही बात है।' कहते हुए तीरथराम पाहवा की वहशी निगाह, शंकरदास पर आ टिकी—'तुम शंकरदास हो ना ! जिसे चार दिन बाद फांसी लगने वाली थी और जेल से भाग निकले।'

'खबर अच्छी रखते हो हर तरफ की !' शंकरदास का स्वर गम्भीर था।

'मेरी-तुम्हारी क्या दुश्मनी है ?' पाहवा की आवाज में अभी तक गुर्राहट ही थी।

'कोई दुश्मनी नहीं !'

'फिर तुम सोहन लाल के साथ मिलकर, मुझे बरबाद करने को क्यों तुले थे ?'

अब शंकरदास कैसे बताता कि ई0 पाल देशमुख के और उसके बीच सौदा तय हुआ था कि वह उसे कैद से, जेल से निकालेगा, बदले में उसके दुश्मन पाहवा को खत्म करेगा।

'जवाब दो ! तुम मेरे पीछे क्यों पड़े !' तीरथराम पाहवा विक्षिप्त-सा नजर आने लगा—'मेरे मासूम बेटे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो उसके हिन्दुस्तान पहुंचते ही उसे उड़ा दिया गया।'

'मासूम बेटा ?' शंकरदास ने गम्भीर निगाहों से पाहवा की आंखों में झांका !

'हां ! मासूम ?' पाहवा पागलों की तरह बोला—'तुम्हें अगर किसी तरह का बदला लेना था तो मुझसे लेते। मेरे बेटे की जान क्यों ली ? उसने तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा था।'

'यह बात तुम पर भी लागू होती है पाहवा !' शंकरदास ने गम्भीर स्वर में कहा—'खुद को भूल जाना ठीक नहीं होता। तुम्हारी दुश्मनी एक से होती है और तुम परिवार के परिवार भुनवा देते हो।'

तीरथराम पाहवा की आंखों में जैसे ज्वालामुखी फट पड़ा।

'तो तुमने मेरी दुश्मनी का बदला, मेरे बेटे से लिया ?' आवाज में जहान भर की दरिन्दगी भर आई थी।

'कुछ भी समझ लो।'

'तुम दोनों को तड़फती हुई मौत दूंगा मैं !' तीरथराम पाहवा विक्षिप्तों की तरह चिल्लाया—'तुम दोनों ने मुझे तबाह ही नहीं किया, बल्कि मेरे बेटे की हत्या करके, मुझे जीते जी मार दिया ? मैं सिर्फ अपने बेटे के सहारे ही जिन्दा था ! वही कमाई थी मेरी सारी जिन्दगी की, जिसे तुम लोगों ने छीन लिया।' पाहवा ने पागलों की तरह अपने आदमियों को देखा—'सुन लो तुम सब लोग ! यह दोनों तब तक नहीं मरने चाहिए, जब तक कि मैं ना चाहूं। गोली इनके घुटने पर लगे या कंधे पर, या फिर कोहनी पर ! इन्हें तड़फना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा तड़फना।'

'मौत का खेल शुरू करने से पहले एक बात का जवाब दे दो पहलवान !'

पाहवा ने दांत किटकिटाकर, सोहन लाल को देखा।

'तुम तो यहां अकेले थे। सिर्फ ड्राईवर था तुम्हारे साथ! इस पर भी तुमने बीस-पच्चीस आदमियों पर काबू।'

'बच्चे हो अभी तुम!' तीरथराम पाहवा ने दांत भींचकर कहा—'जब मैं बंगले से बाहर निकला तो, तुम दोनों को कार में छिपते मैंने देख लिया था। शंकरदास को मैं नहीं पहचानता था, परन्तु तुम्हें पहचानता था। इस कारण समझने में देर ना लगी कि तुम्हारे साथ शंकरदास ही हो सकता है। तब मैं समझ गया कि तुम कोई खेल खेलना चाहते हो। इसलिए मैंने तुम लोगों को पूरी छूट दी। क्रीसेंट रोड़ पर जब मैंने अपने गार्डों को विदा किया तो तुम दोनों के बारे में खबरदार कर दिया था कि, तुम लोग जो भी करो, वह लोग उसी के मुताबिक काम करें। समझे, वह गार्ड तुम लोगों पर बराबर निगाह रखे थे लेकिन तुम लोग नहीं जान सके।'

'ओह?'

'जब जयराम पाटिया के आदमी क्रीसेंट रोड़ पर फंसे तो मेरे गार्डों की समझ में मामला आया। उन्होंने फोन करके अपने ढेरों आदमी बुलवाकर सबको पकड़ लिया। पांच-सात अवश्य भाग गये : परन्तु बाजी हमारे ही हाथ रही! इस दौरान तुम वहीं रहे कार के पास! आगे क्या हो रहा है, तुम लोगों को कोई खबर नहीं। तभी अजय चौधरी ने मेरी कार तलाश कर ली थी। परन्तु इससे आगे वह कुछ नहीं कर सका। क्योंकि मेरे आदमी उसे गिरफ्त में ले चुके थे।' पाहवा खतरनाक लहजे में कह रहा था।

सोहन लाल और शंकरदास समझ गये कि पाहवा ने उन्हें भारी चोट दी है। गलती उनकी भी थी। तीन घण्टे कार में बैठकर, अजय चौधरी का इन्तजार करने की अपेक्षा, अगर एक चक्कर क्रीसेंट रोड़ का लगाया होता तो शायद सारा मामला उनकी समझ में आ जाता।

वहां पर मौत का सन्नाटा छाया हुआ था।

तीरथराम पाहवा की हालत तो पागल हाथी की तरह हो रही थी, जैसे वह सोहन लाल और शंकरदास को पैरों तले रौंद देने का इरादा रखता हो।

'पाहवा !'

रानी की आवाज सुनकर पाहवा ने, गर्दन घुमाई।

'देर मत लगाओ। जल्दी से सब कुछ खत्म करो। तुम्हें और भी काम होंगे।' रानी ने कहा !

पाहवा ने तुरन्त अपने आदमियों पर, खूंखारता पूर्ण निगाह मारी।

'देख क्या कर रहे हो। मैंने जो कहा है, वैसा ही करो।'

तीरथराम पाहवा अपने शब्द पूरे ना कर सका।

गोली की तेज आवाज वहां गूंजी और पाहवा का मुंह खुला का खुला रह गया। क्योंकि गोली उसकी खोपड़ी में जा धंसी थी। चन्द पलों तक उसका शरीर वैसे ही खड़ा रहा था। फिर तीव्र झटके के पश्चात दांई करवट नीचे जा गिरा। मरने के पश्चात भी पाहवा की आंखें खुली हुई थीं।

रानी के होंठों से भयपूर्ण चीख निकली।

वहां मौजूद हर कोई स्तब्ध और फटी-फटी-सी अविश्वास भरी निगाहों से, पाहवा की लाश को देखे जा रहा था। इन चन्द पलों में किसी की समझ में कुछ नहीं आया था।

'कोई अपनी जगह से नहीं हिलेगा। सब वैसे ही खड़े रहो, जैसे खड़े है।'

खतरनाक आवाज सुनकर सबकी निगाहें उसी दिशा की तरफ घूमी। कमरे के ऊपर मौजूदा रोशनदान से रिवाल्वर वाला हाथ और जयराम पाटिया का चेहरा झांक रहा था।

पाटिया को वहां मौजूद पाकर सोहन लाल और शंकरदा चौंके !

'चौधरी !' पाटिया का स्वर पुनः उभरा—'इन सबके हाथ से रिवाल्वर ले लो और हर कोई सुन ले, जिसने भी आनाकानी की, चालाकी की, मेरा अगला निशाना वह होगा। मैं जयराम पाटिया हूं। सोहन लाल, शंकरदास, तुम भी चौधरी का साथ दो।'

चौधरी, सोहन लाल और शंकरदास ने अगले ही पल उन छ: के छ: हाथों से रिवाल्वरें झटककर, उन पर तान दी। एक-एक रिवाल्वर जेबों में भी ठूंस ली।

रानी भय की मूर्ति बनी हक्की-बक्की सी खड़ी थी।

रोशनदान से जयराम का चेहरा गायब हो गया और आधे मिनट पश्चात पाटिया ने भीतर कदम रखा। उसके हाथ में रिवाल्वर थी और चेहरे पर खतरनाक भेड़िये के से भाव ! आगे बढ़कर उसने नीचे पड़ी तीरथराम पाहवा की लाश को जूते से सीधा करके, उसे देखा।

'मर गया साला।' जयराम ने निगाहें उठाकर सब पर निगाह मारी, 'सुनने के बाद कोई मानेगा भी नहीं कि तीरथराम पाहवा को जयराम पाटिया ने आसानी से गोली से उड़ा दिया। इतनी आसानी से कि पाहवा को अपनी मौत की भी खबर नहीं हो सकी।'

जयराम पाटिया इस समय वास्तव में सबसे बड़ा दरिन्दा लग रहा था।

'तुम अचानक कहां से टपक पड़े ?' सोहन लाल ने पूछा।

'टपका !' जयराम हंसा—'मैंने कहां टपकना है। मैं तो तब से यहीं था। कहीं गया ही नहीं था। मेरे सबसे बड़े दुश्मन को खत्म करने की तैयारी हो रही है और मैं चला जाऊं। यह कैसे हो सकता है और मेरे यहां रहने के कारण ही सारे हालात नजर आते चले गए कि, पाहवा ने बाजी का रुख अपनी तरफ मोड़ दिया है और मैं इसी वक्त की घात लगाये बैठा था कि कब मुझे मौका मिले और मैं पाहवा को शूट करूं। उस रोशनदान पर तो, तुम लोगों के आने से पहले ही मौजूद था। लेकिन मैंने

पाहवा को इस बात की खबर नहीं होने दी।'

'वास्तव में तुमने तो कमाल ही कर दिया।' शंकरदास मुस्कराकर बोला—'वरना मैं तो समझ बैठा था कि मैं तो गया। सारी उम्र तुम्हें याद रखूंगा।'

'कमाल तो अब होगा।' पाटिया दरिन्दगी से हंसा।

'अब? वह कैसे?'

'तीरथराम पाहवा की जगह मैंने लेनी है। घण्टे भर में ही इस बात का ऐलान हो जायेगा कि शहर में अब पाहवा की नहीं! जयराम पाटिया की चलेगी। पाहवा के दो नम्बर के सब ठिकाने पर मेरा ही कब्जा होगा। सिर्फ अगले चौबीस घण्टों में अण्डरवर्ल्ड का भीतर चेहरा, सारा का सारा ही बदल चुका होगा। हर तरफ मेरा ही नाम होगा। पाटिया का! बरसों से मैं आपके दिन की राह देख रहा था। और आज वह नसीब वाला दिन आ ही पहुंचा। अब मैं इस शहर का सबसे बड़ा दादा बन जाऊंगा।'

सोहन लाल ने गहरी सांस लेकर, नीचे पड़ी तीरथराम पाहवा की लाश पर निगाह मारी और मस्तिष्क में सिर्फ एक ही बात थी कि कुछ देर पहले तीरथराम पाहवा भी सबसे बड़ा दादा था।

□ □

□ □

बाहर आकर सोहन लाल और शंकरदास ने एक-दूसरे को देखा। दोनों के होंठों पर मुस्कान उभरी। वह मुस्कान शायद हमेशा-हमेशा की विदाई लिये थी।

'बाकी का मामला हमसे ताल्लुक नहीं रखता।' सोहन लाल बोला—'पाटिया खुद निपटता रहेगा।

'हां ?' शंकरदास ने सिर हिलाया।

'अगर तुम मेरा साथ न देते तो शायद मैं इतना आगे बढ़कर पाहवा के खिलाफ न उठ पाता।'

'क्या कहा जा सकता है कि कब क्या होता है। सब ऊपर वाले का खेल है।' शंकरदास ने मुस्कराकर कहा—'और सुन्दर उसका क्या होगा ?'

'होना क्या है ? एक-दो दिन में ठीक होकर अपने रास्ते पर लग जायेगा।' सोहन लाल हंसा।

'अब ?'

'चलते हैं अपने-अपने रास्ते पर। तुम्हारे पीछे पुलिस है। इस शहर में तो क्या, तुम्हारा इस शहर के आस-पास भी रहना ठीक नहीं। मेरे ख्याल में यहां से फौरन दूर हो जाओ।'

'हां ?' शंकरदास ने कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मारी शाम हो रही थी मैं रात तक निकल जाऊंगा। इन्स्पेक्टर पाल देशमुख से मैंने जो वायदा किया था, वह पूरा हो चुका था।'

'तो विदा दोस्त !' सोहन लाल ने हाथ आगे बढ़ाया।

शंकरदास ने गर्मजोशी से उसका हाथ थामा।

विदा ! मैं तुम्हें हमेशा याद रखूंगा।'

'लेकिन मुझे बीता वक्त याद रखने की आदत नहीं है। नया दिन नई बात। जो बीता दूर कर दिया।'

शंकरदास हंस पड़ा।

दोनों ने विदा ली और अलग-अलग रास्तों पर बढ़ गये।

चलते-चलते सोहन लाल ने सिगरेट सुलगाई और निगाहें उठाकर आसमान की तरफ देखा। सूर्य पश्चिम की तरफ डूब रहा था। उसकी सुर्खी अब लाली में बदलती जा रही थी। अब

इस शहर से सोहन लाल का दाना-पानी खत्म हो चुका था। अब उसे किसी दूसरे शहर में पहुंचना था और वहां पर दादाओं के बीच खुद को किसी दूसरे शहर का बड़ा दादा साबित करना था। उन पर रौब जमाकर, अपने खतरनाक अन्दाजों से उन्हें प्रभावित करके, उनसे नोट ऐंठकर, इससे पहले कि किसी को उस पर शक हो वहां से चम्पत हो जाना था।

अब किस शहर का रुख करना है और वहां जाकर क्या कहानी बनानी है। यह तो सोचने के लिये उसने रात किसी होटल में बिताने और सुबह इस शहर को छोड़ने का फैसला किया।

थोड़े-से ठीक-ठाक होटल में उसने सिंगल रूम लिया। अन्धेरा होने को था। दो-चार पैग मारकर, पिछले दिनों की थकान को कुछ कम किया और खाना खाकर थका-टूटा सो गया। सुबह जब आंख खुली तो दिन के नौ बजे थे। उसने बैल मारकर वेटर को बुलाया और चाय के साथ अखबार लाने को कहा। तत्पश्चात सिगरेट सुलगाकर अपने अगले कदम के बारे में सोचने लगा।

दस मिनट में ही वेटर चाय के साथ न्यूज पेपर दे गया।

चाय के घूंटों के साथ, सोहन लाल अखबार पर भी निगाह मारने लगा। पहले पेज पर ही तीरथराम पाहवा की मौत का जिक्र था। खबर में यही था कि कानून उसके हत्यारे को तलाश कर रहा है। बस पाहवा की मौत के बारे में सिर्फ इतनी ही खबर थी। सोहन लाल के चेहरे पर कड़वी मुस्कान फैल गई। उसे अच्छी तरह मालूम था कि कानून का जर्रा-जर्रा जानता था कि तीरथराम पाहवा को जयराम पाटिया ने मारा है। परन्तु अब किसी में इतनी हिम्मत ही कहां थी कि पाटिया के खिलाफ आवाज उठा पाता।

अब डण्डे का खेल है।

तभी पहले पेज पर ही नीचे दी खबर पर सोहन लाल की निगाहें जा अटकीं। आंखें फटी-की फटी रह गयीं। सांस लेना और चाय पीना तक भूलकर ठगा-सा बैठा रह गया वह।

वह खबर शंकरदास की थी कि रात को स्टेशन पर शंकरदास को पुलिस ने मौके पर उस समय पकड़ लिया, जब वह शहर से फरार हो जाने की कोशिश में था। गिरफ्तारी के समय शंकरदास ने पुलिस का मुकाबला करना चाहा। उसने एक कांस्टेबल पर गोली भी चलाई जो कि उसके पेट में लगी। परन्तु तुरन्त डाक्टरी सहायता मिल जाने के कारण, वह कांस्टेबल खतरे से बाहर है। गिरफ्तारी के पश्चात शंकरदास से दो रिवाल्वरें बरामद की गयीं। इस समय शंकरदास पुलिस की सख्त हिरासत में है और कल कोर्ट में पेश करने के पश्चात उसे सेण्ट्रल जेल भेज दिया जायेगा। याद रहे शंकरदास जेल से फरार फांसी प्राप्त खतरनाक मुजरिम है और फांसी लगने से चार दिन पूर्व ही जेल से भाग निकला था।

सोहन लाल ने गहरी सांस लेकर अखबार एक तरफ रखा और आंखें बन्द कर लीं। चेहरे पर अफसोस झलक रहा था। आखिरकार उसे अपनी सोचों पर यह सोच लगाकर उन्हें रोक देना पड़ा कि जिसकी जितनी सांसें, ऊपर वाले ने दी हैं, उसने उतनी ही सांसें लेनी हैं। न कम, न ज्यादा। शंकरदास की सांसें बाकी थी तो वह जेल से निकलकर, पाहवा को खत्म करने के लिये उसके साथ आ मिला था और अब सांसें खत्म होने का वक्त आया तो ऊपर वाले ने पुनः उसे कानून के घेरे में ला पटका।

और उसे इस बात का भी पूरा विश्वास था कि कानून के ठेकेदार को शंकरदास हद से ज्यादा खतरनाक घोषित करके, ज्यादा-से-ज्यादा दो सप्ताह के भीतर ही फांसी के फंदे पर लटका

देंगे।

कुछ देर तक सोहन लाल इसी मुद्रा में बैठा रहा। फिर आंखें खोलीं। मस्तिष्क कुछ भारी हो रहा था। ठण्डी हो चुकी चाय को उसने टेबल पर रखा और सिगरेट सुलगा ली ! निगाहें पुनः करीब पड़े अखबार की तरफ घूम गईं। शंकरदास का इस तरह पुनः कानून के शिकंजे में फंस जाना उसे तो अच्छा नहीं लगा था। लेकिन वह कर भी क्या सकता था। सिर को झटका देकर उसने शंकरदास के प्रति सारे विचार दिलो दिमाग से निकालने चाहे परन्तु वह निकल नहीं पा रहे थे।

सोहन लाल ने पुनः वेटर को बुलाकर, चाय का आर्डर दिया और उठकर कमरे में टहलते हुए, अपने बारे में सोचने लगा कि, अब किस शहर में जाकर क्या करना है। परन्तु शंकरदास को फांसी लगने का ख्याल, बार-बार उसके मस्तिष्क की सोचों को भटका रहा था।

॥ समाप्त ॥

यह उपन्यास आपको कैसा लगा। अपनी राय लेखक को इस पते पर भेजें।

अनिल मोहन
जे 6/63 राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-110027

A.H.W. SADHNA SERIES

साधना पॉकेट बुक्स

